# BODHAINDU VICASA.

By The Late Baloo Issur Chunder Goopto.

by Ramehunder Goopto Edilor of the Probhakur.

संग्रास्ट्र में सुर्गेश्व समें हती. मेंड्रायामार्ग्य अपूर्य नेश्चार स्वायुक्तिमारं चाक्ट्य नेश्चित। स्वायुक्तिमारं चाक्ट्य नेश्चित।

क्ष्रका । कड़क अभ्यात । कड़क अभ्यात क्ष्रक क्ष्रक

1 - Explis tilk sales

party via winery Mas 120 46 68

# 39granter 1

रणकाट स्थाप्ति ते मुन्यदास्य एते स्थापम stere " " uples she separy orande dage मेंगामक आ) तथा मेंहरू, त्याहर्मेहरू म , परमक (म याद्रक , १९६६ मा अरहार हा सामा कार केंद्र केंद्र कार करा करा कर केंद्र अस्ति रहेम्परार्ट में रहा क्षेत्राल भारत हैं हे जारा है। न्याहर नमार छित्र नके सम्मान प्रकार माहरूप असरक अकाम करिकारम , मेरे महार वरिमण्युक वर्डास-कामधान क्षा यह के नेमधाः स्प्राप्त व्हास्ट व्हास्त अंभे अबि वैभक्तकारिं अकाम कर्षिकार स्थित कर्ष्ड्रे दुराष्ट्र (कार एकाम स्टेंग्स ठैंसळ्स्ट अर्डसमाक्ष्म वस्वेडस्य येख पंत्रम्थित अरम कर्षम भाग भाग भाग अरम अरम अरम अधिकार अविक विकास महार उत्तर क्षात्र महिला नार्यर केंग्रेड उद्गार दुर्शाराल में मेंग्रेस्ट केंग्रिस अपियोर्ट have get learney you us yourseld see never कामारिमारी उड्डार अमरिस्टमा मेड माहरकर दुसमारी हिस्स अध्यक्ष भक्ष भक्ष भक्ष भक्ष भक्ष भक्ष भक्ष यालक राम्रेटक, मान्यः (अष्टे आर्येक्टरेक्टम मक्टरेट वार्य्ये सम्दर्भ क्षेत्रम क्या मार्ज्य कार्य कार्य कार्यक वार्यक मार्थ द्भारत स्पार्ट अधिक कार्याक वार्याक क्ष्रांत्र केष अर्थे बार्ड । मध्यम ये व्यक्तिक अर्थे व्यक्ति न्याद्भ रहेर्ड्य , ह्रायाक्याराव करणाह्य अस्तर्कात्मा (अस्तर्क legister devents allesiates our entire against 1

त्राम अकारम भमानुक मरेग्राम ४६०। त्राम वेद्यक्त पेषु नमा क्ष्म अस्त्र महिला त्याम रिभीम श्रिम भार्य ४६० हिमोग्रामा कार्य कार्यक नाम नामुक्त मार्थ त्राम क्षम कार्य भारता भारताम भारताम कार्यक कार्य ३ त्राम कार्य कार्य भारताम भारताम अस्त्र मार्थाम अस्त्र ३ श्रिम केर्याम अस्त्र मार्थिक अस्त्र मार्थिक व्याम अस्त्रमां

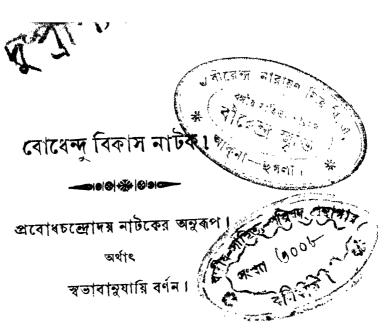
> अंद्रियम अंद्रास्ट्रं अर्थमस्। भोधाराजी एवा ।

# 

•
xyla 2
Cheroles Exhaum
ugla decam 8
कास अवर कडीक अरम
स्थिक अर्थ साखेर अक्ष की सिक्ट नायासय ३०
ANYTHE ALL S A.
भाषां वार्ष
अध्यादक अदिम
भरक्ष्य देवर
सद्भारमाधिक त्या १ भार १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
भक्राकार स्वर्गस्मायक प्रकार अस्त्रामी, अस्त्राक देवानुक 82
भिराहार भारतिसाम्बर अव्यक्तिताह उ अर्जाल ।
Survey Dry sale
अभ्येत्रक एमुबाहिक्ट अर्जन
अभ्य अभ्य भी जार हुन व्याचा कर कर्
क्षित्र प्रदर त्यादिक अमीक उठ्ठांक अर्ज्जातीक माञ्जा
125×11 & & .
97837 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
विष्यात्वरी प्राप्तिक व्यवम ७०
Example Fligg ALLER AA
Majir och xenso do
suls seé etopie excitation alem 62
पित्रक्षेत्र भिष्मिक वर १८ वर्ष (१६६ भरवार २)
a the mark state all the years

æ
>>

-



## মঙ্গাচরণ।

----

সংগীত।

রাগিণী কেদার! তাল তিওট। মনরে আমার। একি ভ্রান্তি ভোমার।। ভাবনা কেন রে ? ভাব না কেন রে ? অরূপ হরূপ সার। निभित्र, वमछ, निमाच, दृष्टि, যেজন করিল এসব সৃষ্টি, य कन मिरग्रह नग्रत पृष्टि, তাঁরে ভাব একবার।। দিবাকর, নিশাকর, লোয়ে যার ভাস। দিবা নিশি, করে করে, তিমির বিনাশ। নিয়ত নিয়ম করিয়া লক্ষ্, রাশি রাশি রাশি, প্রকাশে পক্ষ, অহরহ সহ করিয়া স্থা, वात्रबात ज्ञान वात्र।। > खिनिजा विषयः किन, खम खमञारण ?) তজ নিত্য, নিত্যবিত্ত, চিত্ততীর্থবাদে॥

হৃদয়-নিলফ্রে পরম-রতন, সে ধনে তুমি হে না কর যতন, বুথায় করিছ শরীর পতন, অসার ভাবিয়া সার॥ ২

## उत्रक्षणश्तीष्ठन्म ।

জয় জয় জয় য়য় য়য়, নিত্য-নিরঞ্জন।

জয় নিত্য-নিরঞ্জন ॥

নির্মিকার, নির্মিহার, অজ্ঞানভঞ্জন ।

জয় অজ্ঞানভঞ্জন ॥

মিথ্যা ভব মিথ্যা সব, তাহে সত্য অমূভব,

য়রপ স্থরপ তব, জ্ঞানে কোন্ জন ।

রবি করে যেপ্রকার, বোধ হয় নীরাকার,

নিরাকারে সে প্রকার, সাকার সাধন ॥

আছে কার সার জ্ঞান, মিথ্যায় সত্যের ভান,

ভ্রমে করি অমুমান, করি নিরপণ ।

স্কেলন, পালন, লয়, তোমা হোতে সব হয়,

তুমি এই সমুদয়, কারণকারণ ॥

বাক্য মন অগোচর, পরমাত্মা পরাৎপর,

করিয়াছ চরাচর, বিশ্ব-বিরচন

স্বভাবের কিবা ধর্মা, বিচিত্র ভোষার কর্মা, কেমনে তাহার মর্ম, করিব গ্রহণ ?॥ এই মাত্র জানি আমি, তুমি সর্বা অন্তর্যামি, তুমি নিত্য সর্বস্থামি, সত্য সনাতন। কুপাকর নাম ধর, কুপাকর কুপা কর, দীন হীনে কর কর, দয়া বিতরণ।) হোয়ে নাথ প্রভাকর, চিদাকাশে প্রভা কর, ত্রিতাপ-তিমির রাশি, কর বিমোচন। निজ-क्रोन मोन कत्र, गरनत्र मोलिना इत्र, পতিতে পবিত্র কর্, পতিতপাবন ॥) আর কেন গুপ্ত রও, গুপ্তগৃহে ব্যক্ত হও, গুপ্তস্থতে কোলে লওক্রুরিয়া যতন। হিরি হরি করি গান, পরিহরি অভিমান, ভোমাতেই মন প্রাণ, করি সমাপন।) मुनिया युन्न जाँथि, यथन घुनारत थाकि, কবি দর্শন। তথন তোমায় যেন, ভ্রমপাশ হর হর, তাণকর তাণ কর, অভয়-চরণ ॥ मानकत मान कत्, জয় জয় জয় ব্রহ্ম, নিত্য-নিরঞ্জন। জয় নিতা-নির্প্তন ॥ নির্বিক।র, নির্বিহার, অজ্ঞানভঞ্জন। জয় অজ্ঞানভঞ্জন ॥

## পুস্তাবনা

শুন সভ্য সমুদয়। শুন সভ্য সমুদয়।
বলি সবিনয়।
নবরস কাব্য স্থধাময়। করি মহানোহ ক্ষয়।
বিবৈকের জয়।
যেরূপে হইল, জ্ঞান্চল্রের উদয়॥

## নান্দী পাঠ পূর্ব্বক স্থত্তধারের আলাপ-বচন। পদ্য।

কীর্ত্তিবর্ম নামে রাজা, সদা কীর্ত্তিমান। দেবলোকে দীপামান, যার যশ মান॥ সর্বাগুণে গুণময়,তেমন কি হয়?। मात्रिका पत्नन-पक्क, पीनप्रश्रीयश्र॥ তাঁর সেনাপতি দিজ, এীমান্ গোপাল। সমবে অমবজয়ী, বিক্রম বিশাল॥ ভয়ে কাঁপে কলেবর, স্থির নাহি রয়। বিম সম হেরে যাঁরে, শত্রু সমুদয়॥) স্বজন সেরূপ হয়, স্থাথি নির্ভর চাঁদ হেরে, স্থাথি যথা, চকোর নিকর॥ মহাযোদ্ধা, অতি বোদ্ধা, নাহি অন্তরুপ। যাঁর পদে প্রণত, নিয়ত যত ভূপ॥ বিপক্ষ লক্ষের বক্ষ, করি বিদারণ। নিরসিংহ সম প্রায়, বিখ্যাত যেজন 🎚 विशक मिलाल मधा, वस्रकारी हिल। वतारमूर्जित नागि, राष्ट्रन पूनिन। হরি-জ्ঞানে অরি-কুল, করী সম রহে। প্রতাপের অনলেতে, নিরন্তর দহে॥ বীর ধীর সাধু সে, গোপাল সেনাপতি। নৃত্য গীতে আমারে, দিলেন অমুমতি॥

সেনাপতি গোপাল।
প্রথমেতে কিছুদিন, হই নাই পরাধীন,
হরষিত ছিল তায় মন।
না নোজে বিষয় ছথে। কেবল কোরেছি স্থথে
ক্রন্ধানন্দ রস-মান্ধানন॥
কীর্ত্তিবর্ম নরপতি, করিলেন অমুমতি,
শক্ত-কুল সংহার কারণ।

ছাড়িয়া সে সার-রস, বীররসে হোয়ে বশ, मिक्-मम कोर्त्ति मलन। শত শত রাজা যত, একেবারে বল-হত, নত হোয়ে রবে চিরকাল | আমাদের মহারাজ, কোরে এই মহা-কাজ, **२**हेटलन मञ्जाहे जुलाल॥ ঘুচিল বিপক্ষ ভয়, হইল রাজার জয়, সমুদয় কার্য্য সমাধান। ছেড়ে তত্ত্ব আপনার, মিছামিহি কেন আর, বিষয়ের বিষ করি পান?॥ विस्वत ज्ञालाग्न ज्ञाल, अयोजना कादत विल, ব্যাকুল হোছেছে মন প্রাণ। কে করিবে স্থশীতল, কোথা পাব শান্তিজল, किएम इरव अनल निर्साप?॥ कि हुই ना कदिलांग, दूथा काल इदिलांग, মরিলাম হোয়ে বোধহত। পরমপঙ্কজ ভূলে, কামনাকেতকী-ফুলে, উড়ে গিয়া মন হয় রত॥ বিষয় বিভব যত, সকলি হোয়েছে হত, বিপু-চোরে কোরেছে হরণ। পুরুষার্থ গেলে চুরি, কিসে রক্ষা পায় পুরী, প্রতিক্ষণ ভেবে উচাটন। तिश्रमाल वश्र-माल, वली नहे उद्योगवाल, কিরুপেতে করিব শাসন?॥ খরিতে না পারি চোরে. পোড়ে এই ভরছোরে, কত আর করিব রোদন?॥

## গীত।

রাগিণী পরজ। তাল কাওয়ালি।
হায়! আমি কি করিলাম্ এত দিন?।
দিন বত গত তত, দিন দিন দীন॥

বৃথায় হইল জন্ম, বৃথায় হয়েছি মহু, অতমু শাসনে তমু, তমু অমুদিন। ১ ভাবে নাহি ভাবি ভাবি, কার ভাবে মিছে ভাবি, मा जाविया जवजावि, जिंदव इर्डे की ।। २ অসার ভাবিয়া সার, হারাইয়া সর্বাসার, কত বা গণিব আর, "এক, ছই, তিন(১)"। ৩ সহজ(২) আমার ভাই, সহজে না দেখা পাই, कटल (थटक लिलानाय, मदत यथा भीन॥ 8 महस्क (यज्ञेश करे, महस्क (मज़ेश नरे, বুথা করি হই হই, হোয়ে বোধহীন। ৫ নাহি হয় অনুভব, এ দেহ হটলে শব, কোথা ভব, কোথা রব, কোথা হব লীন?॥৬ প্রবৃত্তির অমুরোধে, মাতিয়া বিষয়-ক্রোধে, এখনো আপন-বোধে, হতেছি প্রবীণ। १ কাল-করী-হরি হরি, হরি নাম পরিহরি, ভ্রমে কেন কাল হরি, হোয়ে পরাধীন ?॥ ৮

হে নটরাজ! তুমি সংগীত-বিদ্যায় অদ্বিতীয়, ইদানীং তোমার
তুল্য কাহাকেই দেখিতে পাই না,
সংপ্রতি শান্তিরসের সংগীত-দ্বারা
আমার ননের সন্তাপ হরণ করিতে
পার?

#### সূত্রধার(৩)।

হাঁ মহাশয় ! প্রণাম করি। শ্রীচ-রণের আশীর্কাদে অতি উত্তমকপেই

<sup>(</sup>১) এক, ছই, তিন। দিন গণনা। অপিচ অ-বস্থা,লোক, তত্ত্ব, গুণ, তাপাদি তিন।

<sup>(</sup>২) সহজ—সংগোদর, সঙ্গে যে জন্ম। এন্থলে আগ্রা।

<sup>(</sup>৩) স্থ মধার – যাগার সধিকারী এবং নট

তৎপ্রসঙ্গ সমাধা করিতে পারি।
আমি সুপ্রাব্য স্থকাব্য অতি নব্য
বঙ্গভাষা-ভূষিত গদ্য পদ্য-পরিপুরিত"বোধেন্তু বিকাস"নাটক অভ্যাস
করিয়াছি, আজ্ঞা করিলেই এখনি
প্রকাশ করি, যিনি অভিনিবেশ পুর্বক সেই যাত্রা শ্রবণ করিবেন, তিনি
সানন্দে সংসার্যাত্রা নির্কাহ করিবেন, তাহাতে সংশ্রু মাত্রই নাই

#### মেনাপতি গোপাল।

ওহে স্ত্রধার! তবে, তবে, তুমি কবে তাহা অভ্যাস করিয়াছ! আমি শুনিয়াছি তাহার মত সাধু-সন্দর্ভ প্রায় আর নাই, না হবে কেন! তুমি আমারদের মহারাজের নটরাজ, তুমি সকল রসের রসিক বট। (হে অধিকারি! তোমার কল্যাণ হোক, কল্যাণ হোক। এইক্ষণে সেই শান্তি-স্থা-র্ফি করিয়া শ্রীমন্মহারাজের চিন্ত-চকোরকে তুগু কর, তুগু কর। সকলের ক্ষুধা হর, ক্ষুধা হর। আপ-নার বন্ত্র পর, বন্ত্র পর। এই লও প্র-সাদ ধর, প্রসাদ ধর। শীঘ্র বেশ কর, বেশ কর। অদ্যই সমুদয় শেষ কর, শেষ কর।) নট।

যে আজ্ঞা মহাশয়। আশীর্কাদ
করিয়া প্রসন্ধানিতে শ্রবণ করুন।
এখনি আরম্ভ করি। কিন্তু গীতবিদ্যা,
এ বড় কঠিন ব্যাপার, এক জনের
কর্মা নহে, কি জানি যদি লগ্প না হয়,
তবে কাহারো মন মগ্প করিতে পারিবনা, সকল আমোদ ভগ্প হইবে।
ষাই গৃহে গিয়ে গৃহিণীকে ডেকে
আনি, স্ত্রী পুরুষে একত্র হোয়ে নাটক
আরম্ভ করি।

নেপথ্যাভিমুখে দৃষ্টি পূর্ব্বক।
(হে প্রিয়তমে নটি! চিকন শাটি
পোরে পরিপাটী সজ্জায় এখানে এসো।)

> নটীর প্রবেশ। গীত।

রাগিণী লুম্ঝিঁঝিট। তাল একতালা।

অসময়, কেন আজু আমারে, ডাকো রসময় হে?।

অবলা সরলা বালা, কত জ্বালা সয় ছে?। প্রাণে কত জ্বালা সয় হে?॥

তুমি নট হোয়ে নট, অঘট-ঘটনা-ঘট, মুখে যত কথা রট, কাজে, কি, তা হয়হে ?।

স্থা, কাজে, কি, তা হয় হে?॥ >
সময়ে সকলি সাজে, অসময়ে লাঠি বাজে,
কাল-ভেদে কাজে কাজে, স্থধা বিষময় হে।
স্থা, স্থধা বিষময় হে॥ ২

(তোমার অধীনী আমি,তুমি হে প্রাণের স্থামী, তোমা-ছাড়া হোলে আমি,আমি আমি নয়হে! সধা, আমি আমি নয় হে॥ ৩ তুমি হে চুম্বক সম, লোহরূপ মন মম, তব আকর্ষলে মন, স্থির কিসে রয় হে!। সধা, স্থির কিসে রয় হে?॥ ৪ প্রাণনাথ! আমাকে কেন ডা-ক্লে? আমি ঘরকন্নার কাজকর্মা ফেলে আস্ছি।

> অধিকারী। গীত।

রাগিণী বাহার। তাল একতালা।

এসো, এসো প্রাণ্-প্রেয়নি, প্রেমমই।
তোমা বিনে প্রাণপ্রিয়ে, আমি-আমি নই॥
তুমি প্রাণ, আমি দেহ, দেহে প্রাণ প্রাণ দেহ,
ভ্রমরার নাহি কেহ, কমলিনী বই।
বুলি ভাব, আমি স্বামী, তুমিলো আমার আমি,
বিদহ-ভেদে তুমি আমি, আমি তুমি কই॥

বক্তা।

शमा।

বলি তাই চাঁদমুখি, যে হয় বিধান।
প্রস্তাব শুনিয়া কর, আশু অমুষ্ঠান॥
কীর্ত্তিবর্দ্ম রাজ্ঞসেনাপতি, যে গোপাল।
ব্যক্ষ-পালন-দক্ষ, বিপক্ষের কাল॥
এক মুখে আমি ভাঁর, কি কব মহিমা?।
অনম্ভ বচনে ক্ষান্ত, প্রকাশিতে সীমা॥
কর্ণরাজ্ঞা, কীর্ত্তিবর্দ্মে, করি পরাভব।
হলায় হরিয়াছিল, সকল বিভব॥
য গোপাল অসি-মাত্র, মিত্র,সহকার।

বাছবলে শক্রবল, করিল সংহার॥
পুনর্ফার কীর্ত্তিবর্দ্মে, দিল রাজ্যতার।
গোপালের সম বীর, কেবা আছে আর?॥
সে গোপাল কৃতকার্য্য, হইয়া এখন।
করিবেন শান্তিস্কধারস, আস্বাদন॥

#### निष्ठी ।

হে নাথ! কি কোতুক,কিকোতুক,কি কোতুক! সখা হে, কি বোল্লে? কি বোল্লে? মি সভাতে কি কোল্লে? কি কোল্লে? মি

## প্রকৃতিছন্দ।

ও কথা, আর্ বোলোনা, আর্ বোলোনা, বল্ছ বঁধু, কিসের ঝোঁকে?। এ বড়, হাসির কথা, হাসির কথা, হাস্বে লোকে। হাস্বে লোকে॥ বল হে, জ্বোল্বো কত, বোল্বো কত, বোল্তে হোলো মনের ছুখে। মনের ছুখে। এ বড়, অনাস্ষ্ঠি, বিষম্ সৃষ্ঠি, স্থধাবৃষ্ঠি,

সাপের মুখে। সাপের মুখে॥
কাণার চোখে চদ্মা দিয়ে,কার্য্য কিবা আছে।
পতিব্রতা ধর্ম কথা, বারাঙ্গনার কাছে॥
কালার কাছে কাব্য কথা,কি তোমার জান্তি।
চোরের কাছে পুণ্যকথা,বীরের কাছে শান্তি॥
রমের কথা বোলে ভাল, এমন্ রসিক্ চাইতো।
ভোমার মত রমের সাগর কোনখানে নাইতো
বোঝাপড়া হবে পরে, ঘরে আগে ঘাইতো।
ভাইতো বটে, ভাইতো বটে, ভাইতো,

তাইতো, তাইতো॥
জানিলাম, তুমি নাথ, স্থারসিক বট হে।
ভয় আছে, পাছে প্রাণ, কথা শুনে চট হে॥
অঘট-ঘটনা-ঘট, সব ঘটে ঘট হে।
নতুবা আমায় কেন, হেন কথা রট হে?।

স্থভাব সরল অতি, তুমি নও শঠ হে। সরলতা-তীর্থতটে, বাঁধিয়াছ মঠ হে॥ বটি আমি, নটা তব, তুমি প্রাণ নট হে। শান্তিরূপ ধাটি-ছধ, কেন কর নট হে?॥

#### গীত।

রাগিণী লুম্ঝিঁঝিট। তাল আড়থেম্টা কেমনে, বল প্রবোধ- শশির, হইবে সঞ্চার হে? মোহমেছে ছেরিয়াছে, অথিল সংসার হে॥

এই অখিল সংসার হে।
পাইয়ে অনিত্য-দেহ, নিত্য-ভ্রমে করে স্নেহ,
আপন স্বরূপ কেহ, না করে বিচার হে।
কেহ না করে বিচার হে।

মনেরে বুঝাব কত, মন নহে মনোমত, অবিরত হেরি যত, মায়ারি বিকার হে।
মহামায়ারি বিকার হে॥

#### অধিকারী।

হে প্রিয়তমে ৷ হে প্রাণাধিকে ৷ হে
প্রণায়নি ৷ এই গোপাল সামান্য পুক্রম্ব নহেন ; অতি ধার্ম্মিক-পুণাত্মা,
ইনি যদিও মহাবীর-পুরুষ, তথাচ
শান্তিরসের রসিক হইবেন বিচিত্র
কি? মহাপ্রলয় কালে যে মহাসমুদ্র
অতি উচ্চ শতশত পর্বত-চূড়া লপ্ত্রন
পুর্বক অতিশয় প্রবলতর প্রথর তরক্রম্ব বিস্তার করত আপনার অনিবিচনীয় অস্তুত লহরীলীলা প্রচার
করিয়াছিলেন, অধুনা প্রসই মহাসিক্ষ

जननिधि कि आभाग्यंग्रहिश देशंगाव-লম্বন করিয়াছেন! আর তিনি স্বীয় দীমার অতিক্রম পুরঃদর প্রলয় উৎ-পাদন করেন না। হে হৃদয়রঞ্জিনি-প্রসন্নবদনি! আর দেখ, ভগবান্ নারারণ ভূভার-মোচনার্থ অংশরূপে অবতার হইয়া কতবার কতপ্রকার ভীষণতর ব্যাপার ব্যহ বিস্তার করত পরিশেষ পুনর্কার স্বয়ং শান্তিরসে निमध इहेशाएइन। एव नील-नीतुज-নয়নি! আর দেখ, পরশুরাম, যিনি পুর্বে অতিশয় নির্দ্ধ নিষ্ঠুর এবং নির্কিবেকী হইয়া স্বীয় জগদ্বিখ্যাত-কুঠার দ্বারা মহাবলপরাক্রান্ড ক্ষত্রিয়-কুলের শিরভে্চন পুর্বক শোণিত-সমুদ্রের সলিল-ছার। এক বিংশতি-বার পিতৃলোকের তর্পণ করিয়াছি-लन; वालक, ब्रक्त किছूरे विवरमा করেন নাই, অতি ছুরাত্মার ন্যায় নির্দিয়তা পুর্বক সকলকেই সংহার করিয়াছেন। সেই পরশুরাম অব-নীর ভারাবতারণ করণানন্তর এক্কা-লেই ক্রোধশূন্য হইয়া পুনরায় শান্ত-मूर्जि धातन कतिरलन। रह व्योग-वन-ভে! এই মহামতি সেনাপতি শ্রীগো-পাল সংপ্রতি সর্কতোভাবেই ক্লত- কার্য্য হইয়াছেন। শান্তিরসের আস্থাদনে তৃপ্ত হইয়া দেহের এবং সমযের সার্থকত। করিবেন। <u>ইনি অতি</u>
তেজস্বী, কর্ণকে জয় করিয়া সেই প্রকারে কীর্ত্তিবর্দ্ম দেবের উদয় করিলেন, যে প্রকারে বিবেক মহাশয়
মহাবল মহামোহকে জয় করিয়া প্রবোধসুধাকরের উদয় করিয়াছেন)
গীত।

রাগিণী দেশ। তাল আড়া। অজ্ঞানতিমির বল, কোথা রবে আর। স্থখদ সরল শশী, স্থভাবে সঞ্চার॥

ঘুচিল বিপক্ষ ভয়, রিপু-চয় পরাজয়, আলোকে পুলকময়, অথিল সংসার॥ সগনে করিলে ঘন, শশি-শোভা-আছাদন, नारम यथा समीद्रवः সেই অন্ধকার॥ মেঘাতে যামিনীকর, স্থিরতর শোভাকর, মনোহর মুগধর, স্লধার আধার॥ সেরপ করিয়া ক্রম, विदिक श्रवन भग, मश्रामाश्र सम्बद्धमः कतिल भरशात । পরিপূর্ণ জ্ঞানজ্যোতি, প্রকট প্রদীপ্ত অতি, প্রবোধ-পীযুষপতি, প্রভাবে প্রচার॥

[বিবেক কর্তৃক মহামহের পরাজয়, এই শব্দ শ্রুতি-বিবরে প্রবেশ মাত্রেই নেপথ্য(১) হই-তে কামদেব কোপভরে কহিতেছেন।] অরে ও-পাপাত্মা নরাধম-নটাধম!
তুই কে রে? তুই কে রে? ওরে ও মূঢ়!
ও অজ্ঞান! তুই কোথা শুনেছিন্?
কি সাহসে বলিতেছিন্? দুর-দুর,
দূর ছ্রাচার। আমারদিগের বিশ্ববিজয়ি কুলস্বামি সর্বশ্রেষ্ঠ অজেয়
মহামোহ,অতি গুর্বল অসমর্থ সহায়শূন্য সাহস-শূন্য দীন হীন ক্ষীণ উপায়-বিহীন মলিন বিবেক তাঁহাকে
পরাজয় করিবে? তুই যে উন্মন্ত-প্রলাপের ন্যায় কথা কহিতেছিন্।—
তুই কে রে? তুই কে রে?

नरे।

প্রিয়ে শুনিলেতা, ইনি ভুবনমোহকর শ্রীমান্ কামদেব। ত্রিভুবন
মত্ত করিয়া এই তত্ত্বহীন কন্দর্প দর্প
করিতে করিতে আসিতেছেন। ঐ
দেখ সুরা-পানে উন্মত্তচিত্ত,-তরুণঅরুণের ন্যায় নয়ন-যুগল আরক্ত
হইয়াছে। ইহাঁর বামভাগে যিনি,
তিনি সর্কমোহিনী অতি রূপবতী
পতিপ্রাণারতি সভী। মদনের বিকটবদনে, প্রকট-রদনে, প্রকোপ-বচনে
বোধ হয়, ইনি আমার প্রতি অত্যস্তই কুপিত হইয়াছেন। এসো আমরা এস্থান হইতে এখনিই প্রস্থান

<sup>(</sup>১) নেপথ্য—যে স্থানে নটেরা বেশ বিন্যাস করে সেই স্থান।

করি, আর এথানে থাকা নয়, থাকা নয়।

[ তদনশুর নট এবং নটী রঙ্গভূমি হইতে প্রস্থান করিলেন।]

-00

্রিতি, ও কান্যের রঙ্গভূমি প্রবেশকালে স্থাভাবিক সৌন্দর্য্য সন্দর্শনে সক্ষা-সদনে কোলাহল ধ্বনি।]

#### গীত।

রাগিণী আড়ানা। তাল ঝাঁপতাল। এই বসত সামন্ত লোয়ে, মদন, সাজিছে, অতিপুলকে।

কি শোভা, কি শোভা, কি শোভা, ভুলোকে। বামেতে কামিনী সতী, ভুবনভামিনী রতি,। লক্ষিত যামিনীপতি, দামিনী থমকে।

## (इर्द्र मामिनी थंगरक।

#### অন্তর ।

মিলিত উভয় অঙ্গ, স্বভাবে সভাবে সঙ্গ,
ক্ষণমাত্র নহে ভঙ্গ, একি রঙ্গ হায়।
মদমত্ত মনোভব, বুঝি ভব, পরাভব,
মোহিত হইল ভব, রূপের আলোকে।
চারু রূপের আলোকে॥ ১
ফুটিল স্থরভি-কুল, ছুটিল ভ্রমরকুল,
কুটিল কামের শূল, টুটিল হৃদয়।
খরতর স্মর-শর, ত্রিভুবন খর থর,
কলেবর জর জর, কোকিল কুহকে।
কালো কোকিল কুহকে। ২

সমীরণ ফর ফর, গুণ গুণ গর গর,
গুঞ্জরিছে মধুকর, মনোহর স্বর।
না দেখি এমন ধীর, এ রবে, কে রবে স্থির,
দহে দেহ অশরীর, ত্রিলোক চমকে।
রবে ত্রিলোক চমকে॥
সম শোভা জলে স্থলে, তরু রাজে নবদলে,
দিজ নিজ দলে দলে, দলে ফুল-দল।
স্থাস্বরে করে দান, ধরে ভান, হরে প্রাণ,
ছয় রাগ মৃর্জিমান, রাগিণী ঝলকে।
বাগে রাগিণী ঝলকে॥ ৪

**→◆** 

কাম(১) এবং রতির(২) প্রবেশ। কামদেব। গীত।

রাগিণী বাহার। তাল তিওট।
এই অথিল সংসার, আমি করি অধিকার।
স্থরাস্থর আদি সবে, অধীন আমার॥
নাম ধরি রতিপতি। প্রিয়তমা এই রতি,
রতিরসে রতি বিনা, গতি আছে কার। ১
কিলুবনে সমুদ্য, আমা ছাড়া কেহ নয়,
আমার কটাক্ষেহয়, জীবের সঞ্চার। ২
আমার স্কজিত সব, আমি নই পরাভব,
কালরূপি ভব কত, করিবে সংহার। ৩
আমি করি ধারা-বৃষ্টি, না হোলে আমার দৃষ্টি,
এই সৃষ্টি করে সৃষ্টি, হেন সাধ্য কার? ৪

(১) কাম—কামিনী-বিষয়ক উৎকট অভিলাম।
(২) রতি—কামের সহকারিণী প্রীতি।
স্থতরাং উভয়ের স্ত্রীপুরুষভাবে একত্র একাঙ্গভাবে অবস্থান।

## বক্তৃতা।

## वीत्रविमानिनीष्ड्म ।

কোথা গেল ছরাচার, দেখিতে না পাই আর, প্রতীকার করি ভার, উচিত যা হয় রে,। উচিত যা হয়॥

মহামোহ-নাম ষথা, ত্রিভুবন কাঁপে তথা, ছোট-মুখে বড়-কথা, প্রাণে নাহি সয় রে। প্রাণে নাহি সয়॥

প্রভুর কিন্কর আমি, সবার মানসগানী, আমাদের কুলস্বামী, ত্রিলোক-বিজয় রে।
ত্রিলোক-বিজয়॥

নরাধম কটুভাষে, যাহা তার মুখে আসে, তাই বলে অনায়াসে, নাহি করে ভয় রে। নাহি করে ভয়॥

ভ্রমরপ-স্থরাবশে, মন্ত বুঝি সেই রুসে, হায় হায় কি সাহসে, হেন কথা কয়রে। হেন কথা কয়?॥

মনেতে জ্বেনছি এটা,ক্ষেপেছে পাগল বেটা, নহে কেন কহে সেটা, হবার যা নয় রে। হবার যা নয়॥

বদ্ধ হোয়ে মম-জালে, সকলেই আজ্ঞা পালে, কোন্ যুগে কোন্ কালে, বিবেকের জয় রে। বিবেকের জয় ॥

মনোহর বাড়ী, ঘর, যুবতীর কলেবর, অতিশয় শোভাকর, বুঞ্চলতাময় রে, কুঞ্চলতাময়॥

করি প্রিয়-সহকার, বিকসিত-মল্লিকার, একবার গল্ধ-ভার, বায়ু যদি বয় রে, বায়ু যদি বয়।

माहकत माम्बत, स्मीडल यात कत्र,

পিকবর, মধুকর, বেঁচে যদি রয় রে, বেঁচে যদি রয়॥

পরিচয় পেয়ে তবে, অরিচয় কোথা রবে, কেমনে এ ভবে হবে, প্রবোধ উদয় রে, প্রবোধ উদয় ?।

একাতেই রক্ষা নাই, যত বন্ধু যত ভাই, জড় হোলে এক ঠাই, ঘটাই প্রলয় রে, ঘটাই প্রলয়॥

গীত, বাদ্য, রাগ, স্বর, অস্ত্র, বাণ, বছতর, নারীর-নয়ন-শর, একা বোলে নয় রে, একা বোলে নয়।

মূখে আর কত কব, কিছু নহে অভিনব, এই ভব, এই সব, ভোগের বিষয় রে, ভোগের বিষয়॥

ওরে তোর একি ভ্রম? বৃথার করিস্ প্রাম, আমাদের পরাক্রম, দেখ্ সমুদ্র রে, দেখ্ সমুদ্র।

বিবেক কোথায় বল, কোথায় তাহার বল, দিব তারে রসাতল, নাহিক সংশয় রে, নাহিক সংশয়॥

শম, দম, টেঁ।ড়াসাপ, থগরাজে দেবে তাপ, নর্মর্মর্পাপ, দূর্ ছরাশয় রে, দূর ছরাশয়।

কাও-বোধে হতবল, গণ্ড গৰা ভণ্ড দল, ছাই ভন্ম মুখে বল, মনে যাহা লয় রে, মনে যাহা লয়॥

আদার প্রভাব যত, মূচে তা জানিবে কত, অজর অমর আমি অজর অক্ষয় রে, অজয় অক্ষয়।

যত দিন এই ভবে, দেহ রবে মন রবে, তত দিন স্থাধে হবে, আমার উদয় রে, আমার উদয়।

## রতি।

### গীত।

রাগিণী বাহার। তাল ঠুঙ্রি।

ওহে,ফুলশরধর মারহে,আমায় ধরধর, ধরহে, দেহে দেহে যুক্ত কর, ধর পয়োধর হে। আমার, ধর পয়োধর হে॥ ধরি কর গুণাকর, করে বাঁধো কলেবর, দেহ প্রাণ-প্রিয়বর, অধরে অধর হে। দেহ, অধরে অধর হে॥ ১ কুলবতী আমি সতী, প্রাণ-পতি তুমি গতি, রতিরসে রেখে রতি, হরতয়-হর হে।

হে হৃদয়েশ জীবনবল্পভ! বিবেকের নাম শ্রবণ মাত্রেই যখন ভোমার মনে এতজ্ঞপ ক্রোধের সঞ্চার
হইয়াছে, তখন আমি বিবেচনা করি,
বুঝি সেই বিবেক ভোমাদের মহারাজ-মহামোহের প্রবলতর-বিপক্ষ
হইবেন।

বঁধু, হরভয় হর হে॥

#### क यदम्य।

হে ভূবনভামিনি-প্রাণেশ্বরি! আমারদিগের উদ্রেক্ মাত্রেই বিবেক
কোথায় বিলয় প্রাপ্ত হয়। তুমি স্ত্রীকাতি, স্বভাবতই ভয়শীলা, একারণ
অকারণ এবস্ত ভয়ের কথা উদ্ধেধ

#### গীত!

রাগিণী বাহার। তাল আড়া।

এই কুস্তমের বাণ, আমি যদি করি যোগ।
এথনি করিতে পারি, বিবেক-বিয়োগ॥
এমন কে আছে সতী, রতিরসে নাহি রতি,
পতিব্রতা ছাড়ে পতি, যোগি ছাড়ে যোগ।
কোথা বা সামান্য জীব, পরিহরি নিজ্ঞাশিব,
করে সদা, সদাশিব, বিষয়-বিভোগ॥ ২

## বক্তৃতা।

রণর ক্সিণীচ্ছন্দ।

কেন কর ভয়, প্রিয়ে, কেন কর ভয় !।

ত্রিলোকবিজয়, আমি, ত্রিলোকবিজয়।

ফুলময় ধন্যু, শর, মূর্ত্তিমান পঞ্চশর(১)।
স্থার, নর, থার থার, কম্পিত-হাদয়।

ভয়ে কম্পিত-হাদয়।
কেন কর ভয়, প্রিয়ে, কেন কর ভয় ?।

-

নাম ধরি নার, আমি, নাম ধরি মার।
মার মার মার, বত, বিপক্ষেরে মার॥
আমি হই মনোভব, শক্র সব পরাভব,
একেবারে হতরব, কথা নাই আর।
মুখে কথা নাই আর॥
নাম ধরি মার, আমি, নাম ধরি মার॥

এমন্ সহ্মান, করি, এমন্ সন্ধান।
কে পায় সন্ধান, তার, কে পায় সন্ধান?॥
হরির সোহিনী-বেশ, হেরে হর প্রমথেশ,

(১) शक्षणत-मत्त्राहन, जेग्रामन, त्यायन,

পাগল হইয়া শেষ, হারাইল জ্ঞান। হর হারাইল জ্ঞান॥ এমন্সন্ধান, করি, এমন্সন্ধান॥

পিতামহ কয়, যারে, পিতামহ কয়॥
বিধি মহাশয়, সেই, বিধি মহাশয়॥
চাহিয়া কন্যার পানে, মোহিত মদন-বাণে,
অস্থির হইয়া প্রাণে, ব্যাকুল-হৃদয়।
বিধি ব্যাকুল-হৃদয়॥
পিতামহ কয়, যারে, পিতামহ কয়॥

স্বর্গের উপর, দেখ, স্বর্গের উপর।
দেবের ঈশ্বর, যিনি, দেবের ঈশ্বর॥
ক্রিনিত্তমের ভেক কোরে, অহল্যার ধর্ম হোরে,
সহস্র-লোচন ধোরে, আছে পুরন্দর।
আজো আছে পুরন্দর॥
স্বর্গের উপর, দেখা স্থর্গের উপর॥

স্থধার আধার, যিনি, স্থধার আধার। মনের বিকার, ভাঁরি, মনের বিকার॥ গোপনেতে তারাপতি,হোয়েছিল তারাপতি সাঁপ দিলে তারাপতি, কলস্ক সঞ্চার। চাঁদে কলস্ক সঞ্চার॥

স্থধার আধার, যিনি-স্থধার আধার॥

মনে জাগি যার, আমি, মনে জাগি যার।
ধৈষ্য থায় তার, প্রিয়ে, ধৈষ্য যায় তার॥
এমন প্রভাব ধরি, ত্রিভূবন মুগ্ধ করি,
সকলের জ্ঞান হরি, থাকেনা বিচার।
কিছু থাকেনা বিচার॥
মনে জাগি যার, আমি, মনে জাগি যার।

ভেবনা বিষাদ, প্রিয়ে, ভেবনা বিষাদ।
পূর্ণ কর সাধ, ধনি, পূর্ণ কর সাধ॥
প্রেমদে প্রণয়ে তব, প্রমোদে প্রমোদে রব,
প্রেমবলে জয়ী হব, হবেনা প্রমাদ।
কভু হবেনা প্রমাদ॥
ভেবনা বিষাদ, প্রিয়ে, ভেবনা বিষাদ॥

রতি। পদা।

যা বলিলে প্রাণনাথ, সত্য সমুদয়।
মুখে যত বলা যায়, কাজে তত নয়॥
সহায়-সম্পন্ন-শক্র, সদা ভয়স্কর।
তারে পরাজয় করা, বড়ই ছন্কর॥
তপ, শৌচ, দয়া, সত্য, অহিংসা প্রভৃতি।
প্রবল সহায়শীল, বিবেক ভূপতি॥
কেমনে করিবে জয়, মনে নাহি লয়।
না জানি কি ঘটে পরে, হতেছে সংশয়॥

মদন। পদা।

শক্র সব বলবান, অশেষ প্রকারে।
ছিছি, প্রিয়ে, ওকথাটি, কে বলে তোমারে ! ॥
কিসে তারা, বড় হবে, উপায় কি আছে ! ।
সব্ দিগে ছোট তারা, আমাদের কাছে ॥
যম, নিয়মাদি, যত বিপক্ষের দল।
বিবেকের বটে আট, সহায় প্রবল ॥
স্থির হও, বিধুমুখি, কিছু নাই ভয়।
আমার প্রতাপে তারা, কে কোথায় রয়! ॥
স্থাবং হেরি সেই, শক্র সমুদ্য়।
সর্বকালে, সর্বরূপে, আমাদের জয়॥
যদ্যপি ধরেন ক্রোধা, আপন স্থভাব।
আহিং সার, হবে তায়, প্রাণের অভাব।

আপন অনল আমি, যদ্যপি দেখাই।
ব্রক্ষচর্য্য আদি সবে, পুড়ে হবে ছাই॥
আচৌর্য্য, অপ্রতিগ্রহ, সত্য আদি আর।
লোভের প্রভাবে সবে, হবে ছারখার॥
আসন(১), নিয়মং, যমও, প্রাণায়াম৪, আর।
সমাধি৫, ধারণাও, ধ্যান৭, আর প্রত্যাহার৮॥
নির্বিকার মনে হয়, যাদের প্রকাশ।
সহজেই হবে প্রিয়ে, তাদের বিনাশ॥
খ্যান, নিয়মাদি, আর, কোথা সেই যম।
কেবল কামিনী হয়, সকলেরি যম॥
প্রেমদা প্রমোদা যত, প্রমাদকারিণী।
নিরস্তর তারা সবে, আমার অধীনী॥
বিলোকন(২), সম্ভাযণ(৩), বিহার(৪), বিলাদ(৫)

(১) আসন—১। পদ্মাসন, স্বস্তিকাসন আদি নামে প্রসিদ্ধ।

- ২। নিয়ম, শৌচ, সম্যোষ, তপস্যা, বেদ-পাঠ, পরমেশ্বরের আরাধনা ইত্যাদি।
- ৩। যম, সত্যকথন, চৌর্য্যভ্যাণ, ব্রহ্মচর্য্য, অহিংসা, বৈরাণ্য ইত্যাদি।
- ৪। প্রাণায়ায়ন পুরক কুয়ৢক, বোধায়য়ক, বায়য়িয়হোপায়।
- e। সমাধি প্রমায়া ও জীবায়াতে ঐক্য-ভাবে চিত্তবৃত্তির অবস্থান।
- ও। ধারণা অদ্বিতীয় ব্রন্ধেতে মনকে স্থির ক্রিয়া রাখা।
- ৭। ধ্যান পরমাগ্রা ও জীবাত্মার ঐক্যভাবে চিন্তা।
- ৮। প্রত্যাহার বিষয় হইতে ইন্দ্রিয়কে আকর্ষণ করা।
  - (२)विलाकन-करोक्क अवलाकन।
  - (৩)সম্ভাষণ-পরস্পর প্রেমালাপ।
  - (৪)বিহার-নানাবিধ কীড়।।
- (৫)বিলাস—শৃষ্থার বিষয়ে নানাবিধ চেডা। ওঠ দংশন,কর্ণকণ্ডুয়ন, স্তন প্রদর্শন ইত্যাদি।

প্রেমভাবে আলিঙ্গন(১), আর পরিহাস(২)।

এ সকলে কাজ নাই, রেখে দেও দুরে।
নারীর শ্বরণ মাত্রে, মুণ্ড যাবে ঘুরে॥

যত দিন এই নারী, সহায় আমার।
বিকারবিহীন মন, হোতে পারে কার?।
আমা বিনা, আর আর, সেনাপতি যত।
তাদের বিক্রম প্রাণ.কব আর কত?॥

মদ(৩), মান১, অহস্কার২, দস্ত৩, আদি বীর।
ইহারাই বিপক্ষেরে, করিবে অন্থির॥

সকলে সমরবেশে, যদি দেয় বার।
শম(৪),দম(৫), বিবেকের(৬),রক্ষা নাই আর।
রাজার প্রধান মন্ত্রী, অপ্রশ্ব-সাধন।
তাহার চরণে এসে, লইবে শরণ॥
পেয়ে ভয়, পরাজয়, মানিয়া তথন।
আপনারা, করিবেক, আল্ল-সমর্পণ।।

- (১) আলিঙ্গন—সম্ভোগ অর্থাৎ পরস্পুর অঞ্চে অঙ্গে সংযোগ।
- (২) পরিহাস—ক্রীড়ার অত্রে **তহুপযুক্ত** বাক্য প্রয়োগ।
- (৩) মদ—তিন প্রকার, বিদ্যামদ, ধনমদ, কুলমদ, অর্থাৎ বিদ্যাস্থা, কুল নিমিন্ত মনের মৃত্ততা।
- ১। সান, আনা হইতে <sup>ইউই</sup>কৃষ্ট আর কেহ নাই, এইরূপ বুদ্ধি।
- ২। অহস্কার, আমি জ্ঞানী, আমি স্থরূপ, আমি কুলীন ইত্যাদি রুদ্ধি ।
- ৩। দস্ত, কপট।
  - (8) শম—মনের নিগ্রহ।
  - (c) मम-इेक्सिय़ निश्रह।
  - (%) বিবেক—জগৎ মিথ্যা ব্রহ্ম সত্য এই-রূপ বিবেচনা।

গীত।

রাগিণী বাহার। তাল তিওট।
প্রবল প্রমাদকর, প্রভাব আমার।
পাতিয়া প্রেমের ফাঁদ, মজাব সংসার॥
রতিরস সার-তার, যে পেয়েছে তার তার,
সে কি কভু মানে আর, বিবেক, বিচার। ১
কামিনী কোমল-কান্তি, জগতের করে জান্তি,
কোথা-রবে ক্ষমা(১),শান্তি(২),প্রবোধসঞ্চার ॥২

রুতি।

হে প্রাণবল্পত ! আমি শুনিয়াছি, তোমাদের এবং সেই শম, দম, বি-বেকাদির উৎপত্তি স্থান নাকি একই।

হে প্রাণকান্তে ! হাঁ। বেদান্ত-মতানুসারে আমারদিগের বংশোৎ-পত্তির কথা ব্যক্ত করি, সদয়-মনে শ্রবণ করিয়া বস্তৃতাকে চরিতার্থ কর।

> এই মায়িক কুলার। এ কেবল মনের বিক্সর।

মায়ায়(৩) মণ্ডিত ভব, মায়ায় মোহিত সব, যত কিছু মায়ার ব্যাপার॥ অমায়িক পরমায়া যিনি। মায়ার প্রেরক হন তিনি।

- (১) क्रम जशद्राध महन।
- (২) শান্তি—সর্বত্র সমভাবে স্পৃহানিবৃত্তি।
- (৩) মায়া—সত্ত্ব রজ তমো-গুণযুক্ত জগৎ সৃষ্টি-স্থিতি-সংহারকারিণীশক্তি।

প্রবীণা প্রকৃতি(১) মায়া হোয়ে ঈশ্বরের জ্ঞায়া, প্রতিদিন পতিবিরহিণী॥ গোপনেতে ছজনের বাস। কারো কাছে না হন প্রকাশ।

এক ঘরে একা একা, পরস্পর নাহি দেখা, কেহ কারে না করে সম্ভাষ॥ বেদান্তের মতে এই কয়। মায়াপতি নন মায়াময়॥

যার নামে উপবাস, তার সহ সহবাস, কথনো কি সম্ভাবনা হয় ?॥ জনকসংহিতা-মত-সার। প্রকৃতির উক্তি এ প্রকার॥

"নির্গুণ আমার পতি, আমি সতী গুণবতী, পতি সহ নাহি ব্যবহার॥ হায় হায়, কারে বলি আর। কে জানিবে প্রভাব আমার?।

অরসিক সেই ভর্ত্তা, কেবল নামেতে কর্ত্তা, ক্রিয়া, কর্ম্ম, কিছু নাই তার॥ নির্গুণের কোন কিছু নয়। নিজ্ঞ গুণে করি সমুদয়॥

না লয় আমার নাম, তারে বলে গুণধাম, পোড়া লোকে তার কর্ম কয়॥ আমাতে পতির নাহি গতি। সম্ভোগ না করে কভু রতি॥

পতি-সঙ্গ পরিহরি, এসব প্রস্ব করি, কার্ সাধ্য, কে বলে অসতী॥" প্রকৃতিই সর্ব মূলাধার। প্রকৃতির পদে নমস্কার॥

(১) প্রকৃতি—সত্ত্ব রজ তমে। গুণের সমতা।

প্রকৃতি প্রধানা সতী, শুন রতি রসবতি,
সবিশেষ বলি সমাচার ॥
আত্মার আরোপ সংঘটন।
আসঙ্গের ভাল প্রকরণ॥
সেই মায়া-বিশ্বময়ী, মন নামে বিশ্বজ্বয়ী,
করিলেন সন্তান স্ফলন।।
সে মনের মহিমা অপার।
কীর্ত্তি এই অখিল সংসার।।
নিবৃত্তি, প্রবৃত্তি, নামা, দুই নারী গুণধামা,
করিলেন ছই পরিবার ॥
প্রবৃত্তির আমরা সন্তান।
মহামোহ স্বার প্রধান॥
বিবেকাদি ভাতা-চয়্ম, নিবৃত্তির পুত্র হয়,
কভু তারা নহে বলবান।।

#### রতি

#### স্থরঞ্জিকাচ্ছন্দ।

यमि একের সন্তান, यमि একের সন্তান ।।

এক বংশে. এক অংশে, সবাই প্রধান।।

তবে রাগে কোরে ভর,তবে রাগে কোরে ভর;
তেরে ভেরে দ্বন্দু কোরে, কেন ভাঙো ঘর !॥

ছিছি. কেন ভাঙো ঘর !॥ ২

এ, যে,ছুখের ব্যাপার,এ,যে,ছুখের ব্যাপার।
ঘরে ঘরে, দ্বেষাদ্বেষে, ভাল হয় কার॥

কবে, ভাল হয় কার !! ৩

তবে ঐক্য হোগে রও,তবে ঐক্য হোয়ে রও!

এপ্রকারে, পরস্পারে, নই কেন হও !॥

ছিছি, নই কেন হও !॥ ৪

পঞ্চশর।

#### ত্রিপদী।

(ভাতা আর জ্ঞাতিগণ, লইতে পৈতৃক ধন, সবে করে সমান যতন) যেখানে বিষয় আছে, বিবাদ ডাহার কাছে, আগে যেন করেছে গমন॥ এক বস্তু অভিলাষে, সর্ব্ব-শেষে সর্ব্বনাশে, সমুদায় ছারেখারে যায়। বুঁরু, পাওু, ছই বুল, ' একেবারে হত-মূল, কত রাজা নফ হোলো তায়।। च्रुम, डेशच्रम वीत्र, च्रुक्तश्रमी त्रम्भीत्र, রতি-রস ভোগের কারণ। ছুই ভেয়ে অস্ত্র ধরি, পরস্পর যুদ্ধ করি, উভয়েই তেজিল জীবন্য প্রাণ-প্রিয়ে প্রণয়িনি, শুন শুন বিনোদিনি, বিষয় বিবাদ ছাড়া নয়। প্রামাদের মাতা স্থয়ো, বিমাতা বাপের ছুয়ো, ছয়োপুত্র, প্রিয় কোথা হয় 📜 বাপের আদর তথা, মায়ের আদর গথা, এই कथा मकलाई कग्र। জনকের প্রিয় হই, নিয়ত নিকটে রই, কাজে কাজে স্নেহ স্কৃতিশয়।। পিতার অর্ক্লিত ধন, এই দৈখ ত্রিভূবন আমাদেরি অধিকার সৰ। বিবেকাদি পাপ-স্থত্র, জনকের ত্যাজ্য-পুত্র, সম্পদের কি আছে সম্ভব ?।। দ্বেষপাশে হোয়ে বন্ধি, করিতেছে অভিযন্ধি, সকলেই হয়েছে গোপন। কোনরূপ মন্ত্র ধরি, আমাদের নাশ করি, বধিবেক পিতার জীবন।।

## রতি। शमा।

আহা একি নিদারুণ, ওহে প্রোণনাথ। শুনিয়া তোমার কথা, কাণে দিই হাত॥ কি হয়, কি হয়, নাথ, মনে এই ডর। পাপিদের আচরণে, গায়ে এলো জর॥ উহু উহু, মরি মরি, কাঁপিছে হৃদয়। হায় হায় হায় ! তারা, এমন্ নিদয় া এমন্ নিষ্ঠুর আর, নাহি ত্রিভূবনে। পিতৃ-হত্যা, জ্ঞাতি-হত্যা, করিবে কেমনে?॥ বিমন করেছে আশা, ফল তার পাবে। ভূগিতে পাপের ভোগ, অধঃপাতে যাবে॥ জীয়ন্তে নরক-ভোগ, হবে সর্বানাশ। মুখে হবে কুড়িকু ঠি, বুকে যাবে বাঁশু বিপক্ষের আশা যদি, এরূপ প্রকার। বল বল বল বঁধু, উপায় কি তার 🗐

## মুখামুখী হইয়া উভয়ের কথোপকথন -

(প্রথম চরণে কামের উক্তি) (দ্বিতীয় চরণে রতির উক্তি)

#### शमा।

[কা] ইহার নিগৃত প্রাণ, বীজ এক আছে। [র] গোপন করিছ কেন, অধীনীর কাছে?॥ [কা] নারী**ফাতি স্বভাবত**, ভয়শীলা হয়। [র] আমিতো ডেমন্ নই, কেন কর ভয়?॥ [का] প্রকাশ হইলে বীজ, মনদ পাছে ঘটে। [বু] আমি তবে অবিশ্বাসী, বটে প্রাণ বটে? ॥ [কা] তা নয়, তা নয় ধনি, তা নয়, তা নয়। [র] তাই বটে, তাই বটে, ক্লেনেছি নিশ্চয়॥

[কা] দিব্বি-কোরে বলি তুরে, গ্রায়ে দিয়ে হাত র] আহা মরি, কত রঙ্গ, জান প্রাণনাথ 🖟 [কা] সেতো প্রাণ বলিবার, সময় এ নয়। [র] জানিলাম প্রাণ তুমি, বড়ই নিদয়॥ [কা] কেন কর প্রাণপ্রিয়ে, এত অভি**মান** ?। [র] জানা গেল তুমি যত, ভালবাদো প্রাণ॥ [কা] এতই ব্যাকুল কেন, শুনিতে বচন?। 'র] করিছে আমার প্রাণ, কেমন্ কেমন্॥🏏 [কা] এই কথা নিয়ে যেন, নাহি হয় গোল। [র] আমি বুঝি দেশে দেশে মেরেথাকি ঢোল? [কা] নারীলোক পেটে কথা, রাখিতে না পারে ্র বৈ হয় তেমন্ মেযে, মানাকর ভারে॥ [ক¹] রমণীকে বলা নয়, নীতিশাস্ত্রে কয় I [র] তবে বুঝি, তুমি তুমি, তুমি আমি, নয়? 🛭 [কা] তুমি আমি, আমি তুমি, তাহে কি সংশয় ্র ] মুখে বল, তুমি আমি, কাজে তাহা নয়॥ [কা] সেরপ কখনো নয়, আমার প্রকৃতি। [র] তবে কেন ভেদ কর, পুরুষ প্রকৃতি ?॥ [কা] কিছুমাত্র ভেদ নাই, আমার অন্তরে। [র] তবে কেন ভেদ-কথা, রাখিছ অন্তরে?॥ [কা] বলি বলি, করি প্রাণ, নাহি ফোটে মুখ। [ द्र ] वल वल, मा विलटल, टक्ट योग्न वुक ॥ मीनदक्षु।

পয়ার।

এই মাত্ৰ জনরৰ, আছে স্থরূপসি। आभारमत कूटन এक, अजिर ताक्मी॥ "বিদ্যা(১)" নামে, সে পিচাশী, কুলসংহারিণী জন্মশতে হবে বড়. প্রমাদকারিণী॥

(১) বিদ্যা-সংসার বিমোচনকারিণী অথগ্র-কারাকারিত চিত্তবৃত্তি।

কলে কিছু ভয় নাই, বিপদ রবেনা।
ভাকিনীর জন্ম কভু. হবেনা হবেনা॥
কেমনে বিপক্ষগণ, হইবে প্রবল?।
হতভাগাদের সৈটা, হরাশা কেবল॥

#### রতি।

## মোহিনীছক।

হা-ধিক্, হা-ধিক্, ধিক্, ধিক্ থাক্ তারে হে।
ধিক্ ধিক্ ধিক্, সে, বিবেক, ছরাচারে হে॥
সে রাক্ষদী, জন্ম লবে, কিরপে প্রকারে হে?।
মেয়ে হোয়ে, কেমনেতে, সকুল সংহারে হে?
গুমা, গুমা, কোখা যাব, কব আর কারে হে?
গুমন্ নিদয় কর্মা, করিতে কি পারে হে?॥
আঙুল মট্কিয়া আমি, শাঁপ দিই ভারে হে।
গর্ভপাত হোয়ে সেটা, যাক্ ছারেখারে হে॥
যম এসে, ঘাড়-ভেঙে, থাক্ তার মারে হে।
প্রসব করিতে যেন, কখনো না পারে হে॥

## উন্মাদিনীচ্ছন্দ।

বুক্ ফেটে, রক্ত উঠে, মরুক্ মরুক্ মরুক্।
মুখে, রক্ত উঠে মরুক্।
এখনিই, ওলাউঠা, ধরুক্, ধরুক্, ধরুক্।
এদে, ওলাউঠা ধরুক্।
মাগিনের, হাত্থেকে, খাৰু, সরুক্, সরুক্।
শাকা, খাড়ু, সরুক্ সরুক্।
আলোচাল্, খেয়ে তারা, ঠেটি পরুক্, পরুক্।
তারা, ঠেটি পরুক্, পরুক্।
চিরকাল, ঘেষহরে, জরুক্, জরুক্।
হারে, জরুক্, জরুক্, জরুক্।
হাড়ে মাটি, যাডে ছুমো, ভিটে খুখু চরুক্।
ভিট্টে খুখু চরুক্।

## কাম। পয়ার।

প্রজাপতি বলেছেন, এরপে বচন।
অনথের মূল সেই, বিবেক রাজন॥
উপনিষদের(১) সহ, করিবে বিহার।
জনিবে তাহার গর্ভে, কুমারী, কুমার॥
কুলের নাশক তারা, শুনহ প্রেয়দ।
তাই, বুন. ছটো হবে, রাক্ষদ, রাক্ষদী॥
প্রবেধি নামেতে ছেলে, বিদ্যা নামে মেয়ে।
ফেলিবে ছুজন তারা, ছুই কুল থেয়ে॥
প্রবৃত্তির, নিবৃত্তির, না রাখিবে প্রাণ।
ভক্ষণ করিবে ধোরে, ছয়ের সন্তান॥
পিশাচ, পিশাচী, ছটো সকলি খাইবে।
আপনার পিতৃক্লে, কারে না রাখিবে॥
না রহিবে, পিও দিতে, বংশে কোন জন।
আমাদের শোকে শেষ, মরিবেন মন॥

রতি। গীত।

রাগিণী সুহিনী। তাল কাওয়াল।

মরি মরি, ওহে বঁধু, রাথো রাথো প্রাণ হে
অভেদে আপন দেহে, দেহুদ্দেহ স্থান হে॥
কলেবর জরজর, ভয়ে কাঁপে থর থর
ওহে মর, ধর ধর, কর কর তাণ হে।

বিষাদে মনের ছথে, অনল জলিছে বুকে,
কথা নাহি স্বরে মুখে, গেল গেল প্রাণ হে॥

(জালিঞ্চন দানে অমনি মুক্তা।)

(১) ज्रक्ककारनंत्र कांत्रण रवमञाग ।

# মীনকেতু। ক্রোড়ে করিয়া গাঢরুপে মুখচুম্বন করিতে করিতে চেতন প্রদান। গীত।

রাগিণী বাহার। তাল কপক।
ভেবনা ভেবনা প্রিয়ে, ভেবনাকে: আর।
কথনো কি হোতে পারে, প্রবাধ প্রভার ।
আমাদের সিদ্ধ-বিদ্যা, বিদ্যমানে এ অবিদ্যা(১)
প্রকাশ করিবে বিদ্যা, হেন বিদ্যা কার ? ১
কেবা আছে মম সম, কোথা সেই দম শম,
কোথা সে নিয়ম, যম, যম আমি যার॥ ২
প্রাণধন তুমি ধনি, তুমি-ধনে আমি ধনি,
আমি ফবি তুমি মণি, তুমণ আমার॥ ৩
বতি।

হে নাথ! আমার ধর, আমার ধর। আমার প্রাণ কেমন্ কেমন্ করিতেছে। আমার মনের(২) ভিতর আর মন নাই, বুকের ভিতরটা ধুক্ পুক্ করিতেছে। সেই বিপক্ষ শমদম প্রভৃতির কি কাগুজ্ঞান মাত্রই নাই! আপনারদিগের হিতাহিত কি কিছুই বিবেচনা করে না? কি পাপ! কি পাপ! কি ভয়ানক! এত হিংসা? এত ছেম্ব থত রাগ? আমারদিগের অনিন্টের নিমিত্ত

আপনার। জীবনাস্ত-যজ্ঞের সঞ্জপ করিয়াছে? হে প্রভো! ইহার কারণ কি? আমায় ধর, আমায় ধর।

#### गग्रथ ।

#### श्रभानक्षा।

কি কহিব আরু, খ্রিয়ে, কি কহিব আর ?। হীন ছুরাচার, তারা, হীন ছুরাচার॥ यमािश ना नी ह इरव, निक निक नाम मरव, বল ধনি কেন তবে, করিবে স্বীকার ?। স্বভাবে অভাব, সদা, স্বভাবে অভাব। খলের সভাব, এই, খলের সভাব॥ কিচ্বুতেই নহে প্রীত, নাহি বুঝে হিতাহিত, হিতে করি বিপরীত, প্রকাশে প্রভাব॥ পূমের ব্যাপার, দেখ, ধ্যের ব্যাপার। মলিন আকার, ধরি, মলিন আকার॥ ঘন হোয়ে বৃত্তি করে, জনকের প্রাণ হরে, আপনারে পরে করে, আপনি সংহার॥ विया विदाश, मना विषय विदाश। ভোগে পাপ-ভাগ,ছুৰখ ভোগে পাপ-ভাগ॥ गश्य मन्भान-शीन, विविधन অতি দীन, নাহি হয় এক দিন, স্তথে অন্তরাগ॥

[ এই কথা শ্রবণ মাত্রেই নেপথা হইতে বিবেক প্রকোপবচনে ]

অরে-ও মৃঢ়-অবর্মচুড় পাপারত!
গৃঢ় মর্মানা জানিয়া কেবল রুঢ় কথা
কহিতেছিস্। অরে-ও ব্যলীক, এই
অলীক ঐক্রজালিক বিষয়াসবে আসক্ত হইয়া কেবল সকলকে ছলিতে-

<sup>(</sup>১) অবিদ্যা—মূলাজ্ঞান অর্থাৎ যাহা হইতে জীবের সংসার হয়, তমোরজ প্রধানা শ ক্রি বিশেষ।

<sup>(</sup>२) यन-श्रमग्र।

ছিস্। হাঁরে—কদাচারি অবিচারি অনর্থকারি ঘোর-বিকারি ৷ আমরা পাপকারি ? পাপাচারি ? ও গুরাত্মা, হিত কথা শোন্, পূর্বতন সনাতন শাস্ত্রবিশারদ পণ্ডিতদিগের উক্তি।"গুৰু যদি কাৰ্যনকাৰ্য্যন্যায়া-ন্যায্য বিবেচনাবিহীন হন, তবে তৎ-ক্ষণাৎ ভাঁহাকে পরিত্যাগ করিবে" আমারদিগের পিত; "মন(১)" অতি তত্ত্তান-খূন্য, অহস্কারের অবীন হইয়া জগতের পতি আত্মাকে বদ্ধ করিয়াছেন, ভোদের জ্যেষ্ঠ ছুরাত্মা মহামোহ সেই বন্ধনকে পুনঃ পুন: দুড় করিতেছে, আমরা তাহা ছেদন করিয়া তোদের সর্ব্দ গর্ব্দ থর্ক করিব।

কামদেব।

চতুর্দিক নিরীক্ষণ করিয়া। হে কান্তে!

#### প্রার ৷

চেয়ে দেখ, টাদমুখি, বিনোদিনি রতি। আমাদের দাদা ওই, বিবেক ভূপতি॥ বামভাগে দেখ ওই, মলিনা যুবতী। দাদার গৃহিণী উনি, বড়বউ মতি॥ উভয়ের এক দশা, অতিশয় ক্ষীণ। বেন অতি দীন হীন, এমনি মালন #

তুষারে তুয়ারকর, কান্ত যে প্রকার। নিজকান্তা কাব্রি সহ, করেন বিহার॥ সেইরূপ শোভাহীন, বিপক্ষ দন্সতি। ধন, মান,হারা হোয়ে, ফিরেছে সম্প্রতি॥ এ প্রকার কদাকার, চেনা ভার দেখে। ভূগিছে পাপের ভোগ, শিথিলনা ঠেকে॥ मत कर्म (मरथ (मरथ, तुष्क्रिमान रगरे। टिएक म्पटक (महे कान, तुष्कि यात महे॥ ঠেকে, দেখে কিছুতেই, নাহি শেখে যেই। নিতান্ত জানিবে ধনি, হতভাগা সেই॥ যাহোক্ তাহোক্ 2 য়ে, কহিলাম নার্। এখানেতে থাকা নয়, থাকা নয় আব। মোহিত হয়েছে মন, মহামোহ মোহে। নুই অঙ্গে এক হোয়ে, যাই চল দোঁহে॥ ( ভদনন্তর কাম এবং র**তি রঙ্গভূমি** 

হইতে প্রস্থান করিলেন।)

বিবেক এবং মতির রহাভূমি আগমন। বিবেক(১)।

## পরমেশরের প্রতি গীত।

कि इरत कि इरत ज्राया कि इरत आभात रह ।। কত দিনে পাব আনি, এবোধ-কুমার ছে !॥

## धृया ।

এসে এই মায়াপুরে, অন্ধকারে মরি ঘূরে. এখনো গেলনা দুরে, ত্রিতাপ-আঁধার হে। বৃথা-স্থুখ পরিহরি, গদগদ-ভাব ধরি, রসনায় হরি হরি, কবে কৰে আর হে?॥

<sup>(</sup>১) বিবেক—জগৎ মিথ্যা, ব্ৰহ্মই সত্য এই-রূপ বিবেচনা।

(গুণাতীত গুণধাম, তুমি নাথ দাতারাম, मीन मग्रायग्र नामः শুনেছি তোমার হে) জানারণ অমুদিত, হদিপদ্ম অমুদিত **जािंग्राम् आकाि कि.** निथित मः मात्र हि॥ মনের বিষম রোগ, না হয় যোগের যোগ, বিষয়-বিকার হে। কেবল করিছে ভোগ, নিকট হতেছে কাল, বিফলে বিগত কাল, न। इहेल ऋगकाल, স্থার সঞ্জ হে॥ মায়ামদে হোয়ে প্রীত, ঘটাতেছে বিপরীত, কেহ আর হিতাহিত করেনা বিচার হে॥ **মেক্সন** যে ভাবে ভাবে, স্বভাব না পায় ভাবে, ভাবিতে ভাবিতে ভাবে, ভাবনা অপার হে॥ ভ্ৰমিলে ভাবনা-পথে, স্বরূপ স্বভাব-মতে, সকলি অসার হে। দেখা যায় এ জগতে, ভূতময় যত হয়, কিছু তার সার নয়, সদানন্দ শিবময়, তুমি নাত্র সার হে॥ কেহ নাই তব সম, প্রাণাধিক প্রিয়তম, করহ বিহার হে। ग|नम-मन्दिद गग, বিরূপ কি রূপ রূপ, সবে ভাবে অপরপ, ধর একবার হে॥ স্থ্যমে হরপ রপ, মনোময় রূপ দেখে, অন্তরে রাথিব লেখে, নির ৬র ঢেকে রেখে, নয়নের দার হে। নিরাকার নিরাময়, সকলে তোমায় কয়, আমি দেখি মনোময়, ভোমার অংকার হে॥ দেখিতেছি যত রূপ, কতরূপ কত রূপ, তাবতেই তব রূপ, রয়েছে প্রচার হে। দেখে এই ভবরূপ, না দেখে যে তব রূপ, হায় একি অপরূপ, বুথা জন্ম তার হে॥ অচল সচল চয়, রূপ-শোভা যত হয়, नकटलित मग्रामग्र, তুমি মূলাধার হে। তোমার বিভাস তায়, যদি না প্রকাশ পায়, धरक धरक श्रम्भाः, হয় অন্ধক¦র হে॥

क्तिमन मदनद जूल, जीव मद द्वादि इ.त. বোধ আছে কার হে !। ভবমূল তব মূল, না চিনিয়া আপনায়, তোমায় চিনিতে চায়, ়সাঁতারে কি হওয়া যায়,পারাবার পার **হে** ।। মিহে ভার ধরিলাম, মিত্ে কাল হরিলাম, নিজ উপকার হে। কিছুই না করিলা**ম**, ভয়ানক পরকোধ, অমুরোধ উপরোধ, হইল এবার হে॥ তাহে জনমের শোধ, (আনি দ্বিজ,আনি মুচি,আমি পাপী,আমি শুচি,) এ অরুচি এই রুচি, দেশ-ব্যবহার হে 🏎 সময় হইল গত, মতে মতে দিয়া মত, আর দেশাচার হে?॥ এখন রাখিব কত, কেবা বিপ্র, কেবা মুচি, কে অশুচি-কেবা শুচি, দেখিতেছি মিছামিছি, এ সব ব্যাপার হে। বৃথা করি পরিশ্রম, তোমার কুপার ক্রম, বিনা এই ঘোর ভ্রম, হবেনা সংহার হে। অবিশার ঘোর জোর, রজনী না হয় ভোর, কেবল করিছে শোর, চোর অহঙ্কার হে। যত দিন শত্ৰু সবে, প্রবল হইয়া রবে, তত দিন এই ভবে, না দেখি নিস্তার হে॥ বপুরাসে রিপু-দল, প্রকাশ করিছে বল, ক্রমে সেই দল বল, হতেছে বিস্তার হে। থাকিতে সহজ সোঝা, না হইল সার বোঝা, ক্রমেই ভ্রমের বোঝা, হইতেছে ভার হে॥ এ ভার বিষম ভারি, আমি নিজে নই ভারি, এ নহে তোমায় ভারি, হর এই ভার হে। ভারি হোয়ে ভার ধর, ভারি ভার হর হর, কুপাকর কর কর. আশার স্থসার হে। দয়াকর দথারাশি, ञिवाशित वल नामि। कक़क देववां का जानि, দেহ অধিকার হে। এরপ হটলে তবে, আর কি ছেভয় রবে, শग, দম, সবে হবে, অমুচর তার হে ॥

প্রবোধের অবয়ব, হেরে হোয়ে পরাভব, ছেড়ে যাবে শত্ৰু সব, মনের আগার হে। রাগ, দ্বেষ, নাহি রবে, আমার মানস তবে, সহজে পবিত্র হবে, হবে পরিষ্কার হে॥ **ट्टेंटन** मंद्यात जय, मभुनय निवमय, বিপক্ষের যত ভয়, হবে ছারখার হে। |আমায় দেখিয়া দীন, এমন স্থাদিন দিন, তবে জানি ভক্তাধীন, করুণা অপার হে॥ গত যত হয় ভাবি, ততই ভাবেতে ভাবি, ভোমার ভাবের ভাবি, হব কবে আর হে 🗀 গুপ্ত কথা নাহি কোয়ে,হাসিতেছ গুপ্ত রোয়ে, আমি কেন গুপ্ত হোয়ে, ভুগি কারাগার হে।। তুমি নাথ আত্মারাম, গুনাতীত গুণধান, সাধে কি তোমার নাম, করিয়াছি সার হে। कि कतिय नांग निया, पुषित्नना थांग निया, নামে ধামে এক করা, বিহিত বিচার হে। विद्वा ख्रथानग्र, ক্রিয়া সব শুউময়, ঈশর তোমার হে॥ मक्टलरे (यन कग्न, গীত।

রাগিণী বাগেশ্রী। তাল ধামাল।
কি কর অবাধ মন, লছ স্মবিধান।
আত্মানদী, জ্ঞাননীরে, স্থথে কর স্থান॥
কি কহিব শোভা তার, করুণা-তরফ-হার,
শীলতা হোয়েছে যার, স্মচারু সোপান॥
অস্তরা।

বিষয় সলিলে মন, কেন কর নিনজন, ইংৰ-পাপ-ছতাশন, বাড়ব সমান। স্পর্শমাত্রে জ্ঞান-জল, হবে তুমি স্থশীতল, যাবে তৃষ্ণা, ক্ষানল, পাবে পরিত্রাণ॥১

> সভাগণের প্রতি। হে মনুষ্য সকল! উপদেশ ধর,

কুসঙ্গ পরিহার কর, সাধুসঙ্গে পরম-সুথে কাল হর, সভ্যের কাননে চর, বৈরাগ্যের বস্ত্র পর, পরমেশ্বরকে ন্মর, মানব-জন্ম সফল কর ) আর কেন ভাত হও ? ভাত হও ? শান্ত হও, শান্ত হও। বিষয়ালাপে কান্ত হও, ক্ষান্ত হও। সত্যের অধীন হও। অধীন হও। সত্যের শরণ লও, শরুণ সত্যের ভার মাথায় বঙ, মাথায় বও। সদা সত্য কথা কও, সত্য কথা কও। সত্যসাগরে ভূবে রও, ডুবে রও। সদা সত্য কথা বল, সদা সত্য-পথে চল, নিথ্যা কথা কেন বল ? মিথ্যা-পথে কেন চল ! মিখ্যা-মতে কেন ঢল? মিখ্যা-রুসে কেন গল ? মিথ্যা-ছলে কেন ছল ? মিখ্যা-या किन हेल ?।

## স্থাতরঙ্গিণীচ্ছন।

কিছু, ভাবনা মনে মনে, দেখনা ক্ষণে ক্ষণে,
দিন দিন, হোতেছে দিনান্ত।
গভ, হোতেছে যত দিন, হোতেছ তত দীন,
দিন পেয়ে, ধরিবে কৃতান্ত॥
গিছে, প্রবৃত্তি পরিহর, নিবৃত্তি-কর ধর,
প্রেমরসে, স্থির কর স্বাস্ত।
কেন, অনিত্য ভব-ঘূরে, হোতেছ ভবঘূরে,
ভবঘোরে, কেন হও আন্ত?॥
হোয়ে, প্রমত্ত ভ্রমদদে, ভ্রমিয়া পদে পদে,
চারিদিকে দেখিতেছ ধ্বাস্ত।

দেহ, পতন নাহি হবে, রতন সম রবে,
মনে বুঝি, জেনেছ নিতান্ত।
এই, প্রবল রিপু-দল, সবল হোয়ে দল,
বল করি, নিজে হও শান্ত।
মিছে, আলস্য পরিহর, পবিত্র-ভাব ধর,
ভাবভরে, ভাব ভবকান্ত।

মভি(১)।

পরমেশ্বরের প্রতি। গীত।

রাগিণী খামাজ। তাল আড়া। কেহ নাহি আর, ভবে কেহ নাহি আর। সর্কগত তুমি বিভু, তুমি সর্বা সার ॥ 🗡 /কোথা হে করুণাকর, কাতরে করুণা কর, করুণা-অপার কুপাময় নাম ধর, ष्ट्रश्नानत्त अना खिल, कांत्र वरल इव वली, ভোষা বিনা কারে বলি,কে আছে আমার !॥ ভবক্ষা করে কৃশ, করতে পরন-ঈশ, বিষয়-বাসনা-বিষ, বারিনিধি পার। জগতের পাপ হর, হ্রহর তাপ হর, তবে বুঝি মহেশ্বর, মহিমা অপার্ 🛚 ২ কেমনেতে স্থির থাকি,মনেরে বুঝায়ে রাখি, य पिरा कितारे चौथि, पिथि अक्षकात । হাদয়-আকাশে আসি, রবি ছবি ভাস ভাসি, অজ্ঞান-তিমির রাশি, করহ সংহার ॥ ৩

(১) মতি—শুদ্ধ সত্বগুণযুক্তা বুদ্ধি। বাহার এক্লপ বুদ্ধি তাহার মনে বিবেকের উদয় সহ-ক্লেই হয়। একারণ বিবেক ও মতি পরস্পার স্ত্রী-পুরুষ-ভাব, স্মৃতরাং একের অভাবে একের অবস্থান হইতে পারেনা। বিবেক ধাকিলেই মতি থাকিবে, মতি থাকিলেই বিবেক থাকিবে।

এই দেখি এই সব, পরে এই সব শব, বুঝিতে না পারি তব, এ ভব ব্যাপার। ভ্রম যেন নাহি হয়, মোহ যেন নাহি রয়, **गाग्राव-विकात ॥ 8** দূর কর সমুদয়, निक (पर (पर्थ षृत, भरतत रहेन जून, নাহি ভাবে সর্বাসূল, তুমি মূলাধার। আত্মভাব রেখে দূরে,না গিয়ে সড়োষপুরে, কামনাকাননে ঘূরে, করে হাহাকার I ¢ প্রকাশিয়া নিজ স্নেহ, অধিকার করি দেহ, মনেরে প্রবোধ দেহ, এসে একবার। পেলে তব শ্রীচরণ, মোহিত হইবে মন, আশারোগ নিবারণ, তবে হবে তার॥ ७ मत्तर् विद्रांक कद्र, मत्तर मालिना रहा, বিভব তোমার। এই মন কলেবর, স্থরূপ স্বভাব ধরি, দরশন দেহ হরি, জনম সফল করি, হেরে সে আকার॥ ৭ তব্রূপ ধ্য নে ধরি, জ্ঞানেতে তোমার শ্বরি, আর যেন নাহি করি, আমার আমার, অসার সংসার এই, সার ইথে কিছু নেই, মন যেন ভাবে এই, তুমি মাত্র সার॥ ৮

> সভ্যগণের প্রতি। গীত।

রাগিণী বেহাগ। তাল আড়া।

এই আছে, এই নাই, এইতো শরীর। তবে কিনে এ জীবনে, জ্বানিয়াছ স্থির?॥ দেহেতে লাবণ্য শোভা,ক্ষণমাত্র মনোলোভা,

যেমন কমলদলে, চলচঙ্গ নীর॥১ জ্বলে দেখ বিষ যত, দেহে প্রাণ সেই মত, আকাশে প্রকাশে প্রভা, যেমন অচির॥২ অনিত্য বিষয়াসবে, মন্ত হও কেন সবে, সত্য-স্থা পান কর, হোয়ে অতি ধীর॥ ৩

### বিবেক।

#### ৰক্তা।

ছুরাচার কন্দর্পের কি দর্প ?
সর্প কপে ফোঁস ফাঁস পূর্ব্বক তর্জন
গর্জন করিতেছে, এই সর্প কিসের
মূল ? বিষের মূল, মহান্ধ মহামোহ
জানেনা, যে, আমি ঈশের মূল টানিয়া তাহার প্রেরিত কুটল কুর
কন্দর্প সর্পের সকল দর্প এথনিই চুর্ণ
করিব।

# মালতীলতাচ্ছন্দ।

প্রিয়ে, শুন্লে, তো, শুন্লে, তো শুন্লে।

হ্যাদে বটু, পাপে পটু, কত কটু, বল্ছে।
কি বল্ছে, কি বল্ছে, কি বল্ছে॥
অনাচারে. একেবারে, অহঙ্কারে, অল্ছে।
ঐ জল্ছে, ঐ জল্ছে, ঐ জল্ছে॥
অমৃতাবে, বুঝি তাবে, নিজতাবে, চল্ছে।
ঐ চল্ছে, ঐ চল্ছে, ঐ চল্ছে।
ঐ টলছে, ঐ টল্ছে, ঐ টল্ছে॥
মিথ্যা-রঝে.মিথ্যা-পথে.মিথ্যা-মতে চল্ছে।
ঐ চল্ছে, ঐ চল্ছে, ঐ চল্ছে॥
মেহ-ধদ্ধে, দেহ-বদ্ধে, চিদানন্দে, চল্ছে।
ঐ হলছে, ঐ ছল্ছে, ঐ ছল্ছে॥
জায়া-বশে, এনে দশে, মায়ারনে, গল্ছে।

ঐ গল্ছে, ঐ গল্ছে, ঐ গল্ছে।
ফানেনা, যে, সভ্যভক্ল, গোপনেভে, ফল্ছে।
ঐ ফল্ছে, ঐ ফল্ছে।
প্রিয়ে, দেখ্লে, ভো, দেখ্লে, ভো,
দেখ্লে।

হ্যাদে ব ু (১), পাপে প চু, কত ক চু, বল্ছে।

কি বল্ছে কি বল্ছে, কি বল্ছে॥
প্রিয়ে, শুন্লে, তো, শুন্লে, তো,
শুন্লে।

#### মৃতি।

হে নাথ! কন্দর্পের দর্প। ও কি-সের দর্প। ও কীশের দর্প, ছি ছি, ও কথায় কর্ণপাত করা উচিত হয় না।

# বক্তা।

# **ह**शनामानाष्ट्रसः।

সধাহে, পাপি বটু কথা কটু, বলেতো, বলুক্, বলুক্, বলুক্ যভ, বল্তে পারে। বল্তে পারে।

যাবেহে, ছারেথারে, অহস্কারে, জলেতো, জলুক্ জলুক্ জলুক্ যত, জল্তে পারে। জল্তে পারে॥

স্বভাবে, তত্ত্ব-ভুলে, মত্ত হোয়ে, ঢলেতো, চলুক্ চলুক্ চলুক্, যত, চল্তে পারে। চল্তে পারে।

<sup>(</sup>১) বটু।—বিপ্রনন্দন। ব্রক্ষচারী এবং বা-লক, এই স্থলে বালক শন্দ হুইবে।

সথাকে, অভিমানে, সুরাপানে, টলেতো, টলুক্, টলুক্, টলুক্, যত, টল্তে পারে। টল্তে পারে॥

পাতকী, ইচ্ছামতে, ভাত্তিপথে, চলেতো, চলুক্, চলুক্, চলুক্, যত, চলতে পারে।
চলতে পারে।

থ্সে এ, ধরাতলে, মিছে ছলে, ছলেতো। ছলুক্, ছলুক্ ছলুক্, যত, ছল্তে পারে। ছল্তে পারে॥

নাগিনী, রতিবশে, মোহরসে, গলেতো, গলুক্ গলুক্, গলুক্, যত, গল্তে পারে। গল্তে পারে।

পাবেছে, প্রতিফল, কর্মফল, ফলেতো, ফলুক্, ফলুক, ফলুক্, যত, ফল্তে পারে। ফলতে পারে॥

### বিবেক।

হে প্রেমমায়, প্রাণাধিকে! কি
আশ্চর্য্য, কি আশ্চর্য্য!
এমন আশ্চর্য্য কথাও কি কোথা কেউ
শুনিয়াছে? দান্তিক ছুরাআদিগের কি
ভয়ন্তর ভাবের ভিঞ্চ? কি আস্পর্দ্ধা?
কি বিপরীত উক্তি? আহা! ছুরাচার
অহঙ্কারাদি আপনারাই পাশ-ক্রপি
হইয়া নির্কিকার—নির্কিহার—নিরাধার—নিরাকার—নিত্য-নিরঞ্জন—নিখিলরঞ্জন—নিরাময় বিশুদ্ধ—বিশ্বপত্তি—চিদানন্দময়—পরম-পরাৎপর –পরমাত্মাকে দৃঢ্-বন্ধন করত

আপনারদিগের অধীন করিয়া দিন
দিন দীনদশায় মলিন করিতেছে,
ইহাতেও ঐ ছর্জ্জনেরা আপনাদিগ্যে
পুণাত্মা বলিয়া শ্লাঘা করে? আমরা
দেই গুণ ছেদন করিয়া নিগুণকে
নিগুণ করণে উদ্যত হওয়াতেই
পাপাত্মা হইলাম? কি চমৎকার!
কি চমৎকার! নিরায়ণ, নারায়ণ,
হরিবোল হরি। হরেরাম,হরেরাম।
হা ঈশ্বর! হা ঈশ্বর! হা ধর্ম!
হা ধর্ম! গুরুহে নিস্তার কর! নিস্তার
কর। হে প্রিয়ে! যদি ইহার উচিত
প্রতীকার করিতে পারি, তবেই
কর্ম, তবেই ধর্মা, তবেই জন্ম দফল
হইবে।

#### মতি।

হে কুলেশ্বর সুশান্ত! জীবনকান্ত।
শান্ত হও,কটুভাষি কুকর্মান্থিত,কদাশার কুটিল কদম্বের কটুকথার কি হয়?
দান্তিকদিগের দম্ভই বল, মিথ্যাবাদির
মিথ্যাই বল, এবং ধূর্ত্ত্ব, শাঠ, বাচালবর্গের বাক্জাল ভিন্ন অন্য বল আর
কিছুই নাই।

### পয়ার।

জ্ঞানহীন মূঢ় যেই, মোন বল তার। তন্ধরের বল শুধু, মিথ্যা-ব্যবহার॥ ভূপতি তাহার বল, অবল যে জন।

বালকের বল হয়, কেবল রোদন॥ ভিক্ষের ভিক্ষা বল, প্রাণের সম্বল। অস্ত্র অার যুদ্ধ হয়, ক্ষত্রিয়ের বল।। ব্যাপার তাহার বল, বৈশ্য যেই জন। শুদ্রের কেবল বল, ব্রাহ্মণ-সেবন॥ हिश्मा विना हिश्मटक्द्र, अना नाहे वल। নিন্দকের বল শুধু, নিন্দা আর ছল॥ भीन, भगा, मभूरा दे वेल इस कल। তরুদের বল শুধু, ফুল আর ফল॥ শশী আর তপনের, বল হয় কর। দিবভার বল শুধু, শাঁপ আর বর॥ গহত্তের ধর্মা-বল, স্তাবকের স্তব। শুচির অ্থাণ বল, ধনির বিভব॥ যিনি হন ব্রহ্মচারী, ব্রহ্ম-বল তাঁর। যতিদের বল হয়, সদা সদাচার॥ তারা ধরে পুণাবল, পুণাশীল যত। পাপ হয় বল তার, পাপে যেই রত্য স্থূশীলতা বল তার, গুণি যেই জন। ঋণির কুটিল কথা, এখন তখন॥ সত্য-বল, বল তার, সং যেই হয়। অসভ্যই তার বল, সং যেই নয়। স্থকর্মশালির বল, ধীরতা-সাহস। ম নির কেবল বল, মান আর যশ॥ সম্যাসির ন্যাস বল, যোগিদের যোগ। ভূত্যের ভপাল-দেবা, ভোগিদের ভোগ। সভী-বল পতিসেবা, প্রজা-বল ভূপ। শিষ্য-বল গুরুসেবা, ভেক-বল কুপ 🎚 বিবেক তাহার বল, শান্ত দেই জন। সঞ্যু তাহার বল, অল্ল যার ধন॥ শক্তি বল শাজের, শৈবের শিব-নাম। বৈষ্ণবের বল হরি। রামাতের রাম॥

শান্তিবল বিপ্রের, ব্রাক্ষের উপাসনা। সাধকের বল হয়, কেবল সাধন।॥ ভক্তি বল ভক্তের, অন্যথা নাই তায়। ভক্তাধীন, ভগবান, ভক্তের সহায়॥ রাজার প্রতাপ বল, বলের প্রধান। যাহার অভাবে যায়, রাজ্য আর মান॥ (मर्डे व्राका, भाषित्रत्म, तमी यमि इयु। তার চেয়ে কোন বল, বলবান নয়॥ वल वल, विविक्त, वाशिका हे वल। বিদ্যাবলে বল ধরে, পণ্ডিত সকল ॥ কেশ আর বেশ হয়, বেশ্যাদের বল। বঞ্চনা তাদের বল, যারা হয় খল॥ যুবতী নারীর বস, যৌবন রতন। वाष्ट्रात्वत रल छ्रपू. मूर्थत वहन्॥ দাস্তিকের দস্ত বিনা, বল কিবা আছে। वाककाल, विना गठे, क्याप्तट वाटह ।। বিবেক এবং মতির কথোপকথন। [ এক চরণে প্রশ্ন, এক চরণে উত্তর ] প্রশ্বকারিণী মতি। উত্তরদাত। বিবেক। পয়ার।

म] तल नाथ, এ क्रभटंज, धार्मिक क इयं!।

वि] नर्स-कीरंव प्रधाय, द्र, धार्मिक क इयं॥

म] तल नाथ, ध क्रभटंज, ख्रशी क्रिकें कार्द्रः।

वि] मनरद्रारंभ रद्राभी नयं, ख्रशी विल जारद्रः।

वि] मजारंव महाव याद्रंभ र्थ्यो विल जारद्रः।

वि] मजारंव महाव याद्रंभ र्थ्यो विल जारद्रः।

वि] क्रजारंव महाव याद्रंभ विक विल जारद्रः।

वि] हिजाहिज वाध याद्रंभ विक विल जारद्रः।

वि] विभाग व क्रभटंज, धीद्र विल कार्द्रः।

वि] विभाग र्थं ख्रिद्र थार्क, धीद्र विल जारद्रः।

में विल्व नाथ, लेक भएड. मुथं विल कारत !

वि विक्य-कार्या नरें करत, मुथं विल कारत ॥

म विल नाथ, लेक भएड, थल विल कारत ॥

म विल नाथ, लेक भएड, थल विल कारत ॥

म विल नाथ, लेक भएड, माधु विल कारत ॥

म विल नाथ, लेक भएड, माधु विल कारत ॥

म विल नाथ, लेक भएड, वीव विल कारत ॥

वि विक्र कि स्मार्थ स्मार्थ स्मार्थ, विक्र विल कारत ॥

वि विल्व स्मार्थ स्मार्थ, विक्र विल कारत ॥

वि वामात्र स्मार्थ, स्मार्थ, विक्र विल कारत ॥

म वल नाथ, लेक भएड, विक्र विल कारत ॥

म वल नाथ, लेक भएड, मुक्त विल कारत ॥

(म वल नाथ, लेक भएड, मात्र विल कारत ॥

(म वल नाथ, लेक भएड, मात्र विल कारत ॥

(म वल नाथ, लेक भएड, मात्र विल कारत ॥

(म वल नाथ, लेक भएड, मात्र विल कारत ॥

# বিবেক। ললিত চৌপনীছন্দ!

জাননা কি হবে শেষ, হিত বাক্যে কর ছেষ, मार्व् तह उपदिन, अकि चात्र नाग्रद्य। কার ভাবে ভাব বঞ্চ, পঞ্চারীন হোলে পঞ্চ, তথন এ পর ভঞ্চ । রহিবে কোথায় রে॥ প্রথক উত্তের রাজ্য, কর তায় যত কার্য্য কিছু তার নহে ধার্য্য, স্কলি বুথায় রে। पूरि कीन, त्वाधशीन, श्रञाद्वर मना मीन, বিফলে প্রথের দিন, যায় যায় যায় রে॥ न कदिरल निक कर्च, अभ ताथ धर्चाधर्म्य, न। दुवित्त नात मर्म, शांग्र शांग्र शांग्र दत । ১০ আমার আনি কার,আমার কে আছে আর यङ (मथ वाश्रमात, जन मात्र जा हा दि॥ आशात आशोश कहे, आशात आशीत कहे. আত্মার আত্মীয় নই, আত্ম কট কায় রে ৷ है किय रोहार रम. ्होट यम मिश्र मण. l

পরম পীম্ব রস, স্থেনেই খায় রে 🖈 নিজ নাভি পদ্ম গলে, মুগদ্ৰ ঘোর ঘন্দে, যেমন মনের ধ্রন্দে নার্না দিলে ধার রে। করে রত্ন ভাতে দ্বেষ, সেইরপু অমুদেশ জনিতেছ দেশ দেশ, অব্যেধের প্রায় বে॥ কেনন ভোষার ভাষ, সিহামিছি কেন ভাষ, কৰিছ যে পরিক্রম, ফল নাহি তায় রে। আর কৈন কর হেলা, ভাঙিল দেহের থেলা, অভর্ত্তর এই বেলা, ভ'বছ উপায় রে॥ সিংশাঃ বিস্তার হাট, দেখিতে স্থন্দর ঠাট, লৈট্যার যোর নটে, সদাই নচায় রে।💞 ঠাটনাট বুঝে যারা, নেচে লাহি ছয় সারা, প্রুত্ব নাচায় তারা, পু তুল না চায় রে॥ 🔌 ব্রহ্মাণ্ড যার ভাণ্ড, কে বুঝে তাহার কাণ্ড, হাটেতে ভাঙ্গিয়া ভাগু, কি খেলা খেলায় রে। করিয়া কামনা কল্প, ফাঁদিলে লোভের গল্প, সেই গর নছে ভার, নাহি ভার সায় রে II বার বার ফিরে আসা, আসায় বাড়ায় আশা, বাঁধিলে ভোগের বাসা, কর্মভোগ তার রে। বিষয়ে করিছ ছব্দু, বিয় ভেবে মকরন্দ, দীপধারী নিজে অল্ল. দেখিতে নাপায় রে ৷ না জানিয়া আপনারে, আপন ভাবিছ কারে, জাননা যে এনংসারে, শত্র পায় পায় রে। অভি খল, অবিমল, ् भशायल, दिश्रुमल, দেবে শেষর সাতল, ছল যদি পার রে॥ কার বলে তুমি চল. কার বলে তুমি বল, বিশ্বাস কি আছে বল, থেবের ছাঁয়ায় রে। ना द्रश्टिल निक श्रेटन, पुलिटन अख्डान भटन, উলিলে পালের এদে जुनिल मात्रात्र दर । आमि यादी छाले कहे, ' जुनि डाहा केंद्र कहे, मिछा सिक्टि रहे रहे, मान लारश शांब दह ॥

পায়ের ফালায় ফলি, ডাক্ছেড়ে ডাই বলি বৃদ্ধি ডার লোপ পায়, ধৈর্যা যার জ্ঞান যায়, **ভাই ভেয়ে দলাদ লি, ভোমায় আমায় রে ॥** আমি বলি ঘরে, চল, বনে যাই তুমি বল, শিখালে এমন ছল, বল কে তোমায় রে?। আমার নিকটে বও, আমার বচন লও, নিরুপায় কেন হও, থাকিতে উপায় রে॥ যত্ন করি প্রাণ পণে, সুথ ফল অন্বেষ্ণে, বিষয় বাসনা বনে, জমিচ বৃথায় রে। छग्नामक धरे दन, गद्य नाह्यं लाक करा. कित्त्र याहे उत्त यन, आग्र अप्त आग्र द्वा +

#### মতি।

হে নাথ ! জিক্তাসা করি, আমার मत्मर ज्ञान कत, यिन तिरे जाया স্বয়ং পরমেশ্বর, নিত্য সতা, নির্লেপ, ষাঁহার প্রভাব মাত্রেই এই অথিল-সংসার বিস্তার্রপে প্রচার হইয়া প্রকাশ পাইতেছে, তবে পাপিষ্ঠ কামাদি কি প্রকারে বন্ধ করিয়া তাঁ-शांक भशासाह-मागरत निर्माश করিতেছে !।

# বিবেক। ত্রিপদী

পুরুষ যদ্যপি হয়, ধীর শাস্ত অভিশয়. ना प्रभीन नी जिल्ल পछिछ। যার সম নাহি আরু, ममुमग्र छनाथात्र. निक-अर्व जुवन-विभित्र ! चात्र मन कान हात्म, जनना-हनना-कीत्म, ्रवीत शिया भएंड अक्यात्र।

হয় অতি অনর্থের মূল ! ভিতরের সার যত, একেবারে করে হত, স্থান মূলে কোরে দেয় ভ্রন। অ'পনার মনোমত, বিড়ম্বনা করে কন্ত, কভরূপে প্রমাদ ঘটায় ৷ কিখনো মধুর স্বরে, मन हरत मुक्त करत्, ৰত ছলে, হাসায় কাঁদায় ॥ बाबवधु वक्षनाग्न, কানুকের ঘটে দায়, যে প্ৰকাৰ হয় ব্যতিক্ৰম। মায়াবশে সেইরূপ, হেরিয়া অসৎ রূপ, আত্মার হয়েছে আত্মভ্রম। যেমন সহস্রকর, था छ इब्रामिनक्ब, আচ্চাদিত হন অন্ধকারে। এই আত্মা সেই মত, প্রকাশে প্রভাব হড, জ্যোতিহীন মায়ার বিক'রে॥ यपि जिनि अविनाग, अञ्चार ना श्रा क्रांत्र, তবু দেখ মায়ার কৌশলা यन-क्रथ बद्ध हाँदम, क्लिया नदीव काँदम, किनामस्य करवरक क्थला। যেমন কুমুম জবা, আপন লোহিত প্রভা, क्विक्तित्र्वंकत्त्र विख्त्रन। সেরপ জাপন রুসে, আনিয়া আপন বন্দে, আত্মরূপ করিয়াছে মন॥ মনের নির্মিত হর, नवबात्र कदलवत्र, कुछ्ब छवन धहे बान। 🏲 नर्सनात्र विल गाँद्र, त्रष्ठ छिनि सरकाद्र. এই বাংস করিছেন বাস। थक जन्म गर्काएए, महावना किरम घरहे,

নাহি থাকে শান্তির সঞ্চ ব 🛚 ᢞ

कारिमी कुरक जान, कशहे कहा क काल,

यमि आर्य कर बहे कथा। मर्बराउँ (महे मछ, (नहे कहनर्सर्गड, জলে ছলে সূৰ্য্যছায়া যথা॥ এ সৰ মায়ার খেল', ब छव माग्रांत्र (गर्मा, ভেলা ভেলা মায়ার কৌতুক। পিতামহ আত্মা যার, মন-সুত-অহকার, তার বলে পেতেছেন ছুখ। কল্লনায় যেন স্থূল, (शास्त्र मृत व व कून, অবি-্যা-নিজায় অচেডৰ 1 হায় হায় কৰ কায়, অভিভূগ হোয়ে ডায়, দেখিছেন ক তই স্বপন॥ এই আমি, এই দেহ, এই যে আমার গেহ, এই এই সকলি আমার। **এই পিডা, এই মাডা, এই পুজ্র, এই জাঙা,** এইতে। আমার পরিবার। এই (मन्), धर् अन, এই ভূমি, এই ধন, আমার বান্ধব এই সব। ध मदात्र कडी व्यामि. कूलीन कूलत स्थामी, धटन गांदन आगांत्र भोत्रव । আপনি স্বভাব+ ডিনি, স্বভাবের কর্ত্তা যিনি, ভাঁর এই স্বভাবে অভাব। क्रकृडिव्र (इन क्रम, श्रक्षिव्र कर्व खम, প্রকৃতির প্রাণ সভাব॥ याँत नारे अन्त, वानि, क्रनम, मद्रव अपि, তাঁর হয় যাত্না সঞ্জো। ঘুচাই এসৰ খেদ, দুচ্পাশ করি ছেদ, কি.স তার হইবে স্থযোগ?॥

# মতি। মোহনীজন।

মারা-মাগী, বড় ছাগী, বুঝিলাম প্রাণ হে।
কোরেছে কেমন্দেখ, বিষম বন্ধান হে॥
গোপনে পিশাচী করে: এমন সন্ধান হে।
ভিতরের ভাব তার, না হয় সন্ধান হে॥
মায়ার কি মায়া§ নাই, এমনি পাষাণ হে?।
প্রভিত্র বঞ্চনা করে: বেশার সমান হে॥
কেমনে পাবেন আত্মা, পাশে পরিত্রাণ হেঃ।
কে এসে করিবে ভাঁরে, প্রবোধ প্রদান হেঃ॥
বিবেক।

# লক্ষ্য অসনি অধেবিদ্ন। মতি ।

হে নাথ! এ কি ? এ কি ? এ কি ? অক্সাৎ কেন এমন , হোলে, তো-মার ভাব দেখে কেমন কেমন বোধ হছে। আহা! আহা! প্রসন্ন-বদন কেন বিষণ্ণ হোলো? কেন মুখখানি হেঁট কোরে রাখলে ! কেন হাত-দিয়া চকু ছটি ঢাক্লে? এত লজ্জা কেন? লজ্জা কেন ? বলি, এ কি ? এ কি ?

#### विद्यक ।

বলি এমন কিছু নয়-এমন কিছু
নয়, হরিবোল হার, হরিবোল হার,
আত্মার বজন মেচন! তা হোতে

§ কুপা।

<sup>•</sup> ব্রহানন্দর্গ।

t atel 1 ,

र चलाव।

পাবে হোতে পারে? এনন্ কিছ্নয়, এমন্ কিছ্নয়্হরে রাম-হরে রাম-তা হোতে পারে, তা হোতে পারে।

আরো অধােমুখ।

ম ত।

#### পদা ।

আহা কেন হেঁট লোয়ে, চোখে দিলে হাড।
যেন কত অপরাধ. করিয়াছ নাথ ॥
কাঁচুমাচু মুখখনি, আমা-পানে হৈয়ে।
কথ' যেন কচিতেছ, থাতমত খেয়ে॥
আচমিতে কেন হেন, ভাবের মঞ্চার ?।
কি ভাব. কি ভাব, মনে, দি ভাব তোমার ?॥
বিশেষ নিগৃঢ় ভাব, কি আছে এমন ?।
অধীনী দাসীর কাছে, করিছ গোপন ?॥
অধরে বঞ্চনা কবে, কোরে থাকে হাসি ?॥
সাগরে বঞ্চনা যদি, কেরে থাকে জল।
আবদেরে বঞ্চনা যদি, করে স্থাকল॥
নাসারে বঞ্চনা যদি, কোরে থাকে বাশ।
কোরোনা আনায় তবে, স্বভাব প্রকাশ॥
বিবেক।

তিবে বলি, তবে বলি। তুমি

কিছু জেনন নও, তুমি কিছু তেমন

নঙা তা জানি, তা জানি, তবে বলি,

কিছু বলতে নড় তয় তয় করে।

কিছু বলতে নড় তয় তয় করে।

কিছু বলতে নড় ত্ম কর করে।

কিন্তু বলতে নড় ত্ম কছু তেমন

নঙ, প্রিয়ে বল্পান রড় তম করে, তম

করে কিন্তু না বংলাও নয় তবে বলি।
তবে বলি বলি দেই উপনিষদেশনা
প্রিয়ে ভূমি সামার হৃদ্যের বতন।
তবু সেই উপনিষদেশনী উপনিষ-দেবী।

#### মতি ৷

হে নথে! তে শিরে:ভূগণা বলি এমন কেন কর ? এত ভজ্জাই কেন 🌶 ভোষার ভাষের শিষ্ম কি আছে 🖲 ∦ভুম অঃমঃর ভঠি; সকল বিষয়ের কুৰ্ত্তা, সংক্ষা পন, জোমা জিল্ল এ আ-ধীনীর আর কে আছে ? অঃমি ভো-यात मानीत मानी. का यातक यादा মনে কব ভাছাই ক বৈছে পার। অ'-मात (पर आग् धन मन, नक्लि (काशात बीहतर्ला)) व्यांत ७ श्रकः दत এ छुः थमीरत रक्त साकूल कर. आ-মারে আর কাভর কবা উচিত হয় ন। ভুমি নির্ভয়ে আমার নিক্ট ম-নের গুপ্ত কঞ্চ করে কুল গুরু (क) मात्र मञ्जल करून, मञ्जल চোমার মনোরথ পূর্ণ চোক, পূর্ণ ংহাক্।

#### ित्रक।

তে প্রিয়ে! তুমি য'দ সদয় হৃদ-রে প্রসন্ন চইয়া আমাকে সাহস্প্র-দান করিলে, হবে আমি কুতৃক্রী ∌ইবটু <del>ছট্টুব, তাহাতে সংশয় মাত্ৰই</del> নাই, তবে শুন। প্রফলত তে নিগৃঢ় क्षी विल, অভियान# এवং "क्रेंब : প্রভৃতি দেষ সকল পরিহার পূর্বক यामित्रार् कि अर को ल रेथिया क अ-স্তঃকর্ণের অংসনে স্থান প্রদান কর. জ্বে এখনি চির্বির্হিণী মানিনী উ-পনিষ দিবীর সহিত আমার সজ্ম হয়। সেই সাধী একণে অস্যাতে ব্যাঙ্গনা, অতি তুঃথিনী অনাথার নায় মলিন দশায় কালযাপন করি-তেছেন, ভাঁগার অঙ্গ সঙ্গ মাতেই জাগ্ৰৎ, স্বপ্পু, স্বৃপ্ত এই অবস্থাত্ৰ-য়ের অভাব হেতু প্রবোধচন্দ্র নামক পুত্রের জন্ম লাভ ১ইবে. এ বিষয়ে ভেণুমার স্বণত্নী শান্তি প্রভৃতির বি-শেষ অভিমত আছে, হে প্রিয়ে পাচে তুমি অভিমান কর. ম.ন বে-দনা পাও, এই] আশস্কায় আমি এতকণ্ভীত ছিলাম, লজ্জিত ছি-लाम, के अदिवाधनक श्वन क्रमाद्वत কল্যাণে চির-বিপক্ষ মহামোর ও ভাগার দল বল, অ্ফুচর সংচ্র সক-লকেই সংখার পুর্বক জগতের আমা

দিকর্ত্তা; সর্ববাদী অবিহীর প্রম ব্রহ্ম প্রমান্থাকে বিষয়ানুরগোদি-কপ দৃঢ্রজ্জু বন্ধনের যাতনা হইতে মুক্ত করিতে পারিবই পারিব।

#### মতি।

विल के छा ? विल के छा ं ? विल के छा ? जा शि एक म (साम महे छा ं। विल के छा ? ं एहा थिस, य माती एक एका का ति कि मा कि सी एका का ति कि मा कि सी का मा के मा के से का कि सा कि सी या सिन कि मा के ति का कि सा कि सा कि करता । मह के सी मा धन ने विस्त्र कि सा कि मा कि ने क्रम के मा के से मा के से सा कि सा कि

স্থানির মঙ্গলেই দাসীর মঞ্লু! স্থানির স্থাপই দাসীর সুথ, তুমি যাংশ করিবে আমার হৃদয় তাহাে ই সমুষ্ট ।

# বিবেক ৷

হে প্রিয়ে, যদি অমুকুলা হইয়া অমুম্ভি ক্রিলে, তবে আমি উপনি

<sup>\*</sup> অভিমান,—প্রণয়কোপ

<sup>+</sup> क्रेश-अमहन।

যকেরী অঙ্গাঙ্গ করণ করে। ইন্তি রাদির বশীকরণার্থ প্রথমে শ্মদ্মা-দিকে নিযুক্ত করি।

(এই ৰূপ কংখাপকথোন করিয়া ছই জান রঙ্গভূমি হইতে এত্থান ক-রিলেন।)

প্রথম অন্ত।

বিবেক মহারাজের এই জেপ যু-ভের অনুষ্ঠান এবং সূচনা আবন পুর্বি ক মহারাজ মহামোছ দেশ, কাল, পাত্র-বিচার করত অপক্ষরক্ষণ এবং বিপক্ষ বিনাশন নিমিত্ত দন্তালিকে কার্য্যে উত্তাক্ত করিলেন।

> দন্ত। গীত।

রাগিণী থাষাজ। তাল এক তালা।
আমার তুলনা কি হয়। আমি অতুল্য অজয়
তয়োগুল ত্যোরপী, মম সম নয়॥
সংস্থার করি গর্ম, ইন্সা, চন্দ্র, অভি থর্ম,
তুজ বিদি, হরি শর্ম, আমি সর্মময়॥
আমার সহিত তুলে, তুলনা করিল তুলে,
লঘু হোয়ে রবি, শশী, গগনেতে রয়॥
আরে ও মূড় লোক সকল! তোরা
সকলে আমার চরণতলে প্রণত হ ।
আমি বৈলোধ্য জয় করিরাছি,
আমি সর্মন্তেষ্ঠে। আমার তলা মহা

भूजन जात कहरे नार, (जामान भन्धृति त्व तुः के जिंक श्रृक्षक मक्ष कि शहर किति, मिरे के कि शिविक हरेको

সাক্ষাৎ জগীখার মহারাজ মহা-(माइ এই माळ जामात्क जाकः রিলেন, 'হে প্রাণাধিক দর! বাপু, ভোমার কুশল হোক, কুশল হোক } হিতাহিত বিবেচনা বিহীন ছুর্ভাগ্য िट्रक जामात मरगत কুৰনাশের নিমিতুজম তোর সহিত ত্রিএতি छ इडेब्रा श्राटवाधहरत्त्व डेम्ट्यू बन् नमुनम् जीर्थनारम ना नम अञ्चित প্রেরণ করিয়াছে। অত এব তুম এই पट एके का भाषि (ने ना शक्ति वर আর আর মহাবল যেকোদিগের महिन्द मःयुक्त ६६ द्वा वादानमी, इन्हा-वन, कुङ्गदक्रज्ञ. इतिबात, कारमाधाः ब्रीत्कव कामाथा।, চस्रनीथ. নেতুবন্ধরামেশ্ব প্রভৃতি দকল তীর্থে গমন ও ভাগ পুর্বক শক্ত দিগো সং হার কর ) ভ্রেলচারী, গুলী, রাণপ্রস্থ এবং যতি, এই চতুর্বিব আত্রমি-গ্ল त्वत्र चां व्याद्य धर्माकर्मा वित्र विद्य कत्। मीघु । तात्रा धरर्यत ७ ७९मः का छ ीक्ष्यंत्र मार्ग्य विवय उद्ग विक्ना अनान

কর, ভোষার গাতের চর্মের অর্মে ধ্যন ধর্মের দল ভূ:ণর ন্যার ভাসির। য় বা, আমি সেই আজো শিবো ধার্যা করিয়া সংপ্রতি কাশী-বাসী চট্যা এখানকার সমন্ত লোককে অধীন করিয়াছি, ভাবতেই আমার वम इडेब्राइ ।

চপলাগতিজ্ঞা কাহা শ্য. কাহা मग, পাৰ্ড়া, সাধ্ড়া, পাৰ্ড়া। ওন্কো, পাথ্ড়া, পাথড়া পাথ্ড়: 1 নৈ ছোড়েগা, হাড় ভোড়েগা, হাম্বড়া হ্যার বাঁক্ড়া। ৰাবা হাম্ৰজা হাায়, বাক ড়া 🏻 আবি যাকে, মারো ভাকে, টোড়্টে'ড় কে, আধ্ডা। ৰাৰ', টোড়্টোড়্কে আথ্ড়াঃ কাঁহা যাগা, কাঁহা ভাগা. मःता याना, माक्षा। वावा, मात्रा याशा माक ए। ्रम्भ ना मिर्टन सूथ कतिहा! या निनेष्ठ्य ८

কোথা দে বিবেক বুড়ো,কোথা গেল বোক্ড়া, কাথা গেল মতি রাঁড়ী,কাঁকে কোরে খোকড়া, व्यामादि दिश्यल जाता, जार इदद काँक जा। कांब्रागांदब (चांदब (चांदब, त्थांटक दमन एक कांब्रा

স্পার একদিংগ চাহিয়া। वारा, यांत्र, आंगीर्वाद्यः, आंगि किद्र हार्स ? भक्त परन धर्य रहन, একে একে সার্ব। मार्का मार्का, मार्का आदि, अदकराद्य मार्का ॥

कांत्र (इन नांधा আছে, जागांत्र कि कर्स्य : 1 মাথার উপরে কেটা, ছুটো মাথা ধর্কে? আশাদের অধিকার, শক্তি কার হর্বে I আপনার দোষে ভারা, আপনারা মর্কো 🛭 वित्रकाल नमञारत, ह्वस खुरत खुर्स । निग्रज मन्तर प्रत्य, काटब क्ल कार्य्य ॥ गाग्नादम्ब (ছড়ে ভারা, কোপা शिर्म हर्स्य । চারিদিগে ছাঁকাজ'ল, কোন্দিগে ভর্বে ! চোর সন বন্দি হোয়ে, পায়ে বেড়ী পর্ফো 1 পড়েছে যমের হাতে, কেমনেতে, সর্বে :॥

আবার অপ্রদিগে চাহিয়া। আয় ৌক্ত হেনে, ছাগ দেব মেনে, ছন্দ। এই হাত ছাড়্য়ে। গোঁপে বুক্ চাড়্য়ে॥ সূত্য<sup>বাড়</sup>্ৰাড্রে। ধেয়ে কৌক্ভীড্রে 🗈 किन कर्ना नाफ्रव I काबा याद आफ्रव ॥ थत्रां छटन भाक् रत्र । कांग्रेक्षेक्। काँक् रत्र ॥ কোলে কোলে কাঁড়্যে। একগাড়ে গাড়্যে॥ বুকে পিটে দাঁড়ে্রে। ছুই পারে মাড়্যে॥ দেশ থেকে ভাড়্য়ে। দেব ভূত ঝাড়্যে। কোপ ভোপ ছুঁড়বে। গুলি গোলা জুড়বে। जिल्ला कूँ फ़रत। धूरम विक् मुफ़्रत॥ धर्मकर्म श्रृङ् (व । পুলো হোয়ে উড়বে॥ माथा मृष् भूँ प्रवा विशक्कात कृष्रव ॥ वर्ग, मर्छा, नत्व जूरन, काल दिएक शार्क । रे वाएक व्यादक वक्दन । साहक कारक वक्दन ॥

ভিন্তাধিন পাক্লোনা ছন্দ। নে'ড্ৰনা ভো. লোড্ৰো স্থে ! পোজ্বে। রকে, চৌড়্বা বুকে ॥ শক্ত যদি, আদে বুঁকে। থাব্ডা কোনে, মার্ম বুকে 🛭 জোম কে আনি, বোদ্ধো খবে ! (काम एक यादि, (प्रव ्ड मादि ॥ ধোম কে দেব। উচ্চ রবে। स्था, नमी, श्वाम एक वरत । ্ তুদ্ধ লোকে উক্ত ছলো পুচ্ছ ধরে, কুচ্ছ ছলে । दक्र (मृ.च, अक्र क्रिन्। **प्रश्न क्रिक्ट प्रत्न ॥** भान् (बा वां थि, उक्रि (क्रे.तू। टिन्द्रा शाद्य, त्यद्र त्यद्र ॥ থেল বে খেলা, শক্র খেরে। হেল্বোনাতো, ফেলবে। দেরে॥

পুনর্বার আরেএকদিকে মুথকরিয়া।
চৌপদীচ্ছন্দ। 📈

বিবেকের দল যারা, স্থমুখে আস্ক তার',
এখনি করিব সারা, বুকে মেরে লোড়কে ।
কারে আমি লক্ষ্য করি, কার ভবে অস্ত্র ধরি,
কেঁপে যাবে ধরছরি, কোণে নিলে কোড়কে
প্রকাশ করিলে বল, ধরা যায় রসাভল,
তথুনিই টলমল, বিশ্বি শতেও ছোড়কে।
দেখিলে আয়ার ভ্রম্

যক্ষ ক্লি, সুবা হর, ভরে যার ক্রিট্রেটি।
কোথা নাগা, বিজ্ ভক্তি, আ মার স্বভাই শক্তি,
তেরে ভার হরিভক্তি, উড়ে যাবে ফোড্কে।
আছে ধর্ম কোন দেশে, নাবা-যাবে খবশের্মে,
ধ্রনি দাড়াক এনে, দাতে কোরে ব্যাড়কে।

আগ কি আহ্বাদ! কি আহ্বা- ण! श्रामि क्रुं ठक र्या इन्साहि. नकलं প্রকার লোকেনাই আমার অভিমত खरक ख़र्की इ**रेग्नरह**, कर्म्महाती खन्न-চারী প্রভৃতি ধর্মচানী জনের ছলনা খার। নির্গর কেবল ব্রক্ষাপ্তকৈ শ্রু না কনিতেছে, ভাবতেরি 'মুথে এক খানা পেটে একখানা,, কপটতা ক-রিয়া লোকের নিকট কহে, " আমি ব্ৰন্মজানী আমি অ'গ্লহোতী আমি তপদ্বী,,। কিন্তু মনে মনে 'কছুই ক-রে না: আমেই ত্রনা, আমার পাপ কোথা? আমি স্বেচ্ছাচারী হইয়া যাহা স্বেচ্ছা তাহাই করিব এই বলি-য়া ব্রহ্মকানির রম্ণাদ্গাসাকাৎ ব্ৰহ্ম তৎ সুখ্-সম্ভেগকে প্ৰম ব্ৰহ্ম-চ্র্যা এবং বারবধূমুখমধু পানের शानन्तरक माकः ९ उक्तानन्त छ। न করিভেছে। অগ্নিখো অ দর্গের হাদ-(य अिक्टिक्ट के कि भनना में अन्न-লিত হুইজেতে, এবং ভপস্থিয়া ভপ न्या ना कार्रक कार्यक वार्य-

ষোধেন্দ্ৰ বিকাস।

ভাপে এই বর মাগিতেছে,যে, আমি যেন শীঘ্রই ইন্দ্রের ইন্দ্রের লইয়া শাচী প্রভৃতি স্বর্গবিদ্যাধরীগণের রতিরস সম্ভোগ করিতে পারি, ইত্যাদি। ভূম হইতে অহলারকে দৃষ্টি করিয়া বিতর্ক।

গঙ্গার ওপার হোতে এপারে ঐ
কে আস্ছে? গায়ে যেন রবি ছবি
ভাস্ভাস্ছে। সকলকে ভুচ্জ্ঞানে
উচ্চরবে ভাষ্ ভাষ্ছে? বাস্থ নেড়ে
ধরা যেন শাস্ছে? ঐ-যে-দেখি ভণ্ডদলের ভণ্ডামি সব্নাশ্ছে? নৈলে
কেন নিজভাবে উপহাসে হাস্
হাস্ছে? হ্যাদে, ঐ কে আস্ছে?
কে আস্ছে? বোধ হয়ৢৢৢৢৢ৵ ইনি
দক্ষিণরাচ্দেশ হইতে আগমন করিতেছেন। ই হারি নিকট আমার
পিতামহ অহস্কারের সংবাদটা পাওয়া যাইতে পারে।

প্রিকার আসনে উপবেশন পুর্কক নাকে হাত!

অহঙ্কার।

[সভা প্রবেশ পূর্ব্বক নিজ গরিমা।] গীত।

রাগিণী বেহাগ। তাল আড়া। আমি সহজ্ব-ত নয়। জীবের সহজ্বতনয়॥ সৃষ্টি, স্থিতি, লয়, আমার প্রভাবেতে হয়। नवात अधान आमि, हिलींन-क्लत चार्री কে আছে, কাহার কাছে, দিব পরিচয় ?॥ আমার যে কত মান, নাহি ভার পরিমাণ, অভিমানে অমুমান, মিয়ুয়াণ কে বুঝিবে কলিভার্থ, মম অর্থ প্রমার্থ, অপদার্থ অয়থার্থ, হেরি नमुज्य ॥ মায়াময় এ সংসারে, দয়া নাছি করি যারে, সেই জীব একেবারে, শটি হোয়ে রয়। কথা নাহি স্বরে মুখে, নিয়ত, মনের ছুখে, বঞ্চিত সঞ্চিত-স্থুংগ, থাকিতে বিষয়॥ বিধি, হরি, হর, কেবা, আর যত দেবী-দেবা, না কোরে আমার সেবা, স্থির কেবা রয়?। স্থলচর, ভূচৰু, জলচর, প্ৰনচ্ব, আমা ছাড়া নয়। যত সব চর্বাচর, আমার চেতনে ভাই, অচেতন কেহ নাই, मरहजन मत हैं। है, দেখ বিশ্বময়। প্রভাগীন হোলে আমি,কাম নাহি হয় কামী, ভবে আর, আমি আমি, মুখে কেবা কয় ?। মা থাকিলে অহস্কার, তবে বল অহং কার, সহজে, প্রবৃত্তি, পায়, নিবৃতিতে লয়। প্রকৃতি প্রধানা স্থূল, জপতেরা, আমি মূল, আমা হোতে যত;কুল, হতেছে উদয়॥ করি ক্রম, পরিক্রম, ক্রমে আমি করি ক্রম, এ ক্রমের ব্যতিক্রম, কখনে कि হয় ?। করিয়া কারণ-বৃষ্টি, প্রত্যক্ষ করাই দৃষ্টি, মূচ-জ্বনে এই সৃষ্টি, মিছে তবু কয়?

বক্তৃতা। [সভ্যগণের প্রতি। লঘুত্রিপদী।

রূপে, গুণে, মানে, ধন-পরিমাণে, আমার সমান কেবা?।

দেখ শত শত, দাস দাসী কত, সতত করিছে সেবা॥ দারা, স্থত, ভাই, ছহিতা জামাই, পরিবার দেখ যত। জ্ঞাতিগণ যারা, অনুগত তারা, বুলীন কুটুষ কত॥ টাকা দিয়া পালি, কত দিই গালি, কখনো করেনা রাগ। মুখের ধমকে, কেঁচো হোয়ে থাকে নাগ॥ জনক আমার, গুণের আধার, ভূষিত-ভূবনধাম। কেমন স্থকৃতি আমি হোয়ে কৃতী, ঢেকেছি ভাঁহার নাম॥ কুলের প্রতাপে, ছোট করি বাপে, বড় হই অন্তর গে। কুট্ম-ভোজনে, বসিলে তুজনে, ভাত পাই আমি আগে॥ পুহের গৃহিণী, আমার জননী, হাঁডি নাহি ছুঁতে পারে। দারা তার চেয়ে, কুলীনের মেয়ে, ভাত বেড়ে দেয় তারে॥ কত বলে বলী, কত ছলে ছলি, কত কলে আনি চাকি। যথায় তথায়, কথায় কথায়, কত জনে দিই কাকি॥ দেখ এ নগরে, প্রতি ঘরে ঘরে, আগারে কেবা না জানে। व्यामा मम नाहे, अग्री मद हाँहै, আমারে কেবা না মানে॥ সকলেই বশ, ভয়ভরা-যশ,

দশদিকে আছে গাঁথা। ছকুমে হাজির, উজির-নাজির, বাদুশার কাটি মাথা॥ ব্ৰাহ্মণ পড়িত, কুলপুরে।হিত আর যত দ্বিজ আছে। পেলে পরে মাড়া, দুরে হয় খাড়া. ভয়েতে আসেনা কাছে॥ ঘুরালে নয়ন, কাঁপে ত্রিভূবন. সকলি আমাতে সাজে। আমি লোক গুরু,আমা হোতে গুরু কে আছে ভুবন মাজে !। আমার সমান, পড়িত প্রধান, আরু কি কখনো হবে !। সকলে অশুচি, শুধু আমি শুচি, একাকী বয়েছি ভবে।। निक रल रल, निक मल मल, আপনা আপনি জানি। কেমন ঈশ্বর. আমি সর্কেশ্বর, মানি বোলে কারে মানি ?।। স্থের সময়, স্থথের উদয়, আগা হোতে হয় সব। নিজে আমি বড়, সব্দিগে দড়, কিসে হব পরাত্র ?॥ मत्न यनि कति, दर्शिवनग्रधती, এইখানে আনি বেংদে। যদ্যপি পাছাড়ি, গগনে আছাড়ি, রবি, শশী পড়ে খোসে॥ কোথা স্থারবাজ্ঞ, কোথা তার বাঙ भीरा यमि मिरे ठाड़ा !। সহিত অমর, করি জোড়-এখনি হইবে খাড়া।।

অসাধ্য আমার, কিছু নাই আর. সকলি করিতে পারি। খেকে এই পুরে, খাই সাধ্পুরে, कीरताममाधत-वाति ॥ দেবতার স্থল, দিই রুসাতল, ধরা জ্ঞান করি শরা। দেখে দিয়ে কর, আমার উদর, চারি পোয়া, গুণে ভরা।। গুণ আছে জাই, প্রকাশিয়া তাই, হয়েছি প্রধান ধনী। मकदल है कग्न, সব দিকে জ্বয়, मन जर जर कर स्ति।। विहे (मथ नाम এই দেখ থাম, এই দেখ বালাখানা। এই দেখ পাখা, মধ্মলে ঢাকা, কারিগুরি তায় নানা॥ এই দেখ বাড়ী, এট বাড়াবাড়ি, এই দেখ গাড়ী ঘোড়া। এই হেখ সাজ, এই দেখ কাজ, এই দেখ জাগা জোড়া॥ এই দেখ ছাতি, এই দেখ হাতী, এই দেখ সপ্ মোডা। এই দেখ জন, এই দেখ ধন, সব আছে ঘরজোড়া # কেমন্পুক্র, কেমন্ কুকুর, কেশন্হাতের কোড়া। কেমন্ এ ঘডি, কেমন্ এ ছড়ি, কেমন্ ফুলের তোড়া॥ দেখনা কেমন্, চিকন-বসন, পেয়েছি আমিই সবে। मन्त्र मजन, এমন রতন,

আর কি কাহারো হবে ।।

সবে আঁথি পাড়ে, আমার এ ঝাড়ে,
দোষ দিতে পারে কেটা।
আলো দেখে ঝাড়ে,কটু যদি ঝাড়ে,
ঝাড়ের কলক্ষ সেটা॥

#### ----

[তীর্থবাসি সর্ব্ব সাধারণের প্রতি।]
আমাদিনীক্ষক ।

আমায় ভুঁস্নে, কেউ ভুঁস্নে, কেউ ভুঁস্নে রে সর্সর্সর্সর্। ভোরা, সর্সর্সর্সর্। →।♦।
→

যত সব দ্বাচার, করিতেছে অনাচার,
ততিশয় কদাচার, কেহ নহে নর।
ভূত প্রেত, সমুদর, মান্ত্য কাহারে কয়,
কাজেতে মান্ত্য নয়, মিছে কলেবর॥
কারে করি সম্বোধন, অপবিত্র সর্বজ্ঞন,
ঘোরপাপি, অভাজন, নরকের চর।
ঘৃণাহয় গাত্র-বাসে, উকি উঠে, বমি আসে,
বাতাসে চূটেছে গন্ধা, ভর্ভর্ভর্ভর্॥
পচা, ভর্ভর্ভর্ভর্॥
আমান্ চূঁ স্নে,কে উ ছুঁ স্নে,কে উ ছুঁ স্নে রে
সর্সর্সর্

# [অপরদিগে মুখ করিয়া।]

জুটিয়াছে হট্ট যত, খট্ট মট্ট বকে কত, নাহি জানে ভট্ট-মত, শাস্ত্ৰ সংধাকর। বৃহস্পতি কৃত আহা!, মধ্যম-জাগম যাহা, কেহ কি কৰেনি ভাহা, চক্ষের গোচর?॥

শীমাংসা শাঙ্কের সার, অধিকার তাহে কার, সামুদ্রিক, আর আর, মত-স্থিরতর। প্রভাকর-মত যত, কেহ নোস্ অবগত, **ভূর ভূর ভূর ভূর পশু, মর মর মর মর মর** ।। তোরা, মর্মর্মর্মর্য আমায় ্ছু স্নে, কেউ ছু স্নে কেউ ছু স্নে রে সর্ সর্ সর্ সর্ । তোরা, সর্ সর্ সর্ সর্। সর্সর্সর্মর্। তোরা, সর্সর্সর্সর্

# আবার অন্য দিগে মুখ করিয়া বিকট ভফিতে।

যে দিগেতে ফিরে চাই, নরপশু দেখি ভাই, কারো কিছু বিদ্যা নাই পেটের ভিতর। কার কাছে করি খেদ?নাহি ছেদ, নাহি ভেদ, ঘাটয়া অলীক বেদ, ব্যস্ত পরস্পর॥১ বত ধৃত্তি পাপভাগি, উদরের অমুরাগি, কেবল ধনের লাগি, ব্যাকুল-অন্তর | বিফল বেদান্ত পোডে মিছেমিছি মত গোডে, পুরিতেছে নোড়ে চোড়ে, ফর্ফর্ফর্ ফর্ 🖟 मुर्थ, कत् कत् कत् कत् एत् ॥ আমায় ছুঁস্নে, কেউ ছুঁস্নে, কেউ ছুঁস্নে রে সর্সর্সর্সর্, তোরা, সর্সর্ সর্ সর্সর্সর্। তোরা, সর্সর্সর্সর্।

খন্য দিপে মুখ করিয়া পুনর্কার হাসা পুর্কক

शास बहा, बकारती, करत्रष्ट यागत काति, শঠতা শিথেছে ভারি, বিষম্বকার। কেরে যণ্ড, এ পাষ্ঠ ? জতি গণ্ড, অতি ভণ্ড, শাস্ত্র করে কও ভও, হোয়ে দওধর ॥ এটা কেটা, জ্ঞান-চাসা,ৰিজ্বিড় মুখে ভাষা,

আঙুলেতে যুক্ত-নাসা, হাঁসা-দিগমর। উর্জিদিগে বাছনেড়ে, চেঁচাতেছে ডাক্ছেড়ে, /হ্যাদে ধেড়ে,কেরে দেড়ে,তেড়ে গিয়ে ধর?। ওরে, ধর্ ধর্ ধর্ ধর্ ॥ আনায় চুঁ দ্নে, কেউ চুঁ দ্নে, কেউ চুঁ দ্নে বে

# অন্য দিগে মুখ করিয়া উপহাস পুর্বক

ষ্ট্যাদে শোড়া, কেরে গোঁড়া?তীলোক কপাল-জোডা, নিয়ে ষত মুডীনোড়া,ভরিয়াছে ঘর। धर्मां भील यम वक् माला कति ठेक ठेक, ঠকাতেছে যত ঠক্, বোলে হরি হর। কেন করি দরশন ?, এখানেতে যত-জন, বিকের নিকেতন, পাপের আৰুর। কপট কুহকী থল, কেমন্ করিয়া হল, ফেলিছে নয়ন জলে দর্দর্দর্ দর্ ফেলে, দর ् দর ् দর ् पत् ।

আমায় ছুঁসুনে, কেউ ছুঁস্নে কেউ ছুঁস্নে রে

[ক্ষণকাল পরে অজ্ঞাত-দস্তের আশ্রম দর্শন করিয়া বিভর্ক 🌖

উত্তরবাহিনী-গঙ্গাতীরে ঐ কোন্ ব্যক্তির আশ্রম দৃষ্ট হইতেছে? সু-দৃশ্য উচ্চ বংশদণ্ডের উপর স্থুচিকন নিৰ্মাল ধবল বস্ত্ৰ সকল উড়িভেছে। আহা! কি মনোহর উপবন! আত্র-মকে বেষ্টম করিয়া বিচিত্র শোভা

বিস্তার করিতেছে। প্রফুল্ল-ফুলের সুদোরত মৃত্-মন্দ মলয়ানিলে সঞ্চালিত হইয়া অক্ষারক্ত্র, পর্যন্ত আমোদিত করিতেছে। ঐ, যে, দেখি, সুথের সামগ্রী সকলি রহিয়াছে। এ
স্থান পবিত্র বটে, তুই তিন দিন
এখানে বাস করিলেও করা যাইতে
পারে।

পরে আশ্রমের ভিতরে প্রবেশ পূর্বক বকুল-বৃক্ষের ছায়ায় দঙায়মান হইয়া বাদ কটিতে বাম-হস্ত রাখিয়া দক্ষিণ-হস্তের ছটি অঙ্গুলিতে গোঁপ বিন্যাস করিতে করিতে চিন্তা।

हैं। औ यूवी-পूक्सि, य नाकार मास्त्र नात्र मूर्जिमान, विलक्ष्य सून-क्ष्य-यूक सूश्रुक्षव वर्षि। महीदह स्र-चिक्र नकिल मिथिएकि, बक्ताब्रूकी-निद्रा कृष्टि नाहे, शास्त्र शास्त्र आस्त्र आस्त्र निकृष्टि गहे।

[পরে কিঞ্চিং নিকটে গিয়া ঈষং হাসিয়া জিজ্ঞাসা।]

কেমন্ তোমার মঙ্গল্তো ?

म् ।

নাসিকা হইতে অঙ্গুলি চালিয়া ভঙ্গিমা-ছারা হুঁস্কার শব্দে নিবারণ। হুঁ হুঁ হুঁ-ও দিগে। দয়ের ভৃত্য।

ভিতরে কেন? ভিতরে কেন?
বাহিরে যাও, বাহিরে যাও। (তোমার সকল শরীরে ময়লা, ঐ ধূলো।
রান করনি, পা ধোওনি, আমার
প্রভুর এ পবিত্র আশ্রম। এখানে
কি এমন্ কোরে আস্তে আছে?
তোমার গায়ের ঘাম যদি উজে প্রভুর গায়ে লাগে তবে তিনি কোপদুটে চাইলে পরেই তুমি এখনি
পুড়ে ভক্ম হবে)

অহঙ্কার।

কি, এত আম্পর্কা ! এত অভিনান? এত সাহস ! আমি ভস্ম হব ! আমি অপবিত্র ? কি! গুরে, এটা কি মেছের দেশ ? এরা অতি বালীক, অধার্মিক, আমি বিশ্বপুজা, সর্ব-শাস্ত্রজ্ঞ, মহাকুলীন চূড়ামণি, আমার জাগমন, আমার পদার্পণ যাহা ব্রহ্মা, বিষ্ণু, ভাগ্য বোলে স্বীকার করে।—এরা কি নরাধম ; কি মহাপাপি; নিতান্তই ভাগ্যের দোক, আমার চরণ-পুজা না কোরে দম্ভ করে! অমান্য করে! আমাকে বলে বাহিরে যা।—আমাকে বলে অপ-

বিতা। কি ! কি ? যত দুর্মুখ্, তত দুর্কথা !

पञ्च ।

### সেফালিকাদ্ধন্দ।

বুড়া হোলে বুদ্ধি যায়, মিছে কিছু নয়।

কি সাহদে, কাছে আদে, নাহি করে ভয়?॥

নাহি জানে আমাদের, কুলপরিচয়।

এর কথা, কাণ্পেতে, শোনা ভাল নয়॥

নিতান্ত অজ্ঞান এটা, জ্ঞান নাই ঘটে।

ঘোর অহম্বারে অন্ধা, তাই বটে বটে॥

স্বকীয়-সভাব-দোষ, অনলেতে জ্লো।

আমার আশ্রম এসে, মেচ্ছদেশ বলে?॥

রোগেতে শরীর পোড়ে, মূর্ত্তিখানা হেরে।

দেখ্ দেখ্ দেখ্ গিয়ে, কেরে? এটা কেরে?॥

কদাকার আগা, মুড়ো,এ কোন্ হরির খুড়ো,

কোথা থেকে এসে বুড়ো, কথা কয় ঠেরে?।

দেখ্ দেখ্ দেখ্ গিয়ে, কেরে? এটা কেরে?।

নিজ মুখে বলা নয়, আপন মহিমা।
কত দূর বড় আমি, কে জানিবে সীমা।
আপনি আসিয়া ব্রহ্মা, তাবে গদগদ।
হুর্গ হোতে জল এনে, ধুরে দেয় পদ।
মস্তকের চুল দিয়া, পুঁছায় চরণ।
বুকের উপরে করি পোময় লেপন।
আপনার স্থপবিত্র হৃদয় আসনে।
মাথা খাও, খাও বোলে, বসায় ষতনে।
বুড়োটার কাছে এই, পরিচয় দেরে।
দেখ দেখ দেখ গিয়ে, কেরে? এটা কেরে।
কথাওলো কড়া কড়া, হুডাব বিষ্ক্-চড়া,

গঙ্গার ঘাটের মড়া, ছুঁ দ্নেকো এরে। দেখ দেখ দেখ গিয়ে, কেরে? এটা কেরে!।

आमारमंत कूरल यंज, खंक का आहि।

ममजारव श्रिय आमि, मकरलं कोरह।

मकरलं मात्र थम, मन वर्ल योद्य।

रम मम आमाय हिए, पोकिएंज कि भारत?॥

योत मरन नाहि हय, आमात जेम्य।

व्थाय मतीत जात, मंद मम हय॥

व्यकां कारक खोला, आक् कोल् मरत।

आमात निकरं अरम, आक्कालन करत?॥

रमय रम हर्ण जिर्दा, रकरत १ अहे। रकरत १॥

नाहि कारन योग योग, नाहि रकान अस्त्रोग

नारक आगाय तोग, रकरत कं रकरत।

रमय रमय रमय रिरंप, रकरत १ अहे। रकरत ।

रमय रमय रमय रिरंप, रकरत १ अहे। रकरत ।

<del>-----</del>8----

আমার হুমের ধুমে, ধুমের ব্যাপার।
আকাশে হুচেছে তায়, মেঘের সঞ্চার॥
ভামে লোক গগনেতে, বজুনাদ কয়।
আমার হুক্কার সেটা, বজুনাদ নয়।
লোকেতের রটনা করে, চপলা বলিয়া।
আমার নিশ্বাস ছোটে, অনল হুইয়া॥
মুনি, ঋষি, ডেজ ধরে, আমার প্রকাশে।
তুচ্ছ জনে, উচ্চ করি, গায়ের বাতাসে॥
বাহিরে দাঁড়াতেবল্, গিয়ে এক্টেরে ঃ।
দেখ দেখ দেখ গিয়ে, কেরে ঃ এট, কেরে १॥
বুড়ো বোলে হয় দয়া, নতুবা দিতেম্ গয়া,
যদাপি যাচিজ্ঞা করে, ভিক্ষা বিছু দেরে।
দেখ দেখ দেখ দেখ গিয়ে, কেরে ঃ এটা কেরে ১॥

# অহন্ধর। শাসকদ্ধনা

[ক্রোধ অথচ উপহাস পূর্ব্বক।]

কোথাকার কেটা তুই, কেটা তুই, কেটা !। কি ভোর বাপের নাম্ন তুই কার বেটা ?॥ বল্বল্বল্ছেঁ।ড়া, কেটা তুই কেটা !।

কটু কথা, যত থাকে, বোলে সাধ্ মেটা। ঘোঁটবনা, পারিদ্, ঘেঁটাতে, যত ঘেঁটা॥ অভিমানে ফেটে-মরে, বেঁধে এক ফেটা। । লক্ষ টাকা স্বপ্নে দেখে, পেতে ছেঁড়া চেটা।। মরি কি মুখের ভাঁদ, দেহখানি গোঁটা। ব্যাভারে গাদার মত, হাঁদা নাদাপেটা॥ কেটা ব্রহ্মা, কেটা বিষ্ণু, মহেশ্বর কেটা ?। আমার স্থাজভ সব, জানেনাকো সেটা?॥ মুখ্ফুটে বলা নয়, নিজ গুণ বেটা। ক্রেছে চালাক্ বটে। বস্তুহীন এটা। বাপ্ বাপ্, একি পাপ্! কচিছেলে জ্যাটা। এঁ চোড়ে পেকেছে ছোঁড়া, এ, যে, বড় ল্যাটা। বয়সেতে দেখি নাই, এর্মত ঠেঁটা। কোথাকার কেটা তুই, কেটা তুই কেটা ? 🛭 কি তোর ্বাপের নাম্ তুই কার বেটা?। বল্ বল্ হেঁ।ড়া, কেটা তুই কেটা?॥

.....

#### म खा

স্থিররূপে অনেকক্ষণ দৃষ্টি করিয়া। ওরে—কি ভাগ্য, কি ভাগ্য, কি ভাগ্য! স্থপ্রভাত, স্থপ্রভাত, সুপ্র- ভাত ! ওরে—ইনি আমার পরমপুজ্য মাথারমণি। বাবার বাবাপিতামহ স্বয়ং কুলদেব অহলার ঠাকুর। ওরে—(আসন্দে, আসন্দে,
অর্ঘ্য দে, অর্ঘ্য দে। ফুল আন্ ফুল
আন্,। জল আন্, জল আন্,।
আমি চরণ-যুগল পুজা করি, পূজা
করি।)

গলায় বস্ত্র দিয়া ভূমিষ্ঠ হইয়া অফাঙ্গে প্রণাম।

হে পিতামহ! আমার অপরাধ মার্জনা করুন। আমি বালক, অজ্ঞান, তুর্ভাগ্য-বশতঃ এতক্ষণ আপনাকে চিনিতে পারি নাই, প্রণাম করি, প্রসন্ন হইয়া সদয়্চিত্তে আমার মন্ত-কে চরণাঙ্গুলি প্রদান পুর্বক আশী-বাদ করুন। আমি লোভের পু্ত্র দন্ত, আপনার দাসামুদাস।

#### অহস্বার

[ आस्लाप्त शम शम इंदेश ।]

ওরে তুই দম্ভ ? তুই দম্ভ ? আশীর্কাদ করি, চিরজীবি হ, চিরজীবি
হ। দ্বাপরমুগের শেষভাগে তোকে
এতটুকু ছেলেমানুষ দেখেছিলাম্,
এখন্ তোর বয়স হয়েছে, গোঁপ

উঠেছে, যুবা হয়েছিন্। আমি
বুড়ো হয়েছি, চোথে আর তেমন্
তেজ্নাই, সর্কানাই ঝাপ্সা ঝাপ্সা
দেখে থাকি, বয়সের ধর্মে জ্ঞানেরো
কিছু বৈলক্ষণ্য হয়েছে। (চাঁরে
ভাই! ''অসত্য,, নামে তোর, যে,
একটি ছধের্ ছেলে, সেটিতো ভাল
আছে?)

#### मझ ।

হাঁ ঠাকুরদাদা! সে আমার এই বুকের উপরেই রয়েছে, আমি তারে ছেড়ে এক মুহুর্ত্তকালে। প্রাণ-ধারণ করিতে পারিনে, এই ছেলেটি আমার বড় "নেয়েট্,, কোনো-মতেই কোল্ছাড়া হয়না) আপ-নার পদার্পণে অদ্য সে বড় সম্ভর্ম হয়েছে।

#### অহঙ্কার।

ও নাতি, ও ভাই।(হাঁরে তোর পিছা "লোভ,, ও মাতা "তৃঞা,, তাহারাও কি এখানে আছে?)

#### मस्।

হাঁ ঠাকুরদাদা! মহারাজ মহা-মোহের আজ্ঞাক্রমে তাঁহারা সকলেই এখানে অবস্থান করিতেছেন।

#### অহঙ্কার।

হে ভাই! ব্যাপার-খানা কি !
মহামোহের নাকি অতিশয় অমঙ্গল
ঘটনার সম্ভাবনা হইতেছে? আমি
ভাহা শ্রবণ করিয়া বিশেষ সন্ধান
লইবার জন্য এখানে আসিয়াছি।
মহারাজ এখন কোথায়! কিৰূপ
অবস্থায় আছেন ! কি কি অনুষ্ঠান
করিতেছেন?

#### FB |

দাদা মহাশয়! আমারদিগের কুলসংহারে-উদ্যত-বিবেক এই বারা-ণ্সীতেই বাস করিয়া বিদ্যা এবং প্রবোধের জন্ম-প্রদান করিবে, তা-হার অনুষ্ঠান করিতেছে, সে এরপ নিশ্য় করিয়াছে, এই স্থান কাম-ক্রোধাদির প্রাত্মভাব-রহিত, ব্রহ্ম-পুরী, এইখানেই বাস করিয়া ক্লত-কার্য্য হইব। এই সমাচার শ্রবণ ক-রিয়া অম্মদাদির কুলস্থামি মহামোহ ইন্দ্রলোক পরিত্যাগ পুরংসর কাশী-ধামে আসিয়া সর্বারস্তে বাস করি-বেন। প্রভূ এখানে রাজত্ব করিলে বিবেক কথনই প্রবল হইয়া ভিষ্ঠিতে পারিবেনা, আমরা যুদ্ধ করিয়া তাহার দল বলকে বিনাশ করিব, তাহা হইলেই বিদ্যা ও প্রবোধের क्य इट्रेंट शांतित्वना। करन अक्टों ঘোরতর-ভয়ঙ্কর যুদ্ধধারা অনেক ক্ট-ভোগ করিতে হইবে।

অহঙ্কার।

[আসনে বসিয়া গালে হাত দিয়া] शमा। ওরে ভাই, ভাবি ভাই, বিষম বিষয়। ७, (य, विषय विषय । সহজ-তো নয়, বড়, সহজ-তো নয়॥ मदन दर्शला छन्न, वड़, मदन दर्शला छन्न। কি হয়, কি হয়, রণে, কি হয়, কি হয়॥ विमा, आंत्र, श्राद्याध्यत, अन्य यनि इस्। তবেইতো একেবারে আসাদের ক্ষয়॥ স্থানগুলে, মনে মনে, হোতেছে সংশ্য। বিপক্ষ বিনাশ করা, শক্ত অতিশয় ! কেমনে বারণ করি, জ্ঞানের উদয় ?। এত দিনে বুঝি আর, কুল ন'হি রয়॥ /অতি পাপি, মহাপাপি, পাণি সমুদ্য়। काभी एक महित्म किह, अन्य नाहि लहा।! ভবের বন্ধন তার, কাটিবে নিশ্চয়। একেবারে মুক্ত হোরে, পার জীব লয়॥ ভবভয়হর হর, ভব যারে কয়। मत्नाज्य यात्र नारम, ज्रह्म श्रद्धा अताज्य ॥ সেই ভব কাশীনাথ, সদানন্দময়। পাপি তাপি মুচজনে, সদাই সদয়॥ व्यानि कीरवंद्र होत्य, क्रमत्य छन्य। "তङ्गमी" मञ्ज (पन, मद्रव ममग्र॥ थथारन कमरन তर्द, भक्न कति अहा !। उद्य छोडे, छोवि छोडे, विसम विसप्त ॥

এ, যে, বিষম বিষয় ! সহজ-তে নয়, বড়, সহজ-তে নয়। মনে হোলো ভয়। বড় মনে হোলো ভয়। কি হয়, কি হয়, রণে, কি হয়, কি হয়। मञ्जा

शमा।

কি ভয়, কি ভয়, দাদা, কি ভয়, কি ভয় ।। किहा भारत उद्यमती, मख ममूनग्र ?॥ সকলেই প্রতিগ্রহ, করেছে স্বীকার। বেশ্যার ভবনে করে, দিবসে বিহার।। কামের অধীন হোয়ে, মাতিয়াছে ভোগে। যতি করে রতি-কেনি, স্থরাপান যোগে॥ লোভের অধীনে সবে, মিছে কথা কয়। श्टा श्टा श्टा कि स्टू , ब्ला कि स्टू ।

[ এমত সময়ে সজ্জাসদনে কলকল কলবব ] নহানোহের কোন সেনা। ওহে পুরবাসিগণ! তোমরা সাব-ধান হও, সাবধান হও। রাজপথ সকল পবিত কর, মঙ্গলাচরণ কর, আনন্দধনি কর। রত্বাজী-রাজিত-রাজিবিংহাসন সকল সুগন্ধি কুসুমে ও ঘৃষ্টচন্দনে সুব†সিত কর। সমস্ত নগর সুন্দর শোভায় সুশোভিত কর,

জলপ্রণালী-পুঞ্জের ছার সমুদর মুক্ত

কর, ভাগীর্থী, অসী এবং বরুণাদি

नमी श्रेटि मूगीजन निर्मात-जन

সকল গৃহেই পতিত হউক, সিংহ্ছার

। মনোহর মণির-ছারা থচিত কর।

অট্রালিকার উপরিভাগে অতি উচ্চ জয়পতাকা সকল উড্ডীয়মান কর, পুজ্যপাদ ভূবনেশ্বর গ্রীমন্মহামোহ স্বাগত প্রায়, ঐ আসিতেছেন।

ঠাকুরদাদা মহাশয়! মহারাজ নিকটবন্ত্তী হইলেন, চলুন্ আমরা উভয়ে অগ্রসর হইয়া তাঁহাকে সম্মান পুর্মক আদ্ধান করি !

অহঙ্কার। वन जारे भी पर वन।

[ভদনন্তর অহঙ্কার এবং দম্ভ উভয়েই রঙ্গভূমি হইতে নির্গত হইলেন। ]

[ইতিমধ্যে মহামোহের একজন অগ্রগামী প্রবেশক উপস্থিত।]

এই আমাদের মহারাজ আসিতেছেন।

[ महाबाक महात्मारहत्र चकीश टेमना मामछ সম্ভিব্যাহারে সমুদ্র রাজসম্পত্তি সহকারে লপরিবারে রঙ্গভূমিতে আগমন ] মহামোহ#।

্বা সভা প্রবেশ পূর্বক সভ্যগণের প্রতি।

সংগীতছলে বক্তা।

[ मृष्ट्रमृद्ध शंगायम्य ] ব্লাগিণী বুহিনীবাহার।তাল মধ্যমান। এই অধিল সংসার, ভাবিয়া অসার,

্ শ্বহামোহ। – সনের অভ্যন্ত অম।

বল কি ভেবেছ সার !। জাননা যে জীব তুমি, সব্নিরাকার 🛭 ধূয়া।

একাকারে ব্যাপ্ত ভব, একাকারে লুগু সব, একাকারে আমি রব, হব একাকার। না মানিয়া একাকার, যদি মানো একাকার, থিকাকারে, সে আকারে, না রহে আকার॥ ১ ক্ষপ, রস, আদি পঞ্চ, তাহাতে করিয়া তঞ্চ, मानिष्ट উপাস্য-পঞ্চ\*, প্রভেদ-প্রকার। এত নহে ভ্রম অল্প, শাস্ত্রে শুনি নিছে গল্প, মনেতে করিয়া কল্প, পুজিছ সাকার॥ ২ ব্যক্রমণ্ড, গজমুণ্ড, চারিমুণ্ড, পাঁচমুণ্ড, না বুঝিয়া মাথামুণ্ড, গড়িছ আকার। মাটি, জল, সহকারে, স্থত্তে গড়েছি যারে, কেমনে করিব ভারে। অনাদি স্থীকার?॥ ৩ ভান্ত যত পাপি-নরে, স্বভাবে অভার ধরে, মাটিতে নিক্ষেপ করে, নানা উপচার। কেবলি হতেছে ভ্রম্ট, দেখে প্রম্ট যত ন্য্ট, নিজ দেহে দেয় কন্ট, থেকে অনাহার॥ ৪ বঞ্চনাবৃক্ষের বীজ, প্রতারক যত দ্বিজ, কেবল শিখেছে নিজ, আংগর বিহার।

\* উপাत्राशकः।—গণেশ, मिर्ग्स, द्रायम, উমেশ, আদ্যাশব্জি ভগৰতী।

ই হার্দ্বিগের উপাসক পঞ্চপ্রকার।—যাঁ-হারা গণেশের উপাসক, তাঁহারা"গাণপতা" যাঁহারা স্থর্য্যের উপাসক, তাঁহারা "মৌর" যাঁহারা বিষ্ণুর উপাসক, তাঁহারা "বৈষ্ণৰ" যাঁহারা শিবের উপাসক, তাঁহারা "শৈব" এবং যাঁহারা শক্তির উপাসক তাঁহারা "শাজ্ৰ-শঙ্কে" ৰাচ্য হয়েন।—ই হারদিগ্যেই পঞ্পকার সাকারবাদি উপাসক কছে।

নিজতত্ত্ব বোধশ্ন্য, স্বভাবত সতি কুন্ন, উপবাদে কোথা পুণ্য, ওরে ছরাচার?॥ ৫ ह्यारा पूर्वि अमनक्, कथाना, ता, तर खक, कथाना वा गामा मम, कजु वर्गाकात। काथा मक\*, काथा कर्न, काथा कन्नु काथा वर्ना, সে বর্ণ বিবর্ণ শুধু, মনেরি বিকার॥ ৬ যদি বল বিভূ "বীজ্ঞ," বল কোখা তার বীজ্ঞ, (म वौद्ध कि इग्न निष्क, कटलत मक्षात?। वर्षाका मिर्ड डेन्स्, मिर्ड नाम मिर्ड विन्मु, मखद्राण भश्मिक्त्, किरम श्रव शांद शा १ যদি বল সত্য "বেদ," তাহে কি ঘুচিবে খেদ, করে বেদ, ব্রহ্ম-ভেদ, লিথিয়া ওঁকার॥। অকার্ণ বেদের উক্তি. সাধনে কি হয় মুক্তি, কেমনে মানিব যুক্তি, উকার(১) মকার(২)!॥ ৮ প্রকৃতি প্রকৃত জানি, সেই জ্ঞানে হই জ্ঞানি, কিরাপে তাহারে মানি,দুশ্য নাহি যার?। অদৃশ্য বলিব যারে, মনে কি মানিব তারে, একাকারে নিরাকারে, ছেরি নীরাকার ॥ ১ মেনে শাস্ত্র অমুরোধ, হিতবাক্যে করে ক্রোধ, কিচুমাত্র নাহি বোধ, আথেয় আধার।

শব্দকে ও বর্ণ অর্থাৎ অক্ষরকে বেদে ব্রহ্ম বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন।

ভগবান। শঙ্করাচার্য্য ইহার ভাষ্যেতে বাছল্যরূপ বর্ণনা করত পরিশেষ ব্রহ্মরূপে প্রতিপন্ন করিয়াছেন।

¶ আ।—সহগুণি বিষ্ণু।

স্বভাবের একি রিষ্টি, কার প্রতি কর দৃষ্টি, সে কি করে এই সৃষ্টি, হোয়ে নিরাকার?॥১০ দুশ্যাদুশ্য যত সব, মূল ভায় অহুভব, নাহি এক ভবধৰ, বিফল বিচার। সদা অন্ন সহকারে, রহে অল্পকারাগারে, অন্ধ কি জানিতে পারে, কো**থা অন্ধকার?॥** ১১ न्त्रान कर शक्रानीत्र, यह नाना एन कित्र, মিছে মিছি কেন শিরে, বহ ভারি-ভার। পতিতপাবনী यमि, इस धरे शक्नानमी, তোমা ঢেয়ে কুম্ভীরাদি, বছপুণ্যাধার?॥ ১২। কিলে তুমি কর ভয়, কিলে তুমি হবে লয়, কিসে বা আচার রয়, কিসে অনাচার?। এই যে শরীর তব, অপবিত্র কিসে কব, মনেতে সঞ্চিত সব, মন মূলাধার 🛭 ১৩ অতি টোঁসা,পত্রচোসা, মণ্ডালোসা,যত কোঁসা, ধোরে পুল্প, কুশী কোশা, করে কি আচার?। यत्न यत्न कि वामना, शुक्का कदन भवामना, বুথা এই উপাসনা, নিজ-অপকার॥ ১৪ এই সব ভণ্ডগণ, কেবল পাবার মন, করে শাস্ত্র বিরচন, অশেষ প্রকার। এটা পুণ্য, এটা পাপ, বোলে দেয় নানা ডাপ, হায় ইকি মনস্তাপ, কব কারে আর ?॥১৫ ইহকাল ভোগস্ত্র, ভোগ ছাড়া নাহি কুত্র, ভোগ-হেডু দারা পুত্র, যত পরিবার। যতদিন বেঁচে থাকি, ততদিন নাহি ফাকি, মুদিলে যুগল অঁখি। কেহ নহে কার॥ ७ . অতএব বাক্য ধর, ছুখে কেন কাল হর, मकत्नहे इत्व शब्द, श्रात्न भवाकातः। যোগে দেহ অমুযোগ, সুথে কর সুখভোগ, জীবনান্তে ভোগাতোগ, কিছু নাই আর॥ ১৭

<sup>\* &</sup>quot;শাক।—ব্ৰহ্ম"।

<sup>+ &</sup>quot;दर्ग । — ব্ৰহ্ম"।

<sup>‡</sup> नाम।-- गङ्जि।

<sup>§</sup> विन्मू !-- जना।

<sup>॥</sup> ७ ।- अवव । त्का।

<sup>(</sup>১) छ। - टमधनि क्रम

<sup>(</sup>२) ग । - तक छ नि उका।

[ অন্যদিগে মূখ করিয়া কিঞ্ছিৎ
গান্তীয়া পূর্বক ]
সংগীতচ্চলে বক্তৃতা
রাগিণী আলেয়া। তাল মধ্যমান।
এই শরীর-রতন, হইবে পতন।
নিজ্কভাবে ভাবী হোয়ে, কররে যতন।
এই শরীর রতন, হইবে পতন।
না হইল স্থুখ লাভ, মনের মতন॥
ধ্যা।

আপন আপন-রব, নিশির-স্থপন সব, গোপন কি আছে তব, ভব-প্রকরণ। পেয়েছ ভোগের দেহ, তার প্রতি কর স্নেহ, পরে আর নাহি কেহ, মুদিলে নয়ন॥ প্রকৃত প্রকৃতি-গুণ, বিকৃতি কি তাহে পুন, আকৃতি দেখিয়া কর, স্থকৃতি-সাধন। দেহ ছাড়া আগ্না এক, নাই নাই, মিছে ভেক, দৃষ্টিহীনে অভিষেক, কোরোনারে মন॥ পেয়েছ উজ্জ্বল অঁাখি,তার কাছে কোথা ফাকি, বুঝিতে কি আছে বাকী, সার বিবরণ?। স্বভাবে রাখিয়া দৃষ্টি, দেখ দেখি এই স্বষ্টি, সৃষ্টিছাড়া অনাস্থাষ্ট, সৃষ্টির কারণ। গ্রহ, তারা, তিথি, রাশি, কাল, দণ্ড, রাশি রাশি, রীতিমত আদে যায়, করিয়া ভ্রমণ। স্বভাবের এই ধারা, স্বভাবেতে বদ্ধ তারা, স্থভাবে অভাব-ভাব, হয় কি কথন?॥ এতো-নহে ভার বোঝা, সহজেই যায় বোঝা, দোজাপথ ছেড়ে করে, কুপথে গমন। পরলোকে স্থাতে বার, ভ্রমে ভোগে কর্মভোগ করিতেছে মিছে যোগ, যত মূচগণ॥ শোন্ শোন্ নরলোক, কোথা তোর পরলোক अक्टान-मामद्र (वाँक, क्षमाभ-वहन?।

পরক∤লে কর্মফল; কেবল ধৃর্ত্তের ছল, जाकांग-जरूत कन, जनीक रामन॥ গগনের নাহি মূল, তাতে নাহি ফোটে ফুল-পুরাণের লেখা-ভুল, মিছে দরশন\*। সাধে আদি বলি রেচ, বল্ বল্ ওরে মূচ, কোথা পেলি মর্ম গৃত, আয়নিরূপণ?॥ যাহা নাই, তাই আছে, শুনে িস্কার কাছে. মিছে কাচে, কাচ কাচে, মুর্থ যত জন। কোথা তোর দিবাজ্ঞান, ধ্যান নয়,এ, যে, ধ্যান নয়নে না হয় কেন, আগ্লা-দর্শন?॥ ভ্রমে যত হরে কাল, আপনার করে কাল, कीवनाएउ शतकाल, अनीक-कथन। পদ্মপাতে যথা জল, নাহি পায় বাসস্থল, সেইরূপ ভাবি-ফল, কর্মেতে ঘটন॥ প্রকৃতির কিবেলীলে, দুগ্ধেতে অম্বল দিলে, পরিণামে হয় যথা, দধির স্কর। বায়, বহুন, ধরা, জলে, পরস্পার যোগ-বলে, স্বভাবে সেরূপ সদা, হতেছে চেতন॥ অজ্ঞান মানব চয়, এই দেহ জড় কয়, জাড় নয়, জাড় নয়, দেহ সচেতন। বৃহস্পতি করি যুক্তি, করেছেন এই উক্তি, অন্য আর নাই মুক্তি, মুক্তিই মরণ॥ আকার প্রকার রব, সম সব, অবয়ব, नमान कनग मृद्या, नमान गठन। সম ছেদ, সম ভেদ, কিছু নাই, ভেদাভেদ, मम सूथ, मम छूथ, त्रम गमन॥ তবে কেন ভণ্ড নরে, মিছে ভেদাভেদ ধরে, কল্পনা করিয়ে করে, বর্ণ নিরূপণ?।

<sup>\*</sup> দরশন ।—দর্শন, ।—ন্যায়, সাংখ্য, গাডাঞ্জল।দি বড় দর্শন।

क्र रु, वर मूम, वर प्रक, वर मुम, हुँ ह्याना हुँ ह्याना अद्भ, ७ इय यवन॥ সাধে আমি হই ক্রুদ্ধ বোধেরে করিয়া রুদ্ধ এ অশুদ্ধ, আমি শুদ্ধ, এ ভেদ কেমন?। কত দূর অভিমান, অজ্ঞানের এই ভান, কেমন পাষাণ প্রাণ প্রেমহীন-মন॥ অর্সিক হোয়ে রুসে, বেষ-বশে বেচলে বসে, এ হয় পাপের অন্ন, কোরোনা ভোজন। ন'থেলেতো নাহি তাণ, খেলে পরে থাকে প্রাণ. **(मट्ट क**र्ति वल मान, वाँठांग्र कीवन॥ নরাধম কর্মচেটো, হেন "অন্ন' বলে এঁটো, ব্রহ্মরূপে করে যেই, জীবের পালন। ত্তঃখে বহে চক্ষে ধারা. হোয়ে সবে ভেদহারা, বলে এই পরদারা, কোরোনা হরণ।। পর-বোধ আছে যার, সেই ভাবে পরদার, পর নহে কেহ কার, সকলি আপন। সকলেরি এক গতি, সকলেরি এক মতি, সকলেরি মনে রতি, সহিত মদন॥ পরস্পার নহে পর, স্বভাবের অমুচর, স্ভাবে অভাব যার, সে করে বারণ। ভোগে ভেদ যদি রবে, পশু, পাথি, সবে ভবে, স্বেচ্ছামত কেন তবে, করিবে গমন i॥ খাটি নহে কারো মন, প্রেম-অক্স বত জন, বলে এই পরধন, কোরোনা গ্রহণ। পাগলেরা এই কথা, বলিতেছে নথা তথা, বাচাল হইয়া করে, শাস্ত্র-আলাপন।। প্রাণে আর নাহি সয়, দিলে সত্য পরিচয়, পাগলে পাগল কয়, একি কুলক্ষ্ণ?। নান্তিকে নান্তিক ভাষে, শুনিয়া প্রকৃতি হাবে, তাহারা আন্তিক যদি, নান্তিক কেমন?॥ জয় জয় বৃহস্পতি, চার্কাক-চরণে নতি, বৌদ্ধমত সত্য অতি, শাস্ত্র-সনাতন।

অচুশ্য পদার্থবাদী, প্রভারক মিথ্যাবাদী, হেরিবনা হেরিবনা, তাদের বদন॥

[ আর একদিগে মুথ করিয়া থল্ থল্ শব্দে হাসিতে হাসিতে ভঙ্গিমা দারা]

হাঃ—হাঃ—হাঃ—এরা কে গঙ্গার্ধারে? এতো বড় হাসির ব্যাপার্! হারেও আঙুল্ নেড়ে কি ভেঙাচ্ছে? বিড়ির্ বিড়ির্ কি ঘেঙাচ্ছে। আরে ঐ কুলের বাড়ী কি ঠেডাচ্ছে! এই বিট্লে মাটি নিয়ে
কি গোড়চ্ছে? ওখানেও কি পোড়চ্ছে! ভিড়িং ভিড়িং, বিড়িং বিড়িং,
পিড়িং পিড়িং, এরা কি সেতার বাজাচ্ছে!

রোহিণী পরার।

হায় হায়, হায়, এরা, খোর পাপযুক্ত।
ভান্তিরূপ পাশ হোতে, কিসে হবে মুক্ত ।
হতবৃদ্ধি যত জন্ত একদল ভুক্ত।
নাহি জানে সার শাস্ত্র, বৃহস্পতি উক্ত॥
হায় আমি বেণাবনে, কেন ফেলি মুক্ত?।
থাকিতে পায়স, পিঠে, থেয়ে মরে স্কুক্ত॥
[সার একদিগে নিরীক্ষণ করিয়া শ্লাহাপূর্কক]

# (भारिनोष्डन्म।

অকাট্য আমার কথা, কার্ সাধ্য কাটে রে?। আমার নিকটে কার. জারিজুরি থাটে রে!॥ সমুথ-বিচার-যুদ্ধে, কে আমারে আঁটে রে?। প্রমাণের বাণ দেখে, সকলেই ঘাঁটে রে॥ মিছে ধর্ম, নিছে মর্মা, কর্মফেন চাটে রে?।
কথনো কি ফল হয়, রসহীন কাটে রে?॥
বঞ্চক বাম্বন-গুলা, ফেরে কত ঠাটে রে।
দিয়েছে ভোগের ভাগা, ভোগারূপ হাটে রে॥
বাচালতা কোরে শুধু, ফেরে মালসাটে রে!।
সকলে সেজেছে শণ্ড. নাটুয়ার নাটে রে॥
সত্যপথে কেহু আর, ভ্রমে নাই হাঁটে রে।
তৃষ্ণাদোষে নাবিয়াছে, মিথ্যানদী ঘাটে রে॥
মরুক্, চরুক্, গরু, আশারূপ মাটে রে।
স্থথে আমি রাজ্য করি,বোসে রাজপাটে রে॥

**→**·8·•

(কলি এবং শিষ্যের সহিত চার্স্কাকের রঙ্গভূমিতে আগমন ]

# ठार्काक#।

[সভামধ্যে প্রবেশ পূর্বক সকলকে তুচ্ছ করিয়া অতি উচ্চরবে বক্তৃতা] হিল্লোলচ্ছন্দ।

ধর্মপথে হোয়ে চোর, কেন পাও ছঃখ যোর,
নয়নের অগোচর, নাই কিছু, নাই কিছু।
স্থেছাচার স্বর্গভোগ, সেই যোগে দেহ যোগ,
পরকালে ভোগাভোগ, নাই কিছু, নাই কিছু॥
শরীরের মাঝে শূন্য, ইথে কেন হও ক্ষুয়,
কোথা পাপ কোথা পুণ্য,নাই কিছু,নাই কিছু
ভামে কর কার সেবা, ভোমার উপাস্য কেবা,
শাস্ত্রমতে দেবী দেবা, নাই কিছু, নাই কিছু॥
ধর্ম বল কিনে বল, কর্মবীজে শর্মফল,
পরে আর ফলাফল, নাই কিছু, নাই কিছু।
ভত্ত নিজে পাপ-ছত্ত্র, মূল মাত্র নিজ-যত্ত্র,
ক্রপ, হোম, পুজা, মত্র, নাই কিছু, নাই কিছু॥

মনে কেন রাথ থেদ, ভও লোকে মানে বেদ, আয়মতে ভেদাভেদ, নাই কিছু, নাই কিছু॥

# বীরবিলাসিনীচ্ছন্দ।

সমুদর এই বিশ্ব, স্থূলরূপে হয় দৃশ্য, অপরূপ কতরূপ, বস্তু সমুদ্য হে,

वञ्च ममुमग्र।

এই ভব ভোগ্য তব, ভোগে কেন পরাভব, স্বভাবে শোভিত সব, স্বভাবেই হয় হে,

স্বভাবেই হয়॥

সকলি স্থভাব-অংশ, স্থভাবে সকলি ধ্বংস. সমুদ্রের বিশ্ব যথা, সমুদ্রেই লয় হে,

ममुद्धहे लग्न।

ঋতু, মাস, তিথি, বরে, আসে যায় বারবার, স্বভাবের পরিবার, স্বভাবে উদয় হে,

ञ्चादि डेमग्र॥

রবি আর শশধর, স্বভাবত নিরন্তর, স্বভাবের চকু হোচেয়, করে আলোময় হে•

করে আলোময়।

বহ্নি, বারি, ধরা, জল, শদ্য, বীজ্ঞ, বৃক্ষা,ফল। ভোগের কারণ সব. স্থাথের আলয় হে,

স্থার আলয়।

নয়নের অগোচর, আছে এক সৃষ্টিকর, নহে দৃশ্য, ছাড়া বিশ্ব, বল কোথা রয় হে,

বল কোথা রয় ?।

কিকহিব আহা আহা,কেমনে মানিব তাহা, আঁথির অদৃশ্য যাহা, কিছু কিছু নয় হে,

किছू किছू नग्र॥

কলেবর মনোহর, কেবল ভোগের ঘর, সেই কর্ম্ম সদা কর, যাহে সুখোদর হে, যাহে সুখোদর।

<sup>\*</sup>চার্মাক-লান্তিকবিশেষঃ।

পদে পদে পরিতাপ্, প্রাণ যায় বাপ্রাপ্, আহার-বিহারে পাপ্, পাপিলোকে কয় হে,

পাপিলোকে কয়॥

ষত সব বুদ্ধিমোটা, কপাল জুড়িয়া ফোঁটা, স্থথপথে মেরে খোঁটা, ছঃখবোঝা-বয় হে,

ছঃখ বোঝা বয়।

ইব্রিয়ের রেখে মর্ম, সাধন করিব কর্ম, দূর্ দূর্ দূর্ ধর্ম, তারে কিসে ভয় হে, i

তারে কিসে ভয় і॥

শাস্ত্রকার ভাঁড় যত, লিথিয়াছে নানামত, তাদের অলীক-মত, প্রাণে নাহি সয় হে, প্রাণে নাহি সয়।

করিযোগ গাত্রে গাত্রে,স্থর্গভোগ স্পর্শমাত্রে, যুগাভাবে পাত্রে পাত্রে, পূর্ণানন্দময় হে,

पूर्वाननामग्र॥

সমভাব সব অঙ্গে, সমভাব সব সঞ্জে, রমাভাস রম-রঙ্গে, কর কালক্ষয় হে, কর কালক্ষয়।

চুরি নয়, হত্যা নয়, অধিকস্ত, স্থু হয়, ইথে যারা পাপ কয়, তারা ছরাশয় হে, তারা ছরাশয়।

ভেদজ্ঞান মহারোগ, কেবলি পাপের ভোগ, ইচ্ছামতে কর ভোগ, মনে যাহা লয় হে, মনে যাহা লয়॥

বিবেক বৈরাগ্য আদি, যত সব প্রতিবাদি, ছেড়ে রব, ক্রমে সব, কর পরাজয় হে, কর পরাজয়।

ফুটল মানসকলি, মোহিত আনন্দ-অলি, কলিযুগে মহাবলী, মহামোহ জয় হে, মহামোহ জয়॥ চার্কাকের শিষ্য।

[সংশয়চ্ছেদনার্থ গুরুর প্রতি প্রস্তাব]

হে গুরো! যথার্থ শাস্ত্র বলিয়া কাহাকে মান্য করিব? এবং কিৰূপ আচার করিয়া জীবনযাতা যাপন করিব? যদি অভিল্যিত-দ্রব্য ভো-জন ও পান এবং স্বেচ্ছাত্ররপ-কর্ম-দারা ইন্দ্রিগণকে চরিতার্থ করাই পরমার্থ হয়, ভবে (এই সমস্ত তীর্থ-বাসি জনেরা কেন এতকাল সাংসা-রিক-সুথ পরিহার-পুরঃসর শীত গ্রী-মাদি ঋতুদিগের ঘোরতর যাতনা সহ্য করত পরাকাদি\* ত্রত-ভারা এত কফে এত ছঃখে সময়, দেহ, এবং আয়ু-ক্ষয় করিতেছে ? ইহারা তাবতেই কহিতেছে, এই সংসার কেবল অসার, ছঃখের জাধার, ইহা-তে সুখমাতই নাই।—এই সাংসা-রিক সুখ সর্বতোভাবেই ত্যাগ করা কর্ত্তব্য। সংসারাসক্ত জীব ইন্দ্রিয়ের অধীন, বিষয়-ভোগামুরাগ-বশতঃ পাপ সঞ্চয় করে, মুতরাং তত্ত্ত্তান-লাভ করিয়া মুক্ত হইতে পারেনা,

পরাক—প্রায়ন্টিভবিশেষ, যাহাতে
 ছাদশ দিন উপবাদ করিতে হয়।

মরণান্তে নারকী হইয়া পাপের দণ্ড ভোগ করে ইত্যাদি।

#### विकिथि

হে বাপু! তুমি কি জাননা, অর্থশাস্ত্রই যথার্থ শাস্ত্র, অর্থকরী-বিদ্যাই প্রকৃত বিদ্যা, ইতিহাসাদি যে শাস্ত্ৰ, সে তাহারি অনুৰূপ-অন্ত-ৰ্গত মাত্ৰ। বেদাদি শাস্ত্ৰ সকল শা-अहे नदर। एक अवकना, इलना, চাত্র্যাও মিথ্যাবাক্যে পরিপুর্ণ, প্র-লাপিদিগের প্রলাপ মাত। ছর্ক্তন বঞ্কেরা আপনাপন প্রভূত্ব স্থাপন ও প্রবঞ্চনা-পূর্মক অর্থ-সংগ্রহ করণ কারণ কতকগুলীন অর্থহীন প্রমাণ-হীন আকাশভেদি বচন রচন করিয়া নির্ত্তর অবোধ-লোকদিগ্যে বঞ্চনা করিতেছে, এবং আপনারা আত্ম-্দোষে প্রত্যহই প্রত্যক্ষ-সুথে বঞ্চিত इहेट्डिइ। (इ द९म! (मर्थ, इहात-मिर्गत अकथानि माय नरह, इहाता বঞ্চক, মিখ্যাবাদি, ভ্রান্ত এবং মূর্য। युक्ति काशांदक वरन जाश कारनना, মৃত্যুর নামি মুক্তি, মুক্তি আর একটা স্বতন্ত্র গাছের ফল নহে। কি ভ্রান্তি! কি চাতুরী! ইহারা মিথ্যাৰূপে মৃত-ব্যক্তির প্রেতত্ব কম্পনা করে। এক মুখে ছুই কথা কয়, একবার বলে কাশীতে মরিলেই মুক্তি হয়, গঙ্গায় মরিলেই মুক্তি হয়, জাবার চমৎকার দেখ, যাহারা এই বারাণদীধামে প্রাণত্যাগ করিতেছে, গঙ্গার-তীরে নীরে দেহ পরিহার করিতেছে, আদ্ধ তর্পণ বিধান করিতেছে। ধূর্ত্তেরা এক বিষয়েই ছুই প্রকার প্রমাদের কথা উল্লেখ করে, অতএব ইহারদের কথা কি শুনিতে আছে? এই মিধ্যা কথায় কি কাণ দিতে আছে?

#### পয়ার।

যাগ করে, ব্রত করে, ক্রিয়া করে যত। মিছে ভ্রমে, মিছে গ্রমে, আয়ু করে গত॥ কর্ত্তা, ক্রিয়া, দ্রব্যের, হইলে পরে নাশ। যাগকারকের যদি, হয় স্বর্গবাস॥ দাবানলে দক্ষ হয়, তরু যে সকল। সে সকল গাছে তবে, হোতে পারে ফল॥ পোডা গাছে ফল যদি, সম্ভাবনা হয়। এদের কথায় তবে, করিব প্রত্যয়॥ মৃতজনে জল দেয়, দেয় অল গ্রাস। মরা গরু কথনো কি, খেয়ে থাকে হাস ?॥ মৃতনর তৃপ্ত হয়, তর্পণের জলে। তেল পেলে নেবা দীপ, কেন নাহি জ্লে?॥ কুছকী জনের মনে, কি বুছক আছে। একেবারে জগতেরে, অস্ক্র করিয়াছে॥ य विमाग्न न।हि इग्न, अर्थ उभाकान। य विद्याप्त नाहि रुष्त, स्ट्राप्त नाधन ॥

या मार्जित कथी नटर, विश्रोरमत खल। যুক্তি সহ যোগ করি, নাহি দেখি ফল॥ এলোমেলো লিখিয়াছে, যা এসেছে মনে। সে লেখা প্রমাণ আমি, করিব কেমনে ?॥ ওরে বাপ্র প্রাণাধিক, স্থির জেনো এই। শাস্ত नय़, শাস্ত नय़, विमा नय्न, म्हे ॥ वक्षरकता वाधिशाद्य, वक्षनात छत्। ভান্ত লোকে ভুলিয়াছে, ফলঞ্জতি শুনে॥ ভুলিয়া মিষ্টের লোভে, শিশু যে প্রকার। আশার অধীনে হয়, অধীন পিতার॥ ভাবি-স্বর্গভোগ-রূপ, সন্দেসের লোভে। যত সৰ মূৰ্থ লোক, মরিতেছে ক্ষোভে 🛚 ক্রিয়াকা ও-রত যত, সার-বস্তুহীন। আশায় হতেছে মবে, শঠের অধীন॥ সংসারেতে ছঃখ আছে, করিব স্বীকার। বিনা দ্রথে স্থথভোগ, হোয়ে থাকে কার ?॥ আপনার হিতবোধ, মনে আছে যার। সে কি কভু ছেডে থাকে, স্থথের সংসার ?॥ জগতের গৃঢভাব, কে জানিবে স্থির। স্থুথ ধনে ভরা আছে, ভিতর বাহির॥ সমুদ্রের জল দেখা সভাবে লব।। নথন করিলে হয়, অমৃত **স্জ**ন॥ ''টক'' বোলে দধি কেন,ফেলে দিতে যাবে?। थियान मथन कत्र. ननी, घुछ, श्रीत ॥ भान निष्य (मथ वावा, ছाতের উপরে। ত গুল রয়েছে তার, তুষের ভিতরে॥ তুব. বোলে কেন ভারে,ফেলে দিতে যাবে?। ধান-ভেনে, চাল লও, কত সুখ পাবে॥ চিরকাল প্রিয় যেই, প্রিয় সেই রয়। ক্ত-দোষে কথনো কি, অপ্রিয় সে হয়?॥ नान। (मार्य (मह हार्ल, (मार्यत आधात। **थरें (मह करव वल, श्रिय नय़ काव ! ॥** 

রসনারে করে সদা, দশন আঘাত। নোড়া দিয়ে কোন্কালে,কে ভেঙেছে দাঁতঃ ॥ ছারখার করে অগ্নি, পোড়াইয়া ঘর। সে আগুণে, কবে কেবা, করে অনাদর?॥ ভূমি নাশ করে জল, বিস্তারিয়া ঢেউ। সে জলের অনাদর, নাহি করে কেউ॥ কিছু ছঃথ আছে বোলে, শুন ওরে বাবা! যেজন সংসার ছাড়ে, হাবা, সেই হাবা॥ ইচ্ছামত স্থপভোগ, আহার বিহার। তার চেয়ে পরমার্থ, কিছু নাই আর ॥ বোধহীন মূচ যারা, বন্ধ ভ্রমজালে। এ স্থথ কি ভোগ হয়, তাদের কপালে !॥ শরীর শোষণ করে, রবির কিরণে। ঘরে ঘরে ভিক্ষা করে, পেটের কারণে॥ উপবাসে ভোগ করে. কঠোর যাতনা। भारकत माधना नग्न, छुः दश्त माधना॥ তপদ্যার জোলে পুড়ে, পাপে ভোগে ছুখ মোরে গেলে ফুরাইল, কবে পাবে স্থখ ।॥ বাপুরে প্রত্যক্ষ দেখ, তপদ্যার ফল। আত্মঘাতি হোয়ে মরে, পাষত্তের দল॥ স্বেচ্ছামত ভোগ করি, আমরা সকলে। সশরীরে স্বর্গভোগ, কারে আর বলে ?॥

### [ मनामी (पश्या।]

বল-হে সন্নাসি, তুমি, কি কাজ করেছ ?।
বগলে ভিক্ষার কৃলি, কি হেতু ধরেছ ?॥
ঘরে ঘরে ফেরো যদি, ঘর-ছাড়া হোরে।
ঘর ছেড়ে, কিবা ফল, থাকো ঘর লোয়ে?॥
পেট্ নিরে দারে দারে, যদি গুণো হাপু।
এমন সন্নাসে ভোর, কাজ কৈরে বাপু?॥
ঘর ছেড়ে ঘরে ঘরে, ফিরিতে না হয়।
অনাহারে, দেহ যদি, সমভাবে রয়॥

ভবেতো তপস্যা জানি, মানি ভোর ক্রিয়া।
সকলেই ঘূরিতেছে, পোড়া পেট নিয়া।
সেই যদি খেতে হোলো, অন্ন আর জল।
বল্বল্বল্ ভবে, সন্ন্যাসে কি কল?॥
দেহ আছে খেটে খেয়ে, ভোগ কর ক্রিয়া।
কারো কাছে টেচায়োনা, পেটে হাত দিয়া॥

(দণ্ডিদিগের প্রতি দৃষ্টি করিয়া।) ওরে ভণ্ড, হাতে দণ্ড, এ কেমন রোগ?। দণ্ডে দণ্ডে, নিজ দণ্ডে, দণ্ড কর ভোগ ?। নিজ হাতে, নিজ পিণ্ড, করিয়া গ্রহণ। লওভও হোয়ে মরো, কাও এ কেমন ?।। সুক্তি মুক্তি, করিতেছ, যত নারী নরে। কথায় বসায়ে হাট, বেচা, কেনা করে॥ **(कर (वरा), (कर (करान, (कर करत मीन**) সকলেই শুনিতেছে, কারো নাই কাণ 🛚 मकत्न हे पाथिए छह, हक्कू को दा नाहे। কোথা যুক্তি,কোথা মুক্তি,ভাবি আমি তাই॥ প্রকৃতি প্রকৃতি পেলে, আকৃতির নাশ। ভূতে ভূত মিশাইয়ে, হয় অপ্রকাশ॥ অবিনাশী, শূন্য এই, স্বভাবেই রয়। বল তবে, এ জগতে,মুক্তি কার হয়? ॥ ভোগেতে প্রত্যক্ষ স্থথ, আর সব শূন্য। ৰল্ বল্, কোথা পাপ, কোথা ভবে পুণ্ট ?॥

# মহামোহ।

[ আত্ম-মনোগত বাক্য গ্রহণ করিয়া আহলাদ পূর্বক ! i

আহা, আহা! এখানে কোন্
সাধু ব্যক্তির আগমন হইরাছে?
সাধু সাধু, ধন্য ধন্য, এ মহাত্মা কেরেঃ চিরকালের-প্র অদ্য আমি

যথার্থ নপে সুখী হইলাম। ওরে

এমন্ সভাবাদী, সুধাভাষী-পবিত্রচিত্ত সদানন্দমর সংশয়ছেদক মহাপুরুষ কি আছে রে । মরি মরি ।
আহা আহা । ওহে কে তুমি । কে
তুমি ! আমার মনের অক্তকারকে
হরণ করিলে। আহা, আমার কর্ণপথে কি সুমধুর অমৃত-রুটি হইতেছে ৷ কি আনন্দ, কি আনন্দ।

(आक्कारम शमशम इहेग्रा पृष्टि शूर्खकः

আরে. এই যে, দেখি।—ইনি আমার প্রাণাধিক প্রিয়তম-পর্ম-সুহৃৎ চার্কাক। না হবে কেন ? প্রব্রে চার্কাক-রে—চার্কাক।

চাৰ্কাক।

। অবলোকন করিয়া হৃউচিত্তে।

হাঁ—ইনি বিশ্পুজ্য মহারাজ মহামোহ। ভাল ভাল, বড় সুখের দিন, যাই তবে নিকটে যাই।

[নিকটে গিয়া।]

মহারাজের জয় হউক্, জয় হউক্, শক্র সব কয় হউক্, কয় হউক্। তাদের মনে ভয় হউক্, ভয় হউক্, ভয় হউক্, কালের কোলে লয়
হউক্, লয় হউক্। এই সমুদয়,

একাকারময় হউক্, একাকারময় হউক।

ভূমিষ্ট হইয়া প্রাণাম করণে উদ্যত। ] মহামোহ।

এসো এসো, চার্কাক এসে।,
প্রাণের ভাই এসো. এই আসনে
বোসো বোসো, এত ব্যস্ত কেন!
রোসো রোসো, আগে কোলাকুলিটি করি।

কোলাকুলি।

মহামোহ।

বোদো ভাই বোদো,—কেমন্ কোমার মঙ্গল্তো।

[ठार्काक।

শীচরণের জাশীর্ঝাদে সমস্ট্র মুজল। মহারাজ আপনার শিব্যাল্ল-শিষ্য, দাসান্দাস কালপ্রেষ্ঠ কাল-রাজ কলি আপনাকে দর্শন করি-বার নিমিত্ত এবং আপনার ভুবন-পুজা শ্রীপাদপা্মে অতীক্ষে প্রণাম করিয়া পবিত্র হইবার জন্য এই আ-মার সঙ্গেই আসিয়াছেন।

মহামোহ!

কই কলি, কই? এসো এসো, এসো বাপু, এসো এসো, কল্যাণ্ হোক, কল্যাণ হোক, দেখি বাপু, মুখ্ থানি দেখি,—এই, যে, বড় হ-মেছ, তোমাকে আমি "হামাগুড়ি,, দিতে দেখে ছিলাম, তথন এক এক-বার হাঁটি হাঁটি পা-পা করিতে। এ-খন তোমার গোঁপের রেখা দিরে-ছে। ভাল ভাল, তবে এ দিগের কি পর্যান্ত হয়েছে, বল দেখি। তীর্থের সংবাদ কি? এখনো কি বেদ-বিহি-ত ধর্ম কর্মো লোকের বিশ্বাস আছে?

#### কলি ৷

প্রভু। প্রণাম করি, অদ্য জীচর। দর্শন করিয়া ক্ষতার্থ হইলাম!
মহাশয় আমার কার্যা ও পরাক্রম
প্রতাহই প্রতিক্ষণে প্রত্যক্ষ দর্শন করিতেছেন। হে মহারাজ ! আমরা
কেবল উপলক্ষ মাত্র, সকলি আপনার কটাক্ষের প্রভাব। পদ্যুগের
মহিমাতেই সকলি হইতেছে। আর
কি নিবেদন করিব?

[মহারাজের মঞ্চল প্রার্থনা]

যে স্বভাব পৃথিবী-উজ্জ্বলকারিগগনবিহারি—ধান্তহারি-স্থ্যদেবকে
দীপ্তমান করিতেছেন-।—যে স্বভাব
রজনীতে নক্ষত্র-মপ্তলমপ্তিত অভি
চিত্র-মপ্তলে চল্লের উদয় করি-

য়া আমারদিগের হৃদয়-কুমুদ প্রফল্ল করিতেছেন।—যে স্বভাব গ্রীয়,বর্ষা, শরদ, হিম, শিশির, বসন্ত, এই সুখ-ময় ছয় ঋতুকে আমাদিগের ভোগে-র নিমিত্ত স্থজন করিতেছেন।—যে স্বভাব বছবিধ ভক্ষ্য-ভোজ্য-পানীয় প্রদান পূর্বক অম্দাদিকে সমূহ সুথে সুথি করিতেছেন, আর যে স্বভাব পুরুষের কামকেলি-সুখ-সভোগার্থে সর্ক-ছঃখসংহারিণী সা-कार-त्याकविधाशिनी-- नर्वमत्यात्या-হিনী--রতিরসবিলাসিনী--কোমলাঞ্চী कृषिनाकी--कांभिनी-कमरभत मृष्टि क-রিয়া তাহারদিগের বিমল-বদনে কেশাবলী প্রদান করেন নাই, সেই স্বভাব অনুকূল হইয়া সত্তই মহা-রাজের মঙ্গল বিধান করন।

আমাকে নিতান্ত ছেলেমানুষ বিবেচনা করিবেননা, আমি বয়সে বালক বটি, কিন্তু কার্য্যে অত্যন্তই প্রবীণ।

> [ সভাস্থ সকলের প্রতি ] গীত।

রাণিণী বেছাগ। তাল আড়া। স্বেছাময়-মন ডুমি, জগতের ভূপ। আপন স্বরূপ ডুমি, আপন স্বরূপ॥

लोक मर मिर्छ खर्म, मश्मात्र-कोनरन खरम, नारि प्रत्थ कोटनाक्ररम, निक्र निक्र क्रथ। নানা-ভাবে ভাব হরে, অভাবের ভাব ধরে, বিরূপ স্বভাবে করে, স্বভাবে বিরূপ। স্থে নাহি কাল বঞ্চে, পড়িয়া বিষম-তঞ্চে, রূপ, রুস, আদি পঞ্চে, ভাবে নানা রূপ। আহাহিতে যত কর্মা, সেই মাত্র মূল-ধর্মা, কি কব তাহার মর্ম্ম, অতি অপ্রপ্র। হোয়ে মন অমুকুল, ঘুচাও মনের ভূল, দেখাও সহজ ভাব, স্বভাব অমুপ। আর কত দিনে সবে, এক রবে এক কবে, এক ভাবে এই ভবে, হবে এক-রূপ। আমহিতে হবে রত, সবে মাত্র এক মত, না থাকিবে মতামত, ইচ্ছা-সন্থুরূপ। ভিন্ন-ভাব যারা ধরে, নানা পথে ঘুরে মরে, আপন নাশের তরে, নিজে খেঁড়ে কুপ। না চিনিয়া ভাল মন্দ, যত অন্ধা করে ছন্দু, নাশিতে তাদের ধ্বন্ধ, বুঝাব কিরূপ ?॥ कामीवांत्रि ওরে জीব, मित्रमग्न मरनानित, শিবরূপে না পূজিয়ে পূজিদ্ কিরূপ য় বঞ্চনা-মদের ঘোর, বাডিয়াছে বড় জোর, করিস্ কি মিছে শোর, চুপ চুপ চুপ॥

# यर्छभनी ऋन्म ।

প্রকাশ করিয়া মর্মা, কারে বলি নিজ-কর্মা, কোথায় সে খোঁড়া ধর্মা, শুকায়েছে অস্থিচর্মা, সকলেই পেয়ে শর্মা, মন বশ হয়েছে। কোথা বেদ, কোথা তন্ত্র, আমার স্বতন্ত্র তন্ত্র, কুহক-কলের যন্ত্র, গৃঢ-বীজ মহামন্ত্র, ছেড়ে সবে গুরুমন্ত্র, মন মন্ত্র লয়েছে॥ বাঁকি কিছু নাহি আর, করিয়াছি একাকার, আমারিতো সধিকার, পলায়েছে দেশাচার, পাপ-বোধ আছে কার, ক্রমে সব সংগছে।

ইয়া বিষম ওজা, সারিয়া কালের গোঁলা,
বাঁ কারে করেছি সোজা, নাহি আর ভারবোঝা,
সকলেই হোয়ে সোজা, শিরে বোঝা বয়েছে॥
যে কিঞ্চিং আছে বাঁকি, আর কি অপেক্ষা রাখি
ঘরে ঘরে বাঁকাবাঁকী, কোথায় রহিবে ফাকি,
ওড়াবে সত্যের চাকি, ছোঁড়া-গুলো কয়েছে।
অগতির আমি গতি, আজ্ঞাধীন কাম, রতি,
কিহু আর নাহি সতী, বিধবা পেয়েছে পতি,
সাচ মাংস থেতে আর, বাঁকি নাহি রয়েছে॥

ঈশরতো আর নেই, কেটেছি ভ্রমের থেই, নান্তিকের রাজা যেই, কলির ঈশ্ব সেই, আমার প্রভাবে সবে, নব-মত ধরেছে। নাহি ভেদ পাত্রাপাত্র-জাতি, ধর্ম্ম, এক-মাত্র, পবিত্র স্বার গাত্র, একমতে শিষা-ছাত্র, ছেড়ে গোত্র যত্রতর, একছত্র করেছে॥ ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিত কত, অধ্যাপক শত শত, হোয়ে অতি অনুরত, এমতে দিয়েছে মত, জনমের মত তারা, शृक्षंगठ श्द्रहा মিছে ধর্মে নাহি খাটে,নাহি নাচে মিছেনাটে, मिट्टिशर्य नाहि शाटि, कल थारा वक-चाटि, वक ठाटि वक भाटि, वक मार्ट हरत्हा। সবাই টাকার বশ, টাকাতেই যত রস, ব্যাপ্ত হয় দিক্দশ, টাকা যার তার যশ, ত্রিভ্বন ভরেছে। ধনরূপ-মদ-গল্পে, পদ গেলে বাঁচা ভার,টাকা কোথা পাবে আর, মারা যাবে পরিবার, হাহাকার হবে সার, সাধে কি পণ্ডিত-গুলো, লোভদ্ধরে দ্বরেছে॥ গোটা কত মোটা গুঁডি,যেন কাঁঠালের গুঁড়ি, নাহি আর বলে প্রভি, কেবল মারিছে তুড়ি,

কত বুড়ী, কত চুঁড়ী, শাঁক চুড়ী পরেছে।( জাতি,কুল পরিচ্ছেদ, কিঞ্চিৎ যা ছিল, ভেদুত সে ভেদ করেছি ছেদ,কারো মনে নাহি খেদ, নিজ নিজ ইচ্ছামত, **ম** 5 সবে ধরেছে ॥ 'শুঁড়ি,হাড়ি, ডোম মুচি, অশুচি হয়েছে শুচি, ( পাইলে রূপার-কুচি, অন্নেতে সবার রুচি, পাতের প্রসাদ খেয়ে, কত লোক তরেছে। कुल, भील, क्वां कि मार्ग, शारमंत्र मवाहे मारम, মত্ত ছিল অতিমানে, এখন ধনির স্থানে, পদানত হোয়ে কত, চোখে জল ঝরেছে॥ দেখ দেখ, মহারাজ, আমার কেমন কাজ, করিয়া সমর সাজ, মেরেছি এমন বাজ, সকাম নিক্ষাম কর্ম, সেই বাজে মরেছে। তোমার বিপক্ষ যারা,আমার প্রতাপে তারা, সকলেই বলহারা, ভয়েতে হতেছে সারা, বিবেক, বৈরাগ্য, আদি, কোন্দেশে সরেছে॥

এমন্ কি হবে কুত্র, কেমন তুলেছি স্ত্র, চাঁড়ালে ধরিয়ে স্থত্ত, হয়েছে ব্রাহ্মণপুত্র, কিরূপ সাহস দেখ, কত বাড় বেড়েছে। নিজ বল প্রকাশিয়া, করিছে অন্ত ক্রিয়া, বাজারের বেশ্যা নিয়া, দারা-পরিচয় দিয়া, জারজাত ছেলে মেয়ে, ঘরকানা কেডেছে। মজিতেছে কত ঘর, সঙ্গ-দোষে পরস্পার, যে সব আমার চর, তাহারাই সাধু নর, জেতের বিপক্ষে সবে,কোসে বাড়্ ঝেড়েছে। গৃহিণী হয়েছে রঁ'াড়্, কার সাধ্য করে আড়্, নিজ নিজ মতে এনে, অনেকেরে পেড়েছে॥ আগে যারা ছিল খাটি ক্রমে তারা হয় মাটি, যত করে অঁটো সাঁটি, তত হয় কাট:কাটি,

ফাটাফাটি কোরে সবে,এক গাডে গেড়েছে। ছয়েছে সকল শেষ, নির্মাল করেছি দেশ, প্রায় নাই দ্বেষাত্বেষ, যাহা আছে অবশেষ, পালাই পালাই ডাক্, তারা সব ছেড়েছে॥

### वित्नि किनीष्ट्रकः।

দেখ-হে কেমন মজা, কেমন তুলেছি ধুজাযত সব কর্ত্তাভজা, একছতে থৈতেছে।
সকলেরি মন-শাদা, পরস্পার, দিদী, দাদা,
মেলায় চ্কিয়া দেখি, মেয়ে, মদে, মেতেছে॥
মেলা-মাঝে মেলামেলি,লুকাচুরি,থেলাথেলি
গায় গায় ঠেলাঠেলি, কলাপাত পেতেছে।
যবনাম যারা খায় তাহারাই পুনরায়,
শ্রাদ্ধ-বাড়ী খেয়ে লাড়ু,থালা গাড় পেতেছে॥
আমার স্মতত যারা, প্রবল হইয়া তারা,
কার্য্য-বলে শক্রদলে, ঘাঁতে ঘাঁতে ঘেঁতেছে।
আগে যারা ছিল বোড়া,এখন হয়েছে ঢোঁডা,
পোড়ামুখ পুড়িয়াছে, সকলেই চেতেছে॥

তবোধ হিঁদুর নারী, ব্রত ধর্মে তক্তি ভারি,
কেননে করিব বশ, সেই তয় টুটেছে।
শিথিছে বিলিতি ভাষা, বালিকার বাড়ে আশা,
বই হাতে, উঠে প্রাতে, বিদ্যালয়ে চুটেছে॥
তত আর নহে কুনো, সাহস বেড়েছে ছনো,
পুরুষের স্বাধীনতা, স্রথ, তারা লুটেছে।
ভূগল পড়েছে যারা, জেনেছে স্পষ্টির ধারা,
ভেঙেছে মনের ভ্রম, স্ব্র্যারহা উঠেছে॥
বিশ্ববারা আগে যারা, ধরিয়া প্রাচীন ধারা,
শিব গোড়ে,পুজা কোরে,কত মাথা কুটেছে।
এখন আমার ডরে, সিঁতেয় সিন্দুর পরে,
শাকা খাড়ুহাতে নিয়ে, এক দলে জুটেছে॥
প্রথমেতে কাণাকানি,কিছু কিছু জানাজানি,

শেষে কোরে থানাথানি,সাত দেশ্ ঘুঁটেছে। এইতো কলির সন্ধ্যা, পুত্রবতী হবে বন্ধ্যা, ফলাবো অশেষ ফল, ফুল সবে ফুটেছে॥

চুঁ ড়ীগুলো ছেলে-বেলা,ন†হি করে ছেলেখেল¦, পাকা পাকা কথা কয়, নন সব খুলেছে। प्रिलाग घात घात, श्रृक्व छात नाहि धात. সাঁজ্সেঁজোতির্ব্রত, সকলেই ভুলেছে।। বেঁকেবেঁকে পথ হাঁটে তেড়াকোরে সিঁতি কাটে, গরবিনী হোয়ে সব, গরবেতে ফুলেছে। क बाँदि मुरथत मादि, शुक्रस्यत कान करिन, স্থতোগ-আশা-হাটে, ইচ্ছাপ্মজা তুলেছে॥ যথন যেমন ধরে, তথনি তেননি করে, নাহি রাথে কোন কোভ,লোভ দেলে ছলেছে। পতির কি নাধা হয়, মতছাড়। ক্যা ক্য়, অধীনতা দড়ি ধোরে, কত নীচে নুলেছে॥ শ্বশুর, শ্বাশুড়ী কেবা, কেবা তার করে সেবা, 🛭 নিজ নিজ কর্মভোগ-কূপে তারা উলেছে ' বাপ মায় কেবা মানে, নারীই সর্বাস্থ জানে, যুবকেরা চুলেছে । বধূ-প্রেন মধুপানে,

দেখিলাম অলি গলি পরস্পর গলাগলি,
দিনে রেতে টলাটলি, ভাল খেলা খেলেছে।
নাহি আর চলাচলি, কেবা করে দলাদলি,
কোরে কত বলাবলি, বুড়ো-গুলো এলেছে।
স্থপাদ্ সম্পর্ক যত, সকলি হয়েছে হত,
ঘরে ঘরে মনোমত এক চাল্ চেলেছে।
বিপরীতে দিলে বোধ, তথনিই করে কোধ,
উপরোধ অমুরোধ, একেবারে টেলেছে॥
রমণী হয়েছে হেন, এক ধ্যান এক জ্ঞান।
পুরুষ দেখিলে যেন, সাগে ভাঁথি মেলেছে!

নুধে পেটে ভেদ নয়, ফুটে সব কথা কয়।
নর নারী সমুদয়, সম আজা পেলেছে॥
ভাঙে তবু নোবেনাকো,শাদা ভাত ছোঁবেনাকো।
একা কেউ শোবেনাকো, মন খুব্ হেলেছে।
অধীন রয়েছে যারা, কি করিবে নাহি চারা,
সাঁতারে হাঁপায়ে তারা, দোঁতে অঙ্গ ঢেলেছে॥
একপোদে\*কোথাখোঁড়া,কোথাতার যতগোঁড়া
যেরে তারে যত ছোঁড়া,ছই পায়ে ঠেলেছে।
যত সব তীর্থধাম, কেবল রয়েছে নাম,
বল করি রতি কাম, কোসে ঝাল্ ঝেলেছে॥
লাথালাথি হাভাগতি, পূমধাম মাতামাতি,
সাধীনতা দীপে বাতি, সকলেই জ্বেলেছে।
করিতে ধর্মের লোপ, গাঁথিয়া কোপের টোপ,
বাসনার সরোবরে, ছিপ্ স্থতো ফেলেছে॥

আমার মূতন চেলা, কি কব তাহার খেলা, যত গুবা, তার কাছে, ফুল-মন্ত্র পেয়েছে। যেখানে দেখানে যাই,নিয়ত দেখিতে পাই, ছেলে মেয়ে তাবতেই, তার মতে এয়েছে॥ গদগদ ভাবভরে, এক রাগে এক স্থরে, প্রকাশ করিয়া সবে, তার গুণ গেয়েছে। করিবারে স্থপ্রচার, এই শুভ-সমাচার, দেশে দেশে দেখ তার, কত দূত পেয়েছে॥ ভাকে ভাকে হাঁকে হাঁকে, ফাকে ফাকে থাকেই, वारिक वारिकः लोर्थलार्थः, धरामग्र ছেग्रिकः। ब्लाट कुँ एम मद्द वरला भात् मिशा वाष्ट्रवरला প্রতিজ্ঞা-নদীর জলে, ভৃব্দিয়ে নেয়েছে॥ বড় বারা ধনে মানে, তারাই সে মত মানে, প্রেমনেত্রে চেয়েছে। সবাই সবার পানে,

\* একপোদে—চতুষ্পদ ধর্মের কলিতে কেবল এক পদ মাত্র রহিয়াছে। সকল তরণি নিয়ে, চালাতেছে ঝিঁকে দিয়ে, কেহবা তুলেছে পাল্, কেহ দাঁড় বেয়েছে ॥ পানপাত্র হাতে ধরি, আগেতে শপথ করি, চল ঢল হোয়ে শেষ, ঢুক্ ঢুক্ থেয়েছে। যাতে হয় একাকার, করি তার, অঙ্গীকার, সমুদ্য বিধবার, বিয়ে দিতে চেয়েছে॥

মহারাজ জয় জয়, ত্রিভুবনে কারে ভয়, মোহ-রসে প্রাণিগণ, ममुम्य शत्माह् । যাজক ব্ৰাহ্মণ যত, সকলেই অসুগত, মুখে এক, পেটে আর, যজমানে ছলেছে ! ভক্তি পালারেছে ছুটে, শুধু লয় ধন লুটে। পাঁজী পুঁথি ঘেঁটেঘুটে, কেটেকুটে ডলেছে। যজমান শিষ্য যারা, বিষম বেঁকেছে তারা, গুরু, পুরোহিত ধোরে, ছটি কাণ মলেছে।। বিদ্যালয়ে কত শি খ, মজেছে ভজেছে ঈ শু, মনেতে বিকার নাই. একদিকে ঢলেছে। মশ মশ্ যুতা পায়, ঠাকুরের ঘরে যায়, বিছানায় ভাত খায়, রতি কত টলেছে॥ থৈয়ে থানা,পড়ে থানা, কতথানা কার্থানা, বাড়িতে খানার খোলা দিবে নিশি ছলেছে। ফিরেছে সবার মতি, নাহি পূজে ভগবতী, আহারের সময়েতে, ভগবতী চলেছে॥ পায়ে দিয়ে বাঁকা বুট্ দাঁতে কাটে বিস্কুট্ গোটু-হেল ভাশ ছট্, মা, বাপেরে বলেছে। এর চেয়ে স্থােদয়, কবে আর কার হয়, দেখ দেখ মহাশয়, আশাতরু ফলেছে॥

আমার সেবক যত, তারা সব জেঁকেছে। হাতে কুরি প্রাশর, সরাসর ডেকেছে॥

স্মৃতি, মতু, বেদ আদি, দূরে ফেলে রেখেছে। क्ट ना आमत करता वर् माग्र ठिरकर हा। প্রকাশিয়া নব-পথ, নব-মত লিখেছে। সেই মত খাঁটি বটে, সাহেবেরা দেখেছে॥ ছিল মার্ত্তি, স্বার্থপর, তার অর্থ ঢেকেছে। পুনর্ভবা স্থত যত, সতীপুত্র, থেকেছে॥ অপ্রমাণ যত কথা, গার জোরে টেঁকেছে। নানা যোগে,জাগ পেয়ে, কাঁচাতেই পেকেছে॥ এক রোকে এক ঝোঁকে,ঝাঁকেঝাঁকে ঝেঁকেছে: এক জালে রুই আদি, চুনা পুঁটি ছেঁকেছে॥ অতি বেগে একরোথা, জোর বায়ু হেঁকেছে। সে বায়ুর প্ভ¦বেডে, ভাবভেই বেঁকেছে ‼ কলঙ্কের কটু-রদ, স্থথা সম, চেকেছে। উপহাদে অনায়াদে, গায়ে সব মেথেছে॥ কেমনে প্রবল হবে, সেই তাক তেকেছে। শুগালের মত সব, এক ডাক ডেকেছে॥

মহারাজ ! দল-বল্ থুব জাঁক্ছে,
ক্রমে সব পাক্ছে, সকলেই ঝাঁক্ছে,
আপন্ মতে ডাক্ছে, সুথের বিষয়
তাক্ছে, সোদা কি কেউ থাক্ছে ।
নিজে এসে বাঁক্ছে, কেউ পেটে যত
দিতে পারে গায়ে শেষ মাখ্ছে,
কেউ কুটোকাটা ছাঁক্ছে, কচি কচি
ছেলে যারা তারা এখন্ চাক্ছে,
কেউ কিছু কি আর ঢাক্ছে ? স্পট
হোয়েই হাঁক্ছে, পেটের ভিতর
একটি কথা কেহ নাহি রাখ্ছে।

হে মহারাজ! আমি যাহা যাহা করিয়াছি তাহার শতাংশের একাংশ অতি সংক্ষেপে নিবেদন ক্রিলাম।

যদি অনুমতি করেন, তবে (আমার

প্রধান বন্ধু একাকার-আচার্য্যকে

নিকটে আনিয়া বাবাজীচক্র, ভৈরবীচক্র, এবং কুমারীচক্র প্রভৃতি

রহৎ রহৎ ব্যাপারবূহ বিস্তার করি।

#### মহামোহ।

বাপু হে! আমি সীমাশুন্য-স-ভোষ-সাগরে নিমগ্ন হইলাম, ভোমার এত পরাক্রম, এতদিন তাতো
জানিতে পারি নাই, ভাল ভাল,
একা তোমা হইতেই আমার অনেক
কার্য্য সিদ্ধ হইবে, তুমি এখন সর্কত্র
ভ্রমণ করিয়া যাহা যাহা করিতে হয়
তাহাই কর!

### চার্কাক।

হে মহারাজ! আমরা তো প্রাণ পর্যান্ত পণ করিয়াছি, সাধ্যের ক্রটি কিছুই হইবে না, কিন্তু একটা বড় ভয়ন্তর বিষয় আছে, আমি তজ্জন্য সর্বাদাই অভিশয় শল্পা করিয়া থাকি, আহা মনে হইলে বাহাজ্ঞানপূন্য-হইতে হয়। হে প্রভা! 'বিষ্ণুভক্তি' নামী এক মহাপ্রভাবা যোগিনী আছে, সে বিবেকের অত্যন্ত সহকা-রিণী, তাহাকে দর্শন করা দূরে থা- কুক্, আহার নাম ও ভয়য়য়য়-য়ৄর্জিথানা সারণ করিলেই মরণকে নিকট
বোধ হয়, যদিও বলী কলির পরাক্রমে অধুনা তাহার সর্বতে তাদৃশ আ
বিভাব নাই, প্রকাশ হইয়া সকলের
নয়নপথে ভ্রমণ করিতে পারেনা
তথাচ তাহাকে প্রভায় নাই, কি
জানি, গোপনে গোপনে কথন্কি
সর্বনাশ করে।

#### गश्(ग,इ।

ভৌতহট্যা কণকাল বিবেচনার পর ]

হে প্রাণাধিক! বটে বটে, এখন
আমার মনে পড়িল সেই যোগিনীটে
বড় ভয়স্কাী, ভাল চার্কাক!—বল
দেখি ভাই, জিজ্ঞাসা করি, আমারদিগের কাম জোধাদি এই সকল
বলবান সেনাপতি দেদীপ,মান্ সত্ত্বে
সে কি সাহসে, কি উপায়ে প্রকাশ
হইয়া আপনার ক্ষমতা দেখাইতে
পারিবে! তাহার কি এতই সাধ্য?

#### कारीका

হাঁ মহারাজ ! নিবেদন করি, যদিস্যাৎ কাম ক্রোধাদির বাতাস তাহার পক্ষে অতিশয় ত্তাশজনক বটে,
কিন্তু শক্ররা এখনো একেবারে হতাশ
হয় নাই, তাহারা আশার দাস হইয়া

প্রয়াদে আয়াদে উপনিষদের সহিত
বিলাদে প্রবোধ-প্রকাশের জন্য প্রচুরতর প্রয়ন্ত্র করিতেছে, স্বতরাং
নীতিনিপুণ পণ্ডিত-পুঞ্জের উপদেশ
ক্রমে জয়প্রত্যাশি অতি ক্ষুদ্র শক্তকেও সর্বাদাই ভয় করিতে হইবেক।
কেননা তাহারা কোন এক স্বত্রে পশ্চাতে প্রবল হইয়া পদলগ্ন তুছে এক
কন্টকের ন্যায় মর্ম্মান্তিক ক্রকরর
হইলেওতো হইতে পারে, অতএব
এখনিই তাহার বিনাশের জন্য বিশেষ একটা উপায় নির্মাকর। অতি
ক্রব্রাই হইয়াছে।

#### गश्राद्यां है।

জামি এখনি তাছার বিংত উপায় করিব, এতাে অতি সামান্য বিয়য় । এইক্লণে তােমরা সকলে বিদায়
হইয়া অতি মনোেযােগ পূর্ব্বক স্ব স্ব
কার্যা সমাধা কর, এবং সকল স্থানের কর্মচারিদিগ্যে শীঘ্র শীঘ্র কুশলসংবাদ লিখিয়া পত্র পাঠাইতে অনুমতি কর।

চার্কাক-'নিষা' এবং কলি।
মহারাজ প্রণাম করি, জানুমতি
করুন্, ভবে এখন আমরা বিদায়
হটয়া আজানুরপ কার্য্য করি।

ভদনন্তর চার্কাক স্বীয়-শিষ্য এবং কলির সহিত রঙ্গভূমি হইতে প্রস্থান করিলেন।

#### মহামোহ।

চার্বাক যাহা বলিয়া গেল তাহাতে নিতান্ত তাচ্ছীলা করা উচিত
হয়না, শ্রদ্ধা ও তাহার মেয়ে শান্তি,
অত্যে এই ছটোকে সংহার করি,
পরে সেই সর্বনাশী কালামুখী বুড়ী
রাঁট্রি শ্রাদ্ধ করা যাইবে।

দ্বারের নিকটে আসিয়া।

को-शाम, को-शाम, शिंम देक शाम ति। विष्णा तिलाक् मत् शिंकत् शाम तेन। काँशै शिमा, काँशै शिमा? मतमान् मतमान्, शिंमा आंछ, शिंमः ष्माछ।

> অসংসঙ্গ দৌবারিক। [হাত যোড় কবিয়া ]

থোদাবন্দ-গরিব-নোয়াজ্, গো-লাম্ হাজির্হ্যায়্।

মহামোহ।

শরয়ান্, তোম্ যাকে কোধ আ-শের লোভ্কো আবি হিঁয়া আনে কহো, বড়া-জরুর, বড়া জরুর— জল্দি, লে-আঙ, জল্দি, লে আঙ, ভোম্কো হাম্, থসি করেগা,—এ- লাম্ দেগা ।—আল্বন্তা বক্সিস্ মে-লেগা।

দৌবারিক। জি—ছকুম মহারাজ—বহুৎ থুব্। ভৌহা।

তীরথ্বরং ছোড়্দেও,দেও-পাতর্পুজ মং ধর্ম কর্ম ভর্ম ছোডো, ছোড়ো শাস্ত্র মং॥ । যেতা বাকাণ্ছনিয়ামে, সব্বড়া বজ্ছাৎ। গল্মে ভোরি পেট্মে ছোরি মুউমে ঝুটা-বাং। ব্রাক্ষণ্লে, চামার্ভালা,যিকে সাৎ ব্যাভার পুতুলা-দে, কুতা ভালা, ফুকে মাজ্ ছয়ার্॥ মূরং স্করং কিয়া দেখেগ , রহ্ মেরা সাৎ। খুদি-দে সব্ দক্ষি পিয়ে খাও শুঁ ভিকা ভাং॥ गोहा डीइ: शरताया-माती,यत् (मरलशा भर । (दशरदाश मका म्ही, अश्म दिक अश्म মাও আও আও, মেরা পিছে,ছও মেরাভকং অসং সঙ্গ বড়। সোজা, কে।ন্ কহে শকং॥ এহিতো স্বরগ্কাঁহা পরলোগ্রুট্যুট্ সব্বাৎ জয় মহাবাজ্মহামোহকি, নাম্মে স্প্রভাত কিঞ্চিৎ কাল পরেই ক্রোধ এবং লোভকে সঙ্গে লইয়া উপস্থিত।

> ক্রোধ এবং লোভের সন্ত্রীক হইয়া রঙ্গভূমিতে প্রবেশ। ক্রোধ ।

্ স্থকীয় স্থভাব প্রকাশ : ]
গীত। অথচ বক্তৃতা।
বাগিনী বিনিউট। তাল আড়া।
প্রের, এরা, কেরে ছরাচার !।
অতি কদাকার, দেখি, সতি কদাকার॥

্রীক সাহসে, দাঁডাইল, সমূথে আমার? ওরে, এরা, কেরে ছুরাচার?া

## ধ্য়া।

মর মর্ সর্সর্, ওরে, এরে ধর্ধর্, का है का है. का है का ल, भार भार भार । शारित, अहो।, रचँरम रचँरम, बरमर इ निकरहे अस्म. গদি ঠেমে. হেমে হেমে, করে কি ব্যাভার ?॥ किछू नाहि करत छत्न, चा छ् न्या था छ। तत्र वृक् ८६८५ कथा करा, এত অহক্ষার ? , আমার স্থান হয়, অতি নীচ চ্রাশয়, কত বড় লোক অপ্মি, করেনা বিচার !! সহিতে না পারি যাহা, সকলেই করে ভাহা, কোনমতে ছাড়িবনা, কিসে পাবে পার! এবাটা,চড়েছে গাড়ী,এ বাটা রেখেছে দাড়ি ঠিক্যেন, ভোলো-হাঁড়ি, মুথ ভার ভার। দারা সহ যোগ করি: যদাপি স্বভাব ধরি, এ জগতে বল তবে, त्रक थे। एक कात् !। কে পারে আমার চোটে, মুখে যেন খই ফোটে, স্বৰ্গ, মৰ্ত্তা কেঁপে ওচে, ছাডিলে হঞ্চার ৷ মছাবীর আমি কোধ, বোধের কি রাখি বোধ: করেছি সংহার। জনসের মত তারে, উপরোধ অন্তুরোধ, হিতাহিত বোধাবোধ, কোনোকালে,আমি কারো,ধারিনেকো ধার। পিতা মাতা, বন্ধু ভাই, কিছুই বিচার নাই, তথনি প্রহার। বখন যাহারে পাই, যে আমারে হিড বলে,তাহা শুনে অঙ্গ হলে, আগে যেন গালে গিয়ে, চড়্ মারি তার। কত কত রাজবুল, কাহারো রাখিনি মূল, হয়েছি প্রচার। করিয়া জ্ঞানের ভ্ল, विवादन পড়েছে गांत्री, পরস্পর আপনারা, করে হাহাকার। শোক পেরে দারা-স্থত,

বিধি, হর, মুরহর, र्हेटन जामान हत्, অল্ব হোয়ে একেবারে, प्टिथ ज्यक्षकात् । কোথা,হিংদে, প্রাণপ্রিয়ে,শীত্র আসি দেখসিয়ে স্বর্গ অধিকার। (म्वलां क त्रिय़ां हर, পোড়াওপোড়াও কোপে,ওডাওওড়াওভোগে ममुम्ब डेएड श्रुएड, হোক্ ছারথার ॥ আমি তরু,তুমি ছায়া,আমি প্রাণি তুমি মায়া, मिलन करिएय कोशा, পরি একাকার।. धतिरल गूगल- तम, অস্থির করিব দেশ, অশেষ হটবে শেষ, শেষ থাকা ভার। আকাশেরে ঢেলে নিয়া,পাতালে ফেলিব গিয়া, প্রন, অনল, ক্ষিতি, কোথা রবে আর?। যার বাদে করি বাদ, তার ঘটে সর্বনাশ, সকলি অসার হয়, নাহি থাকে সার। অনুক্লা দেৱীভাত্তি কোথা শ্ৰদ্ধণ কোথা শাত্তিং কোণা দল্ল, কোথা ক্ষান্তি, নন্ট পরিবার?। শক্রগণে ফেলো মেরে একেবারে দেও সেরে, জগতে না হা যেন. প্রবোধ-প্রচার। विश्व द्वारतः यम कुँ ए, मकल महरू श्रुरण, আমরাই সৃষ্টি জুড়ে, করিব বিহার।

### हि॰मा।

### গৌরবিণীচ্ছন্দ।

হাাদে, দেখি ঘরে ঘরে, সকলেই থার পরে,
স্থে আছে পরস্পরে, আজে। এরা মরেনি?।
কত সাজে সাজ্-করে, গরবেতে কেটে মরে,
এখনো এদের ঘরে, যম্ এসে ধরেনি?।।
এই সব্জামা জোড়া, এই সব্ গাড়ী খোড়া,
এ সব্টাকার ভোড়া, চোরে কেন হরেনি ।।
আরে, ওরা, ভাগাবান্, বাড়িয়াছে বড় মান,
গোলাভরা আছে ধানু লক্ষ্মী আজে। সরেনি॥

মর্ এটা যেন হাতী, দশ্ হাত বুকে ছাতি,
করিতেছে মাতা নাতি, ঘরে কেন হরেনি ।
হাদে, মাগী,কালামুখী,ঠিচ্ যেন কচিথুকী,
পাতিস্থে বড় সুখী, ঠেটি কেন পরেনি?!
মর্মর্ ওই ছুঁড়ী, পরেছে সোণার চূড়ী,
বেঁকে চলে, মেরে ডুড়ি, ফুল্ তবু বারেনি।
দেশ্ দেশ্ নিয়ে মিঠে,খেতেছে কি. প্রলিপিটে
অথনো এদের্ভিটে, ঘুঘু কেন চরেনি ।।

# বিষাদিনীচ্ছন্দ। তাল খেমটা।

প্রাণে আর সংল।। প্রাণে আর সংল। স্মনা।
সমনা-বে, প্রাণে আর সংলা, সমনা।

**◆◆>** 

খোঁপা বেঁধে, পেটে পেড়ে,
চোপা করে নং নেড়ে,
ঠেকারে বাঁচেনা আরু গাঁরে দিয়ে গ্যনা।
গায়ে দিয়ে গ্যনা॥
ভয়েছে ছাপোর্ খাটে,রয়েছে রাণীর ঠাটে
রাগেতে শুরে মরি, গতেরে ভো ব্যনা।
গতোর্তো ব্যনা॥
শ্রাণে কার্ স্যনা, প্রাণে কার্ স্যনা।
স্যনা-রে, প্রাণে কার্ স্যনা,।

দেওর বিষম ছাই, ননদীরে রক্ষা নাই,

মরুক্ তাদের ভাই, তাতে কিছু বয়না।

তাতে কিছু বয়না॥

বুকে কোরে পতি লোগ্য, আমি থাকি এয়ে। হয়ে।
কতিনী সতিনী মাগী, রাঁড়ে কেন হয়না।

রাঁড় কেন হয়না।

প্রাণে আরু সয়না প্রাণে আরু সয়না । সয়না-রে, প্রাণে আরু সয়না, সয়না ॥

ভাই, রুন্, যত-গুলো, সকলেই যাক চুলো, নেডা হেঃকৃ মূলোথেং, কিছু যেন, রয়না। কিছু যেন রয়ন।।

লাতি মেরে দেও তেড়ে, ওর: যাক্ দেশ্ছেড়ে, থালা, ঘড়া, কড়। কেঁডে, কিচ্ যেন লয়না। কিচ্ যেন লয়না॥

প্রাণে আর স্মনা, প্রাণে আর স্মনা। স্মনা-ব্র প্রাণ আব স্মনা, স্মনা॥

---

বাপ্রুড়ো, বড় চক্, মুখে মিঠে হাড়ে টক্,
বোসে আছে যেন বক্, তত্ত্ব ক বু লয়না।
তত্ত্ব কভু লয়না।।
উদরে ধরেছে যেটা, সাক্ষাং ডাকিনী সেটা,
দেখিলে শর্ব ছলে, ঠিক্ যেন ময়না।
ঠিক্ যেন ময়না।।
প্রাণে আর্ সয়না। প্রাণে আর সয়না।
সয়না-বে, প্রাণে আর স্যুনা, স্যুনা।

### কোৰ।

বৈছি বিস্তার পূর্বক হিংলাকে কোলে করিয়া।
হৈ প্রিয়ে প্রাণেশবি হিংলে।
এলো এলো সদয়চিত্তে আমার হাদয়ে কদয় সংলগ্ন কর।—তুমি একবার আপনার বিশ্ববিদ্বেষী বিষমামূর্ত্তি প্রকাশ কর, ভোমার গাতে

নিরস্তর কেবল অনল শিখা প্রজ্বলিত হইতে থাকুক্। ক্ষাত্র যেন নির্কাণ না হয়। তোমার প্রভাবে এই দেখ, আমি কেমন্ এক ব্যাপার করি,-গো-হতাা, ব্ৰন্থভায়, গুৰুহতা। পিতৃ-হত্যা, মাতৃহত্যা, ভাতৃ-হত্যা পুত্র-হত্যা, স্ত্রীহত্যা, জ্ঞাতিহত্যা কুটুর-হত্যা এবং জনহত্যা প্রভৃতি যত-প্রকার হত্যা আছে,—তাহার ভারা সমস্ত কুল একেবারে সমূলে নিপাত করিব।—কিছুই রাখিবনা, আমার-দিগের সম্পূর্ণ প্রভাব দূরে থাক্ আবির্ভাবের উত্তেক্ মাত্রেই মানব ও মানবী সকলে এখনিই অতান্ত চঞ্চল হইবে, অধৈর্য্য হইয়া কার্য্য-সাধনের পথ দেখিতে পাইবেনা।

### হিংসা।

হে নাথ! লোকের এ, বে, বিষম
ভান্তি,—আমার নিকট কোথায়
শান্তি? বিপক্ষদিগের লক্ষ লক্ষ
থাকিলেও কাক্-ক্রান্তি বলিয়া লক্ষ্য
করিনে। আমি এই অরির-পথ
রোধ করিয়া ভ্রন্ধাওময় শরীর বিস্তার করিলাম।

#### লেভ।

সভা মধ্যে স্বভাব প্রকাশ।]
সংগীতচ্চলে বক্তৃতা।
বল বল, কিসে হবে, ক্ষ্ণা নিবারণ!।
কঠোর জঠরত্বালা, করে ত্বলাতন॥

### ধৃয়া।

माध् कोरत पिष्टे भान्। এত চাল্ এত ডাল, এক দিনে গেল কাল্, কি করি এখন ?! एडल, लुन, नाड चरत, द्राष्ट्री केन् केन् करत. মূতন করিতে হবে, সব আয়োজন॥ সকলেবি মুখ-বাঁকা কোথা গেলে পাব টাকা, 1 কার্ কাছে যেতে পারি পেতেপারি ধন !।, চুরি কোরে আনি কড়ি,পাছে শেষ ধরা পড়ি, দিয়ে দড়ি হাতে খড়ি, করিবে শাসন॥; যতই বাড়িছে বেলা, ততই ক্ষুধার ঠেলা, আজ্বুঝি কপালেতে, হোলোনা ভোজন। हल पिथ होटि योहे, हिस्ड मुड़ि यपि शहे, ফাকা ফুকো থেয়ে ভবে, বাঁচাব জীবন॥ এই দেখি শত শত, বড় বড় ধনি যড়, আমারে করেনা কেন, ধন বিতরণ ?। গোয়ালার বাড়ী ওই ভাঁড়্ভরা ছানা দই, / চুপি চুপি কেন তাই, করিনে হরণ : ॥ कलवान यठ गोह, कल्लाइ वाइत वाह, না হয় গণন। পুকুরেতে কত মাচ, গাছে উচে,ফল পাড়ি জড় করি কাঁড়ি কাঁড়ি, যত পারি বাড়ি নিয়ে, করিব গমন 🏽 পুকুরের কর্ত্তা যারা, এখানেতো নাই তারা, ছিপ্ফেলে ধরি মাচ, কে করে বারণ?। प्तरथ यनि ছिপ् सूरणा, ना श्य,- मो द्रिरव जूरणा, धुला (बार्फ काल यांव, मूजिए नमन ।

যা হবার তাই হয়, নিছে কেন করি ভয়, পেটে খেলে পিটে সয় ক্রিতি এইতে। বচন। চুরি কোরে নৎ,টেড়ি, সে দিনে খেটেছি বেড়ী থাটিব তথন।। না হয় আবার গিয়ে, বেড়ী नय, मल পরি, মাটি কেটে, দিন হরি, কারাগার. সে আমার, শ্বশুর-সদন। হ্যাদে ওই থালখানা, যদি ভাই যায় আনা, ছুদিন-তো; হবে তায়, স্থেতে যাপন॥ ধোবারাকাপোড় কাছে, ভাল ভাল ধূতি আছে. শুকুতে দিয়েছে সব, চিকন-বসন। সবুজ, সফেদ্ লাল, পালাদার বেড়ে সাল, আনিয়াছে পাল পাল, থোটা মহাজন॥ মোগোল, পাঠান কত. কাবেলের মেয়া যত. করিয়া যতন। উঠে উঠে, আনিতেছে, এসব স্থথের যোগ, যদি নাহি হয় ভোগ, তবে কেন করি মিছে, শরীর-ধারণ?॥ বেনের দোকান লোট্-রূপা সোনা,টাকা,নোট্. বেঁধে মোট্ ছোট্ ছোট্-পালা ওরে, মন॥

[ अनामिश्य अवलाकन शूर्कक ] এই দেখি পেটডোঙা,ভেঁকর উঠিছে চোঙা, হাতী, ঘোডা, কত কত, করেছি ভক্ষণ। কোথায় গিয়েছেগোলে আবার উঠেছে ছোলে দেরে দেরে খেতে দেরে, বাঁচারে এখন।। কটাক্ষেতে দিয়ে টান্, এখনিই আন আন্, খান্ খান্ কোরে খাই, এতিন্ ভুবন। প্রিয়তমা তৃষ্ণা সতী, আমি তার প্রাণপতি, এই দেখ বুকে তারে, করেছি স্থাপন। व्यामोत्मद्र (इर्रास वन, मत्मद्र विवय-द्रम, মুহূর্ত্তে ব্রকাৎকোটি, করিছে সৃজন। নিজা নাই একৰার, আমার কারণে তার, वामनात शब्द सध्, कर्त्रम् जगन।।

দেহ হোলে নিদ্রাকুল, তবু নাই ভায় ভল, স্বপনে আপন ভাব, করেন্ জ্ঞাপন। আমাদের ঘোর বেগ্, কিসে তিনি নিরুদ্বেগ্, মন বিনা এই বেগ্, কে করে ধারণ ?।। হেন সাধ্য কার আছে, কে যায় মনের কাছে, মনেরে প্রবোধ দিয়া, কে করে বারণ?। যদি কেউ থড়িপেতে,কোনরূপে গুণে গেঁথে, করে নিরূপণ।। আকাশের কত তারা, যদি কেউ এ জগতে, উপায়েতে কোনমতে, প্রতাপে করিতে পারে. বাতাস বন্ধন। কোনরপে যদি কেউ. জলধির যত ঢেউ, করে নিবারণ॥ রোধ করি একে ।বে, প্রকৃতির এ সংসারে, কোনরূপ অস্ত্রধারে, যদ্যপি ক'রতে পারে, আকাশ-খণ্ডন। পূর্মদিগে প্রাতে রবি, প্রভাবে প্রকাশে ছবি, সে উদয় রোধ যদি, করে কোন জন।। সম্ভাবনা যদি হয়, এসব সম্ভব নয়, হয় হয়, হোলে। হোলো, কে করে বারণ। गरनरत क दमरव लाश्-लाठि खारत जारह काव করিবে আমার রোধ্ কে আছে এমন্।।।

্রিফার মুখচুষন পূর্লক ক্ষুধায় অত্যন্ত কাতর হইয়া আর দিগে মুখ করিয়া পেটে হাত দিয়া মুখতঙ্গিষা।

গুরে, আর, যে, বাঁচিনে, পেট্ জোলে যায়, জ্বোলে যায়, গুরে কিছু দেরে, দেরে।

পেটের নিকটে আর, কিছুতে না পাই পার,
সমুদর অক্ষকার, করি দরশন।

ঢুকিয়াছে ভশ্মকীট, না মরে ক্ষ্ধার ছিট্ট
চুমুকেতে কত আর, করিব শোষণ ! ॥

উঠিয়াছে খাই খাই না মেটে আশার খাই, খাঁট খাঁই রবে সবে, ছ†ভিছে বচন ৷ ঠাঁট ঠাঁই ডাঁই ডাঁই, যেন পর্বতের চাঁই, কোথা হোতে এদে করে, কোথায় গমন?।। **এই দেখি, এই এই, क्रन्शर**त निर्हे निर्हे, এ খেয়ের থেই কেটা, করে নিরূপণ ?। কেবা বাছে পঢ়া,সড়া, কেবা বাছে বাসিমড়া, যত পারি তত করি, উদরে ধারণ।। अडे रयः ठीतुत घरतः, वीग्रुटनत। शृक्षां करतः, বছবিধ খাদ্য নিয়া, করে নিবেদন। ওতো কভু শুদ্ধ নয়, এঁটো করা সমূদয়, কতক্ষণ আগে আমি, করেছি ভক্ষণ।। ওদের কুলের-বধূ, প্রফুল ফুলের-মধু, কেহ নাহি পায় যার, দেখিতে বদন। কত দিন আগে আমি, হয়েছি তাহার স্বামী, করেছি রমণ।। ঘরে বেক্সে মনে মনে, ওরা পেয়ে খাট্ খানা, স্থথে হোয়ে আট্ খানা ধোরে কত ঠাট্ খানা, করেছে শয়ন। সকলের সংগাচরে, করেছি যাপন।। ক গদিন শুয়ে তায়, দেবপতি তারাপতি, হোলো গুরুদারাপতি, তাহে কিছু একা নয় কামের সাধন। সম্ভোগে হইল লোভ, না ভুগিলে পায় ক্ষোভ, সেধে কেঁদে পূজে ছিল, আমার চরণ।। আমি জাগি সর্ব্ব আংগ,কাম,ক্রোধ,পরে জাগে সবারি মরণ। না চাগালে কেবা চাগে, मानरमञ् ভालवामाः মানসের ভালবাসা, लाखिष्ट नंत्र।। আমার চরণে আশা, বিধি, হরি, শারহর, সেবা করে নিরন্তর, আমারে না দিয়ে কিছু, করেনা গ্রহণ।। धर्मात (रा श्रुख इस, सादत लाकि यम कस,

সে যমের উচ্চপদ, আমার কারণ।
আমার সেবক যারা, দারুণ চতুর তারা,
চতুরতা কেবা জানে, তাদের মতন॥
তুব্ দিয়ে জল খায়, শিব নাহি টের পায়,
নল-দিয়ে, ছুধ করে, উদরে শোষণ।
রেখে বস্তু অবয়ব, জিব দিয়ে চাটে সব,
জিলিপির ফের-ভেডে, করিবে ভোজন॥
পিতা, মাতা, দেব, গুরু, সবার উপরে গুরু,
নিজ এঁটো, সকলেরে করে বিতরণ॥

[ আবার আর এক দিগে চাহিয়া।]
ওরে, এ, কার দোকান রেং কার দোকান :
বক্তৃতা-চ্ছলে সংগীত।
তাল একতালা।

হথে হোরে আট্থানা হায় হায় মজিল নয়ন। কি করি এখন,
করেছে শয়ন। বল কি করি এখন?।
সময়ের অবসরে, অপরূপ মনোলোভা, আহা মরি কিবে শোভা,
করেছি যাপন।। জনমে করিনি কভু, হেন, দরশন॥

হায় হায় মজিল নয়ন।
আহা এই, নদীতটে, দোকান্ জাঁকালো বটে
একেবারে খুলেগেল, ভূলেগেল মন।
বিষাধর, পানতুয়া, বাসিত-চন্দন,-চয়া,
ভাসিছে হাসির রসে, কিবে স্থগঠন।।
পাক্রেখে কড়া কড়া, ভাজিতেছে ছানাবড়া,
পড়ে রস্ টস্ টস, মুখের-বচন।
স্থরপ, চিবুক-ভাজা, যেন বর্দ্ধমেন-খাজা,
অথবা, কি, সরভাজা, স্প্রচারু-বদন?॥
মরি মরি কিবে নাসা, নিখুতি-সন্দেশ খাসা,
মনোহরা, মনোহরা, শোভিছে প্রবণ।

পরোধর তিলেগজা, সাজানো রয়েছে মজা, আয় আয় বোলে মন, করে আকর্ষণ।। प्राट्ट लावग-नीत, यन পाठा-मा क्रांकीत. চল চল সর তায়, স্থার যৌবন। এই ক্ষীর, এই সর, স্থ্য হায়, আমি কভক্ষণে, করিব ভোজন !।। षित निमि खल थाला, ममारे तरग्रह थाला, এক মনে গড়িতেছে, কত শত মন। नाहि (पिथ,पान, তোলा गत्न मत् मन्छाना সেমন, ওজনে কত, কেজানে কেমন?॥ यांडे प्रिथ मन अँ एठ, यदि कि कु प्रिय (यएठ, করিব গ্রহণ। প্রতিগ্রাহী হোয়ে তবে, না গেলেতো নয় নয়, যেতে এই করি ভয়, বোধ হয়, জিলিপি, জিলিপি, যেন মন।।

হে প্রিয়ে তৃষ্ণে ' তুমি আপনার পরাক্রম এরপে প্রকাশ কর, যেন কোনমতেই কাহারো মনে তৃপ্তি ও শান্তির উদয় না হয়।

তৃষ্ণা।

# গীতছলে বজুতা।

আমার এ পোড়া পেট্ কিছুতেই ভরেনা।
কিছুতেই ভরেনা॥
আমার এ পোড়া পেট্ কিছুতেই ভরেনা।
অনম্ভ ব্রকাও চেলে,কাঁডি কোরে দেও ফেলে,
নিশ্বাদে করিব শেষ, এক্কোণে ধরেনা॥
আমার এই পোড়া পেট্ কিছুতেই ভরেনা।

কিছুতেই ভরেনা।।

(কান্ত নই দিনে রেডে,বদেছি আর্চোল পেতে, কথনই পুরিবেনা, কোঁচড্ আমার:

যত পাই পেটে ভরি, সমুদ্র শোষণ করি,
তথাচ রয়েছে থালি, উদর্ভাণার।
কিছুতে না হয় তৃপ্তি সন্তোষের কোণা দীপ্তি,
আমার ভয়েতে তারা, নিকটেতে চরেনা।
আমার্ এ পোড়া পেট্, কিছুতেই ভরেনা।
কিছুতেই ভরেনা॥



কোনমতে নাহি আলি, কিসে হবে আংখালি,
দশন-ঘষণে সব, করি চুর্ মার্।
জঠর অনলে পুড়ে, ছাই কোয়ে যায় উড়ে,
কোথায় গিয়েছে তার্, চিহ্ন নাই আর।।
্উদরেই সমুদয়, কোথায় উদরাময়,
পেট্ফাঁপা দূরে থাক্, বাযু কলু সরেনা।
আমার্ এ পোড়া পেট, কিছুতেই ভরেনা।
কিছুতেই ভরেনা॥

---

বাসনার হোয়ে বশ, থেতেছি বিষয়-রস, করেছি অথিলময়, রগনা-বিস্তার। আমার বিক্রম যথা, শাণ্ডির সঞ্চার তথা, বিষম ভাণ্ডির কথা, বিশাল ব্যাপার॥ আমার কি আছে ঘুম. কেবল ভোগের ধূম, যত পাই, তত থাই, আশা কভ মরেনা। আমার এ পোড়া পেট্ কিছুতেই ভরেনা। কিছুতেই ভরেনা॥

[ ক্রোধ, হিংসা, লোভ এবং তৃষ্ণার মহামোহের নিকট গমন:]

মহারাজ জয়জয়কার, জয়**জয়**কার। আমরা সকলেই প্রণাম করি-

তে আসিয়াছি, আজ্ঞা করুন্, কি করিতে হইবে?

#### মহামোহ।

ওহে, শ্রদ্ধার কন্যা শান্তি আমারদিগের বিরুদ্ধে অতিশয় বিপক্ষডাচরণ করিতেছে, অতএব যে প্রকারে
হয়, তোমরা সকলে একত্র হইয়া
এখনিই তাহাকে সমুচিত শান্তি প্রদান কর, তাহার যেন আর গতিশক্তি না থাকে।

(কোৰ এবং লোভ, সন্ত্ৰীক হইয়া।)
যে আজ্ঞা মহারাক্ত, তাহাকে
সমূলেই নিপাত করিব।
তদনন্তরকোধ এবং লোভ স্ব স্ত্রী
সহিত রঙ্গভূমি পরিত্যাগ করিলেন।

#### -000

মহারাজ মহামোহ। ( মনে মনে বিভর্ক পূর্বক )

ওহে সভাসদ-গণ। ভাল তোমর।
বিবেচনা কর দেখি, শ্রদ্ধা তো আমাদের দাসীর দাসী। শান্তি সেই শ্রদ্ধার
কন্যা, ভাহাকে-তো বিনাশ করিবার
বিলক্ষণ এক সহজ উপায় আছে.
সেই শ্রেদ্ধাকে উপনিষদ্দেবীর নিবাস
হইতে কেশাকর্ষণ পূর্বক আনয়ন
করিয়া সংহার করিতে পারিলেই

এই শান্তি মাত্বিচ্ছেদ-শোকানলে আপনি-দগ্ধা হইয়া তৎক্ষণাৎ প্রাণত্যাগ করিবে ।—আমার বিবেচনায়
"মিথাাদৃটি" নামী-বেশ্যাই কেবল এই কর্মের যোগ্যপাত্রী, অতএব তাহাকে নিয়োগ করাই কর্ত্তব্য,
"বিভ্রমাবতী" দাসী গিয়া এখনিই তাহাকে ডেকে আনুক্।

পেরে দার সমীপে পিয়া।)

'বিভ্রমাবতী "তুই এই দণ্ডেই

'মিধ্যাদৃষ্টিকে "ডেকে আন্।

বিভ্রমাবতী।

বিভ্রমাবতী।

গীত।

রাগিণী বাহার। তাল থেম্টা।

দিন্তুপুরে চাঁদ্উঠেছে,রাৎপোয়ানো ভার
হোলো পুলিমেতে আমাবস্যা,
তেরো-পহর অন্ধকার॥

এমে বেন্দাবনে বোলে গেল, বামী বউমী।
অার ভাদর মাসের সাভুই পোষে,
চড়ক পুলোর দিন এবার। ১

সেই ময় রা মাগী মোরেগেল,মেরে বুকে শুল্,
বামুন্তলো ওমুদ্ নিয়ে মাথায় বোচেচ চুল,
কাল্ বিফিজলে ছিটি ভেমে,
পুড়ে হোলো ছারে খার।
ই ভুক্তিমামা পুরু দিগে, অত্তে চোলে যায়,
উত্তর দ্ধিন্কোন্ থেকে আক্র,

বাতান লাগ্চে গায়।

সেই রাজার বাড়ীর টাটু থোড়া,
শিং উঠেছে দুটো তার ॥ ৩
ঐ কলু রামী,ধোপা শামী;হাস্তেছে কেমন্।
এক বাপের পেটেতে এরা, জন্মেছে কজন্।
কাল কান্রপেতে কাক্মরেছে,
কালীধামে হাহাকার ॥ ৪
ধে আজা মহারাজ। তাকে

-

কিঞ্চিৎ পরেই " বিভ্রমাবতীর " সহিত মিথ্যাদৃটির আগমন।

-

মিথ্যাদৃটি #।

[আপনার গুণগৌরব প্রকাশ।] গীত।

রাগিণী বাহার। তাল থেম্ট।।
কোর্ফিকত নিজ গুণ্ প্রকাশ।
আনার্বাতাসে হয় সর্কাশ।
আমার্ছায়ার আগে, সাধ্য কে দাঁড়ায়।
ভয়ে উক্ খুক্,ফল্না,তুক্ শুক্,হোয়ে যায়॥

আমায় দেখলে পরে অনপুন,
আপ্নি করেন উপবাস ॥ ১॥
আমার মিঞ্জিপা, যফি লাগে গায়।
যদি আড়ুনয়নে দিফি করি, ছিফি উড়ে যায়॥
আমার পদাপপনে ঘূ-ঘু চরে,
হাড়ে গজায় দুকোখাস ॥ ২॥

<del>~></del>6.←~

\* मिथानि |-नाडिका वृद्धि।

ण्य एक हेन हेन नाहिए नाहिए थन थन वनत्न शिमार शिमार उत्ना ७ मिथ विज्ञभावणी । आ-मारक रकमन् प्रथारक, प्रथ् प्रथि ? आमात्र कि आत्रस्म कान् आर्छ भा? रम तम् नारे, रम कम् नारे, रम किछू हे नारे, रकवन अक ठांठे थाना आर्छ । हात्ना तून्, अरे ठांछा प्रथ्य लारक कि आमात्र ठाला रकार्यत ? आमि तूर्ण श्राह्म, — हार्मा ! ताका आ-मात्र रकन जाक्रहन ?।

বিভ্ৰমাৰতী।

उला मिमि।— जूरे कि कथरना
व्राह्म हिन्ना? ममछ स्मरम छला
रहात काथाम नारा १ धमन हिन्ना
त् हाडेनि,—धमन हुत्नत् हाडेनि—
धमन प्रदृत् केमक्—धमन थाता छधमन प्रदृत्त केमक्—धमन थाता छधमन प्रदृत्त केमक्—धमन थाता छधन्न व्याप्त कि कारता আह्ह त्ना?
रहात वरमम् यह पून्रम छेक्र्ह, मतीत्
छह छन्रम छेक्र्ह, कल् रम छन्रम
छिर्क हात्किहात्कि स्मात्कि स्मान्न अधिक कथरना छाँ। हरत तुन्।—
रित्रकान काणात्नात् रहामात् छता
थाक्रवरे। छरत तुन् नम्रह खामात् छन्न

তো বেজার্ হবিনে ?—(তোর গয়্না গুলো ভাল বটে, কিন্তু তুই পছন্দ-गहे পোতে जानिम्रन,—विनिम् यिन আমি তোরে আচ্ছাকোরে মনের্ **ম**ত म्। जुरु कि। — न्राथ् এই পায়ে-त्-मन् छ्गाष्टा थूरल निरय्) छूरे नारक-তে ঝুল্যে দে। আমি একটা গজা-ল দিয়ে নাক্ ছুটো ছেঁদা কোরে मि। आत् मार्थ।—नारकत् ७३ नथ গাচ্টা খুলে বাঁ-পার কোড়ে আঙু-লে পোরে ফাাল্। চোকের্ কাজল্ মুছে নিয়ে ছই গালেতে মাখ দেখি। मिमि,—जुड़े डाजात् नागरतत् এक नागती। তাদের আয় পয় ও निष्कत् এয়েং রাখ্বার জন্যে এক্জোড়া সোণার শাঁকা পোত্তে তো হয়।— ভা হোলে তোর্ আশ্চজ্জি শোভা रुद्ध ।

মিথ্যাদৃষ্টি।
ওলো সই, বেশ্ বলেছিস্, এই
বেশ্ বেশ্ বটে।
বিভ্রমাবতী।

দিদি।—পুরুষেরা বলে"আপ্-রুচি খানা, পর্কুচি পেঁদ্না।— আমি যখন্ পোষাক্ পোরে জাঁক্ জম্কে পাড়া করি,—তখন পথের্ সকল লোকটা দেখে অমনি ধরি ধরি ধন্নি করে !— আব্ আমার্ " তিনি"
আলাদে আট্খানা হোয়ে গল্তে
থাকেন !—ভাল দিদি, জিজ্ঞানা
করি,—তোর চোক তুটো কেন ঢুল্
ঢুল্ কোচে ?!

### নিথ্যাদৃষ্টি।

( আহ্লাদে গদগদ হইয়া মুখের ঠাট করিয়া হাসিতে হাসিতে।)

আর্ বৃন্, ও কথা তোরে কি বোল্ব?—কি জিজাসা করিস্? আমার্
কি আর্ দিন্ রান্তির্নিদ্রে আছে?
এই রাজবাটীর ছেলে বুড়ো সকল
গুলোই আস্ছেই আস্ছে!—চুল্
বাঁন্দে এক দণ্ড অব্সর পাইনে,
আমি একা নারী, তাহারা সহসু প্রক্রম, এতে কি আর যুম্ আছে-লো?

### বিজ্ঞমাবতী।

ওলো দিদি! শুনে যে বড় আশুজ্জি বোধ হচ্চে, কামের রতি,
লোভের তেফা—কোধের হিংসে,
এই সকল ঘরের গিন্নী বান্নী আছে,
তারা কি কেউ তোমার্ উপর বেজার হয়না গা?।

### विश्वानृष्टि ।

জম্কে পাড়া করি,—তথন পথের কি বৃন্? তারা আবার বেজার্ সকল্লোকটা দেখে অম্নি ধরি ধরি হবে? তারাইতো সব্ধোরে বেঁধে শানে গোৎয়ে দেয়। আমি কখনো কাউকে যেতে ডাকিনে, হাঁলো একি বল্বার কথা? আগু মুখে বলা নয়, হ্যাদ্-দেখ্, রাজ্বাড়ীর ঐ বোউ-শুলো, মেয়ে-শুলো, আমায়্ছেড়ে একরন্তি স্থির থাক্তে পারে না।—হাঁলো সই, আমাকে কি ভাল দেখালে? রাজা দেখুলে পর্তো খুসি হবেন্।

विख्यावजी।

पिनि।—(निथिम्, तांका प्रयुक्त

भारत श्रे श्रेष्ठ श्रेष्ठ शास्त्रम्, अनुद्रम्

भाष्ट्रस्म।

রঞ্জিণী চৌপদী।
বাবৰ গিয়েছে ঢোসে,শরীরপোড়েছেখোসে,
তবু আছ ঠিক্ বোসে,ঠোটে দিয়ে কস্-লো,
ঠোঁটে দিয়ে কস্।

ভাল ভাল ভাগ্য জোর,কটাকেই কর ভোর, এখনো লাবণ্য ভোর, করে টস্টস্লো, করে টস্টস্॥

তোয়েরি ভোষার চেয়ে,এমনকে আছে মেয়ে, ঈষং ভঙ্গিতে চেয়ে, কর সব বশ লো.

কর সব বশ।
তুমি দিদি কল্পলতা, সমাদর যথা তথা.
পাড়িলে, ভোমার কথা, সবে গায় যশ লো,
সবে গায় যশ॥

ক্ষিরভাবে অই যাম, পদানত রতি কাম, ৰাষুবেগে ভোর নাম, ছোটে দিগ দশ লো, ছোটে দিগ্ দশ। ममशीन हाला किन, उथार भारिक जनि, शास्त्रा मिन पूर्ण मिन, उत् बक द्रम ला,?

> ভবু এত রস ?। মিখ্যাদৃষ্টি।

হাঁলো সই।—তোরা কয় বুন্।
বিজ্ঞাবতী।

तूनी मानी, कूनी शिनी, दिम् नी शांत्रां शिनी, आंत्र आंत्र आंत्र आंत्र आंत्र आंत्र आंत्र अंत्र शिंह होत् है तून्।

নিখ্যাদৃষ্টি।

সই।—আজ্ শেষ বেলাট। রা-জার্ সঙ্গে দেখা কোঠা কি? বিজ্ঞাবতী।

দিদি।—রাথ পর্তেরো, কি
সতেরো। ঐ মাতার্ উপর্ হৃচ্ছি
কিক্মিক্ কচে। এই সময়টাই
ভাল সময়।

দিদি।—ঐ মহারাজ সিজেসনে বোসে আচেন্, তুমি তাঁহার নিকট শীগিগর যাও শীগিগর যাও। মিথাদুষ্টি।

মহারাজ। আজ্ঞা করুন, আমি আপনার দাসী, "মিথ্যাদৃষ্টি" প্রশাম করি, আমাকে কেন ডেকেচেন্?

> মহামোহ। গীত।

রাগিণী বারোয়া। তাল আড়া। হিহি ধনি ওখানে দাঁড়ায়ে কেন আর । धाना এरमा काल धाना, वीरमा धकरात है) আজ্ একি শুভদিন, আমি তব প্রেমাধীন, पिथि नाई वह मिन, বদন ভোমার। ভোলো প্রিয়ে মুথ ভোঙো, মুথের আঁচল খোলো, শোভায় হরণ কর, মনের জাঁধার ॥ কর্যুগে ছেঁদে ধর, হর হর তাপ হর, মানস প্রফল কর, এখনি আমার। তুমি-লো প্রাণেরপ্রাণ,বাহিরেতে কেন প্রাণ, ভোমায় করেছি দান, হৃদয় ভাগ্ৰার ॥ শুন শুন প্রাণ প্রিয়ে, प्तर निर्मायन निर्मा কর অধিকার। প্রাণের আসন গিরে, অধর শোভিছে হেন, নধর-পল্লব যেন, মুপুরের ধ্বনি পায়, জমর-ঝকার। बहन कि किल-श्रुव নয়নেতে পথ্যশর, দেহ অধিকার ৷ করেছে বসস্ত তব,

रह शिक्ष। महे मानीत विणे जिल्लकारी, कूलाकाती व्यक्ता विरव्हत निहल जिल्लाकाती व्यक्ता विरव्हत निहल जिल्लाकाती व्यक्ता विरव्हत वाता श्री कि कि निहल कि

নিখ্যাদৃষ্টি। গীত।

রাগিণী বাহার। তাল খেম টা।
জন্ম মহারাজ, ভর কোরোনা আর।
আমি কোর্ফো একা, একাকার।

এমন্ পতিব্রতা সতী আছে কে। আমি সাত্-পুরুষ্কে,রুমণ্ কবাই অতি পুলকে (मरे माध्तीमंछी मानिकीत्क, সদা ঘটাই ব্যভিচার ॥ আমার এক্টুথানি বাতাদ্ লাগ্লে গায়। বেচে কোশা কুশী,মৃনি ক্ষষি,বেশ্যাবাড়ী যায়। লোকের পাতাপাত, গোতাগোত্ত, এখন্কিচু নাই বিচার॥ হে মহারাজ। এই দাসীহোতেই সকল কর্ম্ম সম্পন্ন হবে। তার এক্টা ভাব্না কি ? আমি এক্ ছঙ্কারে টু-कारत मकनारकरे काना कार्या. किष् कि किছू प्रथ एउ शाद ? धर्म नाई, কর্ম নাই, শাস্ত্র নাই, বেদ নাই, গারিত্রী নাই, মোক্ষ নাই, সকলি উপনিষদ, মিছে।—মহারাজ। সে—কে?বেদের একটা ভাগ্বইতো নয়। তারেতো এক্গাছ ত্ণের চেয়ে তুচ্ছ জ্ঞান করি, সেযে বড় অপদার্থ,

রুস নাই, কস নাই, স্থুখ নাই, তাতে

लाक्त्र अन्ना क्न रूत? (भाक्त,त्र

আবার কি? মহারাজ মনের কো-

ণেও ঠাঁই দিবেন্না, সে অদার এত

আম্পূৰ্দা ? অগ্ৰদ্ধা এখনি তারে

দাঁতে চিব্রে, গুঁড়ো করুক্। আমি তার বুকে দাঁড়াবো, পারে মাড়াবো,

দেশ-ভাড়াবে:, বেদ ছাড়াবো, ভেদ

काषाद्वा।

জার কি ডারে আস্ত রাখি—আক্ত রাখি ।

এই দেখনা, ঘাড়্টা ভেঙে,
রক্ত চাকি-রক্ত চাকি॥

মহামোহ।

আর আনন্দের সীমা নাই।

হে হৃদয় রঞ্জিনী! এত দিনে
আমার মনের সকল উছেগ্ দূর

হইল, আর আমার কোন ভয় নাই,
ভয় নাই। হে প্রিয়ে! যেমন মহাদেবের বামভাগে পার্ক্ষতী বিসয়া
শোভা করিতে থাকেন, তুমি সেইকপে আমার বামান্ধে মিলিত হইয়া
বিরাজ করিতে থাক।

( অতিশয় ব্যাকুল হইয়া হস্ত প্রসারণ পূর্বক আলিঙ্গন করণে অগ্রসর। মিথ্যাদৃষ্টি।

ও মহারাজ। ও কি ? ও কি? আমি
মেয়ে মানুষ।—সভার্ মাঝে।—
দিনের্বেলা।—দিনের্বেলা।—এই
সব্নোক্রয়েছেনোক্রয়েছে।—
আই আই আই।—আমি নজ্জান্পাই, নজ্জাপাই। ছি ছি ছি, সোরে
যাও, সোরে যাও।

আদরিণীত্দা। ছিছিছি, দোড়য়ে এসে, ক্লোড়্যে ধোরে,

মনের আগুণ্কেন জালো । ওকথা, আর্বোলোনা, আর্বোলোনা, আর্বোলোনা। অম্নি ভালো, অম্নি ভালো॥

ছি ছি সভার্ যাজে, মরি লাজে,
দিনের বেলা রবির আলো।
ওকথা আরু বোলোনা, আর বোলোনা,
আর বোলোনা। অম্নি ভালো,
অম্নি ভালো।

ছি ছি ছি, সময় আছে, সবাই কাছে, কামের পাশা, কেন চালো । ওকধা, আরু বোলোনা, আরু বোলোনা, আরু বোলোনা। অম্নি ভালো, অম্নি ভালো॥

ছি ছি, রক্স দেখে, অক্স জ্লে,
টিক্যেন তিভক্স কালো।
ওকথঃ, আরু বোলোনা, আরু বোলোনা,
আরু বোলোনা। অম্নি ভালো,
অম্নিভালো॥

মহারাজ। চল এখন আমর।

সাজ্যরে গমন করি।

তদনস্তর মহামোহ এবং মিথ্যাদৃটি

রঙ্গভূমি হইতে প্রস্থান করিলেন।

ইতি বোধেন্দু বিকাস মহানাটকেরদ্বিতীয় অঙ্ক সমাপ্ত।

### 

### শাস্তি এবং করুণার রঙ্গভূমিতে প্রবেশ।

माखि।

(জগদীশরকে প্রণাম।)

হে জগদীশ্বর প্রমাত্মন্। তো-মাকে প্রণাম করি, আমার প্রতি প্রসন্ন হও।

> ( সভ্যগণের প্রতি উপদেশ পূর্ব্বক বক্তৃতা। )

হে জীব সকল। ছুই সংসারকে অনিত্য জ্ঞান করিয়া নিয়তই
মরণকে অরণ কর,—মনের সকল
অভিমান হরণ কর,—দন্তোঘকে মনের মন্দিরে বরণ কর,—কেবল
আনন্দদ্বীপে চরণ কর,—জীবন
জীবনবিশ্ব-বৎ, নিশ্বাসের প্রতি বিশ্বাস নাই, এখনিই বিনাশ হইবে,
অতএব যত পার ততই সৎকার্য্য
সাধন কর,—ই ক্রিয়গণের বশীভূত
হইয়া সৎকার্য্যের সৎকার্য্য করা
উচিত হয় না, পরম প্রেমের প্রেমিক হও, সকলের প্রিয় হইয়াপ্রেমপাশে সকলকে বদ্ধ কর।—এই
জগতীবানে কে তোমার শক্র আছে?

তুমি কাহাকে শক্ত জ্ঞান কর ? তুমি বিবেচনা-দোষে আপনিই আপনার শক্ত হইতেছ, কারণ দেহের কারণ না জানিয়া দেহেতে আত্ম-বোধ করত ঘোরত্তর অভিমানবশতঃ কেবল রিপুদিগকে চরিতার্থ করিতেছ।— এই অভিমান, এই অহঙ্কার, এই দন্ত, ইহারা তোমার যত্ত শক্ত আর কেহই নাই।—যদি এই রিপুন্মপ্তিত বপুরাজ্য পারিতোষিক স্বন্ধন তোমার চিরপ্রাপ্ত-ধন হইত, তবে অহঙ্কার একদিন শোভা পাই-ত।—মৃত্যু প্রতিক্ষণেই নিজ নিক্ট আহ্বান করিতেছে, এখনিই মৃত্যু-প্রথমর চরণ-শরণ লও।

জগতের পোভা দর্শন কর,—
কি বিনোদ-ব্যাপার-বৃহহ বিলোকিত
হইতেছে। কিন্তু এই অন্ত, ভূতের
ব্যাপার দেখিতে দেখিতে ভূতে
অভিভূত হওয়া উচিত হয় না। যিনি
সকল ভূতের কর্ত্তা, ভূতাতীত ভূতনাথ

তাঁহারি ভাবে অভিভূত হও। রিছা-ममूद्ध वतः वह त्रष्ट्रमग्नी-বস্থা-গর্ত্তে যে সকল রত্মরাজি রা-জিত আছে, তংসমূহ একত্র করি-या मरस्रांत्र कतिरलं अन्यमाज यथा-र्थ इत्थेत मक्षांत हरेट পात्त ना। এই বিচিত্র গগণক্ষেত্র-বিরাজিত চন্দ্র, স্থ্য, বায়ু, এবং বারি প্রভৃতি কি কথনো তোমাকে চিব্ৰুস্থথে স্থখী করিতে পারে? কেননা মানব-ক্লত কাৰ্য্যজনিত অথবা প্ৰাক্ততিক-মু-খকে প্রকৃত-সুখের মধ্যেই গণনা করা যায়না, যেহেতু এই সমস্ত সুখ-ष्यविनामि धवः चनन्त नरहः कर्षः, ক্ষণেই বিন্ফ হইতেছে, অথচ ইহা-তে কেবল ছুঃখের অংশই অধিক, ঐ সমুদয় অনিত্য-স্থারে বিচ্ছেদ-কালীন যেৰূপ ছঃখের উদয় হয়,তাহা শরীর এবং মনের পক্ষে কত কফ-দায়ক বিবেচনা কর।—হে মানব! বিশেষ প্রাণিধান পূর্বাক এই অসার-**मः मादत मः मात्रमञ्जीय** স্থার আশা পরিহার কর। শুক শুদ্ধচিত্তে এক অক্য়, অধণ্ড, অনন্ত, মুখ সভোগ কর, যাহার সহিত ছ:থের কিছুমাত্র मः खदं नाहै।

এই মোহকরী মহী-মাতার মোহিনী-মূর্ত্তি দুর্শন করিয়া কেন भाहित इब ? पेरे खनताना, वरे সব ভব-কার্য্য যাহার দ্বারা অবধার্য্য হইতেছে; ভাহার অনিবার্য্য অত্যা-শর্য্য কার্য্য ভাৎপর্য্য গ্রহণ কর। বনে এবং উপবনে পুষ্পপুঞ্জ মকরন্দ ভরে প্রফুল্লিত হইয়া স্থবাস দারা কি আমোদ বিতরণ করিতেছে!— হেজীব ভুমি এই ফুলের আমো-দে আমোদিত হইয়া কেন অঙ্গরাগ ও ইন্দ্রিয়াগ করিতেছ? এই বিক-শিত কুসুমের মনোহর ছ্যুতি দর্শন করিয়া এবং আদ্রাণ লইয়া ভগবা-নের ভাবে গদাদ হও, এবং প্রেম-ৰূপ-পথে তাঁহার শ্রীপাদপত্ম পূজা কর।

হে মন্ব্য! ভূমি এই অলীক
সুখমর বসন্তকালে ভ্রমরের গুণ্ গুণ্
ঝঞ্চার, কোকিলকুলের কুছ কুছ মধুর ধনি শুবনে এবং পুর্নেন্দু-প্রকটিত জ্যোৎস্নোজ্জ্বলিত স্থবিমল রজনী দৃষ্টে কেন প্রমন্ত হইয়া রিপুকে বিকল ও চঞ্চল করিতেছ?—
আহা! ব্রির হও ব্রির হও।—কোকিল এবং ভ্রমরের সুধামর সংগীত

অবণ কর, ইহারা ভেগনাকে ব্যাকুল ফরিবার নিমিত্ত জন্ম-গ্রহণু করে-প্রিয়ভাষের-উপ नार, তোমাকে দেশ দিবার নিমিত্রই গুক হইয়। क्षिक्डीत खन-गान করিতেছে। ভুমি তাহারদিলের শিষ্য হইয়া श्चित्र**वहरम अ**मृत्र-नर्सन् रेकत, ব্রহ্মসংগীত গান-ছারা আপনি মুগ্ধ व्हेंग्रा नकलटक है सूक्ष कत, जात अहे স্থানিশাল রক্ষনীতে স্থির হইয়া একা-अभिषयदात्र. গ্রচিত্তে **क्वानं**द्यादश धानि कत्।

শাস্ত্রকর্তা-জ্ঞানি-লোকেরা এই
বসস্তকালে ভ্রমণের বিধি বিধি করি
মাছিন। যদি ভ্রমণ করিতে ইচ্ছা
হয় তবে ভ্রমণ কর, কিন্তু কোন্
পথে ভ্রমণ করিতে হয় তাহার কিছু
ছির করিয়াছ?—দেখ, জগদীখর
জগৎ সূজন করিয়া সর্বজীবের মুথের জন্য "প্রকৃত্তি" এবং 'নিবৃত্তি, এই ভূটা পথ প্রস্তুত করিয়াছেন, ইহার কারণ খাহার যে পথে
গমনে অভিকৃতি হইবে, নে ব্যক্তি
দেই পথেই গমন করিবে। হায়,
কি, জাত্র্যা! প্রাণিশান্তেই প্রবৃত্তিপথ পরিভ্রমণে প্রীত হইমা প্রকর্ম-

প্রয় 🖛 প্রচার করিভেছে। কাছাকেই নিৰ্ত্তিপথেব পথিক হ-हें एक दिन का बाह्य मा, किनना अन् खि-পথে পুনরাগমনের ব্যাঘাত নাই, নিব্ভিপথে ভ্রমণ করিলে কোনমতেই আসার আশা থাকেনা, সুতরা ইচ্ছাক্রমে কেইই তাহা-তে অনুরত হরন।। যেমন কোন মনুষ্ঠা বিদেশ-গমনের বিচার-কালে এৰূপ বিবেচনা করে, যে " এ পথে যাত্রা করিলে আমি অতি সহজে অতি শীঘ্রই গৃহে আসিতে পারিব, ও পথটা জতি ভষস্কর, কি জানি, পাছে কোন বিভ্ন্ন। হয়, দুর হউক্, আমার পক্ষে এই পথি ভাল,, সেই-ৰূপ আশু-সুখকর-ব্যাপার-বৃন্দ বি-লোকিভ না হওয়াতে ভোমার মনে নিবৃত্তিপথের নিবৃত্তি জ্মিয়া কেবল अवृज्ञिनारथत "अवृज्ञि**र उ**नम्म इहै-(E(E)

আহা, কি অযোগ্য-ছর্ভাগ্য !
এই উত্তর পথের মধ্যে একান্ পথ
জঠি উৎক্ষী ও অত্যন্ত মুখকর, তাহার বিত্রী কেহই করেনা। ওহে
জীব ' ভুমি জার কতদিন মারার
কুহকে পতিত ধার্কিবে ? এই দথেই

আপনার সুপথ দেখ। অতি ক্লালীক ক্ষণিক আমেদিকর প্রবৃত্তিরপ কন্ট-কাবৃত কুপর্থ ভ্রমণে আর কেন প্রবৃত্ত হও ? এ পথের সুখ যাহা সে সকলি অনিতা ও পরিণামে দারণ ছঃখদায়-ক। প্রকৃতিপথের পথিক হইলে কথ-নই নিত্যস্থধের উৎপাদনকাবক তা-त्रक-खरकात्र निक्षेष्ट १३८७ भातित-না,ভয়ানক বনচর প্রভৃতি দস্কা **ব**কল পথিমধ্যে ভোমার দর্জনাশ করিবে। নির্ভিপথে কাঁটা নাই, হিংসুর কর नारे, धदः प्रसा नारे। भ 📲 वाँउ পৰিত্ৰ, কোন ভাৰনাক বিষয় নাই। ঐ সত্য স্থ্যমর-সুন্দর স্থপথে যাতা করিলে অবিলয়েই পরমপ্রেমময় পরমপুরুদ্ধের সমীপত্ত হইবে। তাঁহা-র সহিত্যীকাৎ হইলে ভূমি একে-बादतहे क्रवक्रवार्थ श्रेटन, उदनकान व्यक्ति भूक श्हेशा मटखाय-ममटन अ-ৰঙ ভ্ৰহ্মানন ভোগ করিবে।

তুমি প্রহৃতিপথে প্রবিষ্ট ইইয়া
সংসার-স্থাবর আসাদনে তৃপ্ত ইইতেছ, ক্লিছে ইহাতে কিছুমাত রস
নাই, বিষম-বিরস, এই পদ্ধা যে সংস্বার-কাননের চতুদিক দিয়া গমন
্কিয়াছে, সেই বনে হিম, শিশির,

বসন্ত, জীন্ম, বর্ষা এখং সুরদ, এই ছব পাতৃ যথ -রীতিক্রমে নিয়মিত সময়ে স্ব স্বভাব প্রকাশ করিয়াথাকে ৰটে, ভন্নধো পাঁচ ঋতু ভোমার পক্ষে অত্যন্ত কুশকর,শুদ্ধ এক সূর-ভিকাল যৎকিঞ্চিৎ আজ্ঞাদজনকু किनना जूमि शिहे करिल नुत, स्व हुनी বলভ প্রধ্বমঞ্জরীমণ্ডলম্ভিত-নবন্ব मूठां झ-मून्फत -मूत्र छि--कू खकू लमन- मू-শোভিত-মৃত্মৃত্- মলয়ানিল-দেবিওঁ-মধুপানমন্ত--মধুকর--নিকর- গুঞ্জিত-কোকিলকুল-কুলকুজিত-কমনীয়-কুঞ্জ-कानरन कूछिन-कूछन। कूत्र आकी-कून-का मिनीकूल-कुत-मन्तातन-श्रुतःमत वि-हात-मृत्थ मुथी इहेट इंग्ला कर्ते, কিন্তু ভূমি ভাননা, এ বসন্ত ভোমার পক্ষে কৃতান্ত সম, এমন্ত নহে।--তুৰি নিতাত ভাত, যাহা সুধানয় জ্ঞান করিন্তেছ, তাংগ তোমার পক্ষে অতিশয় বিষময় নিরয়-নিলয়।

তুমি নির্ত্তিপথ অবলয়ন কর, তাহাতে তোমার সমুহ-শিব সভা-বনা, এই বজে কোন ঋতুর প্রাছ-ভাব নাই, বর্ষাতেও হর্ষের অবধি নাই, শরদেও আমোদের হাস নাই, হেমত্তেও সভোষের অন্ত নাই, এবং

গ্রীশাও ভীষাবৎ ভীষা নহে।—ইহারা কেহই প্রবল হইয়া প্রীভা প্রদান করিতে পারেনা, কারণ তথারী প্রতি-নিয়তই কেবল"বিবেক"নামক বদস্ত-ঝতুর প্রান্তর্ভাব।

#### श्रमा।

উঠ উঠ, উঠ জীব, हफ़ छ्वान द्रश्थ। ज मन्दिरंड हम, मिष्डिद-शर्थ।। निर्णास्थाननामग्न, तन बाह्य गथा। ''বিবেক'' ৰসন্ত-ঋতু, বিরাজিত তথা। লে বনে অপর ঋতু, না হয় উদর। সদাকাল স্থ্যময়, স্তর্তি সদয়।। ঈশর-সাধন"কাম" করিছে বিহার। শ্রীনতী "স্থমতি রতি", সতী-প্রিয়া তার। এখনি দেখিতে পাবে,বিজ্ঞান-নয়নে। ইক্রিয়-শাখির শোভা, দেহ-উপবনে॥ অপরূপ, বুল্তিরূপ, শাখা শতশত। অমুরাগ-নবপত্র, শোভে তায় কভ।। মধুর মাধুরী কিবা, আহা মরি মরি। মাঝে মাঝে, ঝুলিতেছে, ভক্তির মঞ্জরী।। विद्यक-वमस वटला, वाफिट्ड विलोम। কুটেছে কৃষ্ণ কভ, ছুটেছে স্থবাস।। ... "দয়োয়"মলয়-বায়ু, প্রবাহিত হেপয়ে। করিতেছে পুলকিত, গন্ধ তার লোয়ে। मग्रा-युकी, कमा-छ कि, भाषित ममुकी। काहिश्मा-अभवाकिका, कत्रणा-मानकी।। মুকুলিত হইয়াছে, যত তর্গ-লতা। ं नका"अक्रावजी क्रेंन, गांधवी-भीनछ। । महाज्ञा जन्म क्यों के ने दिल्ल

প্রমোদ্ভি করিয়াছে, প্রেয-প্রারিক্ষাতে 🛚 এ বনে বিহঙ্গ কত, করি বিচরণ। व्यवगवित्रदत्र करत्, ऋथा-वित्रम् ॥ মরি কিবা "শ্রুতি-শুক্," শ্রুতিস্থখকর। ''গীতা' শারিকার সহ। ভাকে নিরন্তর॥ মনোহর দ্বিজবর, নিজ-স্বর ধোরে। "ख्रानि,, ख्रुतार्न लब्न, ध्योन मन स्ट्रार्त्त ।। স্ত্রিত স্থাধুর,-রবে ধরি ভান। " একদোৱা দ্বিতীয়ণ্" করে এই গান ॥ তার গানে, ফার কাণে, রস ঢুকিয়াছে। একেবারে সেই জীব, শিব হইয়াছে। " বেদান্ত" কোকিল-কুল, করিতেছে গান। ধরিতেছে, নিজ রাগ, হরিতেছে প্রাণ ॥ "क्लार्श्य\*" क्लद्राय, श्रेह कथा कग्न । ' জয় জয়, জয় বিভো" জগদীশ জয়॥ নির্বিকার নিরাকার, নিত্য-নিরাময়। জয় জয়, জয় বিভো, জগদীশ জয়। नर्सगात नर्साधीत, महानन्समा। जग्र जग्न, जग्न विट्डा, जगनीम ज्या !! তৎ, সৎ, ওঁকার, নিগুণ-নিরালয়। জয় জয়, জয় বিভো, জগদীশ জয়॥ গুণাতীত গুণাকর, সর্বপ্রথময়। জয় জয়, জয় বিভে।, জগদীশ জয়॥ স্জন পালন লয়, কটাক্ষেতে হয়। জয় জয়, জয় বিভো, জগদীশ জয়॥ কুপালোকে জিভাপ, ডিমির কর খা। जग्र जग्न, जन्न बिट्डा, जननीम जन्न॥ मश्राकत, महा कर, भीन मश्रामश्राक्तिक জয় জয়, জয় বিভো, জগদীশ জয়।।

**१कलाधान -(क्रांकिल।** 

द्विकित्मत मुर्थ कहे, श्रमिया अद्व । "का गाकर्य" वाक-कृत, श्रवण्ड नी द्रव ॥ আরে জীক পারি নিব, দূরে যাবে জালা। करवनां कारकेव छारक, कान वानात्रांना ॥ শুক, পিক, ছাড়া আরু, পাথি আছে য় । শাখাপরে, পাথা নেডে, দেখাতেছে কত॥ এক গাছে, এক ডালে, বসেনাকো কটা कलवर कारव मन, नाधारवरक प्रे।॥ नोनोमिर्श উष्ड् योग, नोनोश्रद्ध हत्ता ফলত সে ছয় পাৰি, এক বুলি বলে॥ " ছয় দরশন" পাঝি, হয়, ছ, প্রকাব , সকলেই করিতেছে, কুশল তোমাব॥ • ন্যায়" নামে এক পাঝি, ন্যায়পথে রয়। ना करव अनागि किछू, नाग्रिकथ कग। পাতপ্রল, শা'খ্য আদি, আর আছে যত ?। নানা কথা কোয়ে দেয়, এক মতে মত। धकानन, कि कहिरत, ध कोनन छन। ध क्रांतन खर्व शार्त, खल्य-निखंव। ''হদি-সরোবরে ভারপদ্মে, বভ ওণ্। मधुक्द, मन, छाम, क्राय खन्खन्॥ মকরন্দ ", আনন্দ, ক্ষবিছে প্রভিক্ষণ! शांन कवि পৰিভোষে, कुछ रग्नं गन।। পরিহবি জম, জম, স্থথে এট বনে। পাইবে সমান প্রথ, বনে আব ক্ষান। এই বনে আছে এক, ज्युकाभिनी। छ। द काइड काथा आईहै, कारगत-कामिनी ॥ " विभा" नारम, स्कूलभी, स्रश्यनामिनी। शास छात्व, खरमानात्न, शकात्न भामिनी ॥ श्वकारव व्यममा वाना पियम-यामिनी। পৰিণ্য কৰি তোৰে, কবহ স্বামিনী॥ 'माध्यम, ' यर्डेक , विद्वार्ग, शूर्ताहिक !

তোমাব বিবাহে (ছাঁহে, করিবেন হিত।। ববসক্তা করাইবে, " বিশাস" আসিয়া। " अकामकी " चरत्र लर्दा, नद्रन करिया। পতিবভা সভীবিদ্যা-অবিদ্যানাশিনী। হইদে ভোগাব চিব, হৃদ্যবাসিনী ! সে বিদাৰ্গ, স্থান্দৰ, তুমি, ভায় কত স্থা। ় একেবারে দুরছেবে, সমুদয় ছথ।। এ বিদ্যা-স্থন্দর-লীলা, পাঠ বেই করে। সে কি, বিদা।-স্থদাব, করেতে আরু ধরে 🕈 ॥ ওহে জীব। বৃথা কেন, আযু কর গত বিদ্যা নামিকার প্রেমে, হও অমুবত॥ তাহার অধ্বে থেলে, বোধকপ স্থপা। আৰ না বহুবে এই সংসাবেব ক্ষা॥ প্রগাচ প্রণয়ে ডাবে, কবিলে বিহার। প্রসূত হইবে স্কত, " প্রবেধি " বুমাব॥ হেবিলে পুত্রেব মুখ স্থখ কত পাবে। गरमावी इडेमां (नव, मरमाव इंगिडित ॥ বপু-উপৰনে, আৰ, না বহিৰে ভগ। शनाहित ' महारमार , त्नारम मंब-छन्। প্ৰবোগ প্ৰাবেৰ পুত্ৰ, ক্ষতি হিতকৰ। खनाम-निर्वादभकाती, প্রিয়-বংশপর॥ তোমাৰ বিবহ ছালা, সকল নাশিবে। কাটিয়া মাতাব মাতা, বিমাতা\* আনিবে॥ त्म बांदी आमिशा यनि, कदव अलिक्न। তথনি মোচন হবে, ভবের বঞ্জন॥ কবিৰে শুরূপ পেয়ে, শ্বধান্য বিছাব। जाना-वामा (खट्छ चांद्व, जामा माडे आंद।। সভএব, শুন শুন, বলি স্কবিহিড। বসস্থ সময়ে হয়, ভ্ৰমণ উচিত।

\* अत्नारभव निमां । मुङि।

উঠ উঠ, জাব, চড ছানরথে। দমণ বরিতে চল, নিবৃন্দির-পথে॥ গীত।

রাগিণী বেছাগ। তাল আড়া।
তোমার ভোগেব নহে, এডব বিভব,
ভাবের ভবন-ভব, স্বভাবে দ্যুব।
তুমি আমি নাহি রব, রবে মাত্র এট রব,
যত সব, তত শব, এই সব, এই শব॥ ২
পবি হে চরণ তব, সন হে প্রসাতব,
কাম আদি মনোভন, বর প্রভিব॥ ২

করণা। পরমেশ্বরে স্থব।

-1010

কের, সদর হও। হে করণানর করথাকর! আমার প্রতি করণা কর,
—ছঃথহব, ছঃথ হর। আমাকে রুপার আলোকে এই ভূলোকে পুলকে পুর্ণ কর। হেনাথ! নিরন্তর
আমার অন্তরে রও, আমার মনের
সঙ্গে কথা কও। ভূমি অনাথবন্ধ,
করণানিক্ধ, বিমলেন্ড, স্থানিক্ধ,—
আমাকে বিন্তুন্ধা দান কর,—একেবারে ক্থা হর,—আমার অপরাধ
কমা কর,—প্রাণিণাত রূপ উপহাব
ধন।

আহা তোমার সৃজিত এই স্বভাব স্বভাবে কি শোভা প্রকাশ করিতেছে! মনের সকল সম্ভাপ হরি-(७ एड, - जीव मक्ल मरनत मुर्थ छता-চরে চরিতেছে, –বিচিত বিশ্ববাদে কতই অদ্ভূত ভাব ধরিতেছে,—সুক-लंडे गानत्म गहन हिर्ल लिंगात শরিভেছে,—প্রকৃতির ক্রোড়ে ক্রীড়া করত উবা কি চমৎকার ভূষা পরি-তেছে ! চারুতর-বিরাজিত বিক-সিত-কুনুম হইতে কি মধ্র মধ্ক-রিতেছে !—কুধাতুর বিহন্দ, পতন্দ, की है। पित्र छे पत्र-मञ्जू छति एक एक, — আহা ৷ তোমার অত্যাশ্চর্য্য কার্য্য मृट्ये गांधू मञ्चल्द नज्ञननीवरम नित-छत नतनत नीतथाता वाति एट ह, — ভাবকগণ তোমাকে ভাবনাগথে ভাবনা করত ভয়ন্ধর-ভবপাশ হইতে অনায়াদেই তরিতেছে।

আগ! পূর্বভাগে গগনের উপর
ধান্তহর গুণাকর দিনকর করনিকব
বিস্তার করত কি এক নম্বন্দ্রক্রকর
মনোহর ভাগ ভাগিতেছে।—দারুণ
দ্বংথের আধার-স্বরূপ অস্কর্কারকে
নাগিতেছে,—বোধ হয় তিমিরারি
তিমিরকে সুহুত্রক্রে বার্ণাকরিয়া

ছাপন উদরে প্রাসিতেছে,—শাসক হইয়া তোমার এই সংসার-রাজা শা-সিতেছে। এই সহিব মহিব মনের गालिना त्याहन-मानतम शुर्व इहेट অতি অপুর্বভাবে ক্রমে ক্রমে পশ্চি-ম-দিগে জাসিভেছে।—মিতা মিতের मुश्र (मश्रिया मिता विका शामिएक है। আলোক ভারা ভাপন আপন আগ-মন জ্ঞাপন করাতে সমল-কমল জ্মল **इ**डेश कमल-कन्द्र मशुख्दत व्यशन প্রকাশ পুর্বক প্রেমানুরাঙ্গে ভানি-তেছে, – গুণ্গুণুরবকর- মধুকরনিকর मधु शानानत्म सुब हरेशा खन्खन्यदर তোমার অনন্ত গুণ ভাষিতেছে। (१९ (इ. महाभन्न । ट्रामात्र काराज কৌশলে এই পুথিৱী-মতী নিয়তই श्वित्र वादिर विकास कि वि विकास कि वि विकास कि व ইয়া সকল ভার সহিতেছে—জগণ-প্রাণ-প্রন স্বকীয় শীকল-সভাবে জ-নবরতই শ্বন শ্বন শঙ্কে বহিতেছে,— ত্তাশন আপনার প্রথর-প্রভাব ধা-রণ করত উত্তাপ-ছারা দিক সকল দ-হিতেছে, অনুনের উত্তাপ বারণ कावन विश्वजीवन जीवन नम-नमी नि वात-कश्र बहुन गामन करा क दलकल-क्लत्रव-कांत्रा धक्का नाई, छम्र नाई,

ভর নাই" এই কথা কহিতেছে,—
আহা ! জলে, স্বলে জনলে, জনিলে,
আকাশমগুলে কি অভুত কার্ব্য কলাপ উদ্ভূত হইতেছে !—ভূত সকল কি
অভুতভাবে প্রস্পার প্রস্পারের আ;
ভার লইতেছে।

(হ নির্মিকার-নিরাকার-নিরা-थात-मूलाधात-मर्वाधात मर्त्तमात !--তোমার প্রণীত এই অমার-সংসার যে প্রকার চমৎকার শোভার-ভাগ্ডার, ভাষার উল্লেখ কি করিব আর) মরি, মরি : নমকার, নমকার,— তোমার অপার মহিমার স্থ্যার ক্ল-পার বিস্তার ব্যাপার বর্ণনা করিবার সাধ্যইবা কার !—আমি স্বভাবে क्रानरीन-वाठ मीन-महरक मिल-न-ज्ञातिशीन- छेशामना-करण ष्ठा ह कीन, तिश्रत क्षीन । - 15-मिन कि कविनाम ?—मिथा कुन গ্রিলাম ?—স্থিরচিত্তে তোমাকে ভিৰত্মন্। তোমার ভত্তরদে मिला मना अविन मिन प्राप्ति निक्छे इन्ट्रेंड्ड्, काल उठहे (म-ट्य वल रवन करिया नरेट**ंट** ।

হে অনাথনাথ - জগনাথ! তো-

দর্শন করি - যাহা সম্ভোগ করি --ভা হাই কি আশ্চর্য আহা মরি মরি ৷--এই জগতের বিচিত্র শোভা, কি ম-নোলোভা ৷—জাহা ! কি অদ্ভত কা-লের সৃষ্টি!—শরদ, শিশির, বসন্ত, निमाय, ब्रुष्टि,-- धरे मकल काल कि মনোহর ! জীবের পক্ষে কি শিবকর। এই গ্রীম ভীম হইয়া যদিও দেহির (मह मद्द उथां श्रीय जीय इंग्रे:-जीबाई" नदश,—এই निमाध्य धता कि মনোহরা হইয়, আপন হৃদয়ে নানা-ৰপ শক্ত; মূল, ফল, নিৰ্মাল-জল ধা-রণ করিতেছেন,—আমাদিগের কুধা তৃশা হরিতেছেন,—আহা! বর্ঘা সম-য় -কি রসময় !—সুধার-স্থার রুটি করিয়া দৃষ্টি রক্ষা করিতেছে।- অবনীর সকল সন্তাপ ছরিভেছে।—সুখময় শরদ-জীবের পক্ষে কি বরদ ?-এই कारल धत्री जननी मनाभानिनी इह-তেছেন,—আমারদিলের জীবিকার ভার লইডেছেন।—হিমঞ্জু-কি সু খের হেতু ! – নিশির শিশির কৃষির शक्क कि कनार्ग करत !- मसूमस ख ভাব হরে ৷ – ঋতুকান্ত – কান্ত – যা-হার নাম বসন্ত।—সেই কান্ত-কি কান্ত। এই বসত্তে স্বভাব কি স্থন্দর স্বভাব ধরে। শোভায় মানস হরে। কানন পুপারপ—জানন প্রকাশ পুর্বিক গন্ধ সরে—ভোমার গুণ ব, খ্যা করে।

এই স্থিরকাল চিরকাল সমভাবে স্ব ভাবে ভাব ধরে। কৃত যুগ, কৃত বর্ষ,কত অয়ন,রাশারাশি কত রাশি, লক্লক ক্ত পকা, বার্বার কত বার-দিন দিন কত দিন প্রকাশ করে।-(কাল কাল কডই কাল।--ছয় ঋতুর ছর কাল, - দিবাকলি, -- নিশা-काल,—डेवा-काल,—डेवनी काल।--**এই এই—त्रिहे (महे,—त्रिहे (महे,—** এই এই,—এই काल—ति**रे** काल— দেই কাল এই কাল, <del>এ</del>ইৰপে একাল ওকাল—সেকার্ল আর কত করিব ? কাল-কাল করিয়া আর কভ कान कान रहित ? (य कान मितरा-काल, तारे काल शांकि-काल, तारे কাল প্রাতঃকাল, সেই কাল সম্যা-काल, काल काल (महे काल, (महे কাল মহাকাল। ) 🤲

হে কালপাল কালেশর। এই কা-লের পরিবর্ত্তনীয় ভাতি কি রমণীয়। ইহার প্রতে ক্কালের কান্তি কি ক-মনীয়। আহা। বিভাকরের বিভা

ছারা দিবা কিবা নিভা ধরিয়াছে। বোধ হয় স্কার খেতশতদল-সহিত বিমলরজে বিপল-মিলিত হার পরি-शांट्या-- छेक्क जारन ख खकाक्षन (त খা-ৰৎ কি এক জগ্নিচক্ৰ স্থলিতেছে, – খরতর-করভিন্সাদারা প্রাণি-পু-(क्षत नत्रन-मीतकत् हिल्डाह,— দিবাকরের করে পুষ্পপ্রকর প্রফুল হইয়া প্রন-হিল্লোলে মকরন্দ-ভারে টলিতেছে,--ঢলিতেছে,--ভাষার বাস পাইয়া বাস ছাডিয়া পতঙ্গণ পতঙ্গ-जस्ययः । जिल्हा । বনে বনে কত কলিকা দলিতেছে, कू छ-कू छ-क न द्रवक दि-क न द्रव কি সুধাস্বরে কুত্তুত কলিতেছে '— তচ্চ্বণে প্রেমিকপুঞ্জ প্রেমরসে গলি-তেছে,-নিরন্তর বিশুদ্ধ-বদনে ভোগা-কে সাধু সাধু বলিতেছে। তাহার-দিনের চিত্তকপ-রক্ষশাথায় বাঞ্চা-क्न क्निए

হে হরি নরি মরি! বিভাবরী
কি সভোষকরা এই যামিনী সমূহ
ক্রখনায়নী কুঃখ সংহারিণী-তৃত্তিকারি নুস্কিনী। জগতের তিমির ভারী স্থাকর ক্রখাকর
কি স্বাক্র

বিকচকর শশবর কি বিনোদ ভাতি
প্রকটন করে!—সনের সকল অন্ধ
কার হরে ' আন্থির শান্তি করে,—
কান্তির-ছারা নমনের জান্তি হরে,—
যথন আকাশে ঈক্ষণ করিয়া দেখি,
স্কটারুকাপে নক্ষত্র সকল উটিয়াছে,
তথন অনুমান হয়, বিশ্বর্তকর উচ্চ
শাখায় ফুল সকল ফুটিয়াছে।— যথন
দৃষ্টি করি, চক্রাকাবে চক্রামণ্ডল ছালিয়াছে, তথন বোধ হয়, এই পারমজন্মর চরম-শাখান এক্টি শ্রীক
ফলিয়াছে।

## विश्नी।

(বোগা হে ভবের পতি, কি হবে আমাব গতি, পাপে পূর্ণ নানদের-পুর 🏋 पष्टि कति आया शांदन, प्रथा निम निया नाटन, ছবিনীর ছংখ কর দূর॥ ভাবেৰ ভাৰনা ভবে, যে ভোনাৰ ভাৰ ধৰে, সাধু সাধু, সাধু তারে কই। ভারে বলি সদাশ্য, তেমন্যে সাধ্হয়, আদি তার কেনা-দাসী হট॥ কি ভাবে ভাবিৰ জাৰ, কি ভাবে ভোমায় পাব, जितिया मा बूबि हिडाहिड?। প্রস্তু হে প্রথাম লহ ष्ट्रह (५८६ तर, कथा कर, मत्मद्र महिंख। (एड मात छे**अ**एमम, छि।मात्मराड दशक् वन, 🖟 . (मण (मण किश्व ना रहा। Mary .

त्यथात्न (मधादन थाकि, क्लनम (जायात्र छ।कि, ভো্মাডেই মন যেন রয়॥ ঢাতকের ভাব ধবি**। পাতকের** ভোগ করি, मिनोनात्र माहि बाटि आन। अमय-आकोटन द्वारम, कक्रन-बक्रन ट्यारिंग, कक्रम कंक्रशाबादि मान। এ খোৰ ভেশগেৰ ভূষা, একেবাৰে হোক্তুশা-ভাকিতে না হয় যেন আর। मा कड़ि मीवद्य दव, जन(प जनरप-द्रव, मदन मदन क्यानन-क्यात्। এখন, যে আমি ফই, তখন, এ আনি, কই, যথন্ ভোমাতে হব লীন। চৰণ **স্মৰণ ধ্**ৰি, मगरा इत् कित्र মবণ না হয় য তদিন।। गट ग्रांद्यव मद्योवद्यः (প্रम-यक्त्यक छरत्, হদিপত্ম ফুটুক্ আমাব। করিয়া মধবস্থব, र्ाय नाथ मधुकत्र. ভুমি তাম করছ বিহার। क डार्टन आमात्र द्रांदन, ट्यामाय आगांव रदोदन, लग्न कवि मलक्षश मार्गः। ख्राच्यत हिस्तारम होस्म, ध्रमभम स्रोटन रहारम, धारकवादत रागारक गांव वरम ॥

হে নাথ। ভূমি করুণা বরুণালার।
ত্মি সুর্ফির সৃষ্টি করিয়া ঘেমন
বাহ্-প্রীয়া বিনাশ করিছেছ, সেইকাপ আমার মনের গ্রীয়া হরণ কর।
হে করুণাময়।—করুণ-বরুণারপ ধরুন, অহঙ্কার জ্বান্ত্র তাপ হরুন,
আয়াকে শান্তি সালিলে নীতল করুন,

\* मनक्रभ मन ।—क्यान-कर्म मरणिया।

তুমি জগন্ত প্রকর জলধর হইয়া ক্ষুত্র এক ধলচঞ্র ভূলা কুলা করিবে, এ কোন্বিচিত্র।

#### ' शमा ।

ধব নাম, দাভাবাম, ধবি হে চরণে। मराकत, प्रशांकत, मीम श्रीम-कटम ॥ কালেৰ নিদাতে আৰি, নাহি করি ভয়। ভিভরের গ্রীকা বছ, লব কর ক্রম। **जारभरज महिरह (मरः ब्रह्मा बरहमा।** সহেনা সহেনা আর, যাতনা সহেনা ॥ " অহঙ্কার-দিবাকর " খর-কর খরে। '' অতিমান অনিল'' অনল-বৃষ্টি করে॥ '' আশাৰূপ মূৰ্ণবিতে " খোৰ অজ্ঞাৰ। দেখিতে না পাই কিছু, করি হাহাকাব॥ '' কর্মভোগ-ধূল। উডে " অক্স কোরে রাথে। करनरक अलग कब्रि, निक् अनु छ।रक ॥ " धन पृषा " नटह कूमा, मनाहे धावल। '' मानग-हा जर ' छारक, रम क्रम रम क्रम ॥ '' লোভ রূপ খন '' খন, কবিছে পর্জন। নিব গুৰ চেনে থাকে, ভাছার বদন॥ गांदव सादव " क्यांच क्रिश ,, वज्र नाम इश ! শুনে রব, হুই শব, জীবন-সংশয়॥ " কামনাব অ্নল , প্রবল হোরে জ্লে। ्म जनत भी जल, मा इय, दकारमा करत ॥ वल बाहा कि क्षेत्रीत, दाबिव की वन ?। পিপানার প্রাণ খার, না পাই জীবন॥ " नहा-मही अन् खेशा त्यादकः त्वन महि चात । ' হিংশা-রূপ " পাঁড়ে ভরা, কলেবর তার॥ माधा के कि, छाकात, छन्दत करत क्र পদার্পণ করিলে, অমনি অমোগান্তর

कार्था (इ अनायनाथ ! कक्रमानिधान। ट्डाम्। विदन, ध मंद्रदेहे, दक कदिरव खांग<sup>?</sup>।। **बढराजा मध फूमि, बल्दाई ब्र**ब्र। कि-म्बा प्रशिश छत्त, जनम ना इल ।॥ ভাবময় ভগবান, তুমি গুণাকর। গুণেরসাগর ছোলে, গুণ জার ধর॥ হর হর পাপ তাল, এ বার্ডনা হয়। কুপাকর, কুলা করি, কুলাকুরিন্দর । অন্তুগত ত্ৰিক্স, ক্লুড্ডান্থে, মরে ! कि किए कझन। क्रा, क छड़-किश्वरत ॥ कद्रश-बद्धार्थांनग्न, जूनि प्रशासित्र। এ বিপদে, বারি-দান, স্থবিহিত হয়॥ ट्र नांथ ! श्रमंत्रतंथा, गर्मांत व्यापात । कड़र " विरवेक क्षेत्र" यह विजिक्षा के তবিরত " বোধ-বারি ,, ক্লব্লি বিতরণ। खहरत कतिया दार, बतर्म-आविन ॥ স্ত্রধার স্থার মত। পড়িবে হে নীর। একেবারে জুড়াইবে, বু পাপ তাপ নিদামেরী লইব তোমার নাম, শীতল হইয়া ট আর না রহিবে দেছে। কোনোরাপ ভয়। স্থাতে করিব, যান " জুলীল জয়"॥

[ সভাগণের প্রতি দু<del>রু</del> করিয়া।

গীত।

রাগিণী বেহাগ। তার আজা।

ওছে জীব, হও শিল্প কিবে জলিব তোমার । সরল-স্বভার বি, নাগু ব্যবহার ॥ জুনেক্টোক্রিরে ব্যুক্তির সাবে জ্বাভোগ,

धर्का, वर्ष, भाष्क, कांग, श्रुक्रयार्थ, गांत्र नांग, ऋर्थ प्रजूर्करीशाम, कत्र श्रशिकात ॥ ''কক্ষণা-ভরুর'' তলে, যে বদেছে কুতুহলে, ठांत्रि कन अरम करन, केंब्रफ्रेंटन छोव। वागुवर वावशाद्र, शिक्ष कत्रि, व मश्माद्य, করুণা-কুন্তুদ-বাস, করুরে বিশুার॥ (संयहिश्मा इत इत, मन्ना-धर्म धत धत, यड श्राद्ध, कब्रु कत्, श्रेत उपकात्र । मद्य राम चर्त चर्त्र, जान थीय, जान भरत, কেহ যেন নাহি করে, ছথে হাহাকার॥ যেজন পাসবমতি, হাদয়-নিদম অতি, কেন গো-মা-বস্তমতি, বহু তাব ভার ?। ष्यां शनिहे सुर्ध दश, तम कि इस, मग्रोमह ! পর ছথে ছখী নয়, বৃথা-জন্ম তার॥ বুঝিয়া দেছের মর্মা, করিবে যে সব কর্মা, ভার মাঝে দান-ধর্ম, শ্রেষ্ঠ সবাকাব। করি ধ্বন, উপার্ক্যন, কর কর, বিভবণ, সফায়ের প্রায়োজন, ফি আছে ভোমাব<sup>?</sup>।। যা, করিবে বিভরণ, দে ধন, ভোমার ধন, रम्दिन लट्ड, ध्न काम, नटक गांत्र कात ?। जाशनि ना थात्र शरत, करतर्छ ना, मान करत्र, বুঝার শরীয় ধরে. সেই ছরাচার॥

বৈক্ষ্য কুপণ হয়, বেঁচে থেকে মোরে রয়,
সে যদি সঞ্জীব, ভবে, মরেছে কে আর?।
কভু, সে, জীবিত নম্ম, জমেতে জীবিত কয়,
কানাদের জাঁতা নম্ম, শাঁচনর সকার॥
নাপায় ইয়েশ রস, ধরীমার জপয়শ,
কথনো না থাকে বল, দারা পরিবার।
যভ জন প্রিজন্ধ দুবে করে অযতন,
পিতা বোলে পুলে নাছি,ভাকে একবার॥
নালে বাপ্, যায় পাপ্, নাছি ভায় পরিভাপ,
দারা মনে ইছা করে, বিধবা-আখার।

কুপাৰের পিড়া যিনি। পুত্রহীন কাজে তিনি। कथान कि कन हैनि, उनस जामात ?॥ धन ভোগ माहि करता शाल द्वारा जुदन महत क्रमने जाशन माहि दश कारानाइ। व्यम जिल्लाम कर्ना माणि भूटिक श्लीएक धन, जात्र मार्का श्रोदाक्रिक, कुछ जारह जात्। টাকা পোতে লোকে কয়,মাটি খোঁড়া নেতো নয় ज्यथ-गगरत्र शथ, करत् शतिकात्। ''क्रमा'' बान थर, श्रकत्यत द्वर्थ दर् व्यक्त इंदेश कर, क्रभट विश्व ॥ थक निया निक-त्यक थना थोना सार पर क्कु दान नाहि कहा थाक मनाहात। ममञ्जाद तर्द मत्त्र, काद्भी हा विश्वान शत्त्र, উথুলে উঠুক্ ভবে, স্থ-পারাবার॥ लक्षीशीन, यु मीन, कुछ कट्छे काट्छे मिन, সংসাহে তাদের হয়, সকলি অসার। লক্ষীছাড়া সবে কয়, সমাদর নাহি বয়, श्रुका (मह तिश्रमा, सक्की आद्ध यात्र॥ · धन दरल दल धरतः प्रतिहत्त्वतः क्रुश्त शरतः হিতকরকর্ম করে, আগেন প্রকার। भरतात्व भरमञ्जूषा ग्रा, भरत हा अर्ग-त्वाग, क्रहे धन खरिमन, खर्चड कार्यात्। पुनि कुशा कुंब साइत, (कांग, त्यांक, त्मर छारत. করীতার একেবারে, কিতাপ সংহার।। अमा नामा जाहे कहे. "नमीक जा" यान कहे "पत्रामग्री" नाटम इरता क्लक अशीव। क्शनावा कर कार है "कुश कृषि" राथ दहन, "नकी देखि" नाम दयन, ना दम अठाउ ॥ [ हर्जु मिक निहीक्त कहिया । ] ce गंजना-सिंह, नम, ग्रातावतामि

জলাশয় সকল ৷ আমি তোমাদিগ-(क क्षनाम करि, - बारा! धना धना, তোমারদিনের করণার কথা কি ক-হিব? তোমরা কৃত ক্ত জলচরকে रकः इत्त स्वान अमान शूर्वक अका-তরে ধারণ, পালন, চালন করিতেছ, তোমর জীবন-বহুন করিয়া জীবের জীবন রক্ষা করিতেছ। মানবগণ তোমারদিনের ক্লার ও সংপূর্ণ দা-श्रारा (नोकार्यादन मेंड मेंड निज নিজ অভিলমিত এবং কত শত দেশ-হিতজনক-মাঙ্গলিক-কর্ম সুসম্পদ্ম করিরা স্থ-সেভাগ্য-সঞ্চয় করত সানন্দে সংসার্যাত্রা, নির্বাহ করি-তেছে। दे जनिधि त्रवाकत ! जुनि স্বভাবে যেমন স্বরং অপার, সেইৰূপ তোমার কুপাও অপার হইয়াছে।

হে প্রভাকর ৷ তোমাকে প্রণাম
করি, ভোমার জুলা করণাময় জার
কাহাকেই দেখিছে পাইনা, তুমি
সর্বসাকী লোকালাচন-জ্যোতির্ময়
হইয়া এই চরাচর বিশ্ব-সংসার প্রচার করিছেছ, ডুমি সহস্র করে লবণসমুদ্ধের জলাকর্যণ পূর্কক বাস্থারপে
দেশ সঞ্চারছারা পুনর্কার স্থা-র্ছির
স্থি করিয়া সৃষ্টি রক্ষা করিছেছ,—

তুমি অচল সচল সকল পদার্থেই সমান, দরা প্রকাশ করিতেছ, তুমি আপনি অন হইরা অপর্যাপ্ত অন জল প্রদান করিয়া প্রাণিপুঞ্জের প্রাণ রক্ষা করিতেছ। নিশাকর স্থাকর কেবল তোমার হুপাতেই স্থার অ-ধার হইয়া রজনীর অন্ধকার সংহার এবং আর আর অশেষ প্রকার উপ-কার-সাধন করিছেছেন।

হে জননি-ধরণি। তোমার ধারণা শক্তি, সহাগুণ, ধৈর্যাগুণ, দাতৃত্বগুণ, তুলনা-রহিত হইয়াছে। এত
ভাত্যাচার সহা করিয়া কখনই বিরক্ত
হওনা, জনবরত কেবল দান করিতেছ। তুমি দাতব্যের ভাণ্ডার খুলিরা বসিয়াছ, যে যত পারিতেছে,
ততই লইতেছে, কি আশ্চর্যা। ইহাতে ক্ষণমাত্র কাতর হওনা। মাগো।
তুমিই সাক্ষাৎ করুণাময়ি ব্রক্ষরপা।

হে ভাই তরু সকল ! হে ভগিনি
লতা-সকল ! তোমরা এই শ্রমপ্রিয় প্রচুর-প্রেমকর করুণার কার্য্য
কাহার নিকট শিক্ষা করিয়াছ ? মূলের ছালের, ডালের-পত্রের, ফুলের
ও ফলের ভাণ্ডার মুক্ত করিয়া সমস্থ
ভীবের অংশেষবিশ ক্রাকার করি-

তেছ। সাধু সাধু, তোমার দিগের এই
কারণা,গুণে আমার অন্তঃকরণ কতক্রতা-রসে আর্ফ হইতেছে। আহা!
আহা! তোমার দিগের আগ্রায়ে বিশ্রাম করিয়া পথশ্রান্ত জনেরা অসহ
ক্রেশ নিবারণ পূর্বক সময় বিশেষে
কি পরম-সন্তোধ লাভ করিতেছে?
ইহার অপেক্ষা আর অধিক মহত্র
কোথার আছে? যাহারা অন্তাঘাতে
সংহার করিতেছে, তেশ্মরা তাহারদিগেরো বিবিধ বিধায়ে কলাণ-বিধান করিতেছ।

#### পিয়ার।

ভাবি বিনা, স্ভাবের,ভাব কেবা ধরে ?।
জ্ঞানি বিনা, জ্ঞানপথে, কেবা আর চরে !॥
বর্ষা বিনা, সাগরের, উদর কে ভরে ?।
মাতা বিনা, সন্থানের,আদর কে করে !॥
রবি বিনা, জগতের, ধরান্ত কেবা হরে ?।
দাতা বিনা, দরিজের, ছংখে কেবা মরে !॥

প্রভাতে উঠিয়া করি, হাস্য পরিহাস ।

দে-দিন করিতে হয়, যদি উপবাস ॥

যায় যায় উপবাসে, দিন যাবে যাবে ।

সাধু সহ সদালাপে, কৃত স্থা থাবে ॥

অমৃত-ভোজন করি, যদি যায় দাঁত ।

হরিগুণ লিখিয়া, যদাপি যায় হাত ॥

যায় দাঁত, যায় হাত, ক্ষতি কিছু নাই।

লেখ লেখ, হরি গুণ, স্থপা খাও ভাই॥

লক্ষীছাড়া যদি হও থেয়ে আর দিয়ে।
কিছু মাত্র স্থানাই, হেন লক্ষী নিয়ে।
যতক্ষণ থাকে ধন, তোমার আগারে।
নিজে খাও, খেতে দেও, সাধ্য-অনুসারে।
উথে যদি কমলার, সন নাহি স্বরে।
"প্যাচা ,, নিয়ে যান মাতা, কুপণের ঘরে।
গীত।

রাগিণী থায়াজ। তাল ঝাঁপতাল। জানা গেল যত, করুণা মাট্র করুণা ভোমার হে ' নামের মহিমা যদি না ধরিবে, यति गा কাতরে করত জীবের যাতনা यमि न। इतिरत, अनाथ ভবে হে কেমনে ভরিবে, তোমা বিনে আর কাহারে সারিবে, বলনা কে সাছে আর হে?। ১ ভবের ব্যাপারে হয়েছ ব্যাপারী: বিষম-ব্যাপার বুঝিতে না পারি, মূলধন কোথা মনে না বিচারি, লাভের ব্যাপারে মানিলাম হারি, क्षमात-मरमाद्व क्राइ मरमात्री, কেখনে পাইব সার হে?। २ मत्नम् मत्नम् इत्नम् माणि, পাर्यंत वन्नम रकमरन काणि, निशंख माहित्ह गोथांश नांति, কারাগারে পোডে কেবলি থাটি, খারাখাট কোরে খেটে মরি শুসু, খাটি কর একবার হে। ৩ গৃহত্ত করেছ দিয়ে গৃহ খর, সকলি আপন, সকলি-তো পর, निक निक ভাবে करह शेवस्थावन

कारत विल भिक्र,कारत विल शव.

क्रमक, क्रमनी, खुड, मटश्मत, শত শত পরিবার হে। ৪ ভোগের সম্ভব থাকিতে ভবে, विषम-वाक्ति क्न इ उत्त, कि द्रांता, कि द्रांता, कि इत, कि इत, কারে দিব ভার, কে ভার লবে, (मथ आहा मत्त्र, आहा, होहा तत्त्र, কত করে হাহাকার হে। সকলেরি (मर्थ मिलग्र्थ, विश्रुल-वियोग विमद्र ঐহিক-সম্পদ ভোগের স্থা, তাহাতে দিতেছ দার্রণ ছখ, ভোগেতে বঞ্চনা, যোগেতে বঞ্চনা, लाञ्चना रहेल मात्र हर। विषयी कविया मिटलना विषय, ভায় কি আছে বিশেষ বিষয়, এই বড় নাথ ছথের বিষয়, বুঝিতে পারিনে তোমার বিষয়, ভারী হোয়ে ভার নানিলে যদি, কারে দিব তবে ভার হে ।। ৭ দিলেনা, হোলোনা, স্থথের স্থভোগ, ভোগ করি শুধু, আপন কুভোগ, এখনো রয়েছে যোগের স্থযোগ, নে যোগে কেন হে, না হয় স্থযোগ, ভোগে কর্মভোগ, যোগে অভুযোগ, এ যোগাযোগ কার হে !। ৮ ভোগের স্থভোগ আর্তো ধরিনে, যোগের স্থযোগ আর্তো করিলে. আদার আশায় আর্তো মরিনে, **छत्राहरत** ज्यामि लाइट्डा हिंदिन.

আমি ছাড়ি আমি তাইকৈর তুমি,

যা হয় স্থাবিচার হে। ১

আরু কি হে, আমি, এ, আমি রব,

আরু কি করিব, এ, আমি, রব,

আরু কি তোমারে, আমি হে কব,

একেবারে নাখ, শেষ কোরে সব,

মুখে আমি ভব, তব নাম লব,

স্থেহব ভব-পার হে। ১০

শান্তি।

[काॅमिटड काॅमिटड।]

মাজননি আছে !- তুমি এখন্ কোথায়? ওমা, মাগো, তুমি কো-থার ? তুমি কোথায় আছ গো?— জননি একবার সামাকে দেখা দেও-স্নেহের বচনে আমাকে ভৃপ্ত কর। গাভী চণ্ডালের হস্তে পতিত হইলে নে কি আর জীবিত থাকে? তুমি এখনো কি বেঁচে আছে মা? আমি তোমাকে সর্বত অন্বেষণ করিতেছি, य कानत्न बंग्रंथ नारे, हिश्मा नारे, পাপের প্রদক্ষ মাত্রই নাই। - হরি-शामि मुश नकन निर्देश नव नव ना।-मन इसीमन ও निर्मान-भी उन-कन আহার করিয়া মনের স্থাবে চরণ करत। सूनि अविक्रिटंगत योग यटकत আত্রম। সুপবিত্র গঙ্গাদ্ধার। বারা-

৭নী প্রভৃতি পুণ্যক্ষেত্র তীর্থ সকল। এই সমস্তই ভ্রমণ করিলাম। ওম।! মাগো! আমি বুঝি এতদিনে মাতৃ-হীন হইলাম! আমি তোমা ভিন ক্ষণাৰ্চকাল প্ৰাণ ধরিতে পারিনা। এখন জার আমার এ জীবনে কি প্রয়োজন? জামার কপালে কি এই ছিল ৷ মাগো ! (ভুমি আমাকে এক মুহূর্ত্ত না দেখিলে স্থির থাকিতে পারন। আমি না 🆛 বাওুনুট্নী যুমালে ঘুমাওনা, আমা ছাড়া তো; মার স্নান ভোজনাদি কিছুই হয়ন।। হায় কি বিভয়ন ) কি বিভয়না! आমि জননীশোকৈ তিভুবন শূনা দেখিতেছি,সকলি অন্ধকারময়। আরে ও পাপ প্রাণ! তুই এখন্ আর কেন আমার এই দেহে থাকিস্! এথনি विमाय र । विमाय र । आमात जननी যে পথে গমন কোরেছেন, সেই পথে গমন করি।

হে সথি করুণে! তুমি শীঘ্রই
চিতা সজ্জা কর। আমি তাহাতে
প্রবেশ করিয়া এখনিই প্রাণ পরিত্যান করি। আর আমি এই ছঃসহমাতৃ-বিচ্ছেদ শোকানলে দক্ষ হইতে
পারিনে।

কর্জা।

#### मजलनस्त ।

্ হে সখি!—তুমি আর কেন এই বিষমতর বিষবাকোর যাতনায় আ-মাকে জর জর কর ? তোমার কথায় আমি অত্যন্ত কাত্র হইতেছি। আর মন প্রবোধ মানেনা, স্থির হইয়া ধৈৰ্যা ধরিতে পারিনে। সই, আমাতে আর আমি নাই, মৃত-বৎ হট্য়াছি 🔻 স্থি শান্তি! তুমি স্থির হৃও, স্থির হও। মন্কে প্রবোধ দেও।ভোমার কোন ভয় নাই। তো মার জননীর কোন অমঙ্গল হয়নাই, বোধ করি তিনি প্রবল-শত্রু মহা-মোহের ভয়ে কোন বিশুক-স্থান বিশেষে গোপনে অবস্থান করিতে-ट्रिन, তुनि कनकालमाज देवरी धतिशा এইখানে বাস কর, আমি একবার सून्मत्रकार्श नर्सक छारात अप्रमन्तान করি।

माडि।

## **তিপদী**ু

काथांग्र कत्रित्व अध्ययन ?। मभूमम् करबंधि अभन॥

যতি মার গৃহধারী, বান হস্ত, ব্রহ্মচারী, ঘূরিলাম সবার আশ্রম। বনে বনে স্থলে জলে, শুন্য আর রসাতলে, কতই করেছি পরিক্রন॥ চোখে দেখা থাক্ দূরে, ত্রিসুবন ঘূরে ঘূরে, कानथारन मक्तान ना रग्न। স্বারি নিদয়-দেহ, একবারমুখে কেহ, ভুলে তাঁর নাম নাহি লয়। গঙ্গাতীর আগে যত, দেখিয়াছি শত শত, মুনিগণে ছিল স্থশোভিত। কি কহিব আহা, আহা, এখন কেবল তাহা, তৃণ আর কণ্টকে পুরিত॥ কোথা যক্ত, কোথা যাগ, কোথা সেই অনুরাগ, লোগ-রাগে শুধু অভিলায। কোথায় যজের ধূম, রন্ধনে পড়েছে ধৃম, সেই ধ্য ব্যাপেছে আকাশ॥ মা জননী শ্রদ্ধা যিনি, আর কি আছেন তিনি। আর কি দেখিব তাঁর মুখ ?। র্মিছে কেন দেহ ধরি, সলিলে ডুবিয়া মরি, সহেনা সহেনা আর ত্বথ। জননী না থাকে যার, এ সংসার মিখ্যা তার, (मर्थ मर जन्मका रमम। কুখায় স্থধায় ডেকে, রক্ষা করে বুকে রেখে. আৰু কি তেমন্ কেহ হয়?॥ কত কত্তে দশ-মাস, গভবাসে দিয়ে বাস, কত কথেঁ করেছে প্রসব। কিতরূপ কন্ট নিয়া, স্তনের অমৃত দিয়া, বাঁচায়েছে শরীর-বিভব॥ : वल महे कोवा यादा,कोवा भारत प्रवा भारत कि हु शीषा हात्न भारत, कुछ मावा-बूँ एफ-मद कलिक् नाहि करत भान। । তীর্থ আদি সব ঠাই, কিছু আর বাঁকি নাই । ভাল হোলে প্রজা নিয়া, কাজীর মন্দিরে গিন্ন वुक्षित्र बक्त करत मान ॥

मरादाद खर्थ ख्यी, मरादाद इर्थ इथी, महान बाहित्त वाटा थान। यात कारह यथा गाँहे, यामित्र किरिया ठाँहे, কেই নাই মাজের সমান॥ দিবাকর, নিশাকর, তোমাদের ধরি কর दल दल, याहे कांत्र करिं ?। বল মাতা-বস্থমতি, কোথায় করিব গতি, আমার প্রস্তুতি কোথা আছে?॥ লতা আর তরুবর, সহেদিরা, সহেদির, পরস্পর পর কেহ নও। তোমরা আমার মার, कान यमि मगोठात, মাতা খাও, মত্য তবে কও॥ অচল, সচল যত, চরাচরে শত শত, 🖟 সকলেতে করিছ বিহার। दल दल मिरिनास, कोन दिला, कोन प्राम. ब्रद्यद्रम् अनुनी आभात !॥ **उत्ता उत्ता, मात्रा मात्रा, जात्रा क्रां**त्रा. মনে জাগো!, আছ ডুমি কোথায় এখন ?ু৷ দেবতার একি দ্বেয়, এই কি হইল শেষ, আর কি পারনা দরশন ?॥ একবার দেখা দিয়ে, শান্ত কর কোলে নিয়ে, प्रथिनीत जुड़ां अजीवन। জনমের মত মাতা, দিয়ে ফুল, রেলপাতা, পূজা করি ভোগার চরণ॥ जुनि मम, मा-जननी, अक्ट बक्तमना जनि, ভোগ-योक अमातिनी माछ।। মাতা সম কেরা আছে, কখনো মায়ের কাছে, তুল্য নন, হরি, হর, ধাতা। त्य करत सारवत स्मर्गा, क्रीब दहरत माधु दहना, কপালে হোলোনা সেই স্থ। অবস্থাৎ বজাঘাত, ছি হয় স্থপ্ৰভাত,

নিদারুণ বিধাতা বিমুখ। চণ্ডাল পাষ্ট যারা, তোমায় করেছে সারা, আর কি রেখেছে তারা প্রাণ?। যাছারে জিক্সাস। করি। চরাচর খবে মরি, क्ट् किछ रामना मस्रान ॥ यिन नाहि प्रश्न (मथा, (यश्रव्य शिराष्ट्र धका, সেইপথে কর আকর্ষণ। महादिदानाः, दमह निम्नाः, महानिद्धाः, याद्रे शियाः, একেবারে মুদিয়া নয়ন॥ उत्त श्रोष ! मिर्ह स्मरह, अर्थता आहिम् (परह. পাযাণ না দেখি তোর মত। राथात कननी आছে, वंथनि डाँहात कार्ट, হও গিয়ে পদতলে নত॥ ওলো প্রাণ সহচরি! করুণা, করুণা করি, শীঘ্র দেহ ঢিতে সাজাইয়া। 🖗 प्राट्ट जांत कांक नांहे, मार्यंत निकटि गाँहे, অনলেতে প্রবেশ কবিয়া # করুণা 1

भी छ।

হাগিণী বাগেনী! ভাল আড়া।

ক্রেনা, ভেবনা স্থি, সিছে, ভেবনাকো আর।

অজ্বা, অমরা, সেই, জননী ভোমার॥

মাত্রিকী-সে শ্রন্ধা মাতা, বিশ্বমাতা বিশ্বমাতা,
কার মাধা ভোলে মাতা,কাছে এসে তার?।

বিধি-ধাতা,শিব-জাতা চারিমাতা, পাঁচমাতা,

মাতা বোলে, মাতা-খুঁডে, করে নমস্কার॥

নাম শুনে ভয়ে হারে, নিকটে কি যেতে পারে,

কেমনে পাষ্ড তারে, করিবে প্রহার?।

কটাকে করিলে স্থি, প্রকার অনল-বৃক্তি,।

শত শত রিপ্নাস্টি, তথ্নি সংহার॥

কোথা সেই মিথ্যাদৃষ্টি, করে নাগী মিথ্যা-দৃষ্টি,
ভোগ করে মহা-রিষ্টি, শত্র-পরিবার।
তৃইভো সে মার মেয়ে, প্রিয় স্থি দেখু চেয়ে,
এখনো কি বেঁচে আছে, কাম ছরাচার দা
কোগা লোভ, কোথা ক্রোধ, হৃদয়ে উদয় বোধ
ভোগ করে মহামোহ, মোহ-কারাগার।
সই কই, সার কথা, শ্রেদ্ধার নিবাস যথা,
পায় ও কি কভু তথা, পায় অধিকার !।
কেঁদোনা কেঁদোনা ছথে, জননী মনের স্থথে,
সাধক-হৃদয়-নাবো, করিছে বিহার॥

শান্তি।

#### भमा।

। যা বলিলে প্রাণ সই, সত্য সমুদয়। সময় বিগুণ হোলে, সকলিতে। হয়। া সমরোর দোহের স্থা, সব ছোড়ে পারে। ি বিধ্বতা-বিমুখ যাবে, কে বাঁচাবে তারে ।।। पिथेनी "भाजानक्यु" नारम देनजाराजा। मभुद्रा श्रीवल হোরে, कतिल कि काज ?॥ ''महालगा'' नाटम कन्या, शक्कार्च ताकात । হরণ করিল তারে, ছট ছরাচার॥ "বেদত্রারূপা" যিনি, মাতা ভগবভী। দানবে হরিয়া তাঁর, করিল কি গতি॥ तक्रमती महादन्दी, सक्रद्भव मंडी। তদৰ্ঘ হোলো মার, পাতালে বসতি॥ "(जोभिने" श्रिशांना गजी, कृष्णा, बटन गाँदत् । नातायनी क्रांश विनि, निथा छ। मः मादत ॥ "प्रभागन" ष्रः मामन, विषय विभान । বসন হরিল ভাঁর, ধরি কেশজাল॥ णडा-मारवा अदम डाँद्र, कि मना कदिल ।

"কুরুপতি" উরুদেশে, বদায়ে রাথিল। বলিতে ছথের কথা, ঢোখে ঝরে জল। त्य मनदश दनवादम, यान दां का नल ॥ পতিব্ৰতা স্বাদী নারী, 'দ্যয়ন্তী' সতী। রাজকন্যা, রাজভার্য্যা, রূপগুণবভী॥ अभगदा ख्रथकल, कस् नाहि करल। मध-कदा गदा-गांठ, शलाहिल क्राप्त । স নি সহ এক বঙ্গ্রে, ছুখে নিদ্রা যান। অন্ধবাস ছিঁড়ে নল, করিল প্রস্থান॥ गत्नत वित्रशामन, क्षमत्त्रप्ट (भारत ) বনে বনে ফিরেছেন, হাহাকার কেবের! मगर-विश्रण इस, अक्रम विक्रश বিপক্ষ বিরূপ হবে, নহে অপরূপ। धानकी द्वारमद खिद्या, कानकी कानकी। कानकीत कथा जुमि कान कि ! कान कि !॥ পতিত্রপাবন পেয়ে, পিত্র আদেশ। धतित्वन क्रिंधाती, त्रकाहाती-त्रम । হৃদুর বিদীর্ণ হয়, হোলেপরে মনে। दकाथ' ताम, ताजा इन, दकाथा यान् रदन॥ অমুজ লক্ষ্ণ সহ, আইলেন বন। সীতা সতী সঙ্গে তাঁর, করিল গমন।। পঞ্চবটা বনে রাস, কুটির করিয়া। যত সৰ পশু, পাখি, প্ৰতিবাসী নিয়া। तुकाठ्या धर्मा-तरमः विज्-छन रगरत्। ञ्ररथएक करतन वाम, कल, मुल रथरह ॥ স্থূর্পনথা, রাক্ষ্মী, আমিয়া মেই বনে। বিবাহ করিতে চাহে, ঞ্রীরাম, লক্ষণে॥ সীত' ধেরে থেতে যায়, দিতে যায় পেটে। লক্ষ্যণ দিলেন ভার, নাক, কাণ, কেটে॥ খোনারবে, খাঁদানাকী, নাকে হাত দিয়া। कञ्चिल मक्ल कथी, बांचर्परत शिहा॥

इहेन मर्छि एए लिखि, देविष्द घटन। মারিচিরে পাঠাইল, সীতার ইরণে। गाति कि कि विल गेरन, बेतिने कियेन। र्शास शरेत, वस्थ ''त्रोम",ना दर्शित "त्रोवन ॥" মায়া করি, হার্ণাস্থা, চেক্রিলা নিশাচর। तायन रहेल, नाही-उक्काबी नंत ॥ দীতার হইল লোভ, মৃগ প্রষিবারে। थकू लारित र्शन दोंग, धतिनादे जीवा। मृजाकात्म मात्रामुना, कहिल विश्कात। " কোথার প্রার্ণের ভাই, লক্ষণ আমার?॥" म तरंव वाक्ति द्रांत्र, प्रवी अवस्थात। शाहात्वम, लाखाद्यद्व, द्वादात्र উत्पदम ॥ मिह शिर्ण प्रमानम, मधी-इस्ल ছোলে। में ज़िला दमवीत कोट्ड, जिका दम् उ रेगाला। प्रश्री (प्रदर्श, शश्रि ছেड्ड, खिंका प्रिटंक यान । অস্নি হরিয়া ভাঁরে, করিল প্রস্থান॥ ताकीवटलांचन ताम ल्डान तम वचन। मजलालां हान रहान, करत्न दर्शनम ॥ হরিণ নাশিতে যান, হাসিতে হাসিতে। আসিতে আসিতে পথে,হা সীতে ! হা সীতে ! नावायनी मनाजनी, त्यांत्व मनानतन । কত শোক দিলে তাঁরে,অশোকের বনে॥ সময়ের ভোগ সই কব আর কায়! क्रमिडा दशासन मीडा, शंग शंग शंग शंग गंग जामात मारमञ्जूषा, इरमर छिमन। পাষতের মরে চল, করি অস্তেষণ ॥ করুণা।

সই চল তবে, তাহাই কর্ত্র বটে। প্রেউভয়েরশভূমি পরিতাগ করিলেন) পথে যেতে যেতে একট। ভর্ম্বর বিকটাকার-মূর্ত্তি দেখিয়া।

#### क्बना।

[ मंडरंग कैंशिएंड कैंशिएड । ]

#### প্রা

ওদিপেতে যেতে আর, না হয় সাহস্। রাক্ষস্ আসিছে ওই, রাক্ষস্, রাক্ষস্। এ দিগেতে চুপিচুপি, যাই চল সোরে। যদ্যপি দেখিতে পায়, খাবে শেষ পোরে।

### শান্তি।

একি একি, রাক্ষস্, রাক্ষস্-প্রান সই। রাক্ষস্ দেখিলে কোথা, কই কই কই ?॥

#### ব্ৰুলা।

দেখ দেখা, রাক্ষস্, তাসিতে প্রাণ সোই ।
ওই ওই, ওই দেখা, ওই ওই ওই ওই ॥
বিষম বিকটাকার, বিঠা গায়-মাখা ।
হাতে কোরে আনিতেছে, মফুরের পাখা ।
তয়ক্কর দিগম্বর, চল-গুলো এলো ।
থেলে খেলে, খেলে বুঝি, এলো ওই এলো ।
ধর ধর, ভয়ে মরি, এ কোন্ বালাই ।
ভালাই ভালাই চল, পালাই পালাই ॥

### শাস্তি।

রাক্স্-তো নয়, এটা, রাক্ষ্স্-তো নয়। রাক্ষ্ হইলে কেন, বীর্যাহীন হয় ?॥

### করুণা।

কি, এটা, তা কও, যদি, নয় নিশাচর ?। যতই নিকটে আংশে, ডক্ত হয় ড্রেঃ

### শান্তি।

রাক্ষনের মূর্ত্তি নয়, দেখ দেখি তবে। বোধ হয়, প্রিয় সখি, পিচাশ এ হবে॥

### করুণা ।

প্রচণ্ড স্থর্ব্যের তাপে, দগ্ধ হয় সবে। পিছাশের গতি ভবে, কিব্ধুপে সম্ভবে ।॥
শাস্তি।

छद्द दुद्धिं नांतकी, इस्टेंट व्हें जन। नदक इस्ट कांची, कतिरहें शमन॥

[ক্ষণকাল বিলক্ষণরূপ দৃষ্টি করিয়া।]

স্থি, জাসি জেনেছি জেনেছি,
চিনেছি চিনেছি, এটা সেই রাজামহামোহের প্রেব্রিত দিগধর-সিদ্ধাছাই হইবে,—ভাহাতে কোন সংশ্রম
নাই। রাই, এ অতি পাপাত্মা, ইহার
মুখাবলোকন করা আমারদের উচিক
হয়ন।

[ উভয়ে विमुधी रहेश दिखन।]

#### করুণা।

সই, এনো কিঞ্ছিৎকাল এইখানে থাকিয়াই অন্ধা-মাতার অন্বেষণ করি।

#### -

ি উভুয়ে তথায় ঐরপেই ভার-ংতান করিচন্দ্র।

অনন্তর দিগমর্গিদ্ধান্ত রঙ্গ হু মিতে প্রবেশ করিলেন।

দিগধর-সিদ্ধাত!

হে গুরো ! তোমায় প্রণাম করি ! নমো অর্হতে।

জग्न अर्थ कि कृत्र। कृत्र अर्थ कि अत्र। अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ,

#### ভৰ্জন।

অরহং অরহং, শির্কো জহরুং, নেরা গুরুজী অরহং। তোম্ সব্লোগ্নিস্তার্ হোয়েগা, লেহ এহীকা মং। বাবা লেহ এহীকা মং॥ ১

किश् काश्यका नागाना वावा, नागाना एमवी, एमवा। अक् मन्दम, अर्थ कीँ एका, भाखरम करता एमवा। वावा भाखरम करता एमवा। २

### ---

ধবৃহি থেমা, আয়ে মন্মে। ভেস্ফে করো ভোগ্।

\* অহৎ কর্মাৎ দিগদার দিদ্ধানের মতের আদি প্রবর্ত্তক গুরুইছার উদ্ভব-স্থান দক্ষিণ-কর্ণাট দেশের কোল বেস্কুট নগতের কুটকচাল নামক পর্বাত । হোড় দেও দৰ্ধূৰ্ত্তকা বাং, ভুকা যাগুযোগ্॥ বাৰা ভুকা যাগ্যোগ্॥ ৩

আবি কি নারী, পর কি নারী, যেকি নেলে সঞ্চ। নেহি ছোড় দেও, ক্যা খুদি হ্যাত্, কাম্দেও-কি রঞ্চ। বাবা কাম্দেওকি রঞ্চ॥ ৪

এনে পাপ্, এনে পুরা, এহো দূর্ত্তকী বাং, মরণ্নে ঘর্মুক্ত হোয় তব্, পাপ্যায় কোনু মাং। বাবা পাপ্যায় কোনু মাং। ৫

দিন্দিন দিন্থাওমে ঢালো,সবস্থাজল্। তবু ভেরে কি.শোধন্ হোবে,জঠরভরা সব্মল্॥ বাবা জঠর্ ভরা সব্ মল্॥ ৬

কান্ ৰাজার দে লুট্ করে। সৰ্
কাঁহে রহোতো, ভারা।
এহি লোগ্নে করে। সব্
কাঁহা পরলো কাঁহা॥
বাবা কাঁহা পরলো কা

আহঁৎ সেরা। প্রাণ্-পেয়ারো, আহঁৎ নৈরা জান্।
আহঁৎ পাওমে প্রণ্থ করো সর্
আালোর নাজানো আন্।
বাক্ষ্মানোর নাজানো আন্।

হে স্বাভিমতদেব! আমি তো-মাকে প্রণাম করি।

[সভাগণের প্রতি বকু তা।]

আহা! এই সকল লোক অন্ধ
হইয়াছে; চক্ষু থাকিতে কিছুই
দেখিতে পায়না, হিতাহিত কিছুই
জ্ঞাত হইলনা, শরীরের সার্থকতা
কিছুই করিলনা, ভ্রান্তি-বশতঃ সকলে
হস্ততি-প্রত্যক্ষ-সঞ্চিত-সুখে বঞ্চিত হইয়া তামর্থক পাপর্মপ-কর্য
ভোগ করিতেছে।

এই নবন্ধার-মূহ মধ্যে একমাত্র পরমাত্রা প্রজ্ঞানিত দীপের ন্যায় রহিয়াছেন।—তিনিই এই সংসারে পরমার্থ-সূথ এবং অন্তে মোক্ষ প্র-দান করিয়াথাকেন।—আমার প্রক্র আসাকে এইকপ উপদেশী

ও ভাই সাধু সকল। ভোমর। ও কি করিতেছ? ভোমারদিধের এই ভ্রম, সামানা ভ্রম নতে। ভ্রমনারীর বিষ্ঠা-রাশিতে প্রারিপূর্ণ, ইহা জলের ভারা কি কথনো শুদ্ধ ইইভেপারে? জত এব দেহের শুদ্ধি কদাটই হয়ন।। কিন্তু ভাই দেহের অশুক্তিতে আত্মা কথনই অশুক্ত হলেননা, কারণ তিনি নির্মাণ-কভাব,—হে ভাই! (ভোমরা নিশ্চয় জানিবা, মল-মূত্র গাত্র মধ্যে লেপন করিলে কেহই অশুচি হয়না) শুচি আর অশুচি, এটা কেবল ভো-মারদের মনের ভ্রম মাত্র।

অপিচ যে স্ত্রীতে যাহার অভিরাচ হইবে, সে অছনে তাহাতেই
গমন করিবে, ইহাতে পুণাই হয়,
পাপ হয়না, এ বিষয়ে ঈয়া করা কর্ত্তরা হয়না, কারণ ঈয়াই অতিশয়
পাপের কারণ। অভিলয়িত-মুখ-সভোগকেই পরমার্থ, পুণা, এবং স্বর্গভোগ কহিতে হইবে, ঈয়ার নাম
পাপ এবং কউভোগের নাম নরক।

ও ভাই-কাশীবাদি মানবগণ!
তোমরা আর কবে ভাবের ভাবিক
হবে? সভাবে কেন অভাব করিতেছ! মনে কর, যথন তোমরা জননীর গর্ভ হইতে ভূমিউ হও, তথন
কিরপ অবস্থায় আগমন করিয়াছ!
তোমারদের এই শরীর কিছু তৎকালে বত্তের দারী আছুত ছিলনা,
ক্রেই উল্লেছ ছিলে, অভ্নাম বত্তের
কিন্তিছেই

হে প্রিয়ে শ্রন্ধে। তুমি স্থামার সন্মুখে এসো।

তামদী শ্রদ্ধা।
নভাগণেরপ্রতি গীতচ্চলে বক্তা।
দনেরে পবিত্র সবে, কর কর ভাইরে।
মুবে এক্, মনে আরু; সে, বড় "বালাইরে।"

ধ্য়া |

'নিজ-অভিমত" যাহা, "গয়ব্ৰক্ষ' বস্তু ভাহা, किंगड विमा आत, "उक्क" गारे, मोरेद्र। गवादि अएक-मन, माँठा नार अक जन. ভিডৱে বাহিরে বাট', খাটি কোৰা পাইরে 🕍 त्माकां हार्य हार्य बढ, खानि-गरम गत यड, বেচ্ছাচার-শাস্ত্রমত, কারে বা বুঝাইরে ?। यं नादी, यं मद्र, श्रद्भाद्र (व्य क्दर, ভেদভাব কেন ধরে? ভেবে মরি তাইরে॥ কেন করে থোঁচাখুটি? মূল মাত্র অভিক্রচি, ऋভাবে সৰাই শুচি, দেখি সব ঠাঁইরে। ভিতরে মলের ভার, বাহিরেতে পরিকার, সদাচার, কদাচার, মিছে শুচি-বাইরে॥ সাজাপথে নাহি চলে সোজা কথা নাহি বলে, হায় এই ধরাতলে, থেপেছে স্বাইরে। ইচ্ছানত কর্ম করে, ইচ্ছানত ধর্ম-ধরে, ই চ্ছাপথে স্থেইচরে, তার্ভণ গাইরে॥ অন্ধ সৰ অভিমানে, সত্য নাই কোনোথানে, মুথ্ তুলে কার্পানে,ফিরে আমি চাইরে !। माञ्च काथाव आहर, मन् थाणि कविवादह, बाहा आमि कांत्र कारह, कुक् हिट्ड गाँहरत ।। गानत्वत त्मर थात्र, मूर्ण एड्ए कर्च करत, ইনি, তিনি, ঘরে ঘরে, ভঙ্গা তার ছাইনো !

এভর মেলার মাজে, কড কাজে, কভ সাজে, কেহ-বা"েগাঁগাই" সাজে, কেছ সাজে মাঁইরে ॥ विषया कतिया एका, भवाई कतिया थना, কেহ কেহ হয় "চেলা" কেহ হয় "চাঁইরে,,। खद छात्र। रल रल्, केरी काए किया कला क्रयाधीनभाश हम, खुरबहु दिक्षाहित ॥ কর্ম-ভোগ মহারোগ,মে ভোগ, নরক-ভোগ, স্থ্য-ভোগ, স্বর্গ-ভোগ, সেই ভোগ চাইরে। ছিলে তুমি করে ছেলে মনে কর কোথা এলে वानिया व्ययन त्थाला, क्रुक्तीत "याहरतः, !।। स्थन् बाइ एव मटव, म्राना-त्मर स्थारक द्राव, ज्यन् कि तना इदन, कारत वा स्थारित !। या थल, दकादत हल, मामार उदह कर्न-कत, क भाभू गटेंब हो थे, दक्ष्मरम अकृष्टित ?। टिन जार नाहि यात्र, अपन काशनात्र. मांगी द्रारम जानि जाते, श्रेष्ट्रील थारेटत ॥ হে প্রভা! আজা করুন, কি ক্রিতে হইবে?

माडि।

[তামদী-শ্রদ্ধাকে দেখিয়া কাঁ-পিতে কাঁপিতেই মূর্ন্দ্রা

দিগ্ৰহ নিয়া 🚉

প্রেরসি প্রদ্ধে নাজিকেরা ভৌ-মা-ভিন্ন এক-মুহূর্তকাল প্রাণ গরিছে পারেনা, তুমি ভাহারদিশের প্রেম-বর্তিনী হও

#### उ।गमी आहा।

ৰে আজ্ঞা প্ৰাক্ত তাহাই হইবে। [এই বলিষ্টা রঙ্গজুমি পরিভাগ করিবের ]

#### করণা।

[আঁচিলের-দারা শান্তির গারে বাতাস এবং মুখে জল প্রদান ]

হে স্থি!--তুমি সূর্জ্ঞা-ত্যাগ কর, উঠো উঠো, শ্রকার নাম শুনিয়াই কেন তর কর! কেন এত কাতর হও!—তুমি তাহিংসাদেবীর কথানা কি শ্রবণ করনি, যে, শুণু-দিগের "তামদী" নামে এক শুনিমাঁ তাছে! এই শ্রদ্ধা, সেই শ্রদ্ধা, এ তোমার মানহে।

#### भारि ।

হাঁ সখি !--এখন বিবেচনা কুলা লাম তাহাই বটে, স্থামার জনী সাজিকী অতি সদাচারা, পরিত্রা, এই তামসী, অতি কদাকারা, কদা-চারা।

এনে। আমরা রৌদ্ধদিগের মধ্যে মারের অভ্যক্তান করি।

্রিই রলিয়া শান্তি এবং ফরুবা ফার্টু র্কত জমণ করিতে লাগিলেন :] তদনত্তর —পুস্তক হস্তে করিয়া মুত্তিমুগু-কাষায়সন্ত্র-পরিধারণ-ভি-মুক-বেশধারী-বৃদ্ধাগম রঙ্গভূনিতে প্রবেশ করিলেন।

#### ভিক্ক।

জয় গুরুদেব বৃদ্ধ। তে মাকে

মন্ত্রা

## তে টিকছ मः।

্অবিনাশিত-হিংসিত-ধর্মচয়ং। বিনিব¦রিত-ভাবিত-ভক্তভয়ং॥ পরলোক-নিরাকৃতি যুক্তিকরং। প্রণমামি শুরুং মম-বৃদ্ধবরং॥

যাহাতে পশুহিংলা আছে, এমত ঘূণিত-নির্দায় যাগ মজাদি কর্মা

যিনি রঙিত করিয়াছেন, আর ভক্ত

সকলের ভয় যিনি নিরারণ করিয়াছেন, এবং পরলোক নাই, এবিষয়ে

যিনি প্রচুর প্রমাণ প্রয়োগপুর্বক
অপ্রতাক্ষরাদি শাস্তবজাদিগকে পরাভব করিয়াছেন,-আমি সেই সর্বশ্রেষ্ঠ পর্যপ্তরু বুদ্ধ-দেবের চরণে
প্রণাম করি।

#### গীত।

র গিণী আলেয়া। তাল ৰূপক। হায় হায়, কি অধর্মা, মুখে বলে ধর্ম পর্মা, ছেড়ে ধর্মা, করে কর্মা, মর্ম্ম বোঝা ভার ! "অহিংসা-পর্নধর্ম" করেন প্রচার!। কাল্লনিক-আচরটো, হিংসা করে যত জনে, কিছুমাত্র নাহি সনে, দয়ার সঞ্চার। त्रहमः कतिरम् (यम, याभ, यक्क, श्रीतरण्डम, করিতেহে পশুচ্ছেদ, বিবিধ-প্রকার। হতা৷ কোরে পুণা হয়, এই কিরে শাস্ত্রে কয় ? ওরে তোরা ছুরাশয়, অতি ছুরাচার। ১। অধর্মেতে ধর্ম-লাভ, বিপরীত এই ভাব, নিষ্ঠুরতা আবিভাব, তান্তরে সবার ! প পি যদি নর হয়, রাক্ষণ্ কাহারে কয়? সাপের অধিক এরা, পাপের আধার। ২। এতদূর ভান্ত মবে, যজ করি পুণ্য হবে, পুণাবলে স্বর্গে রবে, পেয়ে অধিকার। ুকিলে পাৰে স্বৰ্গফলং গোড়া কেটে ডালে জল. পাপ্কোরে, পুণ্ বল্, করে হয় কার?। ৩। চিরস্থায়ী, "অাত্মা"নয়, মোলেই-তো মুক্তি হয়, পরলোক কেন-কর্মণ যুক্তি কোথা তার ।। মিছে করি যাগ যোগ, ভোগে কটভে গ রোগ, দেহ গেলে ভোগ:ভোগ, চিনে হবে আর 🕻 ৪ অতি শঠ ছুট যারা, ভোগায় ভোগায় তারা, হে হৈয় সবে আলো-হার', দেখে অন্ধকার। ''আ্লা'নাথাকিলে আর,ভোগ তবে ইবেকার! आहा टक्ट धक्रवात, कटब्रमा विग्रात । ए । কেন তোরা কট গোস্! ছথে কেন নট ছোস্ दुक्ष-मठ यदि लोग, जारना कि आहे।

হিংসাপাপেভোরেয়াবি স্থা, নোক্ষ, হাতেপাবি, धक्कवरित मूत्र इत्व, मत्मत्र विकात । 🗞। যে, নারীতে, যে, সময়,ভোগের বীসনা হয়, সেই নারী, সে সময়, ভোগ্যা আপনার। সে, যে, প্রিয়া, তুমি, প্রিয়, উভয়েই "রমণীয়, ্স্বীয় আর পরকীয়, কোরোনা বিচার। ৭। अभान, मन्त्रर्क, (यहा, काझनिक मिट्ह (महा, এখনি হতেছে সৃষ্টি, এখনি সংহার। ; গড়িয়া অলীক মত, বালীক বঞ্চ যত: ' অন্ধ কোরে রাখিয়াছে, অবিল-সংসার। ৮। यान्ध्या बान्ध्या!--बारा बारा! এই পুতকধানিকে সকলে প্রণাম কর,-এমন সংশয়ছেদক সুখ-মে ক-ভেদক প্রতাক্ষ-প্রমাণ-পরিস্থরিত-সা-ধুসন্ধর্ভ ভূচক জ্ঞানগর্ড-গ্রন্থ আর কুতাপিই নাই,-আমারদিগের এই मोशच्धमा वर्षा दोक्धमा, मकन ধর্ম্মের সার ধর্মা,-স্মৃতি স্থন্দর কেন-না ইহাতে সুখ এবং মোক্ষ উভয়ি তুল্যরূপে বর্ত্তমান রহিয়াছে, -কারণ এই মতে শৃত্যুই মুক্তি, মুক্তি সার কিছু একটা স্বতন্ত্ৰ পদাৰ্থ 👯 , এই মুক্তির জন্য কোনৰূপ সাধনের আব-শ্বক করেনা, অতএব জীবুদ্দশাতে যত স্থবতোগ করিতে পার ভাগাই क्य,--छाद्राटि काम निताकत्व नाहे,

(यटर्जु जाना किलाही नट्न,--शत- ,

লোক নাই, স্বৰ্গ নাই,--অহিংদা-পর-ম-ধর্ম,—হিংসা করাই পাপের কর্ম, দশদণ্ড সময়ের **মধ্যে স্থুখনে**ব্য না-মিগ্রী সকল ভৃত্তি পুর্বক ভোজন কর, মুনিকনা। এভৃতি দিব্যাঙ্গনা সকল अक्रान्य मानरम मर छो ग कत । यो हा ইচ্ছা তাহাই কর,--এই ভাবময় ভব কেবল ভোগের ভবন,-ভোশান,--ভোগ কর। আমরা ভিক্কুক;-ভামিরী পরাকাম্বায় ত-পানানন্দে প্রেম প্রাপ্ত হই তবে যেন কেহ তাহা-তে नेर्व। करत्रमा,—वित्रक इग्रमा,— কারণ'সকল পদার্থের ক্ষণেক্ষণে উৎ-পশ्छ ও कार्यकर्पेह विनाम क्हेर्ड-ছে, সুতরাং যখন যে পুরুষ যে স্ত্রীতে গমন করে, তথন সেই স্ত্রী সেই পুরু-বের স্বজাতীর ভোগ্যা হয়, পরকণে আর সে সম্বন্ধ গল থাকেনা। ভাত-এব জ্ঞান-লোকের। কেন স্বীয়া, পর-কীয়া, ভেদ রাখিয়া ভ্রান্তিক্রমে ঈর্বা করে,--এই ঈর্ষা কেবল চিত্তের মল।

[ **সাজখ**রের-দিগে চৃষ্টি করিয়া।]

প্রিরতমা আদ্ধা-তুমি একবার জা-মার নিকটে এসো। 画有!!

গীত।

রাগিণী বাহার। তাল থেম্টা।

ত্রালে, ছোল্তে হোলেই, বোল্তে হয়। পোডা দেশের লোকের, আচার দেখে.

চোল্তে পথে করি ভয়॥

ঢুকে কারাগারে, সাধুহোলো চোর্ বিল-গুলো ফলি কোরে, পালায় ভেডেও ছোর

এক ফাকা-ঘরে,সোল্তে মলে,

জোর ্বাভাসে সে, কি, রয় 🗥 🗀

ওরে. 'পাঁচ্ঘরা' আর্ দশ্ঘরার মেলান

সাৎপাঁয়ের লে।ক্ 'এক্ পাঁয়েতে.

' কোর্তেছে থেলা।

काद्य उनाउनि प्रम्पिरगट उ.

टाल्ट थाक ममूनम् ?

এর', অগ্রপ্থিপের মেলা কোরে স্থান নেডা ছোয়ে নবদীপে, চোলে যেতে চায়,

(कहे। अटलत् चरत आखन् काटल ?

সহজ্বড় সহজ্নয়। ৩॥

হয়, দেখতে দেখতে সাং সমুদ্র পার,

কাছে থাক্তে পারে, রাখ্তে পারে,

শক্তি আছে কার্,

श्टरत. गूरबत् वाहित् स्टाटल शहत,

माधा कि जाइ क्या क्या । इ

সূত্র, প্রেমানন্দ-হাটে কর হাট্, আমার ্ আন্তুত্র ভোমার তোমার ছাড়ো মিছে ঠাট,

এই ভাঙাহাটে, তেঁড্রা পিটে,

্লিক কারে পরিচয়।।।।

দেখি সমভাবে সব্-গুলো অসং
কউ বেঁচেথেকে সং হোলোনা,মোরে হবে সং,
যার্মাখা নাই তার্মাথা ব্যথা, খেপেতে
সব্জপৎমরা ৬।

হে নাথ!— আমি এই এসেছি, আজ্ঞা করন, কি করিব ?।

ভিক্ক।

প্রিয়ে ! তুমি এই সকল উপাসক ও ভিক্কককে গাঢ়রপে আলিঙ্গন কর।

শ্ৰহা।

যে আজ্ঞা-নাথ। তাহাই করি, । এই বলিয়া রঙ্গভূনি প্রারিত্যাগ করিলেন।

भाषि।

করণা, করণা, ঐ দেখ,-ঐ দেখ, এই প্রদাও তামসী-শ্রদ্ধা।

করুলা ।

সই-ভাই-বটে, তাই বটে, ঐ যে, দেখি অভিশয় কদাকারা কদাচারা।

---

দিগররসিদ্ধান্ত !;

ভিক্ষুককে দেখিয়া হাত নাড়িয়া উচ্চঃস্বরে।

ওরে ভিক্ক । এখানে সায়, সা-

মার কাছে জার, ভোরে কিছু জিজা-না করি।

ভিশ্ক।

[काधभूर्यक ।]

জা। পাপ-পিচাশ!-জামি তোর বিষয়-স্থ-সভোগা নিকটে যাব ! দূর্দুর্,-এ, যে, তোর্ হইলেই মুক্তি হয়। দোর প্রলাপ।

क्रांश्वक, व्यशं प्रिशेषत्।

মর্মর্-ভিথারি-আমি শাস্তের কথা জিজাস। কবিব, তোর্ এত রাগ কেন ?।

ভিক্ক।

[হাসিতে হাসিতে]]

হাঃ হাঃ-ন্যাংটা বুই শান্তের কথা জানিস্, ভাল ভাল,-এ,যে বড় সুখের কথা, আমি সকল শান্তেই মুর্তিগন্ত।

[নিক্ট বিশ্বল্বল্, ভে প্রশ্বলাছে ভানি ?।

কপণক ৷

ওরে, ভিথারি। ক, দেখি ক, এই শরীর কণবিনাশী, এখনি নাশ হইবে, তুই কি জন্যে একপ কঠিন-বর্তমান

#### जिक्ता

শোন্ ন্যাংটা, শোন্। আমার-দিগের এই ত্রতের ফল ভোরা কি জানিবি ! এইরূপ বেশ ধারণ পূর্বক বিষয়-স্থ-সম্ভোগানন্তর দেহ নিপাত হইলেই মুক্তি হয়।

#### 那門亦

ওরে মূর্থ, ' ওরে নেড়া '— ভের্বর্ক,
যে, ভেড়ার্মত বুদ্ধি দেখি। যদিভাৎ মরিলেই মুক্তি হয়, তবে ভোর্
এপ্রকার্ কঠিন-ত্রত ধারণ-করণের
প্রমোজন কি? তোরে এই অসৎপথের উপদেশ কে দিয়াছে,? বল্
দেখি!।

#### जिन्नुक।

কি মূচ। এই পথ জাসং পথ? সর্বাক্ত-বৃদ্ধদেব আমাকে এরপ উপ-দেশ করিয়াছেন।

দিগমরসিদ্ধান্ত।

ওরে অজ্ঞান 'বলি ভবে শোন্।
যদি কেবল এক নাম-মাত্রেই সর্কৃত্র হয়, ভবে এজগতে সকলেইভো ক ভ। আমি দিব্যক্তানে কেবিলা-ভোরা পিতা পিতামহ গ্রাক্ত পুরবের সহিত অ মার ক্রীভদাস। আমি তোদের প্রভু।

ভিক্ক ।

[ খোবতর ক্রোধ পূক্ষক]

কি পিচ। শ। যত দুর মুধ, তত-। দুর কথা, আমি তোর্দাস-রে, আমি তোর দাস !।

আর ভোর ুমুখ দেখ্বনা, ভোর ু मद्भ जात् कथा करना।

**野** 27 4 7 1

হিসিতে হাসিতে।

ওরে শাত্রের বিদারে ক্রোধ क्तिल कि रूप दत ! जुडे अर्थनि अडे মত পরিত্যাগ করিয়া আমারদের অহৎ-মত গ্রহণকর।

ভিক্ষ ৷

ওরে অধম।-তুই আপনি নউ হোয়ে জাবার পরকে নম্ট করিতে চান। আমি এই সামাজা-রুখ পরি-ভাগে পুর্বক কেন তোর ন্যায় । ওবে ন্যাংটা, ওবে ন্যাংটা, ওবে ন্যাংটারে, ক্লাশরূপ ধারণ করিব ১ দুর পাপ্

भी छ।

রাগিণী। ঝিবিউ তাল আড্থেমটা। १ वटव, नार हो, खटब, नार हो, खटब नार हो दिया। এট কিরে, তোর ধর্ম ।। ছিছি, এই কিরে, ভোর ধর্ম।। এমন মানব্জনম পেয়ে, করিলি চি কর্ম। ছিছি, এই কিরে, তোর ধর্ম গা अत्य नार्रे, अत्य नार्छो, अत्य मार्छोद्य,

এই কিরে, তোর ধর্ম।

নিকে, মেখে বিকে-গায়,গজে কাছে টেঁকা দার, ফিলিবিলি করে "কৃমি, ফুঁড়ে পচা-চর্ম॥ ছিদি, এই কিরে- তোব ধর্ম ?। े ( ७८व मारिका, ७८व मारिका, ७८व मारिका दि. **এ** के किर्द्ध राजा श्रे किर्द्ध राजा । )

यक्षकाच्या या था- मन् कदिए उत् उत्तर् র্বিভাপে হোয়ে জল্, মুথে ঢোকে ঘর্ম। ছিছি এই কিরে, তোব ধর্ম ?। अद्य नारिका, अद्य नारिका, अद्य नारिकाद्य. এই কিরে ভোর ধর্ম। २

---

মূর্ত্তিথানা কদাকাব, তাহে অতি ছুরাচার, সিচাশের ব্যবহার, মরি কি অধর্ম। ছিছি, এই কিরে, তোৰ্ধর্ম 🗥 कड किरव छात्र अर्था ।। अ

নরকেতে ডুবে বোস, নিজে কভু নব্নোস শাস্ত্র ধোবে কথা কোস, কোথা পেলি মন্দ্র ।। ছিছি, এই কিবে, ভোর্ ধর্ম । গুবে নাংটা, গুবে নাংটা,গুবে না চাবে । এই কিবে, ভোব্ ধর্ম। ৪

পণ্ড-গৰা মূর্খ ঘোৰ্, বুথায় ববিদ শোৰ,
শাস্ত্রের বিচাবে তোব্, কিসে হবে শশ্ম।
হৈছি, এই কিবে, ভোৰ্ ধর্ম।
কবে ন্যাংটা, প্রে ন্যাংটা, ওবে ন্যাংটাবে
এই কিবে, ভোৰ্ বর্ম । «

## मिशश्विमिक्षां छ।

িকিঞ্চিৎ ক্রোধ অথচ ঈষদ্ধানা পূস্ব*ৰ* গীত।

রাগিনী প্রজ। ত'ল পোসা।

তবে তিথাবি। এই কিবে, তোব্ প্রসক্ষ
তোব্ ধর্ম-কথায়, মর্ম-বাধাম,
কর্মদোদেব্ আগদ্য॥

এই কিবে, ভোব প্রকল ।

দেখ্ চুক্তি-মতে, এ জগতে
সভাবে সব্, 'উলক্ষ॥,
তুই যখন এলি, ন্যাণ্টা ছিলি,
থালি ছিল সকাক্ষ॥ ১
শেশ্ মাধি যখন্, লাংটা ভখন,
ছবি পুন জ্বাক্ষ।
ক্রান্টাব্র ক্রেপ্ড প্রাণ্ট

वाथ क्वांनोक्स्टम, मामन दकाटक, মানস্মাতাল মাতক। আমাব্সভাবনিজ-মূর্ত্তি দেখে কেন কবিস্আতিজ্ঞা ৩ (छोत् बुक्तधर्म एक नदक, যিছে কবিস্কুসঙ্গ। ছিছি, কন্ট পেয়ে নন্ট হে।লি का । इत्य स्त्रमञ्जा । । । ভোৰ্মনে মুশ্লা কম্লা ভরা, न। शिवाड (गोवोञ्ग। মিছে বাহিব শাদা, ফটিক চাঁদ বিষদ गु- ভূঞ স ॥ ৬ পুট যোব্ভুফানে পোডে কেবল, দেখিদ তবল্তবস। ওয়ে ভিব্পাণিতে পাতব্ কুল্ম जरन करलव शृंडेंॐ ॥ें ७ ডোব্ আছা,ব্সজে, প্রেমতবঙ্গে, দেখবি কত স্তবঞ্চ দুবে থাকলে থানিক্ পার্নি মানিক, নাচ্বি হোথে তিভক। ৭ ভোৰ কাঁচাৰাধন্ খাঁচা ছেছে, উড়ে যাবে 🍞 🗷 । त्न जानाव मीटक, कटि मीटक, क्टाल जिल्ला-कर्मण ভিষ্কুক। जिल्ली।

ন্দ্ৰক্ষৰ কলেবর জক্তান্থীন-দিগন্তর কদাকাৰ বিষম অগীব। গাত্র কোডে অনুসলি পড়িছে বিষ্ঠার-জুলী মল-ভুগা সকল শ্ৰীৰ ক্ষ দারণ-তুর্গন্ধ গার, নিকটে দাঁজানো দায়,
ঘ্ণা করি ভাকেনাকো যম।
নরকে নিবাস করে, কুমি থেয়ে প্রাণ-ধরে,
পামর পিচাশ, নরাধন॥
ছাড়িয়া পবিত্র-মত, আমি হব ভোর মত,
প্রেত সেজে করিব গমন?।
দূব্ দূর্ মর্ মর্ কাছে থেকে সর্ সর্
কি বলিস্, দান্তিক ছুর্জন থা

দিগমর সিকান্ত।

[থেদ পূর্মক সংগীত !

রাগিণী আড়ানা। তাল আড়া।

মনরে আমার, কর ভ্রম পরিহার ! না জেনে অহং, কেন, কর অহস্কার ?।। মিছে আঁটে তুলে আঁচ্ করিভেছ সাতপাঁচ্ কাচিতেছ কত কাচ্, অশেষ প্রকার। পাঁচে করি পাঁচাপাঁতি,আঁচে কর আঁচাআঁচি এদিগে, যে, কাছাকাছি,হয়েছে ভোমার। প্রকৃতি বিকৃতি কর, কি, প্রাকৃতি তুমি ধর. ? আকৃতির ভেদে কর, স্থকৃতি স্বীকার ?। অভাবের ভাব ধরে, স্বভাবে অভাব করে স্বভাবের ভাবে নাহি, চরে একবার। কল্পিড-ভাবেডে সবে, ভুমেডে ভূমিছে ভবে, ভদ্ধে আরু কবে হবে, ভাবের সঞ্চার !। ভোমর। মানব্যভ, বিয়েছ-ভো শত শভ, অবিরত কভ মত, করিছ আচার। ্লিডেছ *চ*লিডেছ, কত ছলে ছলিডেছ 🕬 **ভলিতেছ, বলিতেছ, নরের আকার**। **ऐल् बेंस, उन्न उल, इल, इल य**ङ . 10 10 4

किंख छोड़े बल बल, बल कंद्र कांद्र है। अकाकाद्य अल्ल स्मरमा, अकाकाद्य गाउन द्रमध्य, একেতেই হবে শেষে, সব একাকার। দেশ দেশ করে দ্বেষ, বেশ বেশ ধরে বেশ, प्तरमण्ड रवरमञ् । छन, छोल प्तमानात ?। একেতেই সব হয়, একেতেই সব লয়, কিছু নয়, কিছু নয়, আকার প্রকার। गथन এमেছ ভবে, উলঙ্গতে। ছিলে সবে এখন বসন ভবে, সাজে কি প্রকার ? 1 যখন মরণ হবে, বসন কোথায় রবে? দিগমর হোয়ে সবে,যাবে ভব-পার। मत्न योत्र थोटक निर्छ, कि छोत्र, हमान, विर्छ, এ শুচি, এ, অশুচি, কি, সে করে বিচার !। ভিতরেতে ভরা মল, মন নহে মিরমল, বাহিরে ঢালিয়ে জল, কর পরিষ্কার। হায় একি ভূম ধরে, মিছে অভিমানে মরে, বাহির পবিত্র করে, ভিতর অসার। गारत वल नित्रमल, आर्थ जार्श हिल मल, যত দেখ হল, জল, মলের ভাগের। ञमल कोशांद्र करा, यल ছाড़ा किछू नरा, মলময় সমুদয়, অথিল-সংসার! থাও অন্ন; থাও জল, খাও মূল, খাও ফল, পরিণামে হবে মল, সংশয় কি তার গা সেই মল পুনর্কার স্থলরূপে হয় সার, अमारतत मास्य मात्र, क दुबिरन मात्र ?। অসারে ভাবিলে সার, অসারেই হয় সার, এ অসার, এই সার, বিষম-বিকার। দেহ সাবে 'আত্মা' বিনি,অতি শুদ্ধ, সার তিনি, অসারে সারত্ব ভার, কে করে সং হার ? / जुल-शर्थ मरत हरत, शुना, श्रीश, कारत वरतः জলবিষ মিশে জলে, হয় জলাকার।

मतिरलहे मुक्त रहा, किছू आंत्र नाहि तहा, शत्राक कारत कर, कारत करे जात ?। म्बार्श कार्श याद्य करा, अविनामी मिटला नय, শরীর হইলে লয়, লয় হয় তাঁবি। धारे इस. धारे लया, ट्रांट्स आत नाहि तम স্বপ্লবং সমুদয়; কেবা হয় কার !। अबारे (थरप्रदह मन, नवांत्रि উल्लाह शन পরস্পর ভুলে কয়, আমার আমার। কেন ভাবে নারী নর, এ,—আমার এ, যে, পর i सग्रम मुक्तिल श्रद्ध, नव कश्चकाद्र। কেবা কার হয় যোগ্য, কেবা কার চিরভোগ্য-যথন যে ভোগ করে, তথনি ভাহার। 'কারে দিব উপদেশ, ভোগের হইলে শেষ তখন সময় লেশ, নাহি থাকে আর। আমিতে৷ আমার নয়, নারী কি আমার হয় যাহে যার অভিক্রচি, করুকু বিহার। নোষ যেন নাহি ধরে, শ্বেষ যেন নাহি করে, এই দ্বের ছোর তর, পাপের আগার। পর-কারো নহে কেহ, সমভাবে কর স্নেহ, রোগের আধার দেহ, ভোগের আধার। দ্বেষহীন মহাধর্ম, বুরো তার নার নর্ম আহাহিতে কর কর্ম্ম ইচ্ছা যে প্রকার॥

শান্তি এবং করুণা।
[পথে যাইতে যাইতে ]
শান্তি।

কৃষি-করুণে! দেখ দেখ, ঐ সোম-কোন্ত আসিতেছেন, ইন্নি মহামো- হের-প্রেরিভ-জানুচর, ওদিগে দৃষ্টি
করা নয়, চল আমরা ঘাই।
ভিদনত্তর সোমনিদ্ধাত রঙ্গভূমিতে প্রবেশ
করিলেন।

#### সোমসিদ্ধান্ত।

[চারিদিগে কিরিয়া]

হর-হর-হর।— শিব-কাশী,-শিব-কাশী।-জয়-কাশীনাথ। জয়-কাশীনাথ।
বম্-বম্-বম্-বম্-বম্ন্তালা।—ভোলানাথ।
ভোলা-বম্-ভোলা।—ভোলানাথ।
ভোলানাথ,-শিবগুরু-শিবগুরু।-কাশীর-বিশেষর,-জয় পার্কতীনাথ।
হরহর -হরহর,—ভাপহর- পাপইর,
শোকহর-রোগহর,—হর হর, ছঃখহর,—হর-পশুপাশ হর।—(হে শহ্রর
পরমেশ্বর! তুমিই গভি,তুমিই গভি,
জয় মহাদেব, মহাদেব, ভোমাকে

[मश्गी उन्हरन उता]

#### उक्त ।

তুটিনিকেতন, রিটিবিনাশক, স্টি-পালন-লয়কারি । নিন্দিত রক্ষত, বৈতকলেবর, ভব্যজুষণ, কটাধারি ই.১ ৬%

জয় জয় কালিকে। এহ-ডিথিটালিকে।

রিভুবনপালিকে। মাগো মা।

শশিথ ওভালিকে। নর নিরমালিকে।

গিরিরাজবালিকে। মাগো মা॥ ১

অউ-অউহাসিকে। যক্ষ-রক্ষণাসিকে।

দৈত্যকুলনাশিকে। মাগো মা।
ভবভাষভাষিকে। ভবভাসভাসিকে।
ভববাসবাসিকে। মাগো মা॥ ২

ক্ষোচারচারিকে। ক্ষোচারবারিকে।

ক্ষিত্রখহারিকে। স্বর্জাপতারিকে।

গ্রিক্রখহারিকে। মাগো মা॥ ৩

ক্ষাত্রখহারিকে। মাগো মা॥ ৩

ক্ষাত্রখহারিকে। মাগো মা॥ ৩

ক্ষাত্রখহারিকে। মাগো মা॥ ৩

ক্ষাত্রখহারিকে। চওদওদভিকে।

ক্ষাত্রখন্ত বিভিকে। চওদওদভিকে।

স্থরতরঙ্গিণীচ্ছন্দ।

রবিস্থতগঞ্জিকে। ভবভয়ভঞ্জিকে। হরসনোরঞ্জিকে। মাগো মা॥ ৪ গীত !

রাগিণী বেহাগ। তাল আড়া।

নিদ্রাগত কত মন, রহিবেরে আর ?।

চৈতন্য সহায় করি, তাব সর্বসার॥

বিষয়-বাসনাধীনে, জাগিলেনা চিরদিনে,
জাননা, যে দিনেদিনে, যেতে হবে পার॥

নিজপুত্রে রেখে ঘাটে, তপন বসেছে পাটে,

নিশা-নিশাচরী ঠাটে, করিবে আহার।
জানেরে জ্গাও আগে,নিজে জাগো ঘোগে
যাগে, এই বেলা দিবাভাগে, কর আয়সার॥ ১
৪৪-আজা,আজ্ঞ ছাড়ি, বায়ুভরে দিয়ে পাড়ি,

সিজ্পাবে গুক্ত-বাজী চল্প সহসাব"।

সিন্ধু পারে গুরু-বাড়ী চল'সহসার"। তবেতো চরমকালে, মিশাবে পরমকালে, নাহি আর সেই কালে, কাল-অধিকার ॥ ২

#### -

শৈবতক্ত এবং শক্তিত্তিপরায়ণ সাধকদিপের ১ প্রতি দৃষ্টি করিয়া।

তহে প্রাণাধিক-সাধক সকল।— শ্রবণ কর,—ভোমরা "কুলার্ণব" নি-রুত্তর, এবং আর আর তন্ত্র সকল শিরোধার্য্য করিয়া তন্মতামূসারে কার্য্য নির্কাহ কর।

স্বয়ং একা প্রমেশ্বর ভগবান-মহাদেব " কুলার্ণবে" কহিয়াছেন। যথা।

ক্লাচার প্রসক্তানাং সাধুনাং স্থক্তাক্সনাং। সাক্ষাৎশিবস্থরপাণাং প্রভাবং বেভিকোভূবি দৃষ্টাতুলৈরবীচক্রং মনগ্রপাংশ্চ সাধকান্।
মূচাত্তে পাউপাংশভাঃ কলিকলাম দৃষিতাঃ॥
কালিকোহি গুরুঃসাক্ষাৎকৌলিকঃশিবএবসঃ।
উত্তাদি।

- (ঠ) হে ভাই কুলসাধকগণ।
  করণামর মহাদেব একপ কহিরাছেন,
  যে, ভোমরা সকলে তাঁহার স্বরূপ,
  এই জগতের মধ্যে ভোমাদিগের
  মহাত্বা, মহুষাদূরে থাক্, দেবতারাও
  ভাত নহেন,—পশুপাশবন্ধ-অক্তানজাব সকল ভোমারদিগের দর্শন
  পাইবামারই তথনি অমনি উদ্ধার
  হইরাযায়।
- (২) জীব সকলকে নিস্তার এবং কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য বিষয়ের উপদেশ-করণ কারণ পৃথিবীতে তোমারদিগের অব-স্থান হইযাছে।
- (৩) তোমরাকুলাচার এবং মহা-মন্ত্র-প্রভাবে স্বেচ্ছাচারত্ত থারণ করিয়া জীবন্মুক্ত হইয়াছ।
- (৪) ফ্রেক্ছাদি শীনব সকল তো-মারদিগের সঞ্জীর্গ-কুপায় পবিত ছই-তেছে।
- (৫) কুলধর্মের অপেকা উত্তম ধর্ম আর নাই, সদাশিবের এই যুক্তি-যুক্ত উক্তি।
- 🅦 👏 অপরাপর সাধনের ভারা

- যে ভোগ এব পান প্রাপ্ত হওষ, যায়ন। ভোমরা কুলধর্ম সাধন বলে অনায়াসে অতি সহজেই ভাহা লাভ করিতেছ।
- (৭) কি মুেচ্ছ, কি শ্বপচ, কি কিরাত,-যে সকল সর্মতাজা-নীচ-জাতি এই কুলচক্তে প্রবেশ কু তাহারা ত্রাহ্মণ হইতে পুরিক হয়।
- (৮) তোমরা যে স্থানে চক্রারস্থ কর, তোমারদিগের তেজের প্রতা-পে বিঘু সকল ভ্রাকুল হইয়া ত**া**। হইতে কোথায় প্রশায়ন কবে।
- ( ন ) যে কোন জল হউক, যেমন গলাজলে পতিত হইবামাতাই গলা-জল হইরাযায়, সেইৰূপ তোমাদি-গের এই কুলথর্মে যে কোনো ব্যক্তি আসিয়া প্রকেশ করে, সে তৎক্ষণাৎ কৌলপদ প্রাপ্ত হয়।
- ( ১° ) যে প্রকার সমুদ্রে নদী সকলের পৃথকভাব বোধ হয়না, সেই-প্রকার কুলধর্ম-প্রাপ্ত মনুষ্যদিগের মধ্যে পরস্পর পৃথক্ভাব থাকেল।
- (১১) যে দেশে কুলযোগী পদাপ্রণ করেন, সেই দেশ পরিত হয়,
  তাঁহাকে দর্শন এবং স্পর্শন কুরিলে
  একবিংশতি কুলের উদ্ধার ক্রিঞ্

- (১) যে কুলে একটা কোলিকপুজের জন হয়, সেই পুজের মাতা
  ও পিতা সাধু, কেননা সেই কুলের
  পিতৃলোক সকল মহানন্দে দেবতাদিগের সহিত বাস করেন।
- (১০) চণ্ডাল ব্যক্তি কুলাচার করিলে ভ্রাহ্মণ হইতেও শ্রেষ্ঠ হয়,— যে ত্রাহ্মণ কুলাচাররহিত তিনি চণ্ডা-ল হইতেও অধ্যা
- (১৪) যেদিগে স্থান্যে উদয় হয়, সেই দিগ্কে লোক যেমন পূর্ব-দিক্ কহে, সেইৰূপ কুলঘোগিগণ যে যে ব্যবহার করেন, সেই সেই ব্যবহা-রের পথকেই প্রম্পণ কণিতে হইবে।
- ( >৫ ) যেৰূপ বক্ত-নদীকে কেহ সরল করিতে পারেনা,--থেমন নদীর স্রোত রোধ করিতে কেহই সমর্থ হয়-না,--সেইৰূপ কুলযোগির স্বেচ্ছাটা-রকে নিবারণ করিতে কেহই শক্ত হয়না।
- (১৬) সভাষুগে বেদোক্ত কর্ম, তেতাতে শৃত্যুক্ত কর্ম, ভাপরে সং-হি**ঞা-সমত কর্ম**ভারা মান্নুষ সকল ধর্মা, কর্ম, কোম, খোক্ষ, চতুর্কর্গ-কল পাই**র** শিস্তার হইয়াছে, কলিতে

ব্রাহ্মণা দি - ২েদ, স্থতি, সংহিতাও পুরা ণে ক্ত শৌচাচার-বজ্জিত, স্বতরাং শ্রুতি-সম্মত কর্ম্মের ছার। ইহারদি-গের ক্রিয়া সিদ্ধ হয়না-একারণ পতি-তপাবন করুণাসাগর শিব জীবের দৃঢ়-প্রত্যয় জন্য কারয়ার সভ্য করিয়া কহিয়াছেন, যে, আগমোক্ত কর্ম ভিন্ন কলিযুগে আর গতি নাই, এই কলিতে আমার মত ছাড়িয়া যে ব্যক্তি কর্ম করে তাহার ফলসিদ্ধ-হয়না,—এবং সেই ক্রিয়াকর্ত্তা নর-কগামী হয়।—এই প্রবল কলিযুগে শৈবশাস্ত্র-মত ভাষলম্বন না করিয়া যে লোক অন্য-মত আতায় করে, সে ব্ৰহ্মহত্যান্ধনিত-পাপ-ভোগ করে ।

- ( : १ ) ज्ञान, यञ्जान कर्त्या ठाञ्चिक-म ठरे श्रामिक ७ श्रामेख, यरहणू

  के मिक्क-मञ्ज जा छ कलन, य छ्र्यां छि

  किलाल जागरमा क कर्या ना करत,

  रम कर्या अधे रहेशा क्रिमक्य श्राद्ध

  हरा।
- ( ১৮ ) শিব কহেন—কালতে আমার মত ভিন্ন, যে, দীক্ষা, সে দী-কাই নহে,—সাধকের নাশের কারণ, দেবতা কুপিত হন। পূজা, হোম,

বার্থ হয়, সর্বদাই বিমু ঘটে। আগম শাস্ত্র ছাড়িয়া যে কর্ম করে, সে মহা-পাতকী হয়।

(১৯) এই সকল শিবের আগ-নোক্ত বিধান স্মার্ত পরমপূজ্য বলিয়া আহা করিয়াছেন।

(২০) হে সাক্ষাৎ-শিবস্তরপ
কুলীনগণ! বলদেখি ভাই, জিজাসা
করি-এতাদৃশ স্পাট-প্রমাণপূরিতশিবজাজা প্রবল থাকাতেও তোমরা তুল্জাতিতুক্ত্-ঘৃণিত-পশুদিগের
ভরেতীত হইয়া কেন স্বধর্মের সঙ্কোচ করিতেছ! প্রাণান্তেও যাহারদিগের সংসর্গ করিতে নাই, মুখ দেখিতে নাই, স্পর্শ করিতে নাই, এমত
পশুর সহিত, কেন বাবহার কর?।

(২) পশুকে ইচ্ছাপূর্কক
দেশিলে, জালাপ করিলে, স্পর্শ করিলে, প্রায়ন্দিত করিতে হয়,--পশুসংসর্গে বীর সকল পশু হয়েন।—্যে
সাধক জান-পূর্কক পশুর জয় ভোজন করে,—্সে নরাধম সহস্র
মন্তব্ধর জন্তীত হইলেও নরক
হইতে নিক্ষ্ তি পায়না, এবং লোভ,
মোহ,ভয়-প্রযুক্ত কোন ভক্ত যদি কখনো পশুর জয় ভোজন করে, তবে

লক পাছকামন্ত্রজপ, পুনরায় অভি-ষেক,-- এচক্র ও কৌল পুজা করি-রা পাপ হইতে মুক্ত হয়,—নতুবা নিস্তার নাই,---অতএব তোমরা ম-হাদেবের বাক্য কেন লঞ্জন করিতে-ছ ! — कि जना शशु-गत्त्र পाशवर्ष হইতেছ? পশুদিগের কোন ধর্মা मारे,-विश्वदावामि देविनक-धर्मः র অমুষ্ঠানো জানেনা।— তবে গা-য়িত্রী-মন্ত্র মাত্র আছে, তাহারো অর্থ জানেনা, অর্থ না জানিলে ফলসিম্ব-হয়না, কেননা সন্তের অর্থ ও মত্তের চৈতন্য যে ব্যক্তি না জানে শত শত লক্ষ জপ করিলেও তাহার মন্ত্র সিদ্ধ হয়ন। ।—বিশেষতঃ দেখ, কলিতে পশুধর্ম কোনমতেই নির্কাহ হইতে-পারেনা, কেননা 'স্মার্ক্তাচার"(ব্লাক্সা-মুহূর্ত্তে উটিয়া দেবতা-স্মরণ, পৃথিবী-নমকার, দক্ষিণপদ পুরঃসর গৃহ হ-ইতে বহিক্ত হইয়া এক শত ধয়ু-প-রিমিত আমের বাহিরে গিয়া গর্ত্ত थनन ও মুখ-माणिका वसन-शूर्मक কোন্পশু মলমূত্র পরিজ্যাগ করিয়া-शांदक !-- जांभिष्ठ स्ट्रिक्श्वित्र अट्डि দন্তধাবন করিলে পাপিষ্ঠ পঞ্চ বিশু-করিতেও অধিকারী ইয়না, জার জাহারের ও সমরের, এবং ত্র-ব্য-শুদ্ধি করণের যে যে নিয়ম আছে ভাহাই-বা কোন্ পশুতে করিয়া-থাকে ?অভএব পশুরা এইৰূপ বিহি-ष्ठ-धर्म कर्म ना कतिया (कवन नर्वधर्म হইতেই বহিক্ত হইতেছে।--পত্র,-পুষ্পা, ফল, জল প্রভৃতি সকল পশুরা স্বহন্তে সংগ্রহ করিবে, ব্রাহ্মণেরা খু-**জের মুখ দেখিবেনা, মনেতেও** পর-खीत यात्रण कतिरवना, अवश मिक्ति, চরস, ভাষাকু ইত্যাদি মাদকদ্রব্য ও মৎসাদি আমিষ, ব্যবহার করি-বেনা, দেখ ভাই,---দেখ দেখ। কোন্ পশু ইহার কি করে ? কেনা ভামাক খার? চরদ খার? গাঁজা খায়? মাচ থায় ? মাংস খায় ? কেনা শৃত্রদেবা করে ? কেনা পরস্ত্রী গমন করে ! ধর্মহীন এই সমস্ত পশু মহাকাল, তৈরব বামন, নুসিংহ, রামচন্দ্র, গোপাল প্রভৃতি কালী, তারা, ত্রিপুরাস্কন্দরী, ই-ত্যাদি মহাবিদ্যা-মত্ত্রে উপাসক হই-· রা কুলাচার অনুষ্ঠানের অভাবে ধর্ম-🐗 ইইয়া পুর্বাপরের সহিত ন্রকে বাদ"করিতেছে। সুভরাং হকলে **প্রতার প**রিছার কর, ভয় পাইয়।

কেন কুলাচারধর্মা গোপন প্রুর্বক সভ্যের অপহৃষ করিয়া পাপ সঞ্চয় করিতেছ?।

কোন কোন পশু বলে 'ক্তাদি শাস্ত্রমতে 'মদ্যের দান, পান, প্র-হণ নিষেধ। ইহাতে ব্রাক্ষণের ব্রা-ক্ষণ্য থাকেনা'' এ কথা তাহাদিগের প্রলাপ-মাত্র, মদ্য পানাদির,যে, নি-ষেধ, সে অসংক্ত-মদ্যের বিষয়ে, এবং অনভিষিক্ত-সাধকের প্রতি জা নিবে, অভিষিক্ত সাধকের সংক্ত-মদ্য পান-বিষয়ে আগম-শাস্ত্রের স-হিত শ্বৃতি, শ্রুতি,পুরাণের কিছুমা-ত্রই বিরোধ নাই।

#### প্রমাণ।

নিগমকল্প ফ্রনো অসংকৃতংত্তমদ্যাদি
মহাপাপকরং হর ইত্যাদি। শুতিঃ সৌত্রামন্যাং স্থরাং গঞ্জীয়াৎ সৌত্রামন্যাং কুলাচারে ব্রাহ্মণোমদিরাং পিবেং।

নবিধি ননিষেধোবা নপুণ্যং নচপাভকং। নম্বর্গোনাপিনরকং কৌলিকানাং কুলেশবি

হে ভাই, ইহার অপেকা প্রত্যক্ষ-প্রমাণ আর কি আছে '—উত্তম,
মধ্যম, তৃতীয় এবং কনিষ্ঠ, ব্যবহার
ভেদে মহাদেব এই চারি প্রকার সা
ধক নির্দ্ধেশ করিয়াছেন।

বাঁহারা বিধি নিষেধ উপেক্ষা পূ,
বিক শোধন, সংক্ষার,নিবেদনের অপেক্ষা না রাখিয়া কেবল " ব্রক্ষাত্ম
ভাবে" আহার বিহারাদি করেন,
ভাঁহাদিগ্যে উত্তম-কৌল কহিয়াছেন, বেদজ্ঞ জনেরা ই হারদিগকেই
ব্রাক্ষ কহেন। কারণ এই অবস্থাই
লয়ের অবস্থা, ধ্যান ধারণাদি অবলম্বন থাকেনা, কেবল ব্রক্ষ-স্বরূপে
অবস্থিতি হয়।

যিনি পূজা, ধ্যান, ন্যানাদির প্র-রোজন না রাখিয়া দর্শন, স্পর্শন, প্রাণন্থারা দ্রব্যশোধন পূর্নক "ব্র-স্নার্পণমস্ত " এই বাক্যে অর্পণ করি-য়া সর্বদা আনন্দে কালক্ষয় করেন ভাহাকে মধ্যম-কোল কছেন।

যিনি পূর্ণাভিষিক্ত হইয়া ধানি।
পূজা, জপাদি পূর্বক ভত্ত্বসংস্কার
করিয়া সর্বদা আপনাকে দেবতারূপ ভাবিয়া নিবেদিত নৈবেদ্যের
পান ভোজনখারা কালক্ষয় কেরন,
ভাঁহাকে ভূঠীয় কহেন।

যিনি শাক্তাভিষিক্ত হইয়া আপ্নার ইফীদেবতা পূজা পূর্বক দ্রব্যাদি-শোধন করত নিবেদিত-প্রসাদ
যথাবিধিক্রমে মস্ত্রোজারণ পুরংসর

প্রহণ করিয়া ভজন সাধন দ্বারা কাল্
লাখাপন করেন, তিনি কনিষ্ঠ-কৌল।
ইহাঁরা সাধু, সাক্ষাৎ শিবন ও
ব্রহ্ম, কেননা ব্রহ্মাত্মকমন্তের দারা
তত্ত্বশোধনাদি কর্মা করিয়া সকল
দ্বাকেই ব্রহ্মময় ভাবনা করিয়াল

#### দিগমর সিদ্ধান্ত ।

ওরে ভিথারি । দেখ্তেছিদ্,-ঐ
যে পুরুষ, কাপালিকত্রত ধারণ করেছে, চল্না কেন আমরা উভয়েইউহার নিকটে যাই।

দিগম্বর এবং ভিক্ষ্ক ছুই জনেরি সোমসিক্ষান্তের নিকট গমন।

দিগছর I

हामा शूर्कक जिल्लामा।

ওরে কাপালিক ! বল্ দেখি তোর্মতে সুখ এবং মোক্ষ্কিরপে নাধন হয় !।

সোসসিদ্ধান্ত।

ও উলঙ্গ ! আমাদিকের মত আবণ . কর।

জ্ঞামরা মহাবলি প্রদান শুর্কক নরমাংস-লোণিত এবং মৃত্তর কারা মহাভৈরবের পুজা করিয়া-প্রসাদ গ্রহণ করি 🎝

ভিক্ক।

ছই কর্ণে হস্ত দিয়া। হে বুদ্ধ। হে বুদ্ধ। আমাকে নিস্তার কর, এদের এই ধর্মা কি ভয়ন্থর?।

দিগধর।

হে স্বাভিমত-দেবতা ! তোমাকে প্র⊹াম করি।

আরে! কোন্ পাপাত্ম। তোরে এই জঘন্য নিপ্রুর ধর্মের উপদেশ করেছে?।

म्भिमिक्तां छ।

क्ताथ श्रुक्त है।

ওরে পাষও! ভোরা কি বলিস্,এক ব্যাটা ন্যাংটা প্রেড, এক ব্যাটা
ধামাধরা-নেড়া,-এরা আবার আমার
এই পরমধর্ণের নিন্দা করে।-ওরে
ছর।চার দেবনিন্দক! শোন্, চতুর্দশভূবনের স্থাটি স্থিতি প্রলয়ের কর্তা
ভগবান ভবানীপতি মহাদেব, যাঁহার
মহিমা বেদাভাসিক্লাক্ষ বিদ্ধান্ত করণে
ভাকর, তাঁহার প্রভাব দর্শন করাই,
লামি এখনি ব্রহ্মা, বিষ্ণু প্রভৃতি প্রধান, ভার্ধান দেবভাদিগ্যে এখানে

আনিতে পারি; আকাশের নক্ষত্র সকলের গতি রোধ করিতে পারি, পৃথিবীকে জলপুর্ণা করিয়া পুনর্কার সেই জল এক চুমুকেই পান করিতে পারি।

#### দিগমর।

ও উন্মন্ত মাংসাসি রাক্ষস।-ওরে দাঁতাল্। ও মাতাল্। তুই অলীক ঐন্দ্রজালিক-বিদ্যা দারা আকাশ পাতাল্ চালিবার কুছক দেখাস্।

সোমসিদ্ধান্ত।

क्लार्थ थजा धात्र भूर्सक l

#### विश्रमी।

পুন পুন ছরাচাব, নিন্দা করি দেবতার, मेश्रद्धक इसकाली क्या। উচিত যে প্রতীকার, এখনিই করি তার, পাপায়ার প্রাণ রাথা নয়। ৰলি বলি, তবে বলি, এখনিই দিয়ে বলি। কোরে ভোর রুধির গ্রহণ। मु ଓ निरा शन मिति, गर्भाप्तव,गर्भाप्तवी, উভয়ের করিব তর্পণ॥ দিয়েছিস্ হাতনাড়া, যাবি কোথা, দাঁড়া দাঁড়া, थैं। जा श्वाद मिहे गमानगा। পুজি ছুর্গা, দিগম্বর, তোর মাংদে দিগমর, দেখুক্ সাধক সমুদয়॥ নিয়ে আৰু তোর অস্থ, নরাধ্য নরপশু,

वस्थाद्य कहाई क्लाबन।

হর হর বোলে মুখে, প্রসাদ খাইবে অথে, যত বীর কুলযোগিগণ॥

খাঁড়া ডুনিয়া কাটিতে উদাত। ক্ষপণক।

প্রাণভয়ে থর থর কাঁপিতে কাঁপিতে।

অহিংসা-পরমধর্ম। অহিংসা-পা
রমধর্ম। হে ভিক্ক। প্রাণ যায়,প্রাণ

যায়, আমি তোমার শরণ লইলাম,
আমাকে বাঁচাও, বাঁচাও।

ভিক্ষুক। উপহাস পূৰ্ব্বক।

ওহে ধার্মিক সোমসিদ্ধান্ত !—
তোমার এ কেমন্ধর্ম ! কৌতুক
পূর্মক বাক্ কলহ, ইহাতে তপস্থিকে
হত্যা করা কি তোমার কর্তব্য হয় ?

(म/मजिक्कां छ।

পরমেশ্বর ইফজেবতার নিন্দা, এ আবার কৌতুক কোথায় ? আমি এথনিই ইহার মুগুপাত করিত।ম্ কে-বল তোমার কথায় এবার ক্ষমা ক-রিলাম, এই ক্ষামি অসি কেলিতেছি।

पिश्वत्रमिकाछ।

ও মহাশয় ৷ এত ক্রোধ কেন? ভির হউন , এখন আল্ল কেলেছেন,

অত এব বিরক্ত হবেননা, বিনয়
পূর্কক জিজ্ঞাসা করি শিশান্ত হইয়া
উত্তর কুজন। আপনারদের পরন্ধ্যতি অবণ করিলাম, চক্ষেও কিছু
দেখিলাম, এখন বলুন্দেখি, এ
ধর্মে স্থ এবং মোক্ষ কি প্রকার ?

সোসসিদ্ধান্ত।

শোন্ নাস্তিক শোন্। বিষয় ভিন্ন কখনই স্থা হয়না, তবে কেন তোরা একপ মুক্তির প্রার্থনা করিতে-ছিস্।

আনন্দ ও জ্ঞানরহিত যে মুক্তি,
তাহাতে মুখ কি আছে! যেহেতু
পাবাণস্থৰপ হইয়া অবস্থান করিতে
হয়। অতএব তোদের মতসিদ্ধ এইৰূপ যে মুক্তি, সে মুক্তিই নয়।—যাহাতে ছঃথের লেশ মাত্র নাই, অথঢ দিব্যাসনা-সম্ভোগজনিত যে মুখ,
তাহারি নাম মুক্তি,—আগমশাস্ত্রে
স্থাং মহাদেব এইৰূপ মুক্তির নির্দেশ
শ করিয়াছেন।—এবং তিনি চিরকাল জীবস্থুক্ত হইয়া মহামায়া পাক্তীর সহিত জীতা করিতেছেন।—
এইতো সাক্ষ্যং মুক্তি, বল্ধেক্তি,
জম্ত হওয়া ভাল? মা জম্ভ ভোজন

ভিকুক |

ও মহাশুর। তে।মার এই মোক্ষ শ্রদ্ধার যোগ্য নহে, যেহেতুক ইহা রাগিদিগের-সম্মত ধর্ম।

দিগমরসিদ্ধান্ত।

ওরে কাপালিক !— যদি তুই বিরক্ত না হোদ,তবে কিছু বলি, ওরে !
যে শরীরী, সে কিন্দপে মুক্ত ? যে
ব্যক্তি বন্দী হইয়া কারাগার ভোগ
করে, তাহাকে তুই কি প্রকারে অবাাহতিপ্রাপ্ত সাধুর ন্যায় কহিতেছিস্ ?

সোমশিদ্ধান্ত।

ফেণকাল নীরব ছইয়া মনে মনে বিবেচনা ]
এই ছটো পশুর মন উতি অপবিত্ত, ঘোরতর অশ্রদ্ধার পরিপূর্ণ,
ভাল আমি শ্রদ্ধাকে আহ্লান করি,
প্রেমময়ী প্রাণেশ্বরী শ্রদ্ধা এখন কোথায় আছেন ? তাঁহার ক্রপাকটাক্ষ
ভিন্ন শ্রান্ত-দিগের ভান্তি দূর হইবেনা।

[ কাপালিনী-বেশখারিনী রাজ্মী-আদ্ধা] , গুড়িত।

রাক্সিণী বেহান। তাল একতালা। ক্ষেত্র বামা,-বারিদ্বরণী, তর্ণী ভালে ধরেছে তর্ণি,

কাহারো ঘরণী,আসিয়ে ধরণী, করিছে দহুজ-জয়। হের হে ভূপ, কি অপরূপ, অন্তুপ রূপ, নাহি স্বরূপ, মদলনিগনকরণকারণ, চরণ শরণ লয়॥ বানা, হাসিছে ভাষিছে, লাজ না বাসিছে, হুজন্ধাররবে, সকল শাসিছে, নিকটে আমিছে বিপক্ষ নাশিছে, প্রাসিছে বারণ, হয়। ১ यांगा, हेलिए एलिएइ, लायना शलिएइ, मधान विलाह, भगान हिलाह, কোপেতে জ্বলছে, দম্ভ দলিছে, हिल्हि जुरुनगर ॥ २ क्ट्रां, लिल एत्रमनां, विक्रिम्मनां, করিয়ে ছোষণা, প্রকাশে বাংনা, **८२१८म मनामना, नामानिनमना,** অবিসবে সগণা বয়। ৩

হে নাথ আজ্ঞাকর ন্ ' আমি কি করিব !

লোমসিদ্ধান্ত।

হে প্রিয়ে।—এই চুরহস্কৃত ভি-জুককে এখনি জালিঙ্গন কর।

> রাজসীপ্রদ্ধা। [ভিজুককে স্পর্শ করিয়া] গীভা।

तातिनी सिँचिछे। छाल आंछा। मञ्चननो हर्गा, कननी यात्रात दत्र। कटन, स्टान, अस्त्री क्य, कि स्त्र छात्रात दत्र?॥ মুখে বল ছর্গে ছর্মে, তরিবে এ তব ছর্মে,
নার্হি ছর্মানাম ছর্মে, কাল অম্নিকার রে। >
কালীনামে কাল হর, কালী-রূপ ধ্যানে ধব,
দেহ,মন,কালী কর, কালী সর্কানার রে । । ২
কালীভক্ত ঘেই জীব, শিব ভারে দেন শিব,
আপনি করেন ভাব, অশিব-সংস্থার রে। ৩
মুদিয়ে নয়নভারা, অন্তরে জাগাও ভারা,
ভারাকাবা প্রেমধারা,কেলো অনিবার রে। ৪
ভারা-গুণ কর গান, ভারা বিনে নাই কাণ,
ভারানামামৃত-পান, কর একবার রে। ৫
ভারানাম নাহি করে, ধিক্ ধিক্ সেই নরে,
বৃথা সে শরীর ধরে, বৃণা জন্ম ভার রে। ৬
কালা-সহ ভাব কাল,কালেভে পলাবে কাল,
ইহকাল, পরকাল, সকল ভোমার রে। ৭

হে ভিক্ক,—কালী বলা কালী বল,—ভান্তি হর, ভক্তি কর, শ্রদ্ধা-রস্থে দ্রব হও। জয় শিব, জয় শিব, জয় কালী, জয় কালী।

ভিক্ক।

[ কাপালিনী স্পর্শে লোমাঞ্চিত। ] গীত।

রাগিণী বাহার। তাল ঐ।

হার হার,একি, স্থাধের বিহার।
ধরি চরণে তোমার, ধরি চরণে তোমার।
ছেডনা ছেড়না ধনি, হুদর আমার॥
কারে সামি,আমি,কই,আমাতে-তো,আমি,নই
আমারে তোমার দিয়ে, হুরেছি ডোমার। ১
এ প্রকার স্থাদেয়,হুরনি হ্বার নয়,
এমন্ স্থাবের তোগ, কবে হবে কার। ২

ঘুচিল মনেব থেক, এথন্ পেক্তেছি ভেদ, কাকাল বিজ্ঞেদ, না-ছ্য, যেন আর । ৩ তোমারে হৃদয়ে ধরি, সর্ব ছঃখ পবিহ্রি, তৃণ সমা ভান করি, নিথিল সংসার। ৪

কি আনন্দ। কি আনন্দ। আদ্য আনিধনা হইলাম, এতদিনে আ-মার জন্ম সফল ুইল, আমার কর্ম সফল হইল।

আশর্ব্য-আশ্র্র্য্য, কি আশ্র্য্য ।
নামসিদ্ধান্ত । তুমিই সাধু ।—তোমার শ্রন্ধার স্পর্শে আমি পবিত্র হইল
লাম, আমার মনের ভ্রান্তি দূর হইল,
আমি একেবারে শপথ করিয়া বৃদ্ধমত পরিত্যাগ করিলাম,—তুমি আমার গুরু হইলে, আমি তোমার
শিয্য হইলাম, এখনিই আমাকে
পরমেশ্বর মহাতৈরবের মন্ত্র প্রদান
করিয়া ক্রার্থ কর ।

किशबद्रशिक्षा छ।

িকোধ পূৰ্ষক হাত নাজিয়া।

প্ৰিরে ব্যলীক ভিক্ষুক। ভূই কাপালিনীর স্পর্শে, এই হলি,—দূর হ,—
তোর মুখ্ দেখ্ছে নাই।

ठिक्क।

ওরে হতভাগ্য ন্যাংটা ! ভূই জেনিবল পশু রৈলি, ভূই ঘোর-পাশালা-

পিশাচ,—তোর পাপের কপাল, কাপালিনীর আনন্দর্জনিত অধরা-মৃত লাভ কেন হইকে?

সোমসিদ্ধান্ত।

হে প্রিয়ে কাপালিনি' এই ছুর্দ্ধ-পে দর্পিত দিগম্বকে বশীভূত কর।

> কাপালিনী। গীত।

রাগিণী বেহাগ। তাল একতালা।

কেবে বামা,—যোডশী রূপসী, ख्रात्रणी, ध, रम, नट्ट माञ्ची, ভালে শিশ্পশি, করে শেভি অসি, রূপমনী, চাক ভান। দেখ, বাজিছে বাল্পা দিভেছে বাল্পা, মারিছে লক্ষ্য, হতেছে কম্পা, रानद शृथी, करत कि कीर्डि, চরণে কুত্তিবাস ॥ ১ क्टर्ड, कर्नाल-क्रिमी, मरालशामिनी, কাহারে স্বামিনী, ভুবনভামিনী, রপেতে প্রভাত, করেছে যামিনী, দামিনীজডিত-হাস। २ क्ट्रांत्र, दर्शानिनी मद्य, क्रियंत-इत्य, রণতরকে, নাচে ত্রিভঙ্গে, বুটিলাপাঙ্গে, তিমিব-অঞ্চে, করিছে ভিমির নাশ। ৩ क्ष्मिद्री । य प्रिवि शर्य । य जिले शर्य । . क्षेत्रेस चंकी, ट्यासट्स मर्की,

চবণসরোজে পাড়িয়ে শর্ক,
করিছে সর্থনাশ। ৪
দেখিনিকট মরণ, কবরে স্মরণ,
মরণ হরণ, অভয় চরণ,
নিবিড-নবীননীরদববণ,
মানসে কর প্রকাশ। ৫

[দিগদবকে ভূজলতা দাণা বেউদ কবিষা] রাগিণী বারোমাঁ ভাল ঠুওরি।

তারাতভ্রদে মঞ্চ।

মজ মজ মজ, তার্তিত্রসে মজ। ভজ ভজ ভজ ভজ, শিবকালী ভজ॥ হোযে মন মধ্কর, আমন্দে বঙ্কার কর,

ধর ধর ধর দেবে, পাদপদ্মরজ।
ছগা যেই মুখে বটে, ভার কি ছগতি ঘটে,
কাবে শক্সা, মাবো জন্ধা, চোভেভক্তিগজ।
আর কি কালের ভয়, সে কাল কোথায় রয়,
মহাকাল কালী-মন্ত্রে, তুলে দেও ধ্বজ।
ভাবে হও গদগদ, তুল্ফ হবে ব্রক্ষপদ,
করহ সম্পদ পদ, কালীপদক্জু॥

দিগম্বরিদ্ধান্ত। স্থুখের আর পরিসীমা নাই।

গীত।

রাগিণী স্বহিনীবাহার। তাল তেওট।

্রমণীর শিরোমণি, রূপে মুনি মন হবে।

রিভুবন-মনোলোভা ধরাতে না শেভা ধরে

শশধর ধবে শশং কি ভাব কপের যশং

প্রিপূর্ণ অধাবস চারু মুখস্তধাকবে ! ১

অধরে মধুরহাসি, ক্ষরে স্থধা রাশি রাশি, **टिफन इतिम आमि,क्रिककेरीक ग**रत । २ এ,যে, অতি রূপ্রতী, গতি জিনি গঞ্জপতি, রতি ছেড়ে রভিপতি,রতিলোভে পারে ধরে ৩ **ट्रिय क्रिया, 'इडेट**स शशनहत. বরষায় নিরন্তর, ডেকে ডেকে কেঁদে মরে। ৪ আর দেখ বিষধরী, কেশদ্বেম-বিষ ধরি, मीत्यमात्स क्वा धत्रि,द्वादश क्वांष् रकांष् कदत । व द्वि क्रश्चादारक, निनी म निनी नाष्ट्र, কলত্ব-কৃণ্টক-সাজ্বে,প্রবেশিল সরোবরে। ৬ খঞ্জন-গঞ্জনকর, রঞ্জন-নয়নবর, অঞ্জন কি মনোহর, মন নিরঞ্জন করে। ৭ किं गांत गांनी मानी नह बाद विज्ञानी, এ কটিরে ক্ষীণ মানি, অপমানে বনে চরে। ৮ বদনে রদন রাজে, উপমানা ভাহে সাজে, কনকমুক্র মাজে, মুকুতা কি শোভা করে ?। ১ স্থরভি-বাসের বাসা, মরি কি স্থর্ন্দর্নামা, नियारम हलना (थरन, भी छन मभी द मरद ১० अध्य-मिल नार्श, विश्वकल कोषी मार्श, क्रोशिदम्दर्थ द्वारश्वत्रादश,८व्रदश दर्भारम रश्रोदसम्दर् ३১ কুচ-কলিকার কাছে, কদম কোথায় আছে, নিহরি শিহরি শেষে, আপনি আপনি ঝরে। ১২ ললিত লাবণা কায়,চোলে যেতে গোলে যায়, বিধি বুঝি হায় হায়, গড়েছে নব্নী সরে ৷১৩ পরশ "পরশ" প্রায়, অ্থচ সরস হায়, হইল স্থবর্ণ কায়, তল চল রসভবে । ১৪ স্বৰ্গ মিছে উপদৰ্গ, মানিনে স্বৰ্গের বৰ্গ, কাপালিনী চতুর্বর্গ,ধরিয়াছে নিজ করে 15৫ ছাড়িলান স্বাভিষত, মনোমত এই মত, পেলেন পরম পথ, হায় হায়,হরে হরে। ইঙ্

হে মহান্তন !—হে শিবমর ! হে

মুখ-মোক্ষপ্রদারক-নোমনিদ্ধান্ত ।
আমি ভোমার চরণ শরণ লইলাম,
আমাকে শীঘ্রই মন্ত্র প্রদান শুর্মক
শিব্য করিয়া পশুপাশ হইতে পরিত্রাণ কর, আরি বিলম্ব বিধান হ
মনা। আমি আর সেই তামনী প্রভার মুখাবলোকন করিবন।।—কাপালিনী স্পর্শে পবিত্র হইয়া অর্থমত একেবারেই পরিত্যাণ করিলাম।

# করুণা এবং শাস্তি। করুণা।

সখি শান্তি!—এই দেখ, ইনি রাজসীশ্রদ্ধা, আমাদিগের জননী নহেন। আহা! এই রাজসী কি স্থ-ন্দরী! সাক্ষাৎ ভগবতীর ন্যায় ৰূপ-বতী।

#### সোমসিছাত।

হে প্রিয় ভিক্ক !—হে দিগমর !
(ভামর। আপনাপন অপনিত্র-বেশ
পরিহার পুরংমর অপনিত্র, কুলুন্য
কুলীনের বেশ ধারণ কর। এবং বিভি
রে এই আসনে উপবিষ্ট হঙু

<sup>\*</sup>मानी-मिर्इ।

ভিক্ক এবং দিগদর। হাঁ প্রস্থা—আমরা এই ছইজনে পবিত্র হইরা আসনে বসিলাম।

সোম্যিকান্ত!

প্রথমে মহাদেবকে প্রণাম কর।
ভিক্ষক এবং দিগম্বর ভূমিষ্ট হইরা প্রণাম।

প্রথাম মন্ত্রা পঞ্চামরচ্ছনর।

। শুশানভন্মলেপনং ভুজস্বভোগভূষণং ।
পিনাক-শুলধারিণং, সভক্তপাপহারিণং ।
শশাহ্বওশেথরং, হিমালয়াজ্ঞাবরং,
শমস্তলোকশহুরং । ন্যামি দেবশহুরং ॥ ১

কালিকাকে প্রণাম কর।
প্রণাম মন্ত্র।
প্রমাণিকাছন্দ।

বিপক্ষপক্ষনাশিনীং, মহেশহাদিলাগিনীং।
নৃমুওজালমালিকাং, নুমানি ভদ্তকালিকাং॥১

হে থিয়ে কাপালিনি । অদ্য বভ আনন্দের দিন, তোমার অমুক-পার ইহারা ছটি আমার শিষ্য হই-লা, ইমি প্লার আ্লোজন কর, এবং

ব্য-হর হর জপিতে জপিতে।

আঙু ল্ নাড়িরা-ছ ' ঐ-যুক্ত, — ছ'-ঐ-পাত্ত, ভু-জপের মালা।

পুনর্কার ঘাড় নাড়িয়া চক্ষের ভক্ষিমার।

হাঁ — এখানে এখানে,-ছ-রাখো, রাখো।

रत रत रत रत, तम तम तम।
काशांकिनी।

হে কদরেশ।—সমুদর প্রস্তৃত।
পঞ্চমকার—পানপাত্র পরিপূর্ণ।
দোমসিকাত।

যথা ভক্তিতে পানপাত ধারণ পুর্বক নয়ন মুদির। ধান করিছে করিতে মুদ্র-জপ।

[এক চুমূক অঞা আপনি ধাইয়া।]

লও বাপু লও, তোমরা এই প্রসাদ্ পাও—এই পাত্রপুরিত পরমামৃত দংসার স্বৰূপ ন্যাধির মহৌষধ, এবং ভাব, ৰূপ, রুসের সূজন আর পশু-পাশ ছেদনের কারণ এই কারণ। শিবের স্থানম্ফকাননে আসিয়াছ, কেবল আনম্ফ কর,—কালী শুণ গান কব—নামামৃত পান কর। দিগমর্সিদ্ধান্ত এবং তিমুক !

বিষৰ হইয়া ছজনে চুপি চুপি, কাণাকাণি, কুন্ কুন্।

[मि ।--- अथरम नाटक हो ज मित्रा मूच गैकारेजा।]

' হুঁ বড় গন্ধা, ভর ভার কোরে গন্ধ ছুট ছে।—হুঁ—কেমন কোরে খাব ?—আমাদের মজে সুরাপান বড় নিষেধ্য,—বড় নিন্দা, আগে কি জানি, যে, মদ খেতে হয় ? তা হোলে কি মন্ত্র নিই ?

ভি।—ছ্ণা পূর্বক বিকট-ভঙ্গিমার শিহুবে উঠিয়া।

একেতো মদ অপেন, তাতে আবার কাপালিকের এঁটো করা, মুখের লাল, লাগা, দেখিইতো গা ঘিন্ ঘিন্ করে।— আমাকে মেরেই ফেলুক, আর কেটেই ফেলুক, আ- ছিতো প্রাণ, গেলেও থেতে পার্কনা।

## সোমসিদ্ধান্ত।

ি আড়ুচকে চাহিয়া ']

আঃ, ভোমরা ছজনে চুপি চুপি কি বলিতেছ ! স্থামি বুবেছি। হাহঃ কাপালিনি। এখনো এ ছজনের পঃ শুর দুর হয়নাই। তীর্থবাসিরা কহে,

স্ত্রীমুখ সর্কাহাই শুচি, মনের বিকা-রে এঁটো বলিয়া অমৃতপানে ছ্ণা করে, ভূমি প্রসাদ করিয়া সহস্কে প্রদান কর।

#### তামনীশ্রদ্ধা।

বটে, এমন '—অমৃত থেতে অ-ক্রচি, এখনো বিকার যায়নি।

[ যথা নিয়মে দক্ষিণহুত্তে পাত লইয়া এক ঢেঁ∤ক্ থাইয়া ৷ ]

আঃ কি ভ্রম। কি ভ্রম। ছঁ, এঁরাতো মন্দ নন, রামো বলেন, কাপড়ো ভোলেন। হে ভক্তি ভুমি অনুক্লাহও।

#### গীত।

কতদিনে জীব তুমি, শিব হবে আর ?।

এথনো রুয়েছে মনে, বিষম-বিকার॥

এ কারণ, কি কারণ, সেই জানে সে কারণ,
কারণকারিণী-কালী, মনে জাগে যার।

হবে অভিযান-কুধা, এ স্থধা কেমন্ স্থধা,

যে থেয়েছে, ভারে গিয়ে, স্থধা একবার॥

বিষ্ থেয়ে রিষ্ কবে, অমৃতে অফুচি ধরে,
কিসে স্থধ, কিসে হথ, করেনা বিচার।

স্বর্গিরা এই স্থরা, অভিশন্ন স্থামধুরা।

এমন্ মধুর মধু, কোথা আছে আর !॥

সামানাতো অল্ল নয়, আলো বেখে অল্ল হয়

অল্লকারে জল্ল লাং, কারে হাহাকার।

ভোগি জনে সেয় ভোগ,যোগি স্কার

टिंग्रित जीवात, जारग, त्याक्रिके

छन छल भानभाद्य, अर्थ कतियांचाद्य, পুলক প্রকাশে গাতে, আনন্দ অপার। निगम्ब निगृष् উक्ति, माकार कीवन-मुक्ति, এখনি প্রমাণ পাবে. করি ব্যবহার॥ থায় ষেই এই মদ\*, নাছি উলে ভার পদ, পাৰে থেকে পায় পদ,নেসা কেখা ভার ?। এ মদ না থায় বারা, মদের মাতাল তারা, ফাছের নেসার ঝোঁক, না হয় সংহার ॥ कथरला ना थान मन, थ्यास सन छेटल शर, त्म बाद्य क्रिकेश काम अश्कात। यात्रा ভालबाटम मन, ভाता गाठि करत मन्, मद्राष्ट्रे सत्तर्छ समः, म्यूखरेत्व मक्षात्र । योता नाहि थांग्रे सक, छ। त्र। करा यम यम, मन नय अरे मन, गटनत वाशिव। পূর্ণস্থ্য-যোলকলা, পুণা, পাপ, দেখে কলা, কুলবোগি খায় কল। †, রেখে কুলাচার॥ क्लीत्नत एक क्ल, क्लग्नेन अस्कूल, আপনার ভিনকুল, সে করে উদ্ধার। लाकिय कामन जुन, क्लाइ न क्लान मूल, कूल त्ल कोट्ड स्मर्थ, खकूल श्रीकांत्र ॥ रचना आदम बहे कूटन, माँड़ादर मा काम कूटन, **এकूल, अकूल जांद्र, धुत्रल काँ।**शांद्र। ভক্তিভাবে করি ভর, গিব কালী জ্বপ কর, मकरमा मुझा धाकाः, मर्द्वगृजाधात ॥ এই জল্প বার মনে, আত্রা, পর,সে কি গণে, अब कार्य ममुमयः करत धकांकात ।

्वम् । -- यस्य । मर्जुः । इर्व विकास -- बम्राहमीश्म कुलाउटक अहे मार

ন্ধান করি শ্রেক্না-জনে, শুটি করা কুভূহলে, তার কা ছা কোথা আছে, আচার বিচার॥ ব্রহ্মরূপ নিজে হয়ু, দেখে সব ব্রহ্মনয়, ব্রহ্মানন্দে মুখ্য রয়, ক্ষপিয়া ওঁকার। সংখাবায়ু করি ধুসং,সোহং, সোহং,হংন হংস

ওঁকারেতে, কুওলিনী, চালে সহস্রার॥
যে করে "অক্লপা"রোধ, সে পেয়েছে তত্ত্বাং
সশরীবে মুক্ত সেই, মৃত্যু নাই তার।
ভ্রমসিফুপার হেতু, কুলাচার-শুদ্ধ-সেতু,
মে সেতুর প্রপারেতে, তত্ত্ব-পারাবার॥
তাহার নামেতে চর, ক্যোতির্ময় তাহে যর।
সেই ঘরে পরাৎপর, করেন বিহার।

मूल माज এक बाँक, महे बाँदिक फिल्ल कांक

এক সাঁকে লাক লাক, হাজার হাজার॥
টানো সেই এক আঁক, কাকেই থাকিবে কা
কোথা কোটি, কোথা লাক, সব ক্ষিকার।
না কানিয়া বস্তু এক, ভ্রমে ধরে নানা ভেক,
শ্রদ্ধাজনে অভিবেক, শুদ্ধ সদাচার॥
চেঁচায়োনা ছেড়ে পলা বাহিরে আচার কলা
সনেব ভিতরে মলা, কর পরিস্কার।

এই জল, এই ফল, কারে তুমি এঁটো বল, এঁটো-ছাড়া খাবে তুমি,কি আছে ভোমার! বায়ু,বারি, বহিন, ধরা- সমুদয় এঁটো-করা, কেবলি এঁটোর চেটো, এ তিন সংসার। কত মদে মন্ত রয়, মাতালে মাভাল কয়, এয়, চেয়ে নাহি আর, হাসির ব্যাপার ॥ ছাড়িয়া সকল তত্ত্ব, তত্ত্ব রসে হও মন্ত, খাও খাও নাচো, গাও, ইছে যক্ত থার ॥

সুরাপাতে চুমুক মারিয়া হত্ত
 প্রসারণ পূর্কক।

হে ভিক্ষ ।— লও লও, প্রসাদ পাও।

#### - ভিশ্কী

[आक्राहंत्र आहियाना रहेश म्य देव व निया अहम भूर्वक अयनि हुनूक — जामां किए।]

আরে এ, কি রে ! কি-রে !—হা
বৃদ্ধ ৷ হা বৃদ্ধ ৷ ভোমার দিব্য, ভোমার দিব্য, আমি শরীর ধারণে এমত
মুম্ধুর পরমায়ত কথনই পান
করিনাই, আহা, সমস্ত শরীর তৃথ
হইল, আআণে একরন্ধু পর্যান্ত
আমোদিত হইল।

আবার এক চুমুক।
[আহা অহং ব্রহ্ম।]
[ইসৎ মাচিয়া।]

ছারাদেবি, ভোব নামে, ভাবে গদগদ রে। ভূঁড়ির সামানি দেবি, অমৃতের হাদ বে॥ পানপাত্র করে করি, তুক্ত ব্রহ্মপদ রে। বলিহারি, ভোর গুণে, হার হার মদ বে॥

#### ্রিকি কি সময় ।

ওরে ভিক্কা —ও পেটুক !—কা-পালিনীর অধরীমৃত তুই একাই স-কল ধাবি, দে দেঁ, আমার দে।

> ় ভিক্ক। [ হভ, মাড়াইয়া টলিতে টলিতে ]

कार्य-तास स्तरम स्तरम स्तरम का

#### मिशवव ।

# প্রথম চুষ্কে—আঃ।

বিভীয় চুমুকে বাঁড়ের নায় প্রথ-মে নীচে, শাড় নাড়িয়া পরে উপরে,-'না"এই শব্দে ঘাড়নাড়িয়া,রর্কৃদেঘে আবার নীচু পানেই মুধ করিলেন।

ख्यम नीष्ट्र भारत मूर्य। এই कामिनी, এই कामिनी, खर्था थ के काभारती, हेश के कि चर्न, - छेर्क मूर्य,
स्मिनी, हेश के कि चर्न, - छेर्क मूर्य,
खर्था छेलर हे द्वि चर्न। मर्करमय
याज नाजिया जर्धारमर म्थ, ना,
छेलर चर्न नय-नीर्ष्ट चर्न, - এই
कामिनी, এই कामिनी, এই चर्न, এই
चर्न, आत मयुम्य छेलम्र्न।

ু শহার,—দেবতারা কি ধার ! ছাই
থার। তারা যে সুরা থার, তাতেত
কাপালিনীর অধরাস্তের সংঅব
নই।—আহা—আহা ! এছদিন ভও
এক গুরুর মতে ভ্রান্ত হইরা এই সুর্বা
যোক্ষ-মাধন স্থানপা সুমধুর ভত্ত কাল্য

[ अनकात्र अस्म क त्रमा । ]

(र जिक्त। भागात गणिक्षेत्र

মল কর্ছে। মুখে কথা এড়াচ্ছে। ভাই আমি থানিককণ শরন করি।

## ভিশ্ক।

আমিও বড় অস্থির হয়েছি, পড়ি পড়ি, আমায় ধর-ধর,--এসৈ আমা-त्रा इक्टनर घुमूरे!

[পপাত ধরণীতলে।]

# বোমবিদ্ধার।

एक त्थ्रामा,—एक क्रमग्रतक्किनि-काशांनिनि ! अम् विनामृत्ना अह ছুটি দাস লাভ হইল, এসো আমরা নৃত্য করি, গান গাই।

সোমনিদ্ধান্ত এবং কাপালিনীর মৃত্য।

षु ७७, पूछण् पूर्पूर्य पूर्। पूजूर् **जूजूम्। जूम् जुम् जुम्,। जिनाक् धानाः** जिनाक् धामा।--धां धां धा-जिजूज् ধিন্তাক্তা,ডিন্ডাক্তা,ধিন্তাক্তাতিন্তাকা, किषिक वित्रा, विविष् चित्रा ! वि-क्षकाक, या याः। (सर (परे र्यहे बाट्यहे, जाट्यहे। विद्याला,-ভিন্ন নিভাজা, তিভাজা। 🕯 হাত ধরাধরি করিয়া।

#### গীত।

আনন্দধানেতে সবে, আসিয়াছ ভাই শ্লে। क्विंग जानमा कत, निश्चनमा नाहे ca ! म्थारत ज्या-तात्रा कृत त्रात्र वार तत्रा আহা সাহা, মরি মরি, বলিহারি যাই রে॥

(धरे (धरे (धरे। जारधरे, जारधरे। (धरे (धरे (धरे। जाटधरे, जाटधरे) ধিস্তাক্তা ভিন্তাক্তা। ধিন্তাক্তা, ভিন্তাক্তা।

[ আর একদিগে মুখ করিয়া, ]

#### নীত। 🔧

অন্তর্ণা অন্ন-র । ধেতে যেন পাই রে। । মায়ের প্রসাদ বিনে, কিছু নাহি চাই রে ॥ निक शाम वारम थाकि, काशा ना गारे ता नित के तम्, रहत्त्र (थरम्, काली खन शाहि हा।

#### नुष्ण।

(धरे (धरे (धरे। जादारे जादारे। (धरे (धरे । छाटभरे छाटभरे ॥ ধস্তাকা তিম্বাকা। ধিস্তাক্রা, ডিম্বাকা

[ जांद्र अक्तिरश मूब क्रिया ।.]

#### গীত।

ভারানাম বড় মিঠে, পুলি পেটে ছাই রে। গানে, পানে, মুক্ত হবি, বলি তোরে ভাইরে॥ ভেক্ষে ভেক্ষে,হেঁকে হেঁকে,মুখে ভোকৌ হাই রে चात्र मा रहेरव स्थएक समनीत माहे रह ॥

#### न्का।

শেই ধেই ধেই। তাধেই তাদেই।
 পেই ধেই ধেই। তাদেই তাধেই।
 ধিত্তাকা,তিন্তাকা।

[ আর একদিগে মুখ করিয়া।]
· গীত ।

তাবাতস্ত্র-দাগরেতে, তাল কোরে নাই রে। এ নাগরে, জলচরে, নাহি করে ঘাই বে। একেবারে ডুবে যাব, নাহি পাব থাই বে। ডুবেছিডো ডুবে দেখি, পাতাল্যদি পাই রে॥

## नुका।

ধেই ধেই ধেই। তাপেই তাধেই। ধেই ধেই ধেই। তাধেই তাধেই। ধিস্তাকা,তিকাকা। ধিকাকা তিন্তাকা

--

#### দিগৰবসিদ্ধা ।

ওরে ভিখারি । এট্ ওট্ দেখ্ দেখ্। ঐ দেখ্। কতা, গিলী নাচ্-ভেটে, গাইডেছে। এলো এই দঙ্গে আমরাও নাচি, আমরাও গাই।

[ উভয়ে উঠিয়া কছিরচরণে নৃত্য।]

ক্ষণে কানা। ক্ষণে হাসি।
ধাকবার ওঠে, একবার পড়ে।

শোমনিজাক ও কাপালিনী পু-নর্কার পান পূর্কক শিষ্যদিন্যে প্র- সাদ দিয়া চারিজনে হাত-ছেক্লা-ছিক্লি করিয়া তালে তালে নৃত্য।

তিকাধিনা, তিন্তাধিনা। তিন্তাধিনা, তিন্তাধিনা। তাঁকুড় তাহুড় তিনিতা তাকুড়। ধাঁকুড় বাকুড়। ধিনিতা ধাকুড়। কিনা ধাকুড়। ধিনিতা ধাকুড়। কিনা কিনা, তিন্তাধিনা। পাকুড় পাকুড়, উচ্ছেকাঁকুড়। ধিন্ ধিন্ ধিন্ বিন্ বাজা খুড়ো। বালা আছে পাঁটার মুড়ো। বম্বম্বম্, ববম্ ভোলা। কিন্তাধিনা, তিন্তাধিনা, তিন্তাধিনা নাচতে নাচতে ভালে ভালে ভালে গান।

#### গীত ৷

ছর্গাবাড়ী, ছর্গাপুলা, ভাল দেখি জাঁক্রে।
প্রস্থানে বাকে বাক্ বে॥
দামা বাজে, কাড়া বাজে, বাজে ঢোল্ ঢাকরে।
ডুবী বাজে,ভেদ্ধী বাজে, বাজে ঘন্টা গাক্রে॥
রেখেছে ছাগল্ কেটে, রক্ত দায়ে দাধ্রে।

वांवा ब्रख्य भारत मान्य रहा। कांनी कांनी कांनी कांनी, कांनी स्वास्त्र क्रांन्य रह जाकुरत, जाकुरत, मानामारत क्रांन्य ३

এখনো, রয়েছ কেন, হোরে ভীৰানার বি

শুখে দিলে, বৃদ্ধি বাড়ে, গুদ্ধি-টুকু চাক্রে। কেন বাচা,থাকো কাঁচা,ভালকোরে পাক্রে নিজে তুমি সিদ্ধ হবে, সিদ্ধ হবে বাক্রে। বাবা সিদ্ধ হবে বাক্রে॥ কালীকালীকালীকালী,ক'লা রোলে ড'ক রে ডাকরে,ডাকরে,ডাকরে,শ্যামামারেডাক্রে॥২

মাচ আছে,মাংস আছে,আছে অশ্ব শাক রে।
বিচার কোরোনা কিছু, কে কোরেছে পাক রে
স্থাতে পড়েছে মাচি, বস্তুদিয়ে চাঁক রে।
রয়েছে মজার ভাজা, টুকি টুকি টাক বে।
হাঁহুঁহুঁহুঁ কুঁকুটো পড়ে,গালা দিয়ে ঢাক্রে।
বাবা গালা দিয়ে ঢাক্রে।
কালীকালীকালীকালী,কালী বোলে ভাক রে।

ডাক্বে,ডাক্রে,ডাক্রে,স্যামামারেডাক্রেও

নিন্দাগারে মেখনাকো,লে যে,পচা পাঁক রে।
নিন্দাকারি যার\ তারা,পুড়ে হবে খাক্রে।
শোলার উপরে কালী, কিছু নাহি ফাক্রে॥
ছেডনাকো কটু কথা,নেড্নাকো নাক্রে।

বাঝা নেড্নাকো নাক্রে॥ কালীকালীকালীকালী,কালী থোলে ভাক্রে। ভাকরে ডাকরে ডাকরে,শ্যামামীরেডাকবে।

লাকে লাকে,থাকে থাকে,কেন বাঁঘো থাকবে চাডকের মত হোরে,উল্লেচেরে থাক্রে॥ নবনীল কাদম্বিনী, শ্যামারূপ তাক্রে॥ দেক্তল, লেজল, বোলে, উচ্চম্বরে ডাক্রে॥ এখনি ক্ষরিবে বৃষ্টি, ভবে তোর হাঁক্রে॥ বাধা তবে ভোর হাঁক্রে॥

মুখে দিলে, বুদ্ধি বাড়ে, গুদ্ধি-টুকু চাক্রে। কালীকালীকালীকালী,কা**লীবোলে ডাক্রে** কেন বাছা,খাকো কাঁচা,ভালকোরে পাক্রে ডাক্রে,ডাক্রে,ডাক্রে,**ল্যামামারেডাকরে**&

ভারা-ভত্তে মন্ত কোরে, নেচে দেও পাক্রে

যত ভক্ত, ভাক্বজ্ঞ, ভারাগুণ মাক্রে ।

ধর্লাধর্ম, কর্মাকর্ম, শিকে ভুলে রাখ্রে ।

পবিত্র হুদয় পটে,ভারামুর্ত্তি জাক্রে ।

পাড়লে কুলের মুর্থেকোখা রবে বাঁক্রে ।

নাবা কোখা রবে বাঁক্রে ।

কালীকালীকালীকালী,কালীবোলে ভাক্রে ।

ভাকরে ডাকবে ডাকরে,শ্যামামারেভাকরে।

১

# দিগম্বরসিদ্ধা**ন্ত।** নৃত্য গীত।

প্রমা—দিগস্থানি, নাচোগো, শ্যামা, রথমাজে। পতির বুকেতে পদ, যোগানী যোগায় মদ, মাগোমা, দেখে, মরি শাজে॥

মাথের বসন নাই, বাপের ভূষণ ছাই, কিবে ভঙ্গি মরি মরি, দিগদ্বব দিগদ্বরী, এখন কাপোড়-পরা, আমারে কি আর সাজে। গুমা-দিগদ্বরি, নাচোগো, শ্যামা, রণমাজে ॥১

#### ----

ভিতরেতে সাব শর্ম্ম, কে বুঝে নিগৃত মর্ম্ম, মা বাপেব এই ধর্ম, পাগলের মত কর্ম, দথে শুনে পাগল হয়েছি, আমি কাজে কাৰে ওমা-দিগম্বরি, নাচোগো, শ্যামা, রণমাজে ১২

#### -

এ তুখ কাহারে কব, মুখে মাত্র লাছি রব, ভবধব ছলেশব, পদতলে পোজে ভবঃ

হার হার, আমার বুকেতে যেন, লাচি বাজে। **। अग-निभवति, नांटकांटकां, म**ामा, त्रंगमाटक ॥ ७

> कानीमूर्डि पृष्टि कतिया। সেচ্ছাছনা ভোমার চুটি চরণ সবে।

যা বাঞ্ছ। করে সবে ॥ ভধু সস্তানে সম্ভবে। ছি ছি, ছেলেরে মা, **ॐाफ़्ट्य (ज श**न, में ांफ्ट्स আहा नाद्य ? ह

> এনে এই ভবে। আমার কি হবে। তৃপ্ত হৰ কৰে ! यि त्राञ्चाभाम, श्रीहे मिलना. কার কাছে যাই ভবে?।।১

**वांगरभरः शराह काली, आ**मात रय, शांकृकाली जा कृत् कि कृत्कि यांहे—हूम कि हुम किथाहे। কালী কালী বোলে কারে, ডাকি উচ্চরবে ? ১ **জনক হোলেন মড়া, তুমি হোলে মড়াচড়া**, আমার গলায় দড়া, কাজে কাজে তবে॥ ওগো পাষাণের মেয়ে. মা আমার মাথাথেরে, একবার দেখ চেয়ে. মেলে ভিন জাঁকি। সেত নয় এ তনয়, ছাড়িবার এত নয়, ভোগা দিয়ে ভগবতী, কারে দেবে ফাঁকি ?। মাতৃধনে অংশ গেলে, কার কাছে মা যাবো। পিতৃধনে অংশী হোলে, ছাই আছে ত ইপাৰোং

আর বের য়োনা মা,বের য়োনা মা,বের য়োনা মা অস্তরে পুরেছি ভোমায়, বের্যোনা মা॥ মহামায়া কেন তুমি, এত মারা ধর ?। বাজীকরের মেয়ের মত, বাজ কেন কর ? ॥

বিছ দেখি মা আছো তৃমি. মনের ্ঘর জুড়ো সাবার ভূমি,শিক্লিকেটে,কোথা যাওমাউড়ে ওমা. আর উড়োনা, আর উড়োনা॥ আরবেরযোনা মা,দেরযোনা মা,দেরযোনা মা অন্তরে পূরেছি ভোমায়, বের্য়োনা মা।।

হর হর হর, ভোলামহেশ্বর, বর্ষেছ ত্রিপ্ররান্তর ভবানী ভবানী, ভাঁডেমা ভবানী.

এইতো ভবানীপুর॥ আৰু বেরুহোনা মা,বেরুরোনা মা,বেরুয়োনা মা অস্তবে প্রবেছি ভোমার, বেরবোনা মা 🛚

> ভিক্ষক। ঘোর নেসায়।

यां शत्क- कृति यि रु ७ एत्या। পরে কিঞ্ছিৎ চেতন পাইয়া। বক্ত ছলে গীত।

मृत् मृत् मृत् अं फि. मृत् मृत् मृत्। **डिनित वनम् एँ फि. मृत्मृत्पृत्।** মূর ব্যাটা লক্ষীছাড়া, মূর্থ নাই ভোর বাড়া-বেচে খাস্ সৃষ্টি ছাড়া এমন মধুর ! मिन् किना उज, यम, य गरम ना शांदक सम, নিস্কিনা ধন-মদ, হোয়ে অভি ক্র॥ व माम बाजाय मह, जादा जादक बदल मह,

অভিমান ভাহকার, মদকরে দুর 🖁 এর ক্রম কভক্ষণ, নেসা বলে কোন ক্ষন, শোক, তাপ নিবারণ, স্বভাবে অঞ্জুর। मृत् पृत् पृत् प्र फि, मृत् मृत् पृत्र । विनित्र वलम् । १९ मृत्र एत् मृत्र ।

হ্যাদে শুঁড়ি আমি সোম, তৃই ব্যাটা বড় সো<sup>ম</sup>
নেসা দিতে নেসা দিস, করিয়া ভাঙুর ॥
দিসশুধুক্ত্রালোজোলো,তবু-মুখতোলোতোলো
মলো মলো, যদ্ধে ভোর, কেবল পুকুর॥
দানের না জান নাম, জোরে নেও জুনো দাম'
জাননা এখনি হবে, যেতে যমপুর।
কেবল চিনেত্ টাকা, 'কাউ,,নিতে মুখ বাঁকা,
এক দিন মেরে দেবো, হাড়্কোরে চূর॥
দব্দুর্দ্ব শুঁড়ি, দূর্দ্র দূর ।
চিনির বলদ্ শুঁড়ি, দূর্দ্র দূর ॥

সাধ্ব-তো খানী নই, রাজাব না প্রাঞা হই, কেবল কিন্ধর অ'শি, আমার প্রভুর। खमल खांनल रांहे, खक्र-लिया नांखि. शांहे, मेम जीव मग्पय, श्रीकृत, कुकृत ॥ অভিমান অহঙ্কার, কিছু মাত্র নাহি যার, ভাগি ভাগ, নে আমান, বাপের ঠাকুর। নিজ বলে হই বলী জোর কোরে ডেকে বলি কোথা শুর, কোথা স্বর, কোথায় অস্থর। জয় জয় কালী কল, কাবে নাফি করি ভায়, बिज़्तम कति ज्य, धका वाराष्ट्रत। মনের আনন্দে খাই, যথা তথা নিদ্রা যাই, না চাই, বালিস, গদি, না চাই মাদুর। কিছু নাই উপসর্গ, যেখানে সেখানে স্বর্গ, করতলে চতুর্বর্গ, কোথা স্বর্গ পুর। √বিষ্ণুর বৈকুঠ ধাম, কোথা সেই, মিছে নাম, **নেখানেতে প**রিভোদ, কি আছে প্রচুর ॥ . भेरे ४ जि. भेरे युनि, रेट्थ जर युटनायुनि, ং**হোলেপরে খোলাখুলি, ন**'হি থাকে ভুর। দেৰৱাজে ভেকে স্থা, শচীতে কি আছে হুধা किनी लोगनम्, निष्य मधुर्वत ॥

হাদে শুড়ি আমি লোম, তৃই ব্যাটা বড় সোম । চাদের সে, হুখা, ছাই, তাতে এও মিই নাই, নেসা দিতে নেসা দিস, করিয়া ভাঙুর ॥ কোথাও পাবেনা ভাই, খুঁজে তিন পুর। দিসশুধুজে'লোজোলো,তবু-মুখতোলোতোলো কিভুবন টলমল, মুখে হেসে খলখল, মলো মলো, যদ্ধে ভোৱ, কেবল পুকুর॥ হাতে কোরে দেয় জল, অতি হ্মধ র ॥

ওরে তোরা, কেরে কেরে, বল্বল্, এরে এরে দেরে দেরে, এনে দেরে, পায়ের নূপুর। আমি খুব্ অংখ আছি, ধেই ধেই নাচি নাচি, ধর্ধর্দিগম্বর, তুই ধর, স্থর ॥ ধেয়েছি অধিক স্থা, হয়েছে বিষম ক্ষা, চাট্করি, দেরে দেরে, তুটো চানাচুর। নিলে আখ, এক পাপ, ভিখারির নাহি পাপ ভিক্ষে কোরে নিয়ে আয়, ডালিম, আকুর॥

আসাদনে মন হরে, সৌরভে আমোদ করে,
জিনিধা বকুল কল, গদ্ধ ভুর ভুর ।
অভিশয় সুখময়, এমন কি আর হয়,
দক্ষিনে বাতাল বয়, ফর করে ফুর ্
শুলালন ছোটো ছোটো,মুখ ঘেন ওটো ওটো
ফুলালন ফোটো ফোটো ঝুর ঝুর ঝুর বা
যে খার, সে হয় কবি, রূপ জিনি য়বি ছবি,
কার্ত্তিক ছাড়িয়া দেয়, আপন ময়ুর ॥
দিখরের কিবে লীলে, প্রেমে দ্রব হয় শিলে,
একফেঁটো মুখে দিলে, মজা ভরপুর ।
দূর দূর দূর ভুড়ি, দূর দূর দূর ॥
চিনির বলদ্ ভঁড়ি, দূর দূর দূর ॥

সোমসিদ্ধান্ত। হে বাপু 'তোমরা **ছির হড়**, এই কারণের কারণ জানে। [ মুথের পান উভয়কেই প্রদান।
ছইজনে প্রসাদ পাইয়া সুস্থটি-ভে ] আঃ--কুতার্থ হইলাম।

হে গুরো! হে আচার্য্য হে পর-ম-পূজা! আমারদিগের দিব্যজ্ঞান লাভ হইয়াছে, এইক্ষণে অনায়াসেই অভিল্যিত ফল ভোগ করিতে পারি।

সে'মসিদ্ধাস্ত।

ইহার আশ্রহ্য কি পর্যান্ত তাহা দেখ। অভিলাষ মাত্রেই কোন বিষ-য়ের অভাব থাকে না। স্থাসেব্য, স্থাদ্য, দিব্যাঙ্গনা-ভোগ, এভো সামান্য কথা, অক্লেশেই অনিমাদি অফদিন্ধি সিদ্ধি হয়; সিদ্ধিযোগ হইয়া বশীকরণ সম্মোহন, স্তন্ত্যন, প্রক্ষোভণ, এবং উচ্চাটন ইত্যাদি অতি সহজেই সিদ্ধ করা যায়। স্থত-রাং ত্রিভুবনে এমত বস্তু কিছুই না-ই আমরা এই বিদ্যার দ্বারা যাহা অকর্ষণ করিতে না পারি।

ভিশ্বক।

এই সকল নিন্দক পাষণ্ডের।
নিন্দা করিতেছে, হাসিতেছে,-তুমি
মদিরার যে যথার্থ গুণ তাহা প্রকাশ
করিয়া হ্রাজা তুজুনিদিগের মনের
ভাতি হর্ম কর।

#### সোমসিকান্ত।

ওরে লোক সকল! তোরা কি কৌতুক দেখিতেছিস্? ভগবান্ ভবানীপতির অতি প্রিয় এই মনো-হরা, সুমধুরা সুরা। শাস্ত্রকর্ত্তারা ইহার গুণ ও মহিমা প্রত্যক্ষ দর্শনপূর্বাক ভিন্নভিন্ন করেয়াছেন।

ওরে পশু শোন্-তোরা শোন্। শোন্ শোন্। সুরার নাম। মদিরা-সুরা। হলিপ্রিয়া। পরিশ্রুৎ। বরুণাত্মজা। গলোভ্যা। কাদ-ষরী। প্রসন্না। পরিশ্রুতা। কশ্য: मनु। मानिका। कशिभी। शक्त-মাদনী। মাধ রী। কভোয়। মদ। মন্তা। কাপিশায়ন। বারুণী। সীতা। চপলা। কামিনী। প্রিয়া यमगन्ना। याश्रीक। यथु। मन्नान। আসব । অমৃতা। বীরা। মেধানী। মদনী। সূপ্রতিভা। মনোজা। বিধাতা। মোদিনী। হলী। ও-शांतिको। मत्रकः। मधुनिका। म-(मा ६ क छ। । सहानका । भीध । रेभद्रम् । यनयञ्चला । कार्र्ग । छ-ন্ত। কৈত। মদিকী।প্রিপ্ন তা। কল্প। স্বাছ্রসা। গুপ্তা। স্বার-

वृत मार्चीक। मनना। पनदक्षी। কাপিশ। অব্দ্রিজা। অলি। মণ্ডা। মধ্লা। কামিনী ভোগ।

গদগদ প্রেমভরে, লোরে প্রিয়া প্রিয়া। মধুকালে, মধুমুলে, করে ক্রিয়া ক্রিয়া ॥ मञ लिएस मधु दकावा, वृष्टि कदत मधु। মধুব জালাপ করি, সৃষ্টি করে মধ্॥ দূর করে সব ছখ, মুখেব সন্ধান। অবসিক যারা ভারা, কি ক্রানে সন্ধান।। কত পুণা হয়, হোলে, বারুণীরা ভোগ। ভার কাছে, কোথা অ'ছে, বারুণীর যোগ। অক্ষয়-বারুনী প্রতি, প্রীতি নাই যার। করুক্ সে মাঠে নিয়া, বারুনী আহার॥ নানাত্তনে গুণবতী, দেখিয়া চপলা। গগনেতে জভিমানে, মরিছে চপলা॥ যে সময়ে নিজ প্রভা, প্রকাশে কামিনী। সে সময়ে কোপা থাকে, কামের কামিনী॥ কামিনীর হার দিয়া, কামিনীর গলে। কামিনী যদ্য'প দেও, তার করতলে॥ এক ঠাই দৃষ্টি করি, কামিনী কামিনী। দাস হয়, ছেড়ে কাম, আপন কানিনী। কপাল প্রসন্ধ যার, কোন কালে নয়। প্রসন্ধা, প্রসন্ম ভাবে, কখানা না হয়। ভক্তিভাবে হয় যেই, কাদম্বরী দাস। কাদুষরী এনে ভার, কঠে করে বাস।

কাদস্বরী কৃপা-বলে কথা যেই কর। শিক্ষা হেতু কাদম্বরী\*, দাসী তাব হয় 🛭 জগৎ হোয়েছে ওধু, কারণ কারণ। কারণ কারণ শুধু, যানেন কারণ। কারণ ধরিয়া যেই, না লয় কারণ। বুখায় কারণ ভার, বৃগায় কারণ॥ কারণ না ভেনে যেই, দোষে অকারণ। এখনি ধরিষা তারে, করছ ক'রণ॥ সাধু সাধু সাধু সেই. বিসের কারণ l যঁ'হার প্রসাদী এই, সুথের কারণ। কাবণের গুণে কর, কারণ কারণ। ছেড়োনা কারণ† কেউ, ছেড়োনা কারণ 🛭 এই মহ'नन्त्र यप्ति, सइ'नन्त्राः इय l মহা নন্দে ভাসে তবে, ত্রিভুবনময়॥ সার-তত্ত্ব আছে যার, তত্ত্বজ্ঞানী যেই। তত্ত্বী হোয়ে এ তত্ত্বের, তত্ত্ব করে সেই। তত্ত্বের যে তত্ত্বী হয়, তত্ত্ব তার সার। তত্ত্বের না লয় তত্ত্ব, সে হয় অসার॥ কত রস, কত গুণ, ধরেন্বিধাতা 🚶 সে কেবল একমাত্ৰ, জানেন বিধাতা 🖡 এই কম্পণ্ড, কম্পতরু, আশ্রিত যে নয়। কে'**ন কল্লে,°কোনৰূপে, স্থ**ী নাহি হয়॥

<sup>\*</sup> कियों - मीला। भनार्थ। निजू जि। तूथ। প্ৰতিত। গৌৱবিত।

<sup>+</sup> मधुरकाय-रकाकिन।

<sup>‡</sup> वाक्रियो - श्रदा । श्रीमध्य निक्। मृत्वी ।

<sup>\*</sup> कामस्त्री—मनिया। क्लाकिना। महत्र्यो। + কারণ—হতু। গীজা নিমিত। প্রভার। कर्ता वधा देखिया (पर माधन कर्या। কায়স্থ। বাদ্যভেদ। গীতভেদ। 1 महानमा-मना । महानमाननी । माल-मर्द्व नीर्ह ए ननी। § कल्ल-दिधि। श्रमहा विकल्पानाहा || কম্পত্র । শান্তবিশেষ। সুরা, ইড়াাদি।

যে জন হোয়েছে নত. মদনার পায়। মদনা ভাহাকে নিয়া, মদনা পড়ায় # স্বাচুরসা, স্বাচুরসা, মোহিনী মদনী \*। এর কাছে কোথা আছে, স্থরভিমদনী ॥ কিবা ৰূপ, কি লাবন্য, ধোরেছে মাধুরী। প্রেমহীন 🎓 জানিবে, ভাহার মাধ্রী 🛭 সে জৰ মেধাবী লয়, বে হয় মেধাবী। (यथारी+ (य नय, मिटे, ना लय (यथारी ॥ বলের বল্লভা দেবী, খ্রীবলবল্লভা। মানুষ কোখায় আছে, দেবের দুল্লভা॥ ছখমগ্ৰী স্থৰূপনী, ছতি স্থমধ্ৰা। শিবদারী স্থরপ্রিয়া, নাম তাই স্থরা॥ স্থুরা (১) হোয়ে যে না করে, স্থুরার শেবন। বৃথায় জীবন তাব,বৃথায় জীবন॥ হৃদ্যেতে বিক্সিতা, সদা এই সীতা। দাসরথী সীতা লন, পরিহরি সীতা॥ মথ রায়, ছারকায়, বুন্দাবনে হলী। পুলকৈ প্রমন্ত হে'য়ে, পান করে হলী 🛝 ङ्गित्त क्लार्रे माना, ভालत्याम रली। कि कार्टन स्नीद जान, निरक (यह स्नी (२)॥ মন্তার মহিমা।কেবা, স্বৰূপে প্রকাশে। মন্তাপানে মন্তা দেবী. ইদৈত্যকুল নাশে। মণ্ডার মধ্যুর রস, পেটে যার খায়। আন্ধবাড়ী নিয়ে সেকি, মঙা আর খায়। যে জানে অলির গংল, সেই রাখে পেটে। অলির কি গুণ গুণ. অলির নিকটে॥

করে করে মদ যেই, মদ \* যায় ভার। একেবারে করে মদ, মন অধিকার ॥ जकि विशेषयुक्त, (कश्नाहे भए। মদমত্ত যত লোক, নিন্দা করে মদে # স্থানিরমে ভজা মনে, মদ থার যোরা। মদ নাহি খায় ভারা, মদ খায়ভারা।। ভোমার মাভাল মন, মাভিয়াছে ম দে। কেন বাপ্র মিছে ভূমি, দ্বেষ কর মদে॥ এই মদে, স্থির পদে, নাহি রাখে যারে। সেতো নাহি মদ খায়, মদ খায় ভারে ॥ অমৃত অমৃত হোরে, চারি যুগ আছে। তামৃত যাহারে বল মৃত এর কাছে। (एवस्ट्रे), (एवस्ट्रे), नाम (हाटना **डा**हे। ত্রিজগতে তুল্য ভার, কিছু ভার নাই॥ বীর আর বীরভোগ্যা, হন এই বীরা(১) দয়া, জ্ঞান-প্রস্থিনী, নাম তাই বীরা॥ এ বীরা হইলে ভোগ, কেবা চায বীরা। ভচ্চ করি বাসরের, বিদ্যাবরী বীরা॥ শুভকরী এ বীরার, দ্বেষ করে যেই। অবীগার দাস হোয়ে, নীবা থাকু সেই॥ মনেভিত্ত(২)মনোভ্তত, সাধে, অভিধানে কয়। মনোজা ইহার কাছে, দাসী সম নয়। অকারণে কারণের, মিছা পরিবাদ। স্বার্থ হেডু, স্মার্হ্ন(৩)এত, কোবেছে প্রমাদ।

<sup>\*</sup> মদনী—মদা। কন্তরী।
+ মেধাবী—সুবা। পণ্ডিত। পকপ্যনী।
(১) সুবা—বলবল্লতা। ধনবান। মদ্য।
(২) হলী—মদ্য। বলদেব। ক্ষেত্রী। কৃষক।

<sup>\*</sup> মদ-দপ্। হৰ্ষ।মন্ততা। মানিকা l

<sup>(</sup>১) বীরা—সুবা। পভিপ্রজ্ঞবভী। র্জা। মদিরা।

<sup>(</sup>२) यदनाञ्जा-यनः निना। ताल प्रखी। यमित्र।

<sup>(</sup>৩) সার্ত্ত—স্মৃতিসম্বরীয়। স্মৃতিশাস্ত্রকার-দারী।,স্মৃতি শাস্ত্রোজকর্ম।

স্বৰূপ সম্বন্ধে যার, স্থির আছে স্মৃতি। প্রুডি ভার স্থাব থাক্ মানিবেনা স্মৃতি। বিধি বিধি \* কোরেছেন, বিধি অনুসারে। সে বিধি অিধি আর,কৈ করিতে পারে 🏾 ক্রম ক্রমে, চারু ক্রমে, করে যেই বিধি। " প্রসন্না ,, প্রসন্না তারে, অমুকুল বিধি॥ দেবভোগা স্করানিধি, করি এই বিধি ৷ আপনি মোহিনী-ৰূপ ধরিলেন বিধি ! অভিশয় হিডকর, জানিয়া বিধাতা। আপনার নামে নাম, রাখিল " বিধাতা ,, ॥ কেমন বিপাক (১) হায়, না ভাবে বিপাক। এমন বিপাক ৰস্তু, না করে বিপাক। ভ্রমে কয় খেলে পরে, যাইবে বিপাক। ইথে কি বিপাক যায়, বাড়ায় বিপাক॥ ছখে সবে ভোগ কর, এই মহানিধি। ত্তন দেখে বিধি,করি, জেতে জামি 'বিধি, ॥ अञ्चलात अ'त्मा करत, त्रांकि करत मिया। এ জগতে এর চেয়ে, গুভকরী কিবা। ছলগ্রাহি খল যত, ছাড়ে তারা ছল। বোদ্ধা পায় বুদ্ধি, জ্ঞান, যোদ্ধা পায় বল। যোগী পার যোগ-বল, ভোগী পার ভোগ ॥ রোগির থাকেনা ইথে, কোন ৰূপ বোগ। ছবির প্রভাস বাড়ে, রূপের নিল্রে। রবির প্রেয়সী ফুটে, কবির হাদয়ে 🛚

কুৰপের কুৰূপ, থাকে না কিছু আর। বুদ্ধের শর রে হয়, যৌবন সঞ্চার॥ স তি মুক মুক যেই, কুটে ভার মুখ। মুখপ্রিয়া দেবী \* বরে, হয় সেই মুখ 🛚 অর্নিক যে জন, সে হয় রসময়। অভাবির মনে কত, ভাবের উদয়। বধিরের কর্ণ ইনি, অন্ধের ন্যুন। অকরের কর ইনি, খঞ্জের চরণ 1 বানৰ আনৰ পেলে, শচী দেন ছেডে। কেশব ছাডিয়া প্রিয়া লন কেডে॥ मनिव्यमन भित्र, शान निश्नि निता। #শিবের অশিব[নাই, নাহি চান শিবা॥ সমৰূপে এক:ভাব, স্বৰ্ণ আর ধূলি। ভুপতিব সিংহাসন, ভিখারির ঝুলি॥ কৃষির লাঙ্গল যন্ত্র, কুবেরের ধন। ইচ্ছের অমরাবভী, নিবাদের বন্ধ বক্তা যদি হবে কেউ, ভোক্তা যদি ২বে। দোক্তার দোকানে আরু, যেওনারে ভবে 🏾 निषय (लर्फिन् निमा, विष्यं पुरियः। ডেম্বায় দেখিতে পেলে, তেম্বায় ধরিয়া ম জনম সফল কর, বায় কর বস্থ (১)। ইচ্ছা করি ছুঁওনাকো, তাপকর ২স্থ ॥ কেবল সেবন কর, সুশীতল বসু। হইবে দেহের বর্ণ, ঠিক যেন বসু॥ বীর হও, বীর হও, হোওনাকে। পশু। কিল্ড যেন দোষ ঘোটে, নাহি যায় অসু॥

<sup>&</sup>quot;বিধি—ব্রহ্মা। ভাগ্য। ক্রম। বিধান। কাল।প্রকার। নিরোগ। বিষ্ণু। কর্মা গজার। বৈদ্য। যোগোপ-দেশক গ্রন্থ। ভারতকৃত-কোষ। ইঙ্যাদি।

<sup>(</sup>১) বিপাক—পচন। স্বেদ। পরিণাম। তুর্গতি। স্বাস্থ্য ক্ষাড়িঃ স্কায়ু। ভোগ।

শুরুর এই নাম নূতন স্থাপিও হইল।
 (১) বসু—ধন। বকতৃক্ষা অনল। রশ্মা।
 অন্তর্গাম। হাটক। ফলা

এমধু মধুর অতি। রাখে পরিতোষে। এ মধ্\*, মধ্র হয়, ব্যবহার দোবে। অভিমান আহক্ষার, দ্বেষবিনাশিনী। স্বভাবেই শুচিৰপা, অশুচি হারিনী॥ ভোগ মোক্ষ-প্রদায়িনী, ভোগ মোক হরা। একাকারম্য্রী দেবী, একাকারকরা॥ স্থের আধেয় ইনি, সুখের ভাষার। নীরাকার হোযে যেন, নিতা নিবাকার॥ নীবাকারে মুর্ত্তিময়ী, ভুবনভাবিনী। गरानना गरानन, পদ প্রদারিনী। পরমপদার্থপ্রদা, প্রবর্জাপনী। ওদা ওদ্ধময়ী বরা, বিকারবারিনী॥ রোগ, শোক, তাপ আদি, সর্ব্ব-फু:খনাশা। নিজে কিন্তু বহুধিধ, বিপদের বাসা॥ আপনি বিপদ নন, দ্বিপদের স্থানে। দে করে বিপদ, যেই, ব্যাভার না জানে। পরিমিত পরিমান, না থাকিলে পরে। আপনার কার্য্য-দোষে, আপনিই মরে ৷ ছাড়িরা ঘরের কড়ি, ঢেলে দেও গলে। দেখো দেখো, কেহ যেন, মাভাল না বলে। সাঁতার না জানে যেই, তার ঘটে দায়। বাপের পুকুরে ডুবে, প্রাণে মোরে যায়॥ যদি না রাখিতে পার স্থির পরিমাণ। কেন ভবে নষ্ট ২ও, করি বিষ-পান ॥ ছাড় ছাড় মিছা, সুখ- গভিলাষ। थन, यान, वृष्ति, वल, (कन कर नाम। কখনো না সহা হয়, পত্ৰ-পরিবাদ। প্রমোদের কর্মে,কেন, ঘটাও প্রমাদ॥ যে বিধি, এ নিবি, ভোরে, দিয়াছেন ভবে। फ दत कत्र निद्यनन, निद्यनन २८व॥

কমল জিনিয়া চাক্ল, ভোমার বদন। শুনীর সন্তান যেন, না করে চুম্বন॥ পালক্ষে হইবে স্থিত, যে দেহ তোমার। সে দেহ ৰা কবে যেন, ধূলায় বিহার **॥** যে মুখ প্রসেব করে, ভামিয়াবেচন। সে মুখে না হয় যেন, বিষ-ব্রিষণ। যে কর রচনা করে, করে উপহার। দে করে কাহারে যেন, করেনা প্রহার॥ কোরোনা অনিষ্ট করে, হোরোনা সম্পদ ৷ পদে রাখ পদ, যদি, পাইয়াছ পদ॥ যে কাৰে শুনিছ<sup>\*</sup>ভূমি, জ্ঞান উপদেশ। म कारन छरमोना कारता, निका खांत (इस ॥ ধে নয়নে হেরিভেছ, ভবের ব্যাপার। সে নয়নে, বিষদৃষ্টি, কোরোনা হে আর । लाइन (शरब्ह यमि, खाला गृश्यिनि।। চিনে লও মহামণি, কোথা চিন্তামণি॥ আছে নেত্র থত তত্ত্র. নেত্র মেলে রও। পাত্র হোয়ে পাত্র লোয়ে, স্বত্র(১)কেন হও ॥ পেয়েছ§ইন্দ্রিয়রাজ, মহাশয় মন। य मन इट्रेंटन नम. (मन्न मर्थिन ॥ সে মন যদ্যপি থাকে, কারণের বশে। কারণের কর্ত্তা হোয়ে, আর নাহি বসে। আপনিই আপনার, হইলে জবশ। কাবন শাসিবে কিসে, হইয়া অবস।। এক মদ, চুই মদ, তিন মদ, পেয়ে। অবস(২) কিৰাপাতাংগ, দেখিলেনা চেয়ে ।

<sup>&#</sup>x27; नव्त — अश्व। धारः विष।

গৃহমনি—প্রদীপদীপ। দীপক। জ্যোৎসা বৃক। শিখাওক। স্বেহাশ। নয়ুনোৎসব।
(১)য়য়—অজ।

<sup>(</sup>२)अवन-सूर्य। त्राकाः।

এই মন মহোদয়, কারণের প্রতি। কারণের পথে যদি, স্থির র'থে গভি। তবে আর নাহি ভর হয় জয়-লাভ। ভাভাৰ না থাকে কিছু, ভ'বে রয় ভাব ৷ মন:করী, বশ করি, করুরে করিণ। কারণ কারণ কারে করিনে বারণ ! কি কারণ, এ কারণ বুঝিনে কারণ। কার্নের দোষে কভু, ভুলোনা কার্ন। স্থল কথা বলি এই, থাকে যেন কুল। काद्रद्भ इटेटल जुल, श्राहिटन मुला। কুলীন যদাপি হও বাগ তবে কুল। একুল, ওকুল, যেন, না যায় फুকুল। কুলেখালে কুল বাখে, ভুলেন। ভাকুলে। কুলীন মলিন হয়, না থাকিলে কুলে॥ রাণ হাথ যত্ন কবি, কুলের ভাচার। বে চানা ভুলের হাটে, কুলেব আচার ॥ वृत्ती तित कर्छ। यां हि, इत खल्कुल। এক্স করিয়া সদা, রক্ষা কর ক্ল। কলাচার ধর্ম বলি, রাখিলে কৌলিক। क्लीन इरेड़ा (यम, (इ'एना मोलिक ॥ कुलाहांव वक्षा कति। इउ उमि नीत। বিপু যার দশে থাকে. সেই বীর বীর॥ ज्ञि यानि तीत काट्य-धीत नाहि श्रात । বীরের ব'রত্ব কোথা, বল তবে রবে ।। খানা খানা, খানা,খানা, লাধ্ নৰ সূতো। খানার পড়িয়া যেন, ধোনোনাকে: ছুঁচো॥ मनी, भक्त. (नळ, तम, वार्वद विश्वन। পরিমিত পরিমাণ, উপায় শ্রেখান॥ অনিয়মে পাঁচের অতীত করে গেই। পাঁচের অতীত ধন, নাহি পায় সেই। ৰ্জাচ ছাড়া পাঁচ ছাড়া, স্থাৰিহিত নয়।

পাঁচভূতে, পাঁচ ভূতে খায় সমূদর॥ এই পাঁচ পাঁচ পাঁচ, পঁচিশ\* হোয়েছে ! কত পাঁচ, এই পাঁচ, ধরিরা বোয়েছে। স্তুল+ জান স্থক্ষ জান, জোনিয়া কারণ। কারণের প্রেম হেতু, করছ কারণ॥ পাঁচের ভবনে তিন, তিন ছাড়া নাই। পাঁচ আর তিন বই, দেখিতে না পাই॥ ফলত এ সব তিন, পাঁচের অধীন। দেহ: তত্ত্ব§ গুণ্<sup>গ্ৰ</sup> তাপ॥, হয় তিন **তিন ॥** তত্ত্বে তত্ত্ব রেখে, তত্ত্বপথে চল l ভত্তরসে মতে ছোয়ে, ভত্ত কথা বল 🛚 কর আন কার তত্ত্ব, সার তত্ত্বর। ভারের অভীভ মেই, তার ভত্ত কর।। এ তত্ত্বের ভত্তী হোতে, ইচ্চা যদি হয়। সেইৰূপ কৰ্মা কর, শাস্ত্রে যাহা কর 🏾 ভক্তিভাবে যদি লও, জ্ঞানির আদেশ। যাবে কন্ত-ভবে নষ্ট- চবেনাকো দেশ ! গত নিশি বাঁচিয়াছ, যাঁর কুপাবলে। তাঁর হেড় এক পাত্র, লহ কুতৃহলে। নিদ্র'দেবী নেতে আদি, করি অবস্থান। নিবসের দুখ হোতে, করিবেন ত্রাণ । পাইনে বিমল স্কুখ, বিরতির সহ। তাঁর হেড়, প্রেমভরে, এক পাত্র লহ্ম অদ্যকার সব ক্লেশ, নাশের ফারণ। হার্ট গোয়ে এক পাত্র। কররে ধারন॥

<sup>\*</sup> পঞ্চবিংশতি—তত্ত্ব।

<sup>া</sup> শরীরত্তর। সূলা স্থা। কারণ **জাগ্রং।** স্থা। স্বয়ুপ্তি। ইত্যাদি।

<sup>া</sup> শরীবতার 🖇 ভত্ততার 🛭 গুণতার 🎙 ভাপত্তার।

এই নিশি প্রভাত, হইবে পুনর্কার। থাকিবে ভোমার দেহে, প্রাণের সঞ্চার॥ ভাবি ভাবি স্থখ লাভ, বিভূ ধা'ন কর। শাকিয়া জ্ঞানের বলে, এক পাত্র ধর। ভাই. বন্ধ জ্ঞাতি আদি, নিজ পরিবার। জ্ঞানদাতা, হিতকারি, যত আছে আর ॥ গবিমা গ্রহল হাশি, বাখিয়া জন্তরে। তাদের কল্যাণ চাও, সরল অন্তরে॥ জন্মভূমি জননীর, শিব হয় থাতে। সর্বশেষ একবার, পাত্র ধর হাতে। কিন্তু ভাই এই বলি, না হয় অধিক। পরিমিত পরিমাণ, থাকে যেন ঠিক । পাইবে অধিক চুখ, অধিক লইবে। হবে রব ধিক্ধিক্ ভাধিক্ ইইলে । কিছু নাই দোষ, ইংগ, কিছু নাই দোষ। যে লর নিয়ম মত. সেই আগতে যে। শুপ্তাদেবী গুপ্ত-ভাবে হাদে যেন রয়। প্রকাশ না হয় যেন, প্রকাশ না হয়॥ এই প্রিয়া অতি প্রিয়া, রাখিয়া গোপনে। যথাকালে প্রেমালাপ, করিবে যভনে॥ রসিক, প্রেমিক সাধ্, স্থজন যে জন। কেবল সেজন পারে, করিতে গ্রহণ ॥ मरा-छन, देश्य-छन, किछू नारे यात्र । সে যেন কামিনী সহ, না করে বিহার॥ हशन, हशनां (शतन, खित नरह गरन। চারায় মদের স্থাদ,জানিবে কেমনে॥ পার হও, মিছে আশা, কর্মনাশানদী। ডবে তুমি পাত্র লও, পাত্র হও যদি॥ পাত্র নিতে বিধি দিই, পাত্র যদি হও। কদাচ নিওনা পাত্র, পাত্র যদি নও॥ স্ফারু সোণার পাত্র, না লইলে করে।

সিংহীর স্তনের তুদ্, ধারণ কে করে ।।। সুনোধ সুশীল সদা, থাকে পরিভোষে। বস্তুর কুনাম হৃধু, ব্যবহার দোষে॥ কিরাতের করতলে, যদি পড়ে হেম। ধুলায় ভাছাড় মারে, নাহি জানে প্রেম 🛭 বানর পাইলে মণি, দাঁতে ফ্যালে কেটে। ঘৃত নাহি পাক পায়, কুকুরের পেটে। উত্তম আধের থাকে, উত্তম আধারে। বিষ্ঠা-ভোজী শকর কি, ক্ষীর খেতে পারে !॥ করির বলের ক্রম জানে শুধু হরি। ভরির বলের ক্রম, জানে ওখ, হরি। মেছের কি গুন, ভাষা জানে শুধু হার। হরির বিজ্ঞায়ত, জানে শুধু হরি।। যা কর তা কর কিন্তঃ মনে রাথ হরি। দেখিতেছে সমুদয়, ছাভিবেনা হরি॥ मुठी, एठी, एठी, मूठी, भाष आंत छत्। মুঠা নিজে গুচিহর, হিত গদি গুনে। মাত্র-গুর, মাত্রা দোষ, ওজনের দাঁড়ী। চাড়াল ব্ৰান্ধি হয়, দিল হয় হ'ছা।। স্বার্থ হেতু, স্মার্ত্ত, কিছু করোন নিষেধ। বুঝিলে ভাহার অর্থ, দুর ২বে খেদ। ভাবেধ, অধার দীন, শিশু যদি খায়। न। পাবে, क्नल किছू, घটा है दे नां ।। কালাকাল স্থানাস্থান, রবেনা বিচার। অভিরেক পানেতে, হইবে অপকার॥ কেবল বাড়িবে মনে, অধিক জাবেশ। ভাবিচারে, অভ্যাচারে, পূর্ণ হবে দেশ। কারণ 'অপেয়, বলে, এই সে কারণ। এ বাবন বাধা নহে, ছলের বারণ॥ অবোধ পামর যারা, ভাদের বারণ 1 একারণ জ্ঞানি আর, খনিরকারণ &

পূর্ব কার মুনি, ঋষি, মহীপাল কত। কালিদাস আদি করি, মহাকবি যত॥ জানিয়া নিগুড় তত্ত্ব, প্রফুল অন্তর। সকলেই কোরেছেন, তত্ত্বের আদর ॥ मकात्नत मकान, नहेबा छ।ता कछ। সন্ধানের প্রেমে তবে, হরেছেন রত॥ শরীরের রোগ নাশে, বৃদ্ধি করে শিব। **এ** हे इं एवं डांत्र, लिए इन निव॥ निगरम निगृष् ভाव, निमान निर्द्धम। না জেনে স্থকপ গুণ, দ্বেঘি করে ছেব॥ ভারতের স্বাধীনতা, ছিল যে সময়। হায়, ছিল, দে সময়, কত স্থখন্য।। ভূপতি, বিনয়, মিত্র, দেনা, দেনাপতি। আচার্য্য, পণ্ডিত, কবি, ঋষি, যোগি যতি॥ করিতেন প্রিণালাপ, যথায় তথায়। ''মধুপর্ক', জাদি ভোগা, কথার কথারা वल, वृक्षि, विमा, यभ, धन जांद्र मान। সব অংশে হিল্পুগণ, ছিলেন প্রধান॥ এক ধর্ম্ম. এক বিদ্যা, ছিল সবাকার। একরপ রীতি নীতি, আচার বিচার। ছिलनोका दिवादियः अवारे भगान। সুখে ভারতের গুণ, করিতেন গান ॥ ध्यम् अशन्त्रः, (इति मगुन्यः। কি ছিল, কি হলো আহা! আবার কি হয় ? ॥ ভারতে ভারতী-মাতা, অতি প্রতিকুলা। ৰিপুণ বিলাপ ভোগ, করিছে বিপুলা। , (थरा, रहरन, खाँडाइटड, ह्याँडाइटड इग्र) অদ্যাপিও যে জাতির স্থগোচর নয় ॥ তাহারা হইল সভা, একতার বলে। षाकारण উष्टिছ कीव, कोगलंद कला। करन करन छत्रि हरन, रन्य हिथ (हरत्र)

বাষ্পারথ অপরূপ,সকলের চেয়ে 🎚 বিদ্যাবল, বুদ্ধিবল, আরু বাছবল। ভিন বলে করে জয়, সমুদয় স্থল॥ তাহারা হইলে রত, কাদম্বরী দেখে ! याउन कि कामश्रदी, छोटापाद प्राप्त ॥ कानमूती वाल পেय, कानमूती वत्र। স্থাধীনতা ভোগ করে, যত খেত নর 🛊 এক নতে, এক বুথে, এক পথে চলে। এক মন, এক পণ, এক কথা বলে 1 এই এক যত দিন, তুই নাহি হবে। একভাবে, একরূপে, এক স্থাথে রবে 🛭 এ এক হইলে ছই, দুর হবে সব। রহিবে হিঁছুর মভ, শুধু এক রব। " আমরা হোয়েছি,, আর কহিতে কি হবে। " আমরা ছিলাম, এই ঘোষণাই রবে 🎗 অতএব অধিক কি, কব বল জার ৷ করিলাম সবিশেষ, সকল প্রচার ॥ আপনার হিভাহিত, করিয়া বিচার। বাধা হোয়ে সাধামত, কর বাবহার ! প্রবিধান কবি, যেন, উপদেশ ধরে ! যাহার"অসাধ্য যাহা, তা যেন না করে 🕽 ভাঙিতে পৰ্মত চূড়া. যদি থাকে বল। বলেতে আনিতে পার, জলদের হল । জলনিধি সম্ভরণে, শক্তি যদি হয়। পাতাল প্রবেশে যদি, নাহি থাকে ভর ৷ यहालि अनत्व नाहि, तह इस करा। এখনি করিয়া ভাষা, লাভ কর জয় 1 যদ্যপি ভাঙিতে পার, ভুক্তকর দাঁত। এখনি শাহসে দেও, তার মুখে হাত ॥ यमाशि ना शांत्र, छत्व, निकार याउना। চেওনা চেওনা আর, ওদিকে চেওনা !!

থেওনা, খেওনা আর, থেওনা, থেওনা। महानका नीत्र यात्र, तिखना तिखना ॥ কিন্তু ভার অপ্যশ, গেওনা গেওনা। নিজ-মতে ভ্ৰমপথে, ধেওনা ধেওনা II অমৃত দেবন আর, আমিষ ভোগন। এই ছুই উপাদেয়, ভোগের কারণ। উভয়ের সার গুণ, যেজন না বোঝে। কর্জ্জ করি পরমত, দ্বেঘী হোয়ে জোঝে !! আপনি পড়িয়া ভ্রমে, দোষ শুধু খেঁংজে। ভার গলে দড়ি দিলা, বেঁধে রাখো গোঁছে।। ভাহার সহিত আর. করোনা বিচার। করুক্ সে পশু হোরে, পশুর আচার॥ ফল, জল, অন্ন, মূল, কেন ভারা খান ?। তাহে কত জীব আছে, দেখিতে না পায়। বায়ুযোগে কত প্রাণি, উদরে পড়িছে। এ সব জানিয়া নিছে, কথায় লড়িছে। ভর, শাখা, লতা আদি, করিছে ছেদন। निषय इडेया वर्ष, ভाषात कीवन ॥ **জলে** জীব, স্থলে জীব, ফলে জীব খায় ! তৃণ লভা, যাহা খায়, জীব আছে ভায়॥ নাশিতে সে সব জীব, দ্য়া নাহি হয়। অহিংসা পরমধর্ম, মুথে শুধু কয়॥ ভাতে, রসে, গুড়ে ফলে, ফলে, আর গাছে। পরীক্ষা করিয়া দেখ, কত মদ আছে ৷ মতুজার নধ্যে জীব, অশেষ প্রকার। মানব রূপেতে যারা, করিছে বিহার॥ क्ट जांद्र जनमान, काल नाहि रात्र। থেমন নিষ্মে হোক্, জেমন \* তো করে॥ শপথ করিয়া কেউ, বলুক আমার। ' না করে আসব পান, আমিষ না খায়॥

नाना कीव, नाना ভাবে, छर्क करत्र नाना । কেহ না দেখিতে পায়, সকলেই কাণা॥ প্রটার স্থান্ধিত সব, অতি অপরূপ। নংনের দেখে দেখি, কুরূপ স্থুরূপ॥ ভার সার দোষ গুণ, বুবিধার নয়। স্থ্রপ না জেনে লোক, ভাল মন্দ করা। আমি কারে ভাল বলি, মন্দ বলি কারে। আসি তাহা কি বুবাব, কে বুঝিতে পারে?॥ বুঝিতে যদাপি পারি, বোঝাবার নয়। বস্তু-গুণ না বুঝিলে, বে'ঝা বে'ঝা হয়। নোজা হোলে বোঝা ভার, বাঁকা বোঝে কেবা এই বুঝি সোজাস্কৃতি, ক্তিমত দেবা 🏾 যাহে যার কচি হয়, সেই তাহা কর। সরল স্বভাব ধর, দ্বেষ প্রিচর॥ ক্রচিমভ কার্যা করি, হদ হও ভটি। রুটির বিভুর প্রেমে, থাকে যে। ফুটি ।

#### দিগাম্বরসিদান্ত।

হে আচার্য। জ্যোতিষশাস্ত্রের গণনা-দারা জ্ঞাত হইলাম - আমরা সকলেই মহামোহের দাস. প্রভুর কার্য্য-উদ্ধারের নিমিত্ত প্রেরিত হ-ইয়াছি।

ভিক্ষুক এবং সোমসিস্কাস্ত।

তুমি যাহা জ্ঞাত হইয়াছ তাহাই
যথার্থ বটে।

দিবাসর।

যাহাহউক, এইক্ষণে রাজকার্য্যের মন্ত্রণা কর l

## সোমগিকান্ত।

ওরে দিগমর—বাপু তুমি যে বড় গণক দেখিতে পাই, ভাল ভাল, আমি মনেমনে এইটা প্রশ্ন করি-লাম, তুমি গণনা করিয়া বল দেখি।

#### ক্ষপণক।

হে মহাশয়। এ কোন্ বিচিত্র ?
আনি জ্যোতিঃশাস্ত্রের গণনাপ্রভাবে
এই স্থানে বিসিয়া ত্রিলোকের সকল
কথাই কহিতে পারি। বস্থন্ বস্থন্।
এখনি বাল্য।

श्<sup>नि</sup>ट्ड दिश्**लन।** 

ভাকালে মুখ করিয়া।

ন্ম: ভাদিত্যাদি নবগ্রহেভ্যোনমঃ। কাকা-কাকা, কাকাভা। কাকা কাকা কা। মড়ার মুণ্ডে দিয়ে পা। ডেকে বলে, কেলে ম

কহত কলি, কহত শানা।
কহত কহত, না নাতজী।
কহত কহত, না নাতজী।
কহত কহত, না নাতজী।
সভ্য সভা কহত স্বেটা।
প্রাব ভোরে রাছা ঠেঁটি ।
সভ্য কহত জোটে-বুড়ী।
থেতে দেব ভাজা মুড়ী।
কাকা-কাকা, কা ক', কা,
বড়ে মরে কাকের টা।
গুনে কবি অ'চোআঁচি।
হেন কালে কেন হাঁচি ॥
কেলে বেটা কাকে কাঁকে।

মাতৈ মাতে মুখে হাঁকে।
থড়ি পাতি আঁকে আঁকে।
টিকটিকিটে কেন ডাকে।
থড়ি পেতে পড়ে বাধা।
তার দেখিনে কোন ধাঁধা।
মহান্য একটা ফুলের নাম করুন্তো।
সোমসিদ্ধান্ত।
"করবীর।"

## ক্ষপণক।

করবীর, করবীর। বাজুগ্রুণ কর বীর॥
প্রাহ্যন হও ধীর। গুনে গ্রেথে করি স্থির॥
ভাড়া থাকে পৃথিনীর। স্থাস্ডে যাও তীর।
ঠেলেনীর জলধির। বাস্থক র কাটো শির॥
কেলে সেটা চল চল। তলভিল রসাতল॥
চরাহর ধব ধর। সব ঠাই তার কর॥

যাড় হেট করিয়া শিরংকল্পন। বড়িতে আঁক, পাড়িতে পাড়িতে।

শুখেতে বাক্ কাড়িতে বা ছাও॥

5 9 30 0 0 0

তন্ত্ব ধন্ত্ সংহাদর। লগ্ন মগ্ন প্রস্পার।

সিংহ, কন্যা, বিছা, তুলো।

বিনা বাতে উড়ে খূলো॥

মেষ, বৃষে ডাকে নেঘ।

নুষ্য, সোম, ছাড়ে বেগ॥

বন্ধু, পুল্ল, রিপু, জায়া।

সপ্তমের মাতা ছায়া॥

এক, তিন, পাঁচ, ছয়। একাদশে সর্ববিদ্য়॥

চারাক্রে প্রশ্বহয়। এটা বড় ডভ নর॥

মড়ার মাধার দিয়ে হাত।
বলতো বাবা, বৈদ্যনাথ ॥ \
ওমা কালী দেও কুল।
গণনায় হোলে ভুল
তোর নামে কলক রবে।
শক্ষর শাস্তভে হবে॥
দেখি দেখি।

ক অক্ষরে প্রশ্ন এটা, মিথুন রালি কর। জীব, মূল, ধাতু, ধাতু। ধাতু, মূল, জীব।

ধাতু-ধাতু-ধাতু।—সোনা, ৰূপা, পিতল, কাঁশা, না-না।—ধাতু নয়, ধাতু নয়।

তবে कि? मूल, मूल-मूल। दि-। ছানা, বালিস, কড়ী, पড়ী।—ন' ন' তা নয়, তা নয়।—তবে বুঝি জীব। জীব জীব-জীব। জীবের মধ্যে কি? ক্রমি, কীট, কি পতঙ্গ। গো-অজ কি মাতঙ্গ। সিংহ, ব্যাঘ্র, কি কুরঙ্গ। উদ্র, ঋক, কি তুরঙ্গ। তা নয় তা নয়। তবে কি মানুষ? মানুষের মধ্যে কি বিচারি? পুরুষ কিয়া হবে নারী।

পুরুষ নর, পুরুষ নয়।
বটে বটে, মেয়ে হর॥
সে মেয়েটা কেমন্ধারা।
সদাচারা কি কদাচারা॥
মিথুন্লগো প্রশাহয়।
সেটা কিছু একা নয়॥
কার সঙ্গে কোধা রয়।

দিতে হবে পরিচয় । মড়ার মাথার দিয়ে হাত। বলতো বাবা বৈদ্যনাথ । ছ ছ ছ — স্থির করেছি। ঠিক বটে ।

তোমরা প্রশ্ন করেছ? দেই স্থা-ত্বিকী শ্রদ্ধা কোথায় এখন?

## শান্তি।

করুণা—বুন শুন শুন, এই দিগ-মর সিদ্ধান্তদিপের মুখে আমারদের মঙ্গল আলাপ শুনা যাইতেছে, অত-এব মনোযোগ পূর্বক শ্রবণ কর।

#### ক্ৰুণা।

ে ই। সই,এ বড় ভাল কথা।-এসো আমরা তুজনে অতি মনোযোগ পূ-ব্যক গোপনে সমুদয় শ্রবণ করি।

### সোমসিদ্ধান্ত।

হাঁ বাপু সাবাস, সাবাস, সা-বাস। তুমি ভাল গণক, জানের ব্যাটা জান বটে। ওহে জান। বাবা-জান, তুমি জান, সেই সর্বনাশী রাঁড়ী এবং নিষ্কামধর্ম এখন কোথায় আছে?

## দিগম্বরসিদ্ধান্ত।

,			·	-
2	8	1 50	1 2	9 2
		-		
30		42	29	10 5
				-

ভাল আবার একটা ফুলের নাম করুন্তো।

> ভিক্ষ। "বকুল।,,

#### ক্ষপণক।

বকুল-বকুল-বকুল। বৃন্দাবন, গোকুল।
একে চন্দ্ৰ,ভিনে নেত্ৰ,। কাশী আরকুরক্ষেত্র।
চেরে আর ভিনে সাত, জগন্ধাণ, চন্দ্রনাথ।
ভারা, ভিথি,রাশি, বার। জ্বলামুখী,হারদার।
গসবভীথে নাহিগার। কোথা ভবে আছে আর

#### मिथि मिथि।

অতল, বিতল, সুতল, তলাতল মহাতল, রসাতল, পাতাল, ইহার মধ্যেতো নাই।

ভূলোক, ভুবলোক, স্বলোক, জনলোক, তপোলোক, সগুলোক, এখানেওতো নাই।

জলে नारे, खल नारे, পাতा-ल नारे, গিরি গহরে নাই। বটে বটে।

ও মহাশয় স্থির করিলাম সেই
মাগী এখন বিষ্ণুভক্তির সহিত কোন কোন মহাত্মার নির্মালচিত্তে বাস
করিতেছে--নিস্কামধর্মাও তাহার সকেই রহিয়াছে।

যে লগ্নে প্রথম করা। চিরজীবি হয় মরা।। ক্রম্ম গাড় আছে শুনি। কার্যালিছি প্রমান মনি

#### मासि।

নাচিতে নাচিতে গীত।

মা আমার তো বেঁচে আছে। সেই বিষ্ণু ভক্তি দেবীর কাছে।। নিষ্কাম যে মহাধর্ম্ম,তিনিও তাঁর পাছে পাছে

#### ক্রণা।

আহা। কি আহ্লাদ, কি আ-হ্লাদ, স্থি, এরা আরো কি করে দেখা যাক্।

সোনবিদ্ধান্ত।

[বিষয় ভাবে গালে হাত দিয়া]

कि मर्सनाम अउन्त পर्यास्त कित्राहि ? महाञ्चात मत्न ? विष्टुछक्ति मर्ज ! मत् मत् मत् मत् — कालामूची काकी-मानीत काछ्यानाट्या थारो। नम्न। छत्त वाशू—यामार्गत महाताजा महाराहित य यात्रजत विश्रम र्मिश्चर शाहित या यात्रजत विश्रम र्मिश्चर शाहित या वित्रक्ति वाङ्गिर केत्र वाणा विद्या केत्र वाङ्गिर केत्र वाङ्गिर केत्र वाङ्गिर केत्र वाङ्गिर वाङ्गिर केत्र वाङ्गिर वाङ्गिर

পর্যন্ত পণ করিয়া চেষ্টা করা কর্ত্রন্ত্রাছে ।—কাপালিনী—আমাকে
সুরা দেও—সুরা দেও। আমি পূজা
এবং জপ আরম্ভ করি। ও দিগমর
ও ভিক্ষুক। বাপু তোমরা পান করি
য়া শিরচিত্তে মত্ত জপো,হে প্রেয়িশ
তুমি মহাদেবের ধ্যান করিয়া মহাদ্দেবীর তাব পাঠ পূর্বাক তাঁহাকে
প্রসন্না কর। আমরা সান্থিকী-জালার
আকর্ষণের নিমিত্ত মহাভৈরবীকে
প্রেরণ করি।

তদনন্তর তিকুক এবং দিগয়র আসনে বসিয়া সোমসিদ্ধান্তের দত্ত মহাদেব এবং মহাদেবীর মন্ত্র জপ করিতে লাগিলেন।

সোমসিদ্ধান্ত মহাতৈরবীর ধ্যান করিয়া আকর্ষণী-মন্ত্র চালনা করিতে লাগিলেন।

> রাজসীশ্রদ্ধা তন্ত্রশাস্ত্র-সমত শমহাকালীর স্তব আরম্ভ করিলেন।

স্তব করিতেকরিতে দিব্যজ্ঞানের উদয়। ত্রিপদী।

পরাপরক্ষরী পরা, পরাষ্তপদাপরা, পরম-প্রকৃতি সর্বসারা। বিহরসি নৈহস্রারে হ-ল-ফ মগুলাকারে, শরচজ্ঞাদিভানলাকারা।

প্ৰাৰ পৃথক কবা, বরা বরা ভয়করা, অনিকরা অসিতবরণী। মুলাধারে সর্পাকারে, স্বরস্তু হাদরাগারে, হুপ্তা শামা-শক্তর্থর নী॥ नीधुशारन मना ख्यी, উक्त प्रक्तः अरधापुषी, লে হিতাঙ্গী, মুদ্রিতলোচনী। (भक्रम एक इंक्स्ट्रल, विषठ्छ उटक वटन. कानगमा कुलक्छलिनी॥ रेड़ांनि शिक्षनां हरा. ক্ষরা বিজ্ঞান লয়, চিত্ৰিনী প্ৰভৃতি কাড়ী থাহে। তার মধ্যে 'ভ্রহ্মন'ড়ী, বিশেষে বিপ্রাম বাড়ী ছেভে ব্রী ড়া কর ত্রীড়া ভ:ছে॥ ডাকিনী শক্তির সহ, গজ-পুঠে পিভামত, আধারাখ্য সরোক্তরাছে। পারিজাত শতশত, বেদ বিধি, নানা মত, কত শেভা কণিকার মাজে॥ दाणि,-भारत, कामधीक. (रमतार्ग मद्रभीक. আদিচক্র ক্রিকোর-মাকার। **जप्रक्षं कमल,-त-ल.** ह्य तर्ग ह्य मल, স্বাভি:ন,--লিজ, নীরাধার॥ ভার উর্দ্ধে দশদল, ডাদি-ফান্তানল স্থল, মনিপ্রর, নাভি, নিরাপণ। जपूर्क रूपयञ्चन, कामि-ठीख वाद्यातन, অনাহত পদ্ম-সমীরব॥ তথা কল্লভক্তলে, কমলক নিকা-দলে, ওপ্রভাবে জীবাআর বাস। তরি উর্দ্ধোলদ,ল বোলস্বর, কঠন্তল, বিভক্ষায়, শকাষারাকাশ ৷৷ ক্র মধ্যে মনের ধাম. চিন্তামনিপুর নাম, হ-क, दर्श फुटे मल यथा।

करनवद त्रच करा.

ওক্তাকো করি ভর,

চিন্তাময়ী ভাব-চিন্তা তথা 🕽 🗀

প্রথমে গণনা ক্ষিতি, পৃথক পক্ষজে স্থিতি, करम (मनी मलक् नाइला। অকারাদি-ক্ষকানাস্ত, ইন্দু-বিন্দু-নাদ-লাস্ত, **শक्काशा रिवश नी वराला ॥** মূলাধারা সর্বাধারা, আধেষ ভাষারাধারা, নিবাধারা নিরাকারাকারা। ভূক্ষসূত্রে গাঁধা ভাব, বিশ্বাদে বিশেষ লাভ, ওপ্তভাব নাক্ত কর'কার।॥ আছাচতে জানৱন্ধ, জ'নি-জাত গুঢ়মর্ম, অজ্ঞানে কি তত্ত্ব তাব পায। তাবাভভভাৰা যাবা, ভাষা কি জানিবে ভারা, ভ্রমে ভ্রমে কুরস্কের প্রায়। গুণতারী তত্ত্তারী, সর্বদাসর্বদামনী, यत्नाययुः यानम नामिनी। গদ্য-পদামথী ববা, তিভাপ তিমির হবা. শিবশক্তি শক্ষট নাশিনী॥ चामाजिका जिल्ला विषयी, खरिमा ना निनी-विषयी বেদমাতা বীচপ্রস্থিনী। মহিমা না জানে ধাতা, মহেশ মহিলা নাডা, মহামারা মরালগেহিনী।। फुर्भा फुर्भहत। मर्गः, हित्रभौतिशसळाना. পর্বতেশপ্রিয়পুলীপরা। मिथिल भेराना धना। (मराद्रोधा पक कना), महामधी देनसम्माह्या ॥ বিপুরা ত্রাম্বকদার, ত্রাল-হড় নাম ভারা, ত্তিলোচনী ত্রিলোক তালি। কার্য্য থার্য্য ফাতে হয়, কারণ ভাষ্ট্র কয়, काली भारे काइन काविनी। বিমলা কমলা মলা, করালাকী কাম কলা, कलूष-कष्य विस्माहनी। काली कालाका नमाबी, कानकांचा कान दाजि-

্ কামৰূপা করাল খদনী 🛭 সোহংভত্ত্বে, ভত্ত্বধরা, ক্ষপাঞ্চপাশেষকরা, সমাধি সমিধ স্বৰূপিনী। ককারে আকার ভূতা, কলি কালীগুলমুতা, গিরিম্বতা নিবিশ গুছিনী॥ চতুর বিংশতি ভত্ত, তমণ-আব র**জঃ সত্ত**, ত্ৰিগুণে ত্ৰিবিন্দুৰূপা ভাৱা। जनस जनस नीना, (क्रमकरी क्रमानीना, विश्वेमधी विसम्बद्धां ॥ ় নিৰ্গমে লিখিত স্পষ্ট, অসন্যাদি মুৰ্জ্তি অষ্ট্ৰ, তারা অষ্ট তারা ছাড়া নয়। নয় গ্রহ, দিক দশ, বায়ু পঞ্ছয় রস, তারা, তিথি, তীর্থের আলয় # সর্ববসহা, সর্ববন্ধ সর্বের সর্বস্থন, সর্বিশ কিশ্বিভত্তাদেশে। বিধিৰূপে সৃষ্টিপৰ্মন হরিক্তপে পাল সর্মন শর্বক্রপে সর্ববাশ শেষে। নান্ত্ৰপে কপধ্য, নান্ত্ৰপে মায়া কৰ, কালীকপে মন্তা রণমদে। लीला मन जमयुन, কত কৰ হত্তব্ৰ, ভবধৰ শ্ব তৰ পদে ॥ জলদে দামিনী দাটা, ভাপৰপ ৰূপচ্চটা, ভিমিবে তিমির করে নাশ। নীর্ষর হত দিশা, স্থর্ব শশী জমানিশা,: সমভ'বে"একত্ত প্ৰকাশ ॥ শিশুপশ্রধরা, গুণ্ধরা ধরাধরা. ख्रांग मधुद्रीधर्धवी । ক্ষতে সু আ ক্ষণে স্থ লা, প্রতিব্যলা অর্কুলা, हीनाइला (काष्ठीइन। मारा॥ বিশ্ববাস্বিধায়িনী, বাণী-ত্ৰহ্মসনাভ্নী, उनाग्दी उनान्म अग।

ত্ব-ভাবে মহাজ্ঞাদে, তত্ত্তান-রসাম্বাদে, • প্রশ্বা পরিভ্র সদা। লীলাচল আদি স্থল, গঙ্গাজল খান কল, অবিকল শতদল পায়। শ্ৰীমাৰ প্ৰম গুৰু, ভাবদাতা কল্পত্রক, প্তব্য বিনা সন্ধান কে পায়।। সে মুখের উপদেশ, চর্মিত চর্মাণ শেষ, লেশ মাত্রে ক্লেশ উপশ্ম। তবে যে ভাবোধ নরে, অভিমানে তর্ক করে, সে কেবল বুঝিবার ভ্রম॥ শ'ল্পে শ'ল্পে তর্ক হয়, কত জনে কত কয়, কিছু নয় সে সব বিচ¹র। अन्ती अन्य ভृति, केलात केनाङ्ग ज्ञित এক বস্তু সকলের সার। ভীর্থ-পর্যট্ন-শ্রম, কেবল যদের ভ্রম ব্যতিক্রম আপন জীবনে। প্রত্যার প্রম-ধন, সকলের মূল ধন, মুখ, ছুখ, পাপ, পুণা মনে॥ **बहै। म**ञ्च, बहि! मह, तिह कृत धेरे इह, क्रेक्श एम करत्र गर। স্থীর সাধক সেই, সাব মর্ম পায় সেই ভাবে তার বদন নীরব।। ব্ৰহ্মনিৰূপণ কথা, কুবিচার যথা তথা, নিরাকার সাক'র বিবাদ। প্রেমে পূর্ণ কেহ নয়, চক্ষু খেকে অন্ধ হয়, পরস্পর ঘটায় প্রমাদ।। যে, যা.ভাবে তাহে কিবা,আমি ভাবিরাত্রি দিবা শিবা-শীতিকঠকুট্মিনী। विश्व मदनद खम, छेनय खलद मम, ভারাক্রপ নব কাদ্যিনী। ু, উছারের পাঁচ মত, কলিডার্থ এক পথ,

ভ্ৰান্তি হলে যায় খেদ। শিৰ, রাধা, ভারা রাম, বীজ ঐক্য ভিন্ন নাম, শ্যামা, শ্যাম, আকারের ভেদ।। তুমিশাম, তুমি শ্যামা, আকার আকারে বামা, একাকাবে একাকারে লয়। যে পেয়েছে ভত্তম্সি, দেকি দেখে বাঁশী অসি, জীব নয় শিব সেট হয়।। কে বুঝে বিষম তঞ্চ, মন্ময় তন্ পঞ্চ, গণপতি বিশ্বসান্তহারী। खर्म खर नीहरम हरमी, कुष्टे देवल-मर्शिष्त भी, খড় গা. শৃঙ্গ, চুড়া-বং শীধ'রী ॥ উপাসনা ভেদাভেদ, বিশেষ বলেছে বেদ. মণিদ্বীপে একচিত্রে খান। যথার্থ মনের ভাবে, সাধকে সাকার ভাবে, ছেষ করে পামর শুদ্র ন। ভবেচ্ছায ছভাদেশ, যত লে'কে করে দ্বে, তুমি তাব কন্তা কৰ্মা ক্ৰিয়া। শ্বীবেবে কাচাও ক'চ, কুহকে নাচাও নাচ, नाना करन नाना छाउ पिया ह কুমতি অ্মতি দৃষ্ণ, তোমাহতে হয় লয়, মানুষের বৃথা করি ছেব। ভূমি কূপা কর যাবে, সংস'রে ভরাও ভারে, ভব-আসা আশা কর শেষ॥ তোমার পরম তত্ত্ব- 'কে পাবে করিতে তত্ত্ব-ভারাতত্ত জ্ঞ'নচকু ভারা। আমি মা বিষয়ে মত্ত, নাহি জানি তব তত্ত্ব, ভবদত্ত ভত্তবন্ধ হারা ৷ নিশাগভাগত দিখা, স্থপৰ দেৰাও শিৰা, বিজ্ঞান নিৰ্মাল নেত্ৰ দিয়া। ক্ষম দোষ, ছাড় রোষ, করমো যা পরিডোব, আন্ত ভোৰ, পাছভোৰপ্ৰিয়াৰ

भिएतन् अर्थमूक विक , अन् भारत स्रक्ति किन्तु, । भीगा द्राप्त भारत भारतिकर् न्यान पक त्यार दक न्याराख भीम दक deerstaine aute 11 अंद्र कार चारे कार , अक कारक करक क्षांत भेर भिष्ठ हिम्मी कार । (x esa cenaria suic succi seem anic) ध्यामाध्य ध्यामह अकाष ॥ terror of an' write set oroner" एक्ट्रिंग न्यान म्याके। usaż steme , nene etree, rete são moisell auminit se alse " mans maleria सर उम भ्रेडमार कार्ड। mpe are server se procese ors' are mus exem out my " अंत्रेश ध्यमभी अदः जारह सार अखंदर ' अरह तमील में में भी केरहे।

आधार- नेबार स्मार ने नेपाय प्रमास स्मार My HU HUN WESTE ! ब्रिया मारे कार कार कार्य , क्रिया मार्ज , एकम अभूगाई उँ आर ॥ सिम् सिम् कर्ष कार स्तर कि एक एक एक (भ, ८४) निरक प्रमी निक प्रतमा you sin ourmes! (now mes outs! किस्प (म स्ट्रेंग हिंह मेरम II भिष्ट मार्ट मेल मार्टी किया मार्ट मेल देश रूप ग्रेप्टर ' जास समी गरह। USBS. SEUD ' SÍM ' UN WAN' RMO ' RÍM जांह अशे हिंद अशे अह ॥ Belye without the " least six with int व्याच्य राष्ट्रक आं में मा ( Rus extir usus des less sea la las sea Theole min ore into 11 Lease leader eight aucent ere my emple or oute 1 meet hile singles breakes fundith उठ्यान करामेल दूराहे ॥

एकराव क्रिक राष्ट्र क्रेडरक मेर्मुला मड्डे द्रव्यकि स्थापक एकाम निग्रह । enge so state त्माउँ में सेश्म हरे ا عديد المايد مري مريد مديد ال ennerg sier dire i Le rine glopt mire " sublever tier ring ब्राह कार उड़े गर्म ' अल सा क्रिका र मार्स Agrara - Man - masse " der to - the type, desired, someties, someties स्विद्धार भर अम व्हमल्या। अमेर काम कार्य भेग क्यान कार्य कार्य BY AR DEWLTHY II section error section of section of sections whole new oppose ! अध्य भ्रममञ् भीम । उद्भीयेख केंद्रेडिकर । हिण्ड अडर द्वांस उद्धा न्यात्त क्षांत क्षात्र व्याच्य क्षात्र क्षात्र क्षात्र अश्ममी ने ने ने ना भाष्ये। मेट्स मेट्स अम सेंस ' क्रिस्पिट सेंस ' जार मेंट्स्' merciae silve servery 11 dratur ala muze, lesse assur ame After their meet with any 1 // Complete PF 13

खारम बंद ४ नेम्पड़े हिला भुरमं अउमेरहरे अर्थर - अर्थेड - क्ट्र भागा। एएउड़ का उर्ड करन ' रहाराइ कर होड़ अनम उट ज्यास , ज्यास , माने ह्या । त्य क्रिया क्रिएसड याड़ं स्थित त्या या येत याड़े ।। प्रशास भड़ महार वार्क प्रकार cente ous of six " En 15th our vir अर्थात्रामा द्वार गार्थ गार्थ । प्रमाद्दीर संक्षेत्र प्रद । अपन वाह आस वव कुष केंड सक्या पड असर ड 11 is no sina, wanter see ne अंट उठ उर्दे प पर । exe our en every beginned in 1 ser ou for paysing oure every ever were in ours course size and 1 ग्रम भाग विश्वम अव्य अवस्था महा मङ्ग्रह मङ्ग्रमाङ्ग्री ॥ שתפי נצאו הושביניו היושב ביונה עשב שליו सर्वाक्षण अतु यह कीमा।

नेश् कटं। स्परम्प स्प ' — ज्योर्केम्प ४३' स्पष्ट ग्रन्थप

स्ट्रिक्ट कर्मा हर हम्मान कारणात्र कारणात्रक स्मार्ट्सिक क्षेत्रक स्मार्ट्सिक क्षेत्रक स्मार्ट्सिक क्षेत्रक क्

# mg 1

अहि। मैंकिक मैक्श्मिएरअंड अर्थिंग कोखरंट एउट्टर उक्ट अहुक राथुड़ एक्ट्र प्रथम कहुर्ग रेड्र सिंग भाग केंद्रम् का नाथ हुडरां

अर्जन्म अप्रीक अर्थन कार्यास्य । अराज्ये मार्गल य्या क्रम्प कुरात्रम

ने अपर अध्या अपराज्य

Complete PP 140